सुकवि-माधुरी-माला—पचम पुष्प

मिश्रबंधु-विनोद

अथवा

हिंदी-साहित्य का इतिहास तथा कवि-कीर्तन

साहित्य की सुंदर पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
बिहारी-रत्नाकर	५)
हिंदी-नवरत्न	४।।), ५)
देव और बिहारी	१।।), २।)
पूर्ण-संग्रह	१।।), २।)
पराग	।।), १)
ऊषा	।।=)
भारत-गीत	।।), १)
आत्मार्पण	।।)
निबंध निचय	१), १।।)
विश्व-साहित्य	१।।), २)
भवभूति	।।=), १=)
वेणीसंहार	।।=), ।।)
अद्भुत आलाप	१) १।।)
साहित्य-सुमन	।।=), १=)
सौ अजान और एक सुजान	१), १।।)
प्राचीन पंडित और कवि	।।।=), १।=)
मतिराम-ग्रंथावली	२।), ३)
साहित्य-संदर्भ (द्विवेदीजी)	१।।), २)
सुकवि-संकीर्तन	१), १।।)
सौंदरनंद महाकाव्य	।।), १)
साहित्यालोचन	२)
सतसई-संजीवन-भाष्य (पद्मसिंह शर्मा)	४।।)
काव्य-निर्णय	१।।)
कालिदास और शेक्सपीयर	२), २।।)
मेघनाद वध	३।।)
भाषा-भूषण	।।)
जायसी-ग्रंथावली	३)
भूषण-ग्रंथावली	१।)
आलम केलि	१)
शिवसिंह-सरोज	२)
ब्रज-माधुरी-सार	२)
काव्य-प्रभाकर	८)
साहित्य-प्रभाकर	३।।)
सूक्ति-सरोवर	२।।)
विद्यापति की पदावली	२)
सूरसागर	६)
संक्षिप्त सूरसागर	२)
हिंदी काव्य में नवरस	२)
जरासंध-महाकाव्य	१।)

मिलने का पता—

प्रबंधक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

अथवा

हिंदी-साहित्य का इतिहास तथा कवि-कीर्तन

(तृतीय भाग)

लेखक

गणेशविहारी मिश्र

माननीय रा० ब० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०

रा० ब० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०

"ते सुकृती रससिद्ध कवि वंदनीय जग माहिं ;
जिनके सुजस-सरीर कहँ जरा-मरन-भय नाहिं ।"

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

द्वितीयावृत्ति

सजिल्द ५) } सं० १९८५ { सादी)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ
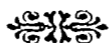
मुद्रक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

विषय-सूची

अज्ञात-कालिक प्रकरण

परिवर्तन-प्रकरण

पृष्ठ

इस समय के अन्य कविगण

पृष्ठ

वर्तमान प्रकरण

मिश्रबंधु-विनोद

अज्ञात-कालिक प्रकरण

इकतीसवाँ अध्याय

अज्ञात काल

बहुत-से कवियों के विषय में प्रयत्न करने पर भी काल-निरूपण नहीं हो सका, परंतु इसी कारण उन्हें छोड़ देना अनुचित समझकर हमने उनके लिये यह अध्याय नियत कर दिया है। इनमें खगनिया की कविता कुछ अच्छी प्रतीत होती है। इन कवियों में दो-चार का सूक्ष्मतया हाल समालोचनाओं द्वारा लिखकर चक्र-द्वारा शेष का वर्णन कर देवेंगे। इस संस्करण में जिनका हाल विदित हो सका उनके नाम यथास्थान रख दिए गए हैं, परंतु नंबर न बिगड़ने के कारण नहीं हटाए गए।

नाम—($\frac{१३२१}{१०}$) अनंत कवि। फुटकर छंद गोविंदगिल्लाभाई के पुस्तकालय में हैं।

नाम—(१३२२) कलस। देखो नं० ($\frac{५३८}{१}$)

विवरण—कवि कलस शंभाजी के काव्य-गुरु और प्रधान अमात्य थे। शंभाजी इनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे। यह और कलस साथ-ही-साथ पकड़े गए और मार डाले गए। कलस वीर पुरुष पर विषयी था। कहते हैं, शंभाजी की दुर्दशा और अध पतन इसी के कारण हुआ। महाराष्ट्र लोग शंभाजी को घृणा की दृष्टि से देखते हैं—

देखो पूर्वाजकृत प्रकरण ($\frac{४३४}{१}$) संवत् १७४६

इनकी कविता तोष की श्रेणी की है।

उदाहरण—

अग अरसौंहैं छवि अधरन सौंहैं,
चढ़ी आलस की भौंहैं धरे आभा रतिरोज की ;
सुकवि कलस तैसे लोचन पगे हैं नेह,
जिनमैं निकाई अरुनोदय सरोज की।
आछी छवि छाकि मंद-मंद मुसकान लागी,
विचल विलोकि तन भूषन के फोज की ;
राजै रद मंडली कपोल मंडली मैं,
मानो रूप के खजाने पर मोहर मनोज की।

(१३२३) खगनिया

उन्नाव-ज़िले में रणजीतपुरवा-नामक एक क़स्बा है। इसी में वासू-नामक एक तेली रहता था, जिसकी पुत्री खगनिया ने ग्रामीण भाषा में बहुत-सी अच्छी पहेलियाँ बनाई हैं। हैं तो ये बहुत ही साधारण भाषा में, परंतु इनमें कुछ ऐसा स्वाद है कि ये कविगण को भी पसंद आती हैं। इसके समय का निरूपण हम नहीं कर सके हैं, उदाहरणार्थ इस स्त्री-कवि की तीन कहानियाँ हम नीचे लिखते हैं—

आधा नर आधा मृगराज, जुद्द बिआहे आवै काज।
आधा टूटि पेट माँ रहै, वासू केरि खगनिया कहै। (नरसिंहा)
लंबी-चौड़ी आँगुर चारि, दुहू ओर ते डारिनि फारि।
जीव न होय जीव का गहै, वासू केरि खगनिया कहै। (कंघी)
भीतर गूदर ऊपर नाँगि, पानी पियै परारा माँगि।
विहि की लिखी करारी रहै, बासू केरि खगनिया कहै। (दावात)

नाम—($\frac{१३२३}{१}$) ख्यालीलाल। इनके छंद गोविंदगिल्ला-
भाई के पुस्तकालय में हैं।

नाम—($\frac{१३२३}{२}$) खूबी। फुटकर रचनाएँ संग्रहों में पाई जाती हैं।

नाम—($\frac{१३२३}{३}$) गजानंद। इनके फुटकल छंद गोविंदगिल्ला-भाई के पुस्तकालय में हैं।

नाम—($\frac{१३२३}{४}$) गिरिधारन। परमानंद के षट्ऋतु हजारा में इनके ८ छंद हैं।

नाम—(१३२४) व्रजमोहन।

विवरण—इनकी कविता सरस है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है।

केसरि को मुख राग धरे जेहि की उपमा न कोऊ समतूल्यो ;
जोबन मैं विकसै बिलसै लखि मीत सुगंध पियै अलि भूल्यो।
कोमल अंग मनोहर रंग सुपौन की झोक लगे तन झूल्यो ;
नारि नई निरखो व्रजमोहन नारि नहीं मनौं पंकज फूल्यो ॥१॥

नाम—(१३२५) पंडित, बिगहपूर।

विवरण—साधारण श्रेणी के कवि थे। इन्होंने ग्रामीण भाषा में अच्छी पहेलियाँ कही हैं।

यथा—

अगहनु पहठ चहत के प्याट, तेहि पर पंडित करैं झप्याट।
है नेरे पइहौ ना हेरे, पंडित कहैं बिगहपुर केरे।
(कचौरी)

नाम—(१३२६) भवानीप्रसाद पाठक।

विवरण—ये महाशय मौज़ा मौरावाँ ज़िला उन्नाव के वासी थे। इन्होंने काव्यशिरोमणि-नामक काव्य का रीतिग्रंथ तथा काव्य-कल्पद्रुम बनाया। इसमें कुल ३०० छंद हैं, जिनमें लक्षणा, व्यंजना, ध्वनि, व्यंग्य इत्यादि के वर्णन हैं। इनकी भाषा बैसवाड़ी तथा व्रजभाषा-

मिश्रित है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में की जाती है। उदाहरण—

धाम धरे सम देखिकै मारग ऊँच औ नीच परै पग नाहिन ;
एकहि हाथ कठोर करी कृति एक करोट परे कहुँ आहिन।
पूरन प्रेममई अनुकूलता देखि लगै मन मैं रुचि काहि न,
भावन भावती के सुखदायक और कहूँ हर मो हर ताहिन।

नाम—(१३२७) मनसा।

विवरण—तोष श्रेणी।

उदाहरण—

मलयज गारा करैं अगन सिंगारा करैं,
गहि उर डारा करैं माल मुकुतान की,
आरती उतारा करैं पखा चौंर ढारा करैं,
छाँहैं विसतारा करैं विसद वितान की।
मुख सों निहारा करैं दुख को बिसारा करैं,
मनसा हमारा करैं सारा अँखियान की ;
मानिक प्रदीपन सों थारा साजि ताराजू की,
आरती उतारा करैं दारा देवतान की॥ १॥

नाम—(१३२८) राम कवि। देखो नं० (१८३२/१)

ग्रंथ—रसिकजीवनसंग्रह। हनुमान् नाटक [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—इस संग्रह में दस महात्माओं की वाणी तथा पद संग्रह किए गए हैं। यह एक बड़ा ग्रंथ है, परंतु किसी का भी समय इसमें नहीं कहा गया है। यदि समय इत्यादि भी दे दिए जाते, तो बड़ा ही उपयोगी हो जाता। यह संग्रह हमने दरबार छतरपूर में देखा है।

नाम—(१३२९) वहाब।

ग्रंथ—बारहमासा।

विवरण—बारहमासा की रचना खड़ी बोली में अच्छी है। साधारण श्रेणी के कवि थे।

उदाहरण—

असाढ़ व साजि कै दल मुझको घेरा ;
कहौ घनश्याम से जा हाल मेरा।
नगारे मेघ के बाजे गगन पर,
विरह की चोट मारी मेरे मन पर।
लगे झींगुर नफीरी-सी बजावन ;
पिया बिन कान की चिनगी उड़ावन।

नाम—(१३३०) सबल श्याम।

विवरण—इन महाशय का बरवै षट्ऋतु हमने देखा है, जिसमें १२२ छंद हैं। इनका इससे विशेष हाल नहीं मालूम है। इस कवि की भाषा व्रजभाषा है और काव्य-गरिमा में ये तोष-श्रेणी के हैं।

उदाहरण—

तपन तपै रितु ग्रीपम तीखन घाम।
ताकि तरुनि तन सीतल सोचै काम ॥ १ ॥
छाँह सघन तरु भावै बालम साथ।
की प्रिय परम सरोवर सीतल पाथ ॥ २ ॥

इस अध्याय के शेष कविगण

नाम—(१३३१) अखयराम। देखो नं० ($\frac{१२१०}{१}$)

ग्रंथ—स्फुट कविता।

नाम—(१३३२) अग्निभू।

ग्रंथ—भक्तिभयहर स्तोत्र [खोज १६००]

नाम—($\frac{१३३२}{१}$) अचरतलाल नागर।

ग्रंथ—प्रेम-प्रवाह।

विवरण—नडियाद-निवासी ।

नाम—(१३३३) अजीतसिंह ।

ग्रंथ—यसावली सोमवंशीरी ।

विवरण—राजपूताने के कवि हैं ।

नाम—($\frac{1333}{1}$) अत्ता कवि ।

ग्रंथ—स्फुट काव्य ।

विवरण—आपकी कविता नदीवा-संग्रह में मिलती है ।

उदाहरण—

बैठिए न पनघटा पैठिए न जल धाय,
रोंधिए न चल पाय विधा को सुधारिए,
गाइए न मग राग छाइए न परदेश,
जाइए न सूम द्वार वृथा गुन हारिए।
बोलिए न झूँठो बास खोलिए न ऐवन को,
डोलिए न खेत चढ़ि साहस सँभारिए,
अपने पराए को सिखाय चहे यारो कवि,
अत्ता को बचन यह मन में विचारिए।

नाम—(१३३४) अधीन (भागीरथीप्रसाद), बाँकीभौली ।

ग्रंथ—शम्भुपचीसी ।

विवरण—साधारण श्रेणी के कवि थे ।

नाम—($\frac{1334}{1}$) अनुरागीदास ।

ग्रंथ—(१) डगहुंडी, (२) दीनविरुदावली, (३) जुगल-विरुदावली, (४) गुरुविरुदावली, (५) भक्तविरुदावली ।

विवरण—आप कृष्णगढ़-राज्यांतर्गत गोध्याणा ग्राम-निवासी चारण मनोहरदास के पुत्र थे ।

नाम—(१३३५) अनगचूर पंडित ।

ग्रंथ—नवमंगल ।

नाम—(१३३६) अभय।
ग्रंथ—स्फुट कविता।
नाम—(१३३७) अमीचदजी यती।
ग्रंथ—जोतिसार।
नाम—(१३३८) अर्जुन (उपनाम ललित)।
ग्रंथ—स्फुट कविता [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—साधारण श्रेणी
नाम—(१३३९) अर्जुन चारण।
ग्रंथ—(१) कवित्त सलखी जीवराजाजी रा, (२) महकमसिंह-
जी रा कवित्त।
विवरण—राजपूतानी भाषा।
नाम—(१३४०) अर्जुनसिंह क्षत्रिय, काशी।
ग्रंथ—कृष्णरहस्य (पृष्ठ ५४ पद्य)।
नाम—(१३४१) आडाकिसना चारण, मारवाड़।
ग्रंथ—फुटकर गीत।
विवरण—वीररस।
नाम—(१३४२) आत्मादास। देखो न० (६६०/१)
ग्रंथ—हरिरस।
नाम—(१३४२/१) आनदघन दूसरे।
ग्रंथ—स्फुट पद।
विवरण—राधावल्लभीय वेटी के वंशज।
नाम—(१३४२/२) आनददास।
ग्रंथ—आनंद-विलास। [तृ० त्र० रि०]
विवरण—निंबार्क-संप्रदाय के वैष्णव थे।
नाम—(१३४२/३) आनदघन।
ग्रंथ—कृपाकंद, वियोगवेली।

नाम—($\frac{१३४२}{४}$) आनदविहारी ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

नाम—(१३४३) ओंकार, मुक़ाम अष्टा (मालवा), भट्ट ज्योतिषी ।

ग्रंथ—भूगोलसार (पृ० ७४ गद्य) । [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—भूपाल के पोलिटिकल एजेंट करनल विलकिनसन की आज्ञानुसार रचा ।

नाम—(१३४४) ओरीलाल कायस्थ, अलीपुर, ज़िला प्रतापगढ़ ।

ग्रंथ—शैवी निधि, शिवशाक्त ।

नाम—(१३४५) औघड़ । देखो नं० २०२४ ।

ग्रंथ—तुरंगविलास ।

विवरण—काशी-नरेश की आज्ञा से ग्रंथ बना ।

नाम—($\frac{१३४५}{६}$) औसेरी ।

ग्रंथ—स्फुट रचना ।

नाम—($\frac{१३४५}{२}$) अगदप्रसाद ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

उदाहरण—

राम नाम लीन्हो नाहिं दान कछु दीनो नाहिं,
संतन को चीन्हो नाहिं माया के गुमान में,
कूप जिन खोदे नाहिं वृक्ष जिन रोपे नाहिं,
विप्रन जिमाय रहे तापै अतिमान में ।
ऋषि-ऋण, देव-ऋण, पितृ ऋण, तोरे नाहिं,
बीत गई वय सबै स्वार्थ के सयान में,
अगदप्रसाद कहै ईश्वर के ध्यान बिना,
पैहै मुख मेरो सो कजम कहै कान में ।

नाम—(१३४६) अंछ ।
ग्रंथ—फुटकर कविता ।
नाम—(१३४७) इनायतशाह मुसलमान ।
ग्रंथ—भजन ।
नाम—(१३४७/१) इश्कदीन, गुजराती ।
ग्रंथ—फुटकर कविता ।
नाम—(१३४७/२) ईश्वरमुनि ।
ग्रंथ—स्फुट कविता ।
नाम—(१३४७/३) उत्तमराम, गुजरात, अहमदाबाद ।
ग्रंथ—बावी-विलास ।
नाम—(१३४८) इंदु ।
विवरण—निम्न-श्रेणी ।
नाम—(१३४८/१) इंदु (जानकीप्रसाद तिवारी), सूर्यपुरा, अहमदाबाद के निवासी ।
ग्रंथ—फुटकर रचना ।
नाम—(१३४८/२) उजियारेलाल ।
ग्रंथ—गंगालहरी [च० त्रै० रि०]
नाम—(१३४९) उदयभानु कायस्थ ।
ग्रंथ—गणेशकथा ।
नाम—(१३४९/१) उदयमणि ।
विवरण—भड़ौवा-संग्रह में इनके छंद हैं ।
नाम—(१३५०) उदितप्रकाशसिंह, बनारस ।
ग्रंथ—गीतशत्रुंजय । [खोज १९०४]
नाम—(१३५०/१) उम्मरदान चारण, जोधपुर ।
ग्रंथ—स्फुट भड़ौवा तथा मदिरा-निषेध के छंद ।
नाम—(१३५१) उमादत्त ।

ग्रथ—बारहमासा। [खोज १६०२]

नाम—(१३५१/१) उमापति शर्मा।

ग्रंथ—पद। [च० त्रै० रि०]

नाम—(१३५१/२) ऊधवदास, पटियाला के बाबा रामदास के शिष्य।

ग्रंथ—गणप्रस्तार-प्रकाश।

नाम—(१३५२) ऊमा।

ग्रथ—स्फुट कविता।

नाम—(१३५३) ऋणदान चारण।

ग्रथ—सिद्धराय-सतसई।

नाम—(१३५४) कनकसेन।

ग्रंथ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१३५५) कनीराम।

ग्रंथ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१३५५/१) कविसद पडित।

विवरण—ये करौली के ब्राह्मण थे और गोस्वामी-भक्ति-प्रकाश ग्रंथ की रचना की है।

नाम—(१३५५/२) कमनीय।

ग्रंथ—फुटकर कविता।

नोम—(१३५६) कमोदसिंह कायस्थ, बिजावर।

ग्रथ—स्फुट।

नाम—(१३५६/१) करनेश।

विवरण—काठियावाड़ के रहनेवाले "औघड़" के शिष्य थे।

ग्रंथ—कर्णमंजुमणि।

नाम—(१३५६/२) कलक।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

नाम—(१३५७) करुणानिधि।

विवरण—भक्तकवि।

नाम—(१३५८) कर्तारास।

ग्रंथ—दानलीला।

नाम—($\frac{१३५८}{१}$) कान्होराम।

विवरण—नागर-समुच्चय में इनकी कविता पाई जाती है। राजा मँझौली के यहाँ थे।

नाम—(१३५९) कामताप्रसाद, असोथर।

ग्रंथ—नखशिख।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१३६०) कालिकाप्रसाद, लखनऊ।

ग्रंथ—प्रफुल्ला।

विवरण—गद्य-लेखक।

नाम—(१३६१) कालिका वंदीजन।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१३६२) कालिदास।

ग्रंथ—भ्रमर-गीत। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(१३६३) कालीदीन।

ग्रंथ—दुर्गा-भाषा।

विवरण—दुर्गा-भाषा बड़ी ओजस्विनी भाषा में लिखी है और स्फुट छंद भी इनके सुनने में आते हैं। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है।

नाम—(१३६४) कालूराम।

ग्रंथ—फुटकर कविता।

नाम—(१३८०) कूबो ।

विवरण—भक्त कवि थे ।

नाम—(१३८०/१) केवल ।

ग्रंथ—फुटकर छंद ।

नाम—(१३८०/२) केशव ।

ग्रंथ—प्रेम-छतीसी तथा शब्द-विभूषण ।

नाम—(१३८०/३) केसर ।

ग्रंथ—फुटकर ।

नाम—(१३८१) केशव कवि । देखो नं० (१८३६/१)

नाम—(१३८२) केशवगिरि । देखो नं० (११३७/१)

नाम—(१३८३) केशवमुनि ।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१३८४) केशवराम ।

ग्रंथ—भ्रमर-गीत ।

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१३८५) केशवराय, बुँदेलखंड, कायस्थ ।

ग्रंथ—गणेशकथा । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१३८६) केशोदास, ग्राम पिचीयाक (मारवाड)।

ग्रंथ—केशवबावनी ।

विवरण—ज्ञान-विषय ।

नाम—(१३८६/१) कोक । इनकी फुटकर कविता गोविंदगिल्लाभाई के संग्रह में हैं ।

नाम—(१३८६/२) कोसल ।

ग्रंथ—इश्क-मजरी । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१३८६/३) कोविद कविमित्र ।

ग्रंथ—इन्होंने 'भाषा-हितोपदेश' ग्रंथ बनाया है।

नाम—(१३८७) कृपानाथ।

ग्रंथ—फुटकर कविता।

नाम—(१३८८) कृपा सखी।

ग्रंथ—फुटकर कविता।

नाम—(१३८६) कृपा सहचरी।

ग्रंथ—रहस्योपास्य ग्रंथ [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—वैष्णव, सखी-उपासना।

नाम—(१३८६/१) कृष्णदासभावुकजी।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१३८६/२) कृष्णदास राधा वालहित।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१३८६/३) कृष्णदास साधु।

ग्रंथ—ज्ञान-प्रकाश।

नाम—(१३८६/४) कृष्णविहारी शुक्ल।

ग्रंथ—ज्ञानाभूषण।

नाम—(१३६०) कृष्णलाल, बाँकीपूर।

ग्रंथ—(१) मुद्राकुलीन, (२) समुद्र में गिरींद्र।

विवरण—गद्य-लेखक।

नाम—(१३६०/१) कृष्णावती।

ग्रंथ—विवाह-विलास। [तृ० त्रै० रि०]

नाम—(१३६१) खुसाल पाठक, रायबरेलीवाले।

नाम—(१३६२) खूबी।

नाम—(१४१२) गोपालदत्त ।

ग्रंथ—शृंगारपचीसी । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४१३) गोपालसिंह व्रजवासी ।

ग्रंथ—(१) तुलसीशब्दार्थप्रकाश, (२) अष्टछापसंग्रह ।

नाम—(१४१४) गोपीचंद मगही कवि ।

विवरण—इनका नाम डॉक्टर ग्रियर्सन साहब ने लिंग्विस्टिक सर्वे में लिखा है ।

नाम—(१४१५) गोवर्धनदास कायस्थ ।

ग्रंथ—स्फुट ।

नाम—(१४१५/१) गोविंदप्रभु ।

ग्रंथ—गीतचिंतामणि । [तृ० त्रै० रि०]

विवरण—गौड़ संप्रदाय के वैष्णव थे ।

नाम—(१४१६) गोविंदसहाय कायस्थ, सिकंदराबाद ।

ग्रंथ—श्यामकेलि ।

नाम—(१४१७) गोसाईं राजपूतानावाले ।

विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—(१४१८) गौरी । देखो नं० (१४१४/१)

ग्रंथ—आदित्यकथा बड़ी । [खोज १९००]

नाम—(१४१८/१) गंग ।

ग्रंथ—सुदामाचरित्र । [खोज १९००]

विवरण—दादूपंथी ।

नाम—(१४१९) गंगन ।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१४२०) गंगल ।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१४२१) गगा।
ग्रंथ—(१) सुदामाचरित्र, (२) विष्णुपद। [प्र० त्रै० रि०]
विवरण—स्त्री-कवि बुँदेलखंड की।
नाम—(१४२२) गगाधर, बुँदेलखंडी।
ग्रंथ—उपसतसैया (सतसई पर कुडलिया लिखी हैं)।
विवरण—साधारण श्रेणी के कवि हैं।
नाम—(१४२३) घमरीदासजी साधु।
ग्रंथ—नाममाहात्म्य।
नाम—(१४२४) घमंडीराम साधु।
ग्रंथ—भजन।
नाम—(१४२५) घाटमदास साधु।
ग्रथ—फुटकर कवित्त।
नाम—(१४२६) घासी भट्ट।
नाम—(१४२७) घासीराम उपाध्याय, समथर, बुँदेलखंड।
ग्रंथ—ऋपिपचमी की कथा। [प्र० त्रै० रि०]
विवरण—(दोहा चौपाई) साधारण।
नाम—(१४२८) चक्रपाणि मैथिल।
नाम—($\frac{१४२८}{१}$) चतुरअलि।
ग्रंथ—समयप्रबंध। [तृ० त्रै० रि०]
विवरण—गोस्वामी घनश्यामलाल के शिष्य तथा हित सम्प्रदाय के थे।
नाम—(१४२९) चतुर्भुज मैथिल।
ग्रंथ—भवानीस्तुति। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—($\frac{१४२९}{१}$) चतुर सुजान।
ग्रथ—फूल चेतावनी। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४२९/२) चतुरसाल ।

ग्रंथ—इनके बनाए हुए निम्न-लिखित दो ग्रंथ हैं—(१) शृंगारलंकारमंजरी, (२) पद्यसारोद्धार ।

नाम—(१४३०) चरपट जोगी ।

ग्रंथ—फुटकर बानी ज्ञानमार्ग की ।

नाम—(१४३१) चानी ।

ग्रंथ—दोहे ।

नाम—(१४३२) चालकदान चारण ।

ग्रंथ—आबू राठौर का यश ।

विवरण—आबू राठौरजी का यश और इतिहास का वर्णन ।

नाम—(१४३३) चिंतामणि ।

ग्रंथ—ज्ञानसहेला । गीतगोविंदार्थ सूचनिका । बत्तीस अक्षरी । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—काशी के साथ बनाया ।

नाम—(१४३३/१) चिम्मनसिंह ।

ग्रंथ—प्रश्नोत्तर नीतिशतक । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४३४) चेतनदासजी स्वामी ।

ग्रंथ—बानी ।

नाम—(१४३४/१) चेन ।

ग्रंथ—स्फुट दोहा । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४३५) चोखे ।

ग्रंथ—निम्न श्रेणी ।

नाम—(१४३६) चंद ।

ग्रंथ—पिंगल । [खोज १९०५]

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१४३७) चद्रदास ।

ग्रंथ—रामायण भाषा (पृ० ५० पद्य)

नाम—(१४३८) चद्ररसकुंद ।

ग्रंथ—गुणवतीचंद्रिका (पृ० १६४) (शृंगार) [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१४३९) चद्रावल ।

ग्रंथ—फुटकर भजन ।

नाम—(१४४०) चिंतामणिदास ।

ग्रंथ—अवरीपचरित्र । [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१४४१) छत्तन ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१४४२) छत्रपति ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१४४३) छेम ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१४४४) छेमकरन अंतर्वेदी । इनका ठीक नं० (११३७/१) है ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१४४५) छोटालाल ।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१४४६) छोटूराम, बाँकीपूर ।

ग्रंथ—रामकथा ।

विवरण—गद्य-लेखक ।

नाम—(१४४७) जगनेस ।

नाम—(१४४८) जगन्नाथ।

ग्रथ—चौरासीबोल ।

नाम—(१४४८/१) जगन्नाथ भट्ट ।

ग्रथ—रसप्रकाश । [च० त्रै० रि०]

नाम—(१४४६) जगन्नाथ मिश्र, जौनपुर ।

ग्रथ—राजा हरिचंद्र की कथा (पृ० ३६ पद्य) । [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(१४५०) जगन्नाथप्रसाद कायस्थ, कुम्मी जि० मथुरा ।

ग्र थ—१० वर्ष की फलरीति ।

नाम—(१४५१) जगन्नाथप्रसाद कायस्थ, समथर (बुँ०ख०)

ग्रंथ—व्रजदरशमाला ।

विवरण—इस ग्रथ में समथर-नरेश की व्रजयात्रा का वर्णन है ।

नाम—(१४५१/१) जगवंशराय ।

ग्रथ—संग्रह । [च० त्रै० रि०]

नाम—(१४५१/२) जतना स्वामी ।

ग्रंथ—पद्यावली ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—(१४५२) जनगूजर ।

ग्रंथ—कृष्णपचीसी । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४५३) जनछीतम ।

विवरण—कवि व भक्त थे ।

नाम—(१४५४) जनजगदेव ।

ग्रंथ—ध्रुवचरित्र । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४५५) जनतुलसी ।

विवरण—भक्त व कवि थे ।

नाम—(१४५६) जन हमीर।

ग्रंथ—रामरहस्य। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१४५७) जनहरजीवन साधु।
ग्रंथ—फुटकर भजन।
नाम—($\frac{१४५७}{१}$) जपुजी साहब।
ग्रंथ—शब्द हज़ारा। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१४५८) जयनद मैथिल कायस्थ।
नाम—(१४५९) जयराम।
ग्रथ—फुटकर कवित्त।
नाम—(१४६०) जयमगलप्रसाद।
ग्रंथ—गगाष्टक। [द्वि० त्रै० रि०]
नाम—(१४६१) जयनारायण।
ग्रथ—काशीखड भाषा। [द्वि० त्रै० रि०]
नाम—(१४६२) जयानद कायस्थ।
ग्रंथ—मैथिल भाषा में स्फुट रचना की है।
नाम—($\frac{१४६२}{१}$) जादो भक्त।
ग्रथ—फुटकर बानी।
ववरण—राधावल्लभी।
नाम—(१४६३) जानराय साधु।
ग्रथ—फुटकर भजन।
नाम—($\frac{१४६३}{१}$) जिनदास पडित।
ग्रंथ—योगीरासा। [च० त्रै० रि०]
नाम—(१४६४) जीवनदास।
ग्रंथ—ककहरा। [द्वि० त्रै० रि०]
नाम—(१४६५) जुगराज।
विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१४६६) जुगलकिशोर ।

ग्रंथ—जुगल आह्निक । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४६७) जुगलदास । इनका ठीक नं० (१४६८/१) है ।

ग्रंथ—निम्न श्रेणी की पद्य रचना की है ।

नाम—(१४६७/१) जुगलप्रसाद चौबे ।

ग्रंथ—रामचरित्र दोहावली । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४६८) जैमलदास महाराजा ।

ग्रंथ—(१) जैमलदास महाराजाजीरो पदबंध वानी, (२) जैमलजीरा पद ।

नाम—(१४६९) जोधाचारण, मारवाड़ ।

ग्रंथ—फुटकर गीत कवित्त ।

नाम—(१४६९/१) जत्रीजी ।

ग्रंथ—पद्यावली ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—(१४७०) ज्वालासहाय (सेवक) कायस्थ ।

ग्रंथ—स्फुट ।

नाम—(१४७१) ज्वालास्वरूप कायस्थ, सिकंदराबाद ।

ग्रंथ—रामायण ।

नाम—(१४७१/१) झड्डूदास ।

ग्रंथ—बारामासा । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४७२) टहकन, पंजाबी । इनका ठीक नं० (१४७२/१) है

ग्रंथ—पांडव का यज्ञ ।

नाम—(१४७३) टामसन ।

ग्रंथ—(१) गोलाध्याय, [खोज १६०४] (२) हिंदी-अँगरेज़ी कोष ।

नाम—(१४७३/१) ढुंढरस कवि पुरविया।

चतुरनायिका शिशिर ऋतुमध्ये क्रीडा करत नतच्छन ऐन ;
आयो सुभग चहुँ दिसि चितवत कर गहे कनक वनक सुखदैन।
रोके मास प्रवास अंबुधर सारंग भवनन पर वैन ;
ढुंढरस कवि अचरज यह दीठो फिरि गयो चतुर समझकर वैन।

नाम—(१४७३/२) टोडरमल्ल।

ग्रंथ—शृंगार सौरभ, रसचंद्रिका। [च० त्रै० रि०]

नाम—(१४७४) ठाकुरराम।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१४७५) ढाकन।

विवरण—साधारण श्रेणी के कवि हैं।

नाम—(१४७५/१) तत्त्वकुमार मुनि।

ग्रंथ—श्रीपाल चौपाई।

उदाहरण—

आदि पुरुष आदीसरू, आदि राय आदेय ;
परमातमा परमेसरू, नमो-नमो नाभेय।
तासि सीस मुनि तत्त्वकुमार ; तिन ए गाओ चरित रसाल।

नाम—(१४७६) तार (ताहर) ख़ान मुसलमान।

ग्रंथ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१४७७) तारपानि।

ग्रंथ—भागीरथी-लीला। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४७७/१) ताराचंद राव।

ग्रंथ—व्रजचंद्र चंद्रिका। [च० त्रै० रि०]

नाम—(१४७८) तीकम (टीकम) दास साधु।

ग्रंथ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१४७९) तुलङ्गराय।

नाम—(१४८०) तेजसी राजपूत, मारवाड़।

ग्रंथ—फुटकर गीत कवित्त।

नाम—(१४८१) तैलग भट्ट, जैसलमेर।

ग्रंथ—रणजीत रत्नमाला वैद्यक।

विवरण—ये महारावल रणजीतसिंह जैसलमेर-नरेश के दरबार में थे। साधारण श्रेणी। संवत् १८७० तक वहाँ कोई महाराजा रणजीतसिंह नहीं हुए। शायद इसके पीछे के हों।

नाम—(१४८१/१) त्रिविक्रमदास।

ग्रंथ—वसंतराज शकुन शास्त्र भाषा।

नाम—(१४८२) दत्त। इनका ठीक नंबर (६१२/१) है।

ग्रंथ—स्वरोदय।

नाम—(१४८३) दयाकृष्ण। [प्र० त्रै० रि०]

ग्रंथ—(१) पदावली, (२) स्फुट कवित्त। पिंगल, बलदेव-विलास सं० १९०२ में मरे। ग्रंथ सं० १८६८ में रचा।

नाम—(१४८४) दयादास।

ग्रंथ—(१) जनकपचासा, (२) विनयमाला [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४८४/१) दयानिधि।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१४८५) दयाल कायस्थ, बनारस।

ग्रंथ—राशिमाला।

नाम—(१४८६) दयासागर सूरि। (देखो नं० ३८/३)

ग्रंथ—धर्मदत्तचरित्र।

विवरण—जैन कवि हैं। [खोज १९००]

विवरण—गद्य-लेखक थे।

नाम—(१४८७) दर्शनलाल कायस्थ।

ग्रंथ—रामायण तुलसी-कृत। [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—बनारस-नरेश महाराजा ईश्वरीप्रसादसिंह के यहाँ नौकर थे।

नाम—(१४८८) दसानद।

ग्रंथ—हरदौलजी को ख्याल।

नाम—(१४८९) दाक।

विवरण—खेती-संबंधी काव्य है।

नाम—(१४९०) दास अनत।

नाम—(१४९१) दास गोविंद।

विवरण—भक्त व कवि थे।

नाम—(१४९२) दासी।

विवरण—भक्तिन कवि।

नाम—(१४९२/१) दिवाकर।

नाम—(१४९३) दीनदास। (देखो न० १२२१)

ग्रंथ—गोकुलकांड [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४९३/१) दीहल।

विवरण—कुडला ग्राम काठियावाड़-निवासी। जाति के मुसलमान थे।

नाम—(१४९४) दुर्गाप्रसाद।

ग्रंथ—अजीतसिंह फतेहरस अर्थात् नायकरासो। [खोज १९००]

नाम—(१४९५) दुर्जनदास साधु।

ग्रंथ—रागमाला [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१४९६) दूलनदास ।

ग्रंथ—शब्दावली (पृ० १२४) इनका ठीक नं० (२३०२/१) है ।

विवरण—रामनाममाहात्म्य ।

नाम—(१४९७) देवनाथ ।

नाम—(१४९८) देवमणि ।

ग्रंथ—(१) चाणक्यनीति भाषा (१६ अध्याय तक), [प्र० त्रै० रि०] (२) चरनायके [द्वि० त्रै० रि०] (पृ० १२) ।

विवरण—राजनीति ।

नाम—(१४९९) देवराम ।

ग्रंथ—फुटकर कवित्त ।

आधुनिक संग्रह ग्रंथों में इनकी कविता बहुत छपी है । जैसे कि हफ़ीज़ुल्लाख़ाँ का हज़ारा । सुंदरी सर्वस्व । नखशिख हज़ारा । षट् ऋतु हज़ारा । मनोजमंजरी । मनोरंजन संग्रह आदिक छपे हुए ग्रंथों में इनकी कविता बहुत है ।

नाम—(१५००) देवीदत्त ।

ग्रंथ—नरहरिचंपू ।

नाम—(१५०१) देवीदत्तराय ।

ग्रंथ—महाभारत भाषा ।

नाम—(१५०२) देवीदास । (देखो नं० १२६०/१)

ग्रंथ—(१) भाषा भागवत द्वादश स्कंध, [खोज १९०४] (२) दामोदर लीला (पृ० ६६ पद्य) ।

विवरण—कृष्ण-विषयक ।

नाम—(१५०३) देवीप्रसाद मुज़फ़्फ़रपूर ।

ग्रंथ—प्रवीण-पथिक ।

विवरण—गद्य-लेखक थे ।

नाम—(१५०४) द्वारिकादास साधु राधावल्लभी।
ग्रंथ—फुटकर भजन।
नाम—(१५०५) द्वारिकेश (व्रज)।
ग्रंथ—द्वारिकेशजी की भावना। [प्र० त्रै० रि०] नित्य कृत्य [तृ० त्रै० रि०]
नाम—(१५०६) द्विजकिशोर।
ग्रंथ—तेरहमासी।
नाम—(१५०७) द्विजनदास।
ग्रंथ—रागमाला।
नाम—(१५०८) द्विजनद।
विवरण—निम्न श्रेणी।
नाम—(१५०६) द्विजराम।
विवरण—निम्न श्रेणी।
नाम—(१५१०) धरणीधर।
ग्रंथ—शब्दप्रकाश (पृ० २७०)। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—ज्ञान-भक्ति का वर्णन है।
नाम—(१५११) धरमपाल।
ग्रंथ—छछूँदरि रायसो।
नाम—(१५१२) धोधी।
ग्रंथ—फुटकर कविता।
नाम—(१५१३) ध्यानदास साधु। [खोज १६०१]
ग्रंथ—(१) हरिचदशत, (२) दानलीला, (३) मानलीला। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१५१४) नकुल।
ग्रंथ—सालिहोत्र। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(१५४७) पृथ्वीनाथ ।

ग्रंथ—(१) सिसमोध आत्मप्रचार परिचय [खोज १६०२] योगग्रंथ, (२) फुटकर छंद ।

नाम—(१५४८) पृथ्वीराज चारण ।

ग्रंथ—गण अभयविलास ।

नाम—(१५४९) पृथ्वीराज प्रधान कायस्थ, बुँदेलखंडी ।

ग्रंथ—शालिहोत्र ।

विवरण—हीन श्रेणी । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१५५०) प्रधान केशवराय ।

ग्रंथ—शालिहोत्र भाषा ।

नाम—($\frac{१५५०}{१}$) प्रयागदत्त ।

ग्रंथ—रामचंद्र के विवाह का बारहमासा । [तृ० त्रै० रि०]

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१५५१) प्रिया सखी ।

ग्रंथ—रसरत्नमंजरी । [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—अयोध्या के महंत, रामानुजी सम्प्रदाय के थे ।

नाम—(१५५२) प्रियादास । (राधावल्लभी सम्प्रदाय)

ग्रंथ—(१) प्रियादासजी की वार्ता, (२) स्फुट पद टीका, (३) सेवादर्पण, (४) तिथिनिर्णय, (५) भाषावर्षोत्सव, [द्वि० त्रै० रि०] (६) चाहबेल ।

विवरण—पिता का नाम था श्रीनाथ । पहले पटना में रहते थे फिर वृंदावन में रहने लगे ।

नाम—(१५५३) प्रेमकेश्वरदास ।

ग्रंथ—द्वादश स्कंध भागवत भाषा ।

नाम—(१५५४) प्रेमनाथ इंद्रावती ।

ग्रंथ—पदावली (पृ० २७६ पद्य)।

विवरण—आप योगी थे। आपकी समाधि रियासत पन्ना में है।

नाम—($\frac{१५५४}{१}$) फकीरुद्दीन।

ग्रंथ—स्फुट कवित्त।

विवरण—सूरतवासी सिपाही थे।

नाम—(१५५५) फ़तेहसिंह।

नाम—(१५५६) फूली बाई, उपनाम अनंतदास।

ग्रंथ—फूली बाई की परची।

नाम—(१५५७) फेरन।

विवरण—तोप-श्रेणी।

नाम—(१५५८) बकसी।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१५५९) बखताजी चारण, (खिडिया) मारवाड़।

ग्रंथ—फुटकर गीत।

नाम—(१५६०) बजरंग।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१५६१) बजहन।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१५६२) बद्रीदास साधु।

ग्रंथ—फुटकर भजन।

नाम—(१५६३) बनानाथ जोगी।

ग्रंथ—बानी (एक छंद)।

विवरण—श्लोक-संख्या २८७। विषय उपदेश ज्ञान।

नाम—($\frac{१५६३}{१}$) बनारसी।

ग्रंथ—साधुवंदना। [च० त्रै० रि०]

नाम—(१५६४) वरगराय ।

ग्रंथ—गोपाचलकथा ।

विवरण—ग्वालियर की कथा इसमें है ।

नाम—(१५६५) वरजोर प्रधान कायस्थ, लुगासी बुँदेलखंड ।

ग्रंथ—रुक्मिणीमंगल ।

नाम—(१५६६) बलदेवप्रसद कायस्थ, मँझोली, ज़िला गोरखपुर ।

ग्रंथ—चित्रगुप्तपचीसी ।

नाम—($\frac{१५६६}{१}$) वल्लभ ।

ग्रंथ—गूढ़ शतक । [च० त्रै० रि०]

नाम—($\frac{१५६६}{२}$) बलवंतसिंह ।

ग्रंथ—चित्रविनोद । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—अजयगढ़वासी ।

नाम—(१५६७) बलिदास ।

ग्रंथ—दानलीला [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१५६८) बल्लू चारण, मारवाड़ ।

ग्रंथ—फुटकर गीत ।

नाम—(१५६९) बाघा चारण, मारवाड़ ।

ग्रंथ—फुटकर गीत ।

नाम—(१५७०) बाज ।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१५७१) बाजाराम ।

ग्रंथ—भजन ।

नाम—(१५७२) बाजिदजी ।

ग्रंथ—बाजिदजी के अरेला ।

नाम—($\frac{१५७२}{१}$) वानी।

ग्रंथ—भूपालभूषण।

विवरण—उनियारा जयपूर के ठाकुर भूपालसिंह के यहाँ थे।

नाम—(१५७३) वावासाहव, नैपाल।

ग्रंथ—(१) उपदंशारि (पृ० ७० गद्य), (२) अमृतसंजीवनी (पृष्ठ ४६ गद्य), (३) ज्वरचिकित्साप्रकरण (पृ० २५२ गद्य), (४) स्त्रीरोगचिकित्सा (पृ० १४७ गद्य)।

विवरण—वैद्यक विषय आपने कहा है।

नाम—(१५७४) वावू भट्ट।

नाम—(१५७५) वालकदास साधु।

ग्रंथ—(१) फुटकर भजन, (२) सुदामाचरित्र (ग्रंथ-काल अज्ञात। ग्रंथ का लेखन काल १८२२ A. D.) सामुद्रिक।

विवरण—क़दम के शिष्य। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१५७६) वालकृष्णदासजी साधु।

ग्रंथ—राजप्रशस्ति का उल्था।

विवरण—ये विष्णुस्वामी-संप्रदाय के वैष्णव थे।

नाम—(१५७७) वालगोविंद कायस्थ, इलाहावाद।

ग्रंथ—श्रीआनंदलहरी।

विवरण—ज़िला जौनपुर के मौज़े परशुरामपुर में ज़मींदारी। इनकी प्राचीन जागीर थी।

नाम—(१५७८) वालचंद जैन। देखो नं० ($\frac{६७}{२}$)

ग्रंथ—रामसीताचरित्र।

नाम—($\frac{१५७८}{१}$) वालसनेहीदास।

ग्रंथ—सहज मानलीला। [तृ० त्रै० रि०]

विवरण—गोस्वामी समक्ष पढ़ते हैं।

नाम—($\frac{१५७८}{२}$) बावरी सखी।

ग्रंथ—पद्यावली।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१५७९) वासुदेवलाल।

ग्रंथ—हिंदी-इतिहाससार।

नाम—(१५८०) वाहिद।

विवरण—तोप-श्रेणी।

नाम—(१५८१) विट्ठल कवि।

विवरण—शृंगाररस की कविता की है, जो निम्न श्रेणी की है।

नाम—(१५८२) विद्यानाथ चतुर्वेदी।

नाम—(१५८३) विनायकलाल कायस्थ, छपरा सिउनी, मध्यप्रदेश।

ग्रंथ—(१) चंद्रभागा, (२) वीरविनोद उपन्यास।

नाम—(१५८४) विश्वनाथ वंदीजन, टिकई ज़िला राय-बरेली।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१५८५) विश्वेश्वर।

विवरण—निम्न श्रेणी, वैद्यक का ग्रंथ बनाया है।

नाम—(१५८६) विश्वेश्वरदत्त पाँड़े, बिलासपुर।

ग्रंथ—(१) हितोपदेशसार, (२) दत्तात्रेयोपदेश, (३) हनुमानस्तोत्र, (४) रामरक्षा।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१५८७) विष्णुदत्त महापात्र, विंध्याचल।

ग्रंथ—दुर्गाशतक (पृ० २८ पद्य)। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(१५८८) विष्णुस्वामी बालकृष्णजी।

ग्रंथ—अजितोदय-भाषा।

नाम—(१५८९) विसंभर।

नाम—($\frac{१५८६}{१}$) विहारीलाल।

ग्रंथ—सतसई पुस्तक खंडित है। केवल नखशिख वर्णन का भाग उपलब्ध है।

विवरण—आप जाति के खरे कायस्थ हैं। आपके पिता का नाम मोहनलाल है। आपके वंश-नायक लाहरजी, शाहजहाँ के दरबार में दीवान थे।

उदाहरण—

लै सुमना सुत चीकनी, कारे बार सँवारि।
मन विछलन मन हरन लखि, गूँथी बेनी नारि॥ १॥
तव मुख अरु शशि में मखी, रह्यो एक ही चीन्ह।
श्याम बिंदु दैकै तनिक, भलो इंदु सम कीन्ह॥ २॥
भली करी घूँघट धरी, लोपन गोपन काज।
चटक चौगुनो होत है, ढपे आँखते बाज॥ ३॥
रवि शशि औ तव रूप को, तौल्यो तौलनहार।
तूँ गँभीर जग में रही, उठिगे ओछे भार॥ ४॥
नहि बचात चुभि जात हिय, अधिक चुभात सोहात।
बलि तव चितवन बान की, नई अनोखी बात॥ ५॥

नाम—($\frac{१५८६}{२}$) विहारीदास।

ग्रंथ—राधाकृष्ण की रति।

नाम—($\frac{१५८६}{३}$) विहारीलाल भट्ट।

ग्रंथ—संगीतदर्पण।

विवरण—दतियावासी।

नाम—(१५९०) विंदादत्त।

नाम—(१५९१) बीठू (जी) चारण, ग्राम जागलू, जिला बीकानेर ।

ग्रंथ—राव सीमस्री और कँवरसी की वार्ता ।

विवरण—आश्रयदाता राव सीमसी (मारवल)

नाम—(१५९२) बुद्धिसेन ।

विवरण—निम्न श्रेणी के कवि थे ।

नाम—(१५९३) बुधानंद ।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

विवरण—भक्त थे ।

नाम—(१५९४) बुलाकीदास ।

नाम—(१५९५) बेनीमाधव भट्ट ।

नाम—(१५९६) बेसाहूराम ।

ग्रंथ—नाममाला । [खोज १९०२]

नाम—(१५९७) बैजनाथ दीक्षित, बदरका बैसवाड़ा ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१५९८) बैन ।

नाम—(१५९९) बोध ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१६००) बृंदावन कायस्थ, ताईकुआँ, झाँसी ।

ग्रंथ—(१) कृष्णचरितावली, (२) दोहावलीप्रदीपिका, (३) रामचरितावली ।

नाम—(१६०१) बका ।

ग्रंथ—कृष्णविलास (पद्य) । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१६०२) व्येंकटेशजू।
ग्रंथ—आत्माप्रबोध।
नाम—($\frac{१६०२}{१}$) व्रजगोपालदास।
ग्रंथ—(१) राधासुधानिधि की टीका, (२) हित फुटकर वाणी की टीका।
विवरण—राधावल्लभी।
नाम—(१६०३) व्रजनद।
ग्रंथ—फुटकर कविता।
नाम—(१६०४) व्रजवल्लभदास।
ग्रंथ—(१) प्रह्लादचरित्र, (२) सुदामाचरित्र, (३) अजामिलचरित्र। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—हीन श्रेणी।
नाम—($\frac{१६०४}{१}$) व्रजभानु दीक्षित।
ग्रंथ—वल्लभाख्यान की टीका। [च० त्रै० रि०]
नाम—(१६०५) व्रजेश, बुँदेलखंडी।
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(१६०६) व्रह्मदास।
ग्रंथ—व्रह्मदासजी के छंद।
नाम—($\frac{१६०६}{१}$) व्रह्मविलास।
ग्रंथ—व्रह्मविलास के कवित्त। [च० त्रै० रि०]
नाम—(१६०७) व्रह्मज्ञानेंद्र।
ग्रंथ—व्रह्मविलास। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—हीन श्रेणी।
नाम—(१६०८) भगत।
ग्रंथ—भक्तचालीसा। (पृ० ६) [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(१६०९) भगवानदास।

नाम—(१६१०) भड्डरी, शाहाबाद (बिहार)।

ग्रंथ—भड्डरीपुराण।

विवरण—ज्योतिष शकुनावली बनाई। इनकी भाषा अवधी ग्रामीण है, इस कारण ये बिहार के नहीं जान पड़ते। निम्न श्रेणी। [खोज १९००]

नाम—(१६११) भद्र।

ग्रंथ—नखशिख। [खोज १९०

नाम—(१६१२) भद्रसेन।

ग्रंथ—छंदसंग्रह। चंदन मलयागिर वार्ता। [खोज १९०२]

नाम—(१६१३) भरथ (भरत)।

ग्रंथ—हनूमानबिरदावली (पृ० २४ पद्य)। ऊषा अनिरुद्ध की कथा।

विवरण—साधारण श्रेणी। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(१६१३/१) भवन कवि, बैंती।

ग्रंथ—शृंगाररत्नाकर।

नाम—(१६१४) भवानीदत्त।

ग्रंथ—दुघरिया मुहूर्त भाषा।

नाम—(१६१४/१) भाऊ कवि।

ग्रंथ—आदित्य कथा बड़ी।

विवरण—मलूक के पुत्र जैन थे। इनकी माता का नाम गौरी था।

नाम—(१६१५) भाऊदास साधु।

ग्रंथ—फुटकर भजन।

नाम—(१६१५/१) भिखजन दास।

ग्रंथ—सौरंग की कथा। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१६१६) भीखजन ब्राह्मण।

ग्रंथ—बावनी।

विवरण—नीति, ज्ञानोपदेश। श्लोक-संख्या ५००।

नाम—(१६१७) भीखूजी।

ग्रंथ—ढुंढोरापोल।

विवरण—राजपूतानी भाषा के कवि।

नाम—(१६१८) भूधरमल।

ग्रंथ—भूपाल चौबीसी। [खोज १६००]

नाम—(१६१९) भूप, शहज़ादपुर।

ग्रंथ—चंपू सामुद्रिक भाषा। [खोज १६०३]

नाम—(१६२०) भेख।

ग्रंथ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६२१) भैरौं कवि, लुहार सीकर।

ग्रंथ—स्फुट।

विवरण—खेतड़ी के राजा बाघसिंह की प्रशंसा में बहुत-से छंद बनाए थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(१६२१/१) भोरी सखी।

ग्रंथ—पद्यावली।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१६२२) भोलानाथ, कन्नौज।

ग्रंथ—(१) बैतालपचीसी, (२) भाषा लीलावती। [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—दीक्षित थे।

नाम—(१६२२/२) मकसूदन गिर गोस्वामी।

ग्रंथ—वैद्यकसार। [प० त्रै० रि०]

नाम—(१६२३) मतिरामजी।

ग्रंथ—कविरत्नमालिका।

नाम—(१६२४) मदनगोपाल, चरखारीवाले।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१६२५) मदनसिंह कायस्थ, अजयगढ़।

ग्रंथ—स्फुट।

विवरण—राजकुमारों के संरक्षक थे।

नाम—(१६२६) मननिधि।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६२६/१) मनमोहन।

ग्रंथ—रसशिरोमणि। [पं० त्रै० रि०]

नाम—(१६२७) मनरस।

ग्रंथ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६२८) मन्य।

ग्रंथ—रसकुंड। [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६२९) महावीरप्रसाद कायस्थ, भागलपूर।

ग्रंथ—ज्ञानप्रभाकर।

नाम—(१६३०) महासिंह राजपूत।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

नाम—(१६३१) महीपति मैथिल।

नाम—(१६३२) मातादीन कायस्थ, लखनऊ।

ग्रंथ—(१) ख़यालात मातादीन, (२) ख़याल राजा भरथरी।

नाम—(१६३३) माधवप्रसाद।

ग्रंथ—काशीयात्रा। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(१६३४) माधवराम ।

ग्रंथ—माधवराम-कुंडलिया (पृ० १८०) ।

नाम—(१६३५) माधवनारायण, उपनाम केशन मैथिल ।

विवरण—राजा प्रतापसिंह के यहाँ थे ।

नाम—(१६३६) मानिकदास माथुर कवि ।

ग्रंथ—(१) मानिकबोध, (२) कवित्तप्रबंध । [खोज १६०१]

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—($\frac{१६३६}{१}$) मीरन ।

इनकी कविता छपे हुए बहुत-से संग्रह ग्रंथों में है । इनकी कविता का नमूना—

हौं मनमोहन सों मिलि कै करती उहाँ केलि घनी तरु छाहीं ;
सो सुख "मीरन" कासों कहौं मन मारि मिसूसनि ही मुरझाहीं ।
पात गए झरि धूम के पुंजन कूह परी सिगरे बन माहीं ;
ग्राम के लोग महा निरदै जो पलासन कोउ बुझावत नाहीं ।
"मीरन" बिछुरत ही पिया, उलट गयो संसार ;
चंदन, चंदा, चाँदिनी, भए जरावनहार ।

नाम—($\frac{१६३६}{२}$) मिश्र ।

ग्रंथ—शाहनामा । [खोज १६०४]

विवरण—युधिष्ठिर से शाहआलम पर्यंत राज्य-परंपरा तथा उसका समय निरूपण ।

नाम—($\frac{१६३६}{३}$) मीठाजी ।

ग्रंथ—पद्मावती ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—(१६३७) मुकुंदलाल (जौहरी) कायस्थ काकोरी, लखनऊ

ग्रंथ—फरीमा भाषा पद्य।

विवरण—फ़ारसी के दो-दो पद्यों के अनंतर हिंदी का एक-एक
दोहा मन-प्रसन्नकारक बनाया है।

नाम—(१६३८) मुनि, ब्राह्मण फ़तेहपूर।

ग्रंथ—राम-रावण का युद्ध। सीताराम विवेक। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(१६३९) मुनिलाल। उनका ठीक नंबर अब
(१६०) है।

नाम—(१६४०) मुनी।

ग्रंथ—फुटकर कविता।

नाम—(१६४१) मुरलीदास साधु।

ग्रंथ—फुटकर भजन।

नाम—(१६४१/१) मुरलीधर।

ग्रंथ—श्रीसाहिबजी की कविता। [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—प्रनामी संप्रदाय के थे।

नाम—(१६४२) मुरलीराम साधु।

ग्रंथ—(१) चितावनी सारबोध, (२) साखियाँ ज्ञान ब्रह्म को अंग।

नाम—(१६४३) मुरलीराम।

ग्रंथ—महाराज मुरलीराम जीरा पद। [खोज १९०२]

नाम—(१६४३/१) मुरली सखी।

ग्रंथ—भावनाशतक।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१६४४) मुरारीदास साधु।

ग्रंथ—फुटकर भजन-कीर्तन।

नाम—(१६४५) मूरतिराम।

ग्रंथ—साधाँ श्रीमूरतिराम जीरा पद। [खोज १९०२]

नाम—(१६४६) मेघराज मुनि, मु० फगवाड़ा।
ग्रंथ—मेघविनोद (पृ० ४१८ पद्य) [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—वैद्यक ।
नाम—(१६४७) मेणा भाट ।
ग्रंथ—फुटकर कवित्त।
नाम—($\frac{१६४७}{१}$) मोलवी साहब।
ग्रंथ—दूषण उल्लास। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१६४८) मोहकम ।
ग्रंथ—फुटकर कवित्त।
नाम—(१६४९) मोहनदास ।
ग्रंथ—(१) कृष्णचंद्रिका, (२) भागवत दशम स्कंध भाषा ।
विवरण—शायद राजा मधुकरशाह के वंशधरों के पुरोहित थे।
नाम—(१६५०) मोहनदास भंडारी ।
ग्रंथ—पद। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—($\frac{१६५०}{१}$) मोहन मत्त ।
ग्रंथ—झाँझ।
विवरण—राधावल्लभी ।
नाम—(१६५१) मोहनलाल कायस्थ, हरिद्वार ।
ग्रंथ—गोरक्षा में सर्वसम्मति ।
नाम—(१६५२) मंगद ।
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(१६५३) मंगलराज ।
ग्रंथ—महाभारत भाषा ।
नाम—(१६५४) मंगलीप्रसाद कायस्थ, फ़ैज़ाबाद ।
ग्रंथ—रामचरित्र नाटक।

नाम—(१६५५) युगलप्रसाद चौबे।
ग्रंथ—दोहावली।
विवरण—निम्न श्रेणी।
नाम—(१६५६) रघुनाथदास।
ग्रंथ—हरदास की परचई (पृ० २०)। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण— १८वीं शताब्दी।
नाम—(१६५७) रघुवर।
विवरण—फुटकर कवित्त।
नाम—(१६५८) रघुवरशरण। इनका ठीक नं० ($\frac{२३०२}{२}$) है।
ग्रंथ—(१) जानकी जू को मंगलाचरण, (२) पना। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१६५९) रघुकुल।
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(१६६०) रघुश्याम।
ग्रंथ—फुटकर कवित्त।
नाम—($\frac{१६६०}{१}$) रणछोड़जी।
ग्रंथ—(१) शिवरहस्य, (२) शिवपुराण भाषा, (३) कामदहन, (४) सदाशिव विवाह, (५) शिवस्तुति।
विवरण—जाति के नागर शैवमतानुयायी जूनागढ़ के नवाबों के दरबार में प्रधानाध्यक्ष थे। इनका समय १९८०-१८६० के अंदर है।
नाम—(१६६१) रसकटक।
ग्रंथ—फुटकर कवित्त।
नाम—(१६६२) रसदूक।

ग्रंथ—फुटकर कवित्त।
नाम—(१६६३) रसनेश।
ग्रंथ—फुटकर कवित्त।
नाम—(१६६४) रसिकनाथ ब्राह्मण।
ग्रंथ—रसिकशिरोमणि।
नाम—(१६६५) रसिक प्रवीन।
ग्रंथ—फुटकर कवित्त।
नाम—($\frac{१६६५}{१}$) रसिकमुकुंद।
ग्रंथ—अष्टका। [तृ० त्रै० रि०]
विवरण—गोस्वामी विट्ठलदास के शिष्य राधावल्लभी वैष्णव थे।
नाम—($\frac{१६६५}{२}$) रसिकलाल।
ग्रंथ—चौरासी की टीका। [तृ० त्रै० रि०]
विवरण—राधावल्लभी थे।
नाम—(१६६६) रावव्रजन।
ग्रंथ—रामायण। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—अयोध्या के महंत।
नाम—(१६६७) किशोरीलाल कायस्थ राजा, घनश्यामपूर जिला जौनपूर। देखो नं० १३७१
ग्रंथ—जुगुलशतक (पृ० ४८ पद्य)। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—पिता का नाम अयोध्याप्रसाद था।
नाम—(१६६८) राजा मुसाहब, बिजावरवाले।
ग्रंथ—(१) विनयपत्रिका पर टीका, (२) रसराज पर टीका।
नाम—($\frac{१६६८}{१}$) राजेंद्रप्रसाद।
ग्रंथ—दानलीला। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१६६९) राधिकाप्रसाद कायस्थ, बिजावर।

ग्रंथ—स्फुट ।
विवरण—रियासत बिजावर में नाज़िम थे ।
नाम—(१६७०) रामकरण ।
ग्रंथ—हम्मीररासो का उल्था ।
नाम—(१६७१) रामचरण ब्राह्मण, गणेशपुर बाराबंकी ।
ग्रंथ—(१) कायस्थकुलभास्कर (संस्कृत), (२) कायस्थ-
कुलभूषण ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।
नाम—($\frac{१६७१}{१}$) रामजीमल्ल भट्ट ।
ग्रंथ—शृंगारसौरभ, रसचंद्रिका । तोष कवि की श्रेणी के ।
नाम—(१६७२) रामचंद्र स्वामी ।
ग्रंथ—(१) पांडवगीता, (२) राधाकृष्णविनोद । [प्र०
त्रै० रि०]
नाम—(१६७३) रामदत्त ।
नाम—(१६७४) रामदया ।
ग्रंथ—रागमाला, सभाजीतसार ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।
नाम—(१६७५) रामदान ।
ग्रंथ—फुटकर कवित्त ।
नाम—(१६७६) रामदेव ।
ग्रंथ—अयोध्याबिंदु (पृ० ८२) । [द्वि० त्रै० रि०]
नाम—(१६७७) रामदेवसिंह, खँडासावाले ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।
नाम—($\frac{१६७७}{१}$) रामनारायण उपनाम विष्णुसखी ।
ग्रंथ—युगलकिशोर सहस्रनाम । [च० त्रै० रि०] ।

नाम—(१६७८) रामप्रसाद कायस्थ, कड़ा, ज़िला इलाहाबाद। देखो नं० (१६८१/१)

ग्रंथ—स्फुट ।

नाम—(१६७८/१) रामप्रसाद।

ग्रंथ—गीतामाहात्म्य ।

विवरण—चुनार वासी, ठाकुर के पुत्र थे ।

नाम—(१६७९) रामबख़्श उपनाम राम ।

ग्रंथ—(१) रससागर, (२) विहारीसतसई की टीका ।

विवरण—पद्माकर-श्रेणी, राना शिरमौर के यहाँ थे ।

नाम— (१६८०) रामभरोसे, ब्राह्मण बहराइच ।

ग्रंथ—पद्य व्याकरणसार (पृ० ३१) ।

नाम—(१६८०/१) रामरत्न ।

ग्रंथ—सियालालरसवर्द्धिनी कविता-दाम। [च० त्रै० रि०]

नाम—(१६८१) रामराय ।

ग्रंथ—लैलामजनू। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१६८२) रामरंग खान ।

ग्रंथ—फुटकर कवित्त ।

नाम—(१६८३) रामसज्जनजी ।

ग्रंथ—ज्ञानरसिक गुणविलास ।

नाम—(१६८४) रामसनेही, चरणदास के पुत्र ।

ग्रंथ—हठजोगचंद्रिका (२४० पृष्ठ) ।

विवरण—छत्रपूर में देखा । साधारण कवि ।

नाम—(१६८५) रामसहाय कायस्थ, बलिया ।

ग्रंथ—भजनावली ।

नाम—(१६८६) रामसिंह कायस्थ, बुँदेलखंड ।

ग्रंथ—दस्तूरमालिका । [प्र० त्रै० रि०]
विवरण—साधारण ।
नाम—(१६८७) रामसिंहराव ब्रह्मभट्ट, मंडला, मध्य-
प्रदेश ।
ग्रंथ—नर्मदापचीसी ।
विवरण—विषय नर्मदा नदी की महिमा । आश्रयदाता राजा
अदमशाह ।
नाम—(१६८८) रामसेवक ।
ग्रंथ—अक्षरावली (पृ० २४) । [द्वि० त्रै० रि०]
नाम—(१६८९) रामा ।
विवरण—भक्त कवि थे ।
नाम—(१६९०) रामाकांत ।
नाम—(१६९१) रामचद्र ब्राह्मण नागर ।
ग्रंथ—विचित्रमालिका (पृ० ८२) । [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—व्रजविलासकथा ।
नाम—(१६९२) रायजू ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।
नाम—(१६९३) राहिव ।
ग्रंथ—फुटकर कवित्त ।
नाम—(१६९३/१) रायसाहिबसिंह ।
ग्रंथ—कोप । [च० त्रै० रि०]
नाम—(१६९४) रिवदान चारण, मारवाड़ ।
ग्रंथ—फुटकर गीत ।
नाम—(१६९५) रूघा साधु ।
ग्रंथ—ब्रह्मस्तुति ।

नाम—(१६९६) रूप।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६९७) रूपमंजरी।

ग्रंथ—अष्टयाम। [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी वा सखीसंप्रदाय के थे।

नाम—(१६९८) रूपसखी वैष्णव।

ग्रंथ—होरी। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१६९९) रंगखानि।

विवरण—इन्होंने कोई ग्रंथ बनाया है, पर उसका नाम याद नहीं।

नाम—(१७००) लक्ष्मण।

ग्रंथ—निर्वाणरमैनी। [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—कबीरपंथी मालूम होते हैं।

नाम—(१७०१) कृष्णशरण साधु, अयोध्या।

ग्रंथ—रामलीलाविहारनाटक (पृ० २७० गद्य पद्य)।

नाम—(१७०१/१) लक्ष्मणशरण।

ग्रंथ—रामलीलाविहारनाटक। [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—अयोध्या के महंत थे।

नाम—(१७०२) लक्ष्मी।

नाम—(१७०३) लक्ष्मीनारायण, ग्राम भयहरनगर (वितस्ता नदी के तीर) सारस्वत ब्राह्मण। देखो नं (२६८०/६)

ग्रंथ—(१) विद्यार्थी बाललीला (पृ० ६ पद्य), (२) गोरक्षाशतक (पृ० ३६ पद्य)।

नाम—(१७०४) लक्ष्मीप्रसाद कायस्थ, कड़ा ज़िला इलाहाबाद।

ग्रंथ—स्फुट ।

नाम—(१७०५) लघुकेशव साधु ।

ग्रंथ—फुटकर भजन ।

नाम—(१७०६) लघुमति ।

ग्रंथ—चरनायके । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१७०७) लघुराम ।

ग्रंथ—(१) कवित्त, (२) भक्तविरुदावली । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१७०८) लघुलाल ।

ग्रंथ—स्फुट भजन ।

नाम—($\frac{१७०८}{१}$) ललितादिकजी ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—(१७०९) ललिता सखी ।

ग्रंथ—भजन ।

नाम—(१७१०) लाजव ।

नाम—(१७११) लाभवर्द्धन जैनी ।

ग्रंथ—उपपदी (जैनशिक्षा) ।

नाम—($\frac{१७११}{१}$) लाल ।

ग्रंथ—लालख्याल । [च० त्रै० रि०]

नाम—(१७१२) लाल गोपाल ।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—($\frac{१७१२}{१}$) लालचद ।

ग्रंथ—नाभिकुँअरजी की आरती । [च० त्रै० रि०]

नाम—(१७१३) लालबुभक्कड ।

ग्रंथ—क़िस्से ।

नाम—(१७१४) लालसिंह भाट ।
ग्रंथ—फुटकर कविता ।
विवरण—आश्रयदाता सिवनी के कायस्थ तथा मुसलमान और अमीर । सिवनी छपरा (मध्यप्रदेश) ।

नाम—(१७१५) शकराचार्य ।
ग्रंथ—(१) बद्रीनाथ स्तोत्र, (२) व्रजभूषण स्तोत्र, (३) भवानी स्तोत्र ।

नाम—(१७१६) लुकमान मुसलमान ।
ग्रंथ—वैद्यक (पृ० ५६ गद्य) । [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(१७१७) लेखराज कायस्थ, अकबरपूर (कानपूर) ।
ग्रंथ—चित्रगुप्त-उत्पत्ति ।

नाम—(१७१८) लोरिक, मगही कवि ।
विवरण—इनका नाम डॉक्टर ग्रियर्सन साहब ने लिंग्विस्टिक सर्वे में लिखा है ।

नाम—(१७१९) शम्भुप्रसाद ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१७२०) शिवचरण ।
ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१७२१) शिवदान, चारण, मारवाड़ ।
ग्रंथ—फुटकर गीत ।

नाम—(१७२२) शिवदीन कायस्थ, गौरहार ।
ग्रंथ—स्फुट ।

नाम—(१७२३) शिवराज ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१७२४) शिवराम, जयपुरवाले ।

ग्रंथ—(१) रसमाल, (२) शिवसागर ।

नाम—(१७२५) शिवानंद ब्राह्मण, हल्दी ।

ग्रंथ—शिवरामसरोज ।

नाम—(१७२५/१) शीलमणि राजकुमार ।

ग्रंथ—इश्कलतिका । [च० त्रै० रि०]

नाम—(१७२६) शेख सुलेमान ।

ग्रंथ—ख्वालिक़नामा । [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—मुहम्मद साहब का हाल ।

नाम—(१७२७) शोभ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१७२८) शृंगारचंद्र ।

ग्रंथ—बलदेवदासमाला ।

नाम—(१७२९) श्यामराय कायस्थ, जयपुर ।

ग्रंथ—दुर्गा-विनोद ।

विवरण—दुर्गाजी की स्तुति ।

नाम—(१७२९/१) श्यामलाल, अजयगढ़ ।

ग्रंथ—(१) बयानस्वर, (२) नीतिसार । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१७३०) श्यामसनेही ।

ग्रंथ—(१) ध्यान, (२) ध्यानस्वरोदय, (३) स्वरोदययोग-वर्णन ।

विवरण—छत्रपूर में ये छोटे-छोटे ग्रंथ देखे । साधारण श्रेणी ।

नाम—(१७३१) श्रीधर स्वामी ।

ग्रंथ—श्रीमद्भागवत प्रथम से सप्तम स्कंध तक, हरिदेव सनेह के कवित्त ।

नाम—(१७३२) श्रीराम ।
ग्रंथ—छंद-मंजरी । [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१७३३) सतीदास साधु ।
ग्रथ—भजन ।
नाम—(१७३४) सतीप्रसाद ।
ग्रंथ—जयचंदवंशावली । [प्र० त्रै० रि०]
विवरण—कमोली ज़िला बनारस के ज़मींदार बटुकबहादुरसिंह इनके आश्रयदाता थे ।
नाम—(१७३५) सतीराम ।
ग्रथ—सतगीता । [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१७३६) सदाराम, चित्रकूट । देखो नं० ($\frac{१२१२}{१}$)
नाम—(१७३७) सबलजी ।
ग्रंथ—इंदरसिंहरी कमाल ।
विवरण—राजपूतानी कविता ।
नाम—(१७३८) सबलश्याम ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।
नाम—($\frac{१७३८}{१}$) समर ।
ग्रंथ—रामसुजसपताका । [तृ० त्रै० रि०]
नाम—(१७३९) समीरत्न रसराज ।
ग्रंथ—माँढ और टप्पे । [खोज १९०२]
नाम—(१७४०) समुद्र ।
ग्रंथ—फुटकर कविता ।
नाम—($\frac{१७४०}{१}$) सरयूदास उपनाम सुधामुखी ।
ग्रंथ—(१) पदावली, (२) सर्वसारोपदेश, (३) रसिक-वस्तुप्रकाश । [च० त्रै० रि०]

नाम—($\frac{१७४०}{२}$) सर्वसुखदास।

ग्रंथ—(१) चौरासी की टीका, (२) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१७४१) सरसदास।

ग्रंथ—बानी।

विवरण—स्वामी हरिदास या बिहारिनदास के अनुयायी।

नाम—(१७४२) सरसराम।

विवरण—मैथिल कवि।

नाम—(१७४३) सरूपदास।

ग्रंथ—पांडव-यश-चंद्रिका।

विवरण—महाभारत का सार। आश्रयदाता राजा बलवंतसिंह रतलाम।

नाम—(१७४४) सरूपराम।

नाम—($\frac{१७४४}{१}$) सहचरीसुख।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—($\frac{१७४४}{२}$) सहजराम नाजिर।

ग्रंथ—सहजरामचंद्रिका (कविप्रिया की टीका)। [खोज-१९०४

नाम—(१७४५) साधुराम साधु।

ग्रंथ—भजन।

नाम—(१७४६) साह।

ग्रंथ—स्फुट।

नाम—($\frac{१७४६}{१}$) स्वामीदास बाँदावासी।

ग्रंथ—रामझपरी। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१७४७) सिकदार।
ग्रंथ—फुटकर कविता।
नाम—($\frac{१७४७}{१}$) सियारामशरण ।
ग्रंथ—ज्ञानोपदेश। [च० त्रै० रि०]
नाम—(१७४८) सिंगार।
ग्रंथ—बलदेवरासमाला। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१७४९) सिंगीमेघराज।
ग्रंथ—फुटकर कवित्त।
नाम—($\frac{१७४९}{१}$) सीतारामानन्यशील।
ग्रंथ—सियाकरमुद्रिका। [च० त्रै० रि०]
नाम—(१७५०) सुखनिधान।
ग्रंथ—दोहे और पद। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(१७५१) सुखशरण।
ग्रंथ—मीराबाई री परची। राजपूतानी भाषा।
नाम—(१७५२) सुजान।
ग्रंथ—शिखनख।
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(१७५३) सुथरा नानकसाही।
ग्रंथ—चौबोला (फुटकर कविता)। मलूक परचयी।
नाम—(१७५४) सुंदरकली।
ग्रंथ—(१) बारह बारु। (२) सुंदर कली की कहानी।
विवरण—यवनी थीं।
नाम—(१७५५) सुदर बदीजन, असनी जिला फ़तेहपुर।
ग्रंथ—(१) बारहमासी, (२) रसप्रबोध।
नाम—(१७५६) सुमतगोपाल।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१७५६/१) सुर्जन ।

ग्रथ—बत्तीसअक्षरी ।

नाम—(१७५६/२) सूरकिशोर ।

ग्रथ—छप्पय । [च० त्रै० रि०]

नाम—(१७५७) सूरसिह ।

ग्रथ—भजन ।

नाम—(१७५७/१) सेमजी ।

ग्रंथ—सेमजी की चेतावनी (खोज १६०२) ।

नाम—(१७५८) सेवकराम परमहस ।

ग्रंथ—(१) परमहसजी की वाणी, (२) झूलना ।

नाम—(१७५९) सेवादास । देखो नं० (६२८/२)

ग्रंथ—(१) सेवादास की वाणी (पृ० २४४), (२) परमहस की बारामासी, (३) परमार्थरमैनी । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—कड़ा-मानिकपूरवासी मलूकदास के शिष्य ।

नाम—(१७६०) सोमदेव ।

ग्रथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१७६१) सोहनलाल ।

ग्रथ—ब्रजगोपिका-विनय । [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—माथुर चौबे ।

नाम—(१७६२) सग्रामदास ।

ग्रंथ—सग्रामदासजी की फुटकर कुंडलिया ।

नाम—(१७६३) सतोप वैद्य ।

ग्रथ—विपनाशन । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(१७६४) स्कद गिरि ।

ग्रंथ—रसमोदक।
विवरण—ग्रंथ देखा।
नाम—($\frac{१७६४}{१}$) स्वयं प्रकाश।
ग्रंथ—नाम राम माहात्म्य। [च० त्रै० रि०]
नाम—(१७६५) हकीम फरासीस।
ग्रंथ—अंजुलीपुरान। [खोज १९०२]
नाम—(१७६६) हनुमानप्रसाद कायस्थ, मैहर।
ग्रंथ—हनुमाननखशिख।
नाम—(१७६७) हरतालिकाप्रसाद त्रिवेदी।
ग्रंथ—हनुमानअष्टक। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—भोजपुर-निवासी।
नाम—(१७६८) हरदयाल।
विवरण—निम्न श्रेणी।
नाम—(१७६९) हरराज। देखो नं० ($\frac{८२}{२}$)
ग्रंथ—(१) ढोलामारू वार्ता, (२) चौपही। रचनाकाल १६०७।
विवरण—यादोराज की आज्ञा से बनाई।
नाम—(१७७०) हरिचंद बरसानेवाले।
ग्रंथ—(१) छंदस्वरूपिणी पिंगल, (२) हरिचंद्रशतक।
विवरण—निम्न श्रेणी। [द्वि० त्रै० रि०]
नाम—(१७७१) हरिजीवन। पोर वदरवासी।
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(१७७२) हरिभानु।
ग्रंथ—नदभानु।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१७७३) हरिया ।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१७७४) हरिराम। देखो नं० (१६३/१)

नाम—(१७७४/१) हरिसिंह ।

ग्रंथ—ज्ञानकटारी ।

विवरण—खान कोटढा कच्छ-निवासी जडेवा ठाकुर थे ।

नाम—(१७७५) हितनद राधावल्लभी ।

विवरण—यमकयुक्त काव्य है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है ।

नाम—(१७७५/१) हितप्रसाद ।

ग्रंथ—हितपचक। [तृ० त्रै० रि०]

विवरण—राधावल्लभी थे।

नाम—(१७७५/२) हितवल्लभअली ।

ग्रंथ—पद्यावली ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—(१७७६) हिम्मतराज ।

ग्रंथ—फुटकर कविता ।

नाम—(१७७७) हरिसूरि जैनी ।

ग्रंथ—फुटकर ढाल (गीत) ।

नाम—(१७७८) हेमचारण ।

ग्रंथ—महाराजा गजसिंह जीरा गुण रूपक ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१७७९) हेमनाथ ।

विवरण—कल्याणसिंह खीरी के यहाँ थे । साधारण श्रेणी के कवि हैं ।

नाम—(१७८०) हंसविजय जती।

ग्रंथ—कल्पसूत्र की टीका।

विवरण—जैन।

नाम—(१७८१) ज्ञानविजय जती।

ग्रंथ—मह्वमलयाचरित्र।

नाम—(१७८२) ज्ञानीराम।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

परिवर्तन प्रकरण

(१८९०—१९२५)

बत्तीसवाँ अध्याय

परिवर्तन-कालिक हिंदी

यों तो प्रौढ़ माध्यमिक काल ही में हिंदी भाषा परिपक्व हो चुकी थी, पर अलंकृत काल में उसे हमारे कविजनों ने आभूषणों से सुसज्जित कर ऐसी मनमोहिनी बना दी कि उसमें किसी प्रकार की कमी न रह गई, वरन् यों कहना चाहिए कि उत्तरालंकृत काल में भूषणों की ऐसी भरमार मच गई कि उसके कोमल कलेवर पर उनका बोझ प्राय असह्य प्रतीत होने लगा। हम स्वीकार करते हैं कि कोई शशिवदनी चाहे जितनी स्वरूपवती हो, पर कुछ आभूषण पिन्हा देने से उसकी शोभा बढ़ जाती है। फिर भी कहना ही पड़ता है कि जैसे अंग-प्रत्यंगों को आभरणों से आच्छादित कर देने से कुछ ग्रामीणता एवं भद्दापन बोध होने लगता है, उसी प्रकार कविता को भी विशेष रूप से अलंकृत करने पर उसकी नैसर्गिक सुघराई में बट्टा लग जाना स्वाभाविक ही है। अन्य भाषाओं में प्रायः माध्यमिक काल के पीछे ही परिवर्तन समय आ जाता, और कुछ ही दिनों के बाद उनकी वर्तमान दशा का वर्णन होने लगता है, पर हिंदी में यह विलक्षण विशेषता है कि माध्यमिक और परिवर्तन काल के बीच में दो शताब्दियों से भी कुछ अधिक समय तक हमारे कविजन भाषा को अलंकृत करने ही में लगे रहे। इसका परिणाम यह अवश्य हुआ कि हिंदी-जैसी मधुर एवं अलंकारयुक्त

दूसरी भाषा का ढूँढना कठिन है, और इस अंग की प्रौढ़ता हमारी भाषा में प्रायः एकदम अद्वितीय और अभूतपूर्व है, तो भी मानना ही पड़ेगा कि कम-से-कम उत्तरालंकृत काल में इस अंग की पूर्ति में आवश्यकता से कहीं अधिक श्रम कर डाला गया। इसके अतिरिक्त उस समय कवियों का झुकाव शृंगार-रस की ओर इतना अधिक रहा कि उनमें से अधिकांश का रुझान दूसरे विषयों पर न हो सका। हमारी समझ में पूर्वालंकृत काल तक हिंदी को जितने आभूषण पिन्हाए जा चुके थे, उन पर यदि हमारे कविजन संतोष कर लेते, और शृंगार-रस को छोड़ उपकारी बातों का उचित आदर करते, तो आजदिन हमें अपने भाषा-भंडार में नूतन विषयों की न्यूनता पर शोक न प्रकट करना पड़ता। स्मरण रखना चाहिए कि उत्तरालंकृत काल में, जब कि हमारे यहाँ लोग भाषा को वाह्याडंबरों से ही सुसज्जित करने में विशेष रूप से बद्धपरिकर थे। अन्य देशी भाषाएँ और ही छटा दिखलाने लगी थीं। बँगला में भी हमारे पूर्वालंकृत काल एवं उत्तरालंकृत काल के विशेषांश में भाषा अलंकृत रही, परंतु वहाँ संवत् १८७५ में ही श्रीरामपुर के पादरियों द्वारा एक समाचार-पत्र निकला और इसी समय से गद्य का प्रचार बढ़ने लगा। संवत् १८८५ के लगभग मृत्युंजय-नामक लेखक ने बँगला का प्रबोधचंद्रिका-नामक प्रथम गद्य-ग्रंथ लिखा। इसी कवि ने पुरुष परीक्षा-नामक एक द्वितीय गद्य-ग्रंथ रचा। इसी समय ईश्वरचंद्र गुप्त ने संवाद-प्रभाकर-नामक एक उत्कृष्ट पत्र निकाला, और राजा राममोहन राय ने सुधावर्षिणी लेखनी से संसार को पवित्र किया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर और अक्षयकुमारदत्त बंगाली गद्य के मुख्य उन्नायक हो गए हैं। इनका रचनाकाल १९१० के लगभग था। इन्होंने बहुत ही उत्कृष्ट गद्य-ग्रंथ रचे, और इनके समय से प्रायः सभी विषयों में बँगला भाषा ने बहुत अच्छी उन्नति की। इसी समय के बंकिमचंद्र चटर्जी, मधुसूदन-

दत्त और दीनबंधु बड़े भारी लेखक और कवि थे। रमेशचंद्रदत्त ने भी अच्छे ग्रंथ रचे। आजकल रवींद्रनाथ टैगोर बहुत बड़े कवि हैं, और उनके भाई द्विजेंद्रनाथ तथा यतींद्रनाथ परमोत्कृष्ट गद्य लेखक तथा नाटक-रचयिता हैं। बँगला ने वर्तमान उन्नत विषयों में बड़ी अच्छी उन्नति कर ली है। गुजराती एवं मराठी भाषाएँ भी उन्नत दशा में हैं। अस्तु।

चंद के समय से उन्नति करते-करते इतने दिनों में हिंदी ने वह उत्कर्ष प्राप्त कर लिया था कि जिसके सहारे अन्य भाषाओं की अपेक्षा उसके काव्यांग इतने इढ़तर हैं कि प्राय. उन सभों को इसके सामने सिर झुकाना पड़ता है। पर नवीन उपयोगी विषयों की अब तक कुछ भी संतोषदायक उन्नति नहीं हो पाई थी। इस परिवर्तन-काल में अनेक लेखकों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ, और विविध विषयों पर लेखनी चचल करने की प्रथा पड़ने लगी। यों तो आजदिन तक अन्य भाषाओं को देखते हिंदी में इस विभाग की न्यूनता अगत्या स्वीकार करनी ही पड़ती है। पर जो प्रथा परिवर्तन-काल के कतिपय विचारशील हिंदी-हितैषियों ने चलाई, उस पर क्रमश उन्नति होती ही आई है। उत्तरालंकृत काल में कथा प्रासगिक ग्रंथों के लिखने की रीति प्राय. जैसी-की-तैसी ज़ोरों पर रही थी। पर परिवर्तन-काल में उसका कुछ ह्रास हो चला। शृंगार-रस एवं रीति-ग्रंथों का प्राधान्य भी अब घटने लगा, पर उसी के साथ काव्योत्कर्ष में भी विशेष न्यूनता आ गई, और ठाकुर, दूलह, सूदन, बोधा, रामचंद्र, सीतल, थान, बेनी-प्रवीन और परताप के जोड़वाले प्राय. कोई भी कवि इस परिवर्तन-काल में दृष्टिगोचर नहीं होते। इतना ही नहीं, वरन् यों कहना चाहिए कि लेखराज, ललितकिशोरी, पजनेस आदि को छोड़ प्रायः कोई भी वास्तव में बढ़िया कवि इस समय में न हुआ। इसी के साथ इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि यह परिवर्तन-काल केवल ३६ वर्ष का है और उत्तरालंकृत काल प्रायः एक सौ वर्ष पर विस्तृत है।

भक्ति पक्ष की कविता प्रौढ़-माध्यमिक काल में पूरे ज़ोरों पर थी, और तत्पश्चात् उसमें कमी हो चली। पूर्वालंकृत समय की अपेक्षा उत्तरालंकृत काल में उसने फिर कुछ-कुछ उन्नति की, पर परिवर्तन-काल में सिवा महाराजा रघुराजसिंहजी, जेलराज और ललितकिशोरी के और किसी भी नामी कवि ने उसकी ओर ध्यान न दिया। इस काल में ललितकिशोरी (साह कुंदनलालजी) ने उस ढंग की कविता की, जो प्रायः तीन सौ वर्ष पहले प्रचलित थी। वीर-काव्य अब मंद-सा हो गया, और गद्य लिखने की प्रथा पहलेपहल ज़ोरों के साथ चली। टीका लिखने की रीति सबसे पहले प्रसिद्ध महाराणा कुंभकर्ण ने चलाई थी, और उनके बहुत दिनों पीछे अलंकृत काल में इस पर कतिपय लोगों ने ध्यान दिया था। कृष्ण और सूरति मिश्र ने बिहारी-सतसई पर अनेक प्रकार से टीकाएँ कीं, पर अब तक दो-चार को छोड़ किसी दूसरे भाषा-कवि को उत्कृष्ट टीकाकार बनने का गौरव नहीं प्राप्त हुआ था। इस परिवर्तन काल में सरदार कवि ने सूर, केशव आदि अन्य नामी कवियों के उत्तमोत्तम ग्रंथों पर भी टीकाएँ बनाईं, और अन्य अनेक लेखकों ने भी टीकाओं पर श्रम किया।

इस काल में सबसे बड़ा परिवर्तन यह हुआ कि हिंदी-साहित्य से चार-पाँच सौ वर्ष के बाद व्रजभाषा और पद्य-विभाग का आधिपत्य हटने लगा। जहाँ तक हमको विदित है, सबसे पहले सारंगधर ने संवत् १३५० के लगभग व्रजभाषा का हिंदी-कविता में प्रयोग किया। प्राय. तीस वर्ष पीछे अमीर खुसरो ने भी इसे अपनाया, पर वे पहलेपहल खड़ी बोली में भी कविता करते थे। १४५० के आसपास नारायण देव ने व्रजभाषा ही में हरिश्चंद्रपुराण-नामक ग्रंथ रचा, और १४८० में नामदेव ने उसमें अनेक ग्रंथ निर्माण किए। इनके पश्चात् चरणदास और वल्लभाचार्यजी ने व्रजभाषा को ही प्रधानता दी और तदनंतर सूरदास और अष्टछाप के अन्य कवीश्वरों ने

उसका सिक्का हमारी भाषा पर मानो अटल कर दिया। अवश्य ही बीच-बीच में कोई-कोई लेखक अवधी, खड़ी बोली और अन्य प्रकार की भाषाओं में कविता करते रहे, और स्वयं गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी अधिकांश रचनाओं में अवधी भाषा को ही विशेष आदर दिया, तो भी प्राय ६० सैकड़े कविजन बराबर ब्रजभाषा ही मे अनुरक्त रहे। उत्तरालंकृत काल में लल्लूलाल ने प्रेमसागर की रचना ब्रजभाषा-मिश्रित खड़ी बोली में की, पर उसमें भी उन्होंने छंद ब्रजभाषा ही के रक्खे। उन्हीं के साथ सदल मिश्र ने खड़ी बोली में उत्तम रचना की। परिवर्तन-काल में गणेशप्रसाद, राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह, स्वामी दयानंद, बालकृष्ण भट्ट आदि महानुभावों के प्रयत्न से लोगों को समझ पड़ने लगा कि हिंदी गद्य एवं पद्य तक में यह आवश्यकता नहीं कि ब्रजभाषा का ही सहारा लिया जाय। पद्य में तो कुछ कुछ आजदिन तक ब्रजभाषा का प्रभुत्व कई अंशों में वर्तमान है, और अभी कुछ समय तक हमारे पुरानी प्रथा के कविजन इसकी ममता छोड़ते नहीं दिखाई पड़ते। पर गद्य में इसी परिवर्तन-काल से खड़ी बोली का पूर्ण प्रभुत्व जम गया और पद्य में भी उसका यथेष्ट आदर होने लगा है।

अँगरेज़ी साम्राज्य स्थापित होने से जहाँ देश को अन्य अनेक लाभ हुए, वहाँ साहित्य ही कैसे विमुख रह जाता। जीवन-होड़ के प्रादुर्भाव से ही उन्नति का सुविशाल द्वार खुला करता है। जब तक किसी को बिना हाथ-पैर हिलाए मिलता जाता है, तब तक विशेष उन्नति की ओर उसका चित्त नहीं आकर्षित होता, पर जब मनुष्य देखता है कि अब तो बिना परिश्रम के काम नहीं चलता और आलसी बने रहने से अन्य उन्नत पुरुषों के सामने उसे नित्यप्रति नीचे ही खिसकना पड़ेगा, तभी उसमें उन्नति के विचार जागृत होते हैं, और जातीय एवं व्यक्तिगत होड़ में उसे क्रमश सफलता प्राप्त होने लगती

है। जब हम लोगों में अँगरेज़ी राज्य स्थापित होने पर अन्य प्रकार के उन्नत विचार आने लगे, तभी अपनी भाषा की उपयोगी उन्नति की इच्छा भी अंकुरित हुई। बस, भाषा में परिवर्तन-काल उपस्थित हो जाने का यही एक प्रधान कारण था।

इस समय में महाराजा मानसिंह, शंकर दरियावादी, नवीन, पजनेस, सेवक, लेखराज, ललितकिशोरी, गदाधर भट्ट, औध, लछिराम, बलदेव प्रभृति प्राचीन प्रथा के सत्कवियों में हुए, तथा उमादास, निहाल, जीवनलाल, सूरजमल, माधव, क़ासिम, गिरिधरदास, प्रताप-कुँअरि, महाराजा रघुराजसिंह, शंभुनाथ मिश्र और रघुनाथदास राम-सनेही ने कथा-प्रासंगिक कविता की। ललितकिशोरीजी ने एक बार सौर काल की छटा फिर से दिखला दी, और क़ासिम ने अपने हंस जवाहिर में जायसी के पैरों पर पैर रखना चाहा, पर क़ासिम की रचना तादृश प्रशंसनीय नहीं है। महाराजा रघुराजसिंहजी ने अनेक विषयों पर अनेक भारी ग्रंथ निर्माण करके हिंदी का अच्छा उपकार किया। स्वामी काष्ठजिह्वा, बाबा रघुनाथदास और महंत सीताराम-शरण इस समय के उन महात्माओं में हैं, जिन्होंने हिंदी को अपनी लेखनी द्वारा पुनीत किया। कृष्णानंद व्यास ने पदों का एक संग्रह ग्रंथ बनाया। गणेशप्रसाद फ़र्रुख़ाबादी के खड़ी बोलीवाले पद और लावनियाँ प्रसिद्ध हैं, और उनका एतद्देश में अच्छा प्रचार है। टीकाकारों में सरदार और गुलाबसिंह का श्रम विशेषतया प्रशंसनीय है। ये दोनों महाशय अच्छे कवि भी थे। राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद, महर्षि दयानंद सरस्वती, डॉक्टर रुडाल्फ़ हार्नली, नवीनचंद्रराय और बालकृष्ण भट्ट नवीन प्रकार के लेखकों में हैं, और सच पूछिए, तो विशेषतया ऐसे ही महानुभावों के श्रम का यह फल हुआ कि हिंदी में प्राचीन अलंकृत काल दूर होकर परिवर्तन होते-होते वर्तमान उन्नति का समय हम लोगों को नसीब हुआ।

राजा शिवप्रसाद का हिंदी पर यह ऋण सदा बना रहेगा कि यदि वह समुचित उद्योग न करते, तो संभव है कि शिक्षा-विभाग में हिंदी बिलकुल स्थान ही न पाती, और नितांत आधुनिक भाषा उर्दू ही उत्तरीय भारतवर्ष की एक-मात्र देशी भाषा बन बैठती। महर्षि दयानंद सरस्वती ने देश और जाति का जो महान् उपकार किया, उसे यहाँ पर लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। अनेक भूलों और पाखंडों में फँसे हुए लोगों को सीधा मार्ग दिखलाकर उन्होंने वह काम किया है, जो अपने-अपने समय में महात्मा गौतम बुद्ध, स्वामी शंकराचार्य, रामानंद, कबीरदास, बाबा नानक, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु और राजा राममोहन राय समय-समय कर गए। हम आर्य-समाजी नहीं हैं, तो भी हमारी समझ में ऐसा आता है कि हम लोगों का जो वास्तविक हित इस ऋषि के प्रयत्नों द्वारा हुआ और होना संभव है, उतना उपर्युक्त महात्माओं में से बहुतों ने नहीं कर पाया। दयानंदजी ने हिंदी में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, इत्यादि अनुपम ग्रंथ साधु और सरल भाषा में लिखकर उसकी भारी सहायता की, और उनके द्वारा स्थापित आर्य-समाज से उसका दिनोंदिन हित हो रहा है।

तैंतीसवाँ अध्याय

द्विजदेव-काल

(१८९०—१९१५)

(१७८३) महाराजा मानसिंह, उपनाम द्विजदेव

ये महाराजा अयोध्या-नरेश तथा अवध-प्रदेशांतर्गत ताल्लुक़ेदारों की एसोसिएशन (सभा) के सभापति थे। इनका स्वर्गवास संवत् १९३० में संभवत: पचास वर्ष की अवस्था में हुआ था। ये महाशय कवियों के कल्पवृक्ष थे। इनके आश्रय में बहुत-से

कवि रहते थे। इसी कारण बहुतेरे द्वेषी मनुष्यों ने उड़ा दिया था कि ये महाराज स्वय कवि न थे, वरन् लछिराम कवि से बनवाकर अपने नाम से कविता प्रकाशित करते थे। यह बात सर्वथा अशुद्ध थी और इससे ऐसी बातें उड़ानेवालों की क्षुद्रता प्रकट होती है। वास्तव में इनकी कविता के बराबर लछिराम का कोई भी ग्रथ या छंद नहीं पहुँचता। ये महाराज शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। अपने मरण-काल में ये अपने दौहित्र महामहोपाध्याय महाराजा सर प्रतापनारायणसिंह के० सी० आई० ई० उपनाम 'ददुआ साहब' को अपना उत्तराधिकारी नियत कर गए थे। कुछ समय बीता, जब महाराज ददुआ साहब ने 'रसकुसुमाकर'-नामक एक भाषा-साहित्य का मनोरजक सचित्र संग्रह प्रकाशित किया था। इसमें द्विजदेवजी के बहुत-से छद हैं। इनके भतीजे भुवनेशजी ने लिखा है कि इन्होंने शृंगार-बत्तीसी और शृगारलतिका-नामक दो ग्रंथ बनाए। इनका द्वितीय ग्रंथ हमारे पास वर्तमान है, जिसमें १०५ पृष्ठ हैं। ये महाराज ब्रजभाषा में ही कविता करते थे। इनकी भाषा बड़ी ललित और कविता परममनोहर होती थी। इन्होंने अनुप्रास का अच्छा प्रयोग किया है। इनका षट्ऋतु बहुत ही बढ़िया बना है, और शेष ग्रंथ में शृंगार रस के स्फुट छंद हैं। इनकी कविता में बहुत-से परमोत्तम छद हैं, जिनके बराबर बड़े-बड़े कवियों के अतिरिक्त साधारण कवियों के छद नहीं पहुँचते। इनके शेष छंद भी बुरे नहीं हैं। हम इनको पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण लीजिए—

सौंधे समीरन को सरदार, मलिंदन को मनसा फलदायक;
किंसुक-जालन को कलपद्रुम, मानिनी बालन हूँ को मनायक।
कंत इकंत अनंत कलीन को, दीनन के मन को सुखदायक;
साँचो मनोभव राज को साज, सु आवत आजु इतै ऋतुनायक।

चहकि चकोर उठे सोर करि भौंर उठे,
घोलि ठौर-ठौर उठे कोकिल सोहावने;
खिलि उठीं एकै बार कलिका अपार,
हिलि-हिलि उठे मारुत सुगंध सरसावने।
पलक न लागी अनुरागी इन नैनन पै,
पलटि गए धौं कबै तरु मन भावने;
उमँगि अनंद अँसुवान लौं चहूँघा लगे,
फूलि-फूलि सुमन मरंद बरसावने।

इनका कविता-काल संवत् १६०६ के इधर-उधर था। इनकी भाषा बहुत अच्छी थी।

नाम— (१७८४) चंद कवि। संवत् १८६० के लगभग थे कोई-कोई इन्हें शाह जहाँगीर के समय का समझते हैं।

नाम—(१७८५/१) महाराजा विश्वनाथसिंह

आप महाराजा जयसिंह के पुत्र और महाराजा रघुराजसिंह के पिता थे। अपने पिता के पीछे आप संवत् १८६१ (सन् १८३३) में बांधव (रीवाँ)-नरेश हुए और संवत् १६११ (सन् १८५४) तक राज करते रहे। ये महाराज अच्छे कवि थे और कवियों एवं विद्वानों का इन्होंने अच्छा सम्मान किया। इनकी भाषा व्रजभाषा और कविता प्रशंसनीय है। इन्होंने अनेक ग्रंथ बनाए, जिनके नाम नीचे लिखे जाते हैं—

(१) अष्टयाम का आह्निक, (२) आनंदरघुनंदन नाटक, (३) उत्तम काव्यप्रकाश, (४) गीता रघुनंदनशतिका, (५) रामायण, (६) गीता रघुनंदन प्रामाणिक, (७) सर्वसंग्रह, (८) कबीर के बीजक की टीका, (९) विनय पत्रिका की टीका, (१०) रामचंद्र की सवारी, (११) भजन, (१२) पदार्थ, (१३) धनुर्विद्या, (१४) परमतत्त्वप्रकाश, (१५) आनंदरामायण, (१६)

परमधर्मनिर्णय, (१७) शांतिशतक, (१८) वेदांतपंचकशतिका, (१९) गीतावली पूर्वार्द्ध, (२०) ध्रुवाष्टक, (२१) उत्तम नीतिचंद्रिका, (२२) अबाध नीति, (२३) पाखडखंडिनी, (२४) आदि मगल, (२५) वसंत, (२६) चौंतीसी, (२७) चौरासी रमैनी, (२८) कहरा, (२९) शब्द, (३०) विश्व-भोजनप्रकाश और (३१) साखी।

आपका केवल एक कवित्त दिया जाता है, जिससे कविता-चमत्कार प्रकट है।

उदाहरण—

बाजी गज सोर रथ सुतुर कतारे जेते,
प्यादे ऐंडवारे जे सबीह सरदार के ;
कुँअर छबीले जे रसीले राजवंशवारे,
सूर अनियारे अति प्यारे सरकार के।
केते जातिवारे केते-केते देशवारे जीव,
श्वान सिंह आदि सैलवारे जे शिकार के ;
डंका की धुकार ह्वै सवार सबै एक बार,
राजैं वार पार कार कोशल कुमार के।

नाम—(१७८५) गोस्वामी गुलाललाल, वृंदावनवासी, अनन्य संप्रदायवाले।

ग्रंथ—अनन्य सभामंडल।

कविताकाल—संवत् १८९७।

विवरण—पहले पूजा इत्यादि का वर्णन किया। उसके पीछे साल-भर के उत्सव कहे हैं। ग्रंथ ७०० श्लोकों के बराबर है। यह हमने दरबार छतरपुर में देखा। काव्य इसका निम्न श्रेणी का है। समय जाँच से मिला है।

[द्वि० त्रै० खो०]

नाम—(१७८६) उमादास ।

ग्रंथ—(१) महाभारत-भाषा, (२) कुरुक्षेत्र-माहात्म्य (१८६४), (३) नवरत्न, (४) पंचरत्न, (५) पंचयज्ञ, (६) माला (१८६४)

कविताकाल—१८६४ । [खोज १६०४]

विवरण—महाराजा करमसिंह पटियाला नरेश के यहाँ थे। इनकी कविता साधारण श्रेणी की है ।

उदाहरण—

कृपाहू के पारावार गुण जाके हैं अपार,
सुंदर विहार मन हार है उदार है,
जाके बल को निहार चीर ना धरैं सँभार,
अरिन की नार वेग चढ़त पहार है ।
श्रीगुरु गोविंदसिंह सोढ़ वंस महा बाहु,
बार-बार सेवक को सदा रखवार है,
नराकार निराकार निराधार असधार,
भू-उधार जगधार धर्म धार धार है ।

नाम—(१७८७) जीवनलाल ब्राह्मण नागर, बूँदी ।

ग्रंथ—(१) ऊषाहरण, (२) दुर्गाचरित्र, (३) भागवत-भाषा, (४) रामायण, (५) गंगाशतक, (६) अवतारमाला, (७) संहिता-भाष्य ।

जन्मकाल—१८७० ।

रचनाकाल—१८६५ ।

मृत्यु—१६२६ ।

विवरण—ये संस्कृत, फ़ारसी और भाषा के अच्छे ज्ञाता थे । संवत् १८६८ में ये रावराजा बूँदी के प्रधान नियुक्त हुए, जिस पद का काम इन्होंने बड़ी योग्यता से किया । संवत्

१६१४ के ग़दर में इन्होंने बहुत अच्छा प्रबंध किया, जिस पर दरबार से इनको ताज़ीम हाथी, कटारी इत्यादि मिली। संवत् १६१६ में आगरे में दरबार हुआ, जिसमें इन्हें जी० सी० एस्० आई० का ख़िताब मिला। संवत् १६२३ में दरबार में महारुद्रयाग हुआ, जिसका प्रबंध आपने उत्तम किया। आप दस्तकारी में भी बड़े चतुर थे। कविता भी आपकी सरस तथा प्रशंसनीय होती थी, आपकी गणना तोष की श्रेणी में की जाती है।

उदाहरण—

वदन मयक पै चकोर ह्वै रहत नित,
पंकज नयन देखि भौंर लौं गयो फिरै;
अधर सुधारस के चाखिवे को सुमनस,
पूतरी ह्वै नैनन के तारन छयो फिरै।
अंग-अंग गहन अनंग को सुभट होत,
बानि गान सुनि ठगो मृग लौं ठयो फिरै;
तेरे रूप भूप आगे पिय को अनूप मन,
धरि बहु रूप बहुरूप सो भयो फिरै॥ १॥

चंद्र मिस जा को चंद्रसेखर चढ़ावैं,
सीस पट मिस धारै गिरा मूरति सवाब की;
चंदन के मिस चारु चर्चत अगर मार,
रमा मिस हरि हिय धारैं सित आब की।
भूप रामसिंह तेरी कीरति कला की काँति,
भाँति-भाँति बढ़ै छवि कवि के किताब की;
मित्र सुख सगकारी आब माहताब की त्यौं,
सत्रु-मुख-रंगहारी ताब आफताब की॥ २॥

बुधि बिनु नर जैसे, पक्षी बिनु पर जैसे,
सेवा बिनु दर जैसे, नीति बिनु भूप है।

(१७९०) देव कवि काष्ठ-जिह्वा, बनारसी

ये महाराज सस्कृत के बड़े भारी विद्वान् थे। आपने एक दफ़े गुरु से विवाद करके प्रायश्चित्तार्थ अपनी जीभ पर काठ की खोल चढ़ाकर सदा को बोलना बंद कर दिया। इन्होंने ये ग्रंथ बनाए—विनयामृत, रामलगन [प्र० त्रै० रि०], रामायणपरिचर्या [खोज १९०४], वैराग्यप्रदीप और पदावली सात कांड। (खोज १९०१) (१८९७)। इनकी कविता विशेषतया भगवद्भक्ति के विषय पर होती थी। वह प्रशसनीय है। इनकी गणना तोष की श्रेणी में की जाती है। महाराजा बनारस के यहाँ इनका बड़ा आदर होता था।

उदाहरण—

जग मगल सिय जू के पद हैं। (टेक)
जस तिरकोण यत्र मगल के अस तरवन के फद हैं।
मलहि गलावहि ते तन मन के जिनकी अटक विरद हैं।
मगन ह्वै के मगल हरि जहँ सदा बसे ए हद हैं॥ १॥

नाम—(१७९१) रत्नहरि।

ग्रंथ—सत्योपाख्यान, अर्थात् रामरहस्य का भाषा उल्था।

रचनाकाल—१८९९।

विवरण—साधारण श्रेणी। ग्रंथ दोहा, चौपाइयों में है। कहीं-कहीं और छंद भी हैं। इसमें ९२९ पृष्ठ हैं। यह ग्रंथ हमने दरबार पुस्तकालय छतरपुर में देखा। च० त्रै० रि० में इनके दाशरथी दोहावली, द्व्यर्थ दोहावली, जमक-दमकदोहावली, रामरहस्य पूर्वार्द्ध तथा रामरहस्य उत्तरार्द्ध-नामक ग्रंथ मिले हैं।

उदाहरण—

यह रामराय रहस्य दुरलभ परम प्रतिपादन कियो;
श्रीराम करुना करि लहिय। विन तासु नहिं पावन वियो।
श्रुतिसार सर्वसु सर्व सुकृत बिपाक जिय जानो यही;
रघुवीर व्यास प्रसाद ते पायो कह्यो। तुमसों सही।

नाम—($\frac{१७६१}{१}$) कृष्णसिंह। १८६५. के पूर्व—ग्रंथ उदधि-मथिनी टीका।

नाम—(१७९२) किशोरदास, पीतांबरदास के शिष्य निंबार्क संप्रदाय के।

ग्रंथ—(१) निजमनसिद्धांतसार, (२) गणपतिमाहात्म्य, (३) अध्यात्मरामायण। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१६००।

विवरण—प्रथम ग्रंथ में भक्तों के विस्तारपूर्वक कथन, एवं मन के सिद्धांत वर्णित हैं। इसके तीन खंड ४५८ सफ़ा फ़ुलस्कैप साइज़ के हैं। यह ग्रंथ हमने दरबार छतरपूर में देखा है। काव्य-लालित्य साधारण श्रेणी का है।

उदाहरण—

लखि दारा सब सार सुख, परसत हँसत उदार;
मरकट जिमि निरतत हँसत सिकिलि उतारि-उतारि।
बढ़त अधिक ताते रस रीती, घटत जात गुरुजन पर प्रीती।
सीखत सुनत विषय की बातैं, ऐंठत चलत निरखि निज गातैं।
बल दै बाँधत पाग विसाला; पँच रँग कुसुम गुच्छ उर माला।
हास करत पितु मातु ते, अटत करत उतपात,
धन दै करि निज बाम को, पितु जननी तजि भ्रात।

नाम—(१७६३) कृष्णानंद व्यास, गोकुल।

ग्रंथ—रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम संग्रह।

रचनाकाल—१६००।

इन महाराज ने संवत् १९०० के लगभग रागसागरोद्भव नामक एक बृहत् ग्रंथ संगृहीत करके कलकत्ते में मुद्रित कराया था, जिसमें २०५ भक्त तथा कवियों के पद संगृहीत थे। इसमें बहुत-से ऐसे कवियों के पद संगृहीत हैं, जिनकी कविता अन्यत्र प्रायः नहीं मिलती। इस संग्रह से इतिहास-साहित्य का भी बड़ा उपकार हुआ है। यदि यह संग्रह न हुआ होता, तो शायद इतने सब कवियों के नामों का मिलना असंभव था। इनकी कविता तोप कवि की श्रेणी की समझनी चाहिए।

उदाहरण—

सैननि बिसरैं चैननि भोर।
बैन कहत कासों, पिय हिय ते बिहसत काहि किसोर।
दुख मेटत भेटत तुमको नहि चुंबन देत न थोर।

(१७९४) गणेशप्रसाद फर्रुख़ाबादी

ये महाशय जाति के कायस्थ थे और फ़रुख़ाबाद में हलवाई का व्यापार करते थे। ऐसा साधारण व्यापार करके भी इन्होंने कविता की ओर ध्यान दिया। ये परमोत्तम रचना करने में समर्थ हुए। इन्होंने फ़िसानेचमन, बारहमासा, ऋतुवर्णन, शिखनख और छंदलावनी-नामक ग्रंथ रचे हैं, जो प्रायः सब प्रकाशित हो चुके हैं और सभी पुस्तक बेचनेवालों के यहाँ मिलते हैं। इनकी समस्त कविता बहुत करके पदों में है, और उसका विशेषांश खड़ी बोली को लिए हुए है। इनकी लावनियाँ इतनी प्रसिद्ध हैं कि उतने बड़े-बड़े कवियों तक के काव्य नहीं हैं। उनमें अलौकिक स्वाद, अनूठापन एवं बल है। ऐसी सजीव कविता बड़े-बड़े कवि रचने में समर्थ नहीं हुए हैं। हमने इनके कई ग्रंथ देखे हैं, पर इस समय हमारे पास इनका फ़िसानेचमन-मात्र है। इनकी रचना के हमने बड़े-बड़े चमत्कारिक तथा उड़ते हुए पद देखे हैं, पर इस समय साधारण ही पद हमें उपलब्ध हैं। आपके छंद बहुत

प्रचलित हैं, सो हमने उत्कृष्ट उदाहरण ढूँढ़ने का श्रम भी नहीं किया। इनकी भाषा साधारण बोल-चाल को लिए हुए बड़ी ज़ोरदार है। हम इनको पद्माकर कवि की श्रेणी में रखते हैं। संवत् १६३० के लगभग तक ये विद्यमान थे। इनका कविताकाल सवत् १६०० से १६३० तक समझना चाहिए। इनका हाल इनके मिलनेवालों ने सरायमीरा में हमसे कहा था। उदाहरण—

किया पिय किन सौतिन घर वास,
विकल उन बिन जिय बारह मास।
गरज आली असाढ़ आया, घटा ना ग़म दुख दिखलाया।
अबर हो वर विदेस छाया; कहीं बरसा कहिं तरसाया॥ १॥
जोवन पर जिसके शम्सोक़मर वारी है;
हर गुल्शन में उस गुल की गुलज़ारी है।
ज़ंजीर ज़ुल्फ़ जाना ने लटकाली है;
काली है फ़िदा जिस पर नागिन काली है।
अबरू कमान क़ुदरत ने परका ली है;
वह आँख, आँख आहू ने झपका ली है।
बदन ससि मदनभरी प्यारी; अदा की बाँकी ब्रजनारी।
सीस धर गोरस की गगरी; रूप रस जोवन की अगरी।
बजा छमछम पायल पगरी; गई ग्वालिनि गोकुल-नगरी॥२॥

(१७९५) नवीन

ये महाशय नाभा-नरेश महाराजा देवेंद्रसिंहजी के यहाँ थे। इन्होंने अपने को ब्रजवासी कहा है, परंतु कुल-कुटुंब का कुछ भी हाल नहीं लिखा। इन्होंने नाभा-नरेश के यहाँ गज, ग्राम एवं रुपया-पैसा सभी कुछ पाया। इनका वहाँ पूरा सम्मान हुआ। इन्होंने महाराजा साहब की आज्ञा से भाषा-साहित्य के सुधासर, सरसरस, नेहनिदान [खोज १६०४] और रंगतरंग-नामक चार ग्रंथ बनाए। हमारे पास

इनका तृतीय ग्रंथ है और उसी में उपर्युक्त बातों का वर्णन है। यह रसतरंग संवत् १८६६ में सबसे पीछे बना था।

नवीन कवि ने इस ग्रंथ में रसों का वर्णन किया है। इसमें अनु-प्रासों का बाहुल्य है। इस कवि की कविता-शैली पद्माकर से बहुत कुछ मिलती है, और उत्तमता में भी उसी कवि के समान है। इस कवि की रचना बहुत ही प्रशंसनीय है। हम इन्हें पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणार्थ इनके कुछ छंद नीचे लिखे जाते हैं—

राजैं गजराज ऐसे दारुन दराज दुति,
जिनकी गराज परैं बैरी के सहलके,
सुंडादंड मंडित जंजीर झकझोरैं गुन,
जोरन जों तोरैं जे झरैया मद जल के।
श्रीमनि नरिंद मालवेंद्र देव इंद्रसिंह,
तेरी पौरि पेखिए हजारन के हलके;
ओज के सिँगार चढ़ी मौज के सिँगार,
निज फौज के सिँगार जैतवार पर-दल के॥ १॥

सूरज के रथ के से पथ के चलैया चारु,
न थके थिराहिं थान चौकरी भरत हैं;
फाँदत अलंगैं जब बाँधत छलंगैं,
जिन जीनन ते जाहिर जवाहिर झरत हैं।
मालवेंद्र भूप की सवारी के अनूप रूप,
गौन मैं दपेटि पौनहू को पकरत हैं,
करि-करि बाजी जिन्हैं लाजै चपलाजी देखि,
तेरे तेज बाजी पर-बाजी सी करत हैं॥ २॥

चंपक के चौसर चमेलिन की चंपकली,
गजरे गुलाबन के गजते उमाह के;
कदम तरौना तरे किंजलक झूमका की,

झलक कपोलन पै वाजू जुही जाह के।
बेनी बीच माधुरी एगुही है बार-बार तापै,
रंग पहिराए हैं बसन अंग ताह के,
बीन-बीन कुसुम-कलीन के नवीन सखी,
भूखन रचे हैं ब्रजभूपन की चाह के॥ ३॥

(१७९६) रसरंग

ये महाशय लखनऊ के रहनेवाले थे। इनका समय संवत् १९०० के लगभग था। इनकी कविता सरस और मनोहर है। इनका कोई ग्रंथ हमने नहीं देखा है, परंतु स्फुट छंद देखने में आए हैं। इनकी रचना-श्रेणी साधारण कवियों में है। इन्होंने व्रजभाषा में कविता की है।

सुखमा के सिंधु को सिंगार के समुंदर ते,
मथि कै सरूप सुधा सुखसों निकारे हैं;
करि उपचारे तासों स्वच्छता उतारे तामैं,
सौरभ सोहाग श्री सो हास-रस डारे हैं।
कवि रसरंग ताको सत जो निसारे,
तासों राधिका बदन वेस बिधि ने सँवारे हैं;
बदन सँवारि बिधि धोयो हाथ जम्यो रंग,
तासों भयो चंद, करझारे भए तारे हैं।

नाम— (१७९७) व्रजनाथ बारहट चारण, जयपुर।
रचना—स्फुट।
कविताकाल—१९००। मृत्यु—१९३४।
विवरण—ये जयपुर-दरबार के कवि महाराज रामसिंह के समय में थे। कविता इनकी साधारण श्रेणी की है। नीचे लिखा कवित्त इन्होंने महाराज तख़्तसिंह जोधपुर के मरने पर बनाया था।

आजु छिति छत्रिन को भानु सो अस्त भयो,
आजु पात पच्छिन को पारिजात परिगो ;
आजु मान सिंधु फूटो मगन मरालन को,
आजु गुन गाढ़ को गरीस गज गरिगो।
आजु पंथ पुन्नि को पताका टूटो विजैनाथ,
आजु होम हरग्ग हजारन को हरिगो ;
हाय-हाय जग के अभाग तखतेस राज,
आजु कलिकाल को कन्हैया कूच करिगो।

नाम—(१७९८) वावा रघुनाथदास महंत, अयोध्या।
ब्राह्मण पाँडे पैंतेपुर, ज़िला बाराबकी।

ग्रंथ—हरिनामसुमिरनी।

जन्मकाल—१८७३। मरणकाल—१९३९।

कविताकाल—१९००।

विवरण—ये महाराज बड़े तपस्वी, भगवद्भक्त, महात्मा हुए हैं। इनकी सिद्धता की बहुत सी जनश्रुतियाँ विख्यात हैं। ये सरयूजी के निकट छावनी में रहा करते थे। इन्होंने भक्ति-संबंधी काव्य किया है, जो साधारण श्रेणी का है।

उदाहरण—

मारा-मारा कहे ते मुनीस ब्रह्मलीन भयो,
राम राम कहे ते न जानौं कौन पद है ;
जमन हराम कह्यो रामजू को धाम पायो,
प्रगट प्रभाव सब पोथिन में गद है।
कासिहू मरत उपदेसत महेस जाहि,
सूझि न परत ताहि माया मोह मद है,
ऐसहू समुझि सीताराम नाम जो न भजै,
जन रघुनाथ जानौ तासों फेरि हद है।

(१७९९) माधव रीवाँ-निवासी

इन्होंने आदिरामायण-नामक ग्रंथ संवत् १६०० के लगभग रीवाँ-नरेश महाराज विश्वनाथसिंह की आज्ञानुसार बनाया। माधवजी ने अपने को काशीराम का पुत्र और गंगाप्रसाद का नाती कहा है। इनका ग्रंथ छतरपूर में है। इसमें ३५६ बड़े पृष्ठ हैं। यह ग्रंथ पद्म-पुराण के आधार पर बना है। इसमें ब्रह्मा और काकभुशुंड का संवाद है। ग्रंथ सुंदर है। ये छत्र कवि की श्रेणी में हैं।

उदाहरण—

अति सुंदर नैन सुरंग रँगे मद झूमत नीके सनींद लसैं;
अँगिरात जम्हात औ तोरत गात दोऊ झुकि जात निहारि हसैं।
अरुझी नथ कुंडल मालनि मैं मुकता मनि फूलनि औलि खसैं;
लघु ब्रह्म सुखौ तिनको दरसात लुभात जे प्रात के ध्यान रसैं।

(१८००) क़ासिमशाह

इन्होंने हंसजवाहिर ग्रंथ संवत् १६०० के लगभग बनाया। आप दरियाबाद, ज़िला बारहबंकी के निवासी थे। ग्रंथ की वंदना जायसी-कृत पद्मावत की भाँति उठी है। काशी-नागरीप्रचारिणी सभा को इसकी अपूर्ण प्रति खोज (१६०२) में प्राप्त हुई है, जिसमें फ़ुलसकैप आकार के २०० पृष्ठ हैं। ग्रंथ दोहा-चौपाइयों में कहा गया है, जिसमें रचना-चमत्कार मधुसूदनदास की श्रेणी का है। इसमें एक प्रेम-कहानी वर्णित है।

(१८०१) जानकीचरण उपनाम प्रिया सखी

इन्होंने 'श्रीरामरत्नमंजरी'-नामक ११५ पृष्ठों का एक ग्रंथ रचा, जो छतरपूर में है। इसमें कई छंद हैं, पर विशेषतया दोहे हैं। इसमें साधारण कविता में राम का वर्णन है। इनका कविताकाल जाँच से संवत् १६०० जान पड़ा। इन्होंने जुगलमंजरी और भगवानामृत-कादंबिनी-नामक दो ग्रंथ और रचे थे, जो छतरपूर में हैं। इनमें चतुर्थ

त्रैवार्षिक रिपोर्ट में इनका एक और ग्रंथ प्रेमप्रधान भाव-मयंध रस-करण मिला है। इनमें भी रामचंद्र का ही रसात्मक वर्णन है।

उदाहरण—

नाना विधि लीला ललित, गावत मधुरे रग ;
नृत्य करत मति सुंदरी, बाजत ताल मृदंग।
चंदन चरचे अग मत्र, कुकुम अतर कपूर ;
रचि सुमनन को माल बहु, पहिराई भरपूर।

(१८०२) परमानंद

इनके केवल दो छंद हमने देखे हैं। इनका कोई भी हाल हमें ज्ञात न हुआ। इनकी कविता और बोलचाल अच्छी है। सुनते हैं कि इस नाम के दो कवि हो गए हैं, एक अजयगढ़ रियासत (बुंदेलखंड) के रहनेवाले संवत् १६०० के आसपास हुए हैं, और दूसरे पद्माकरवंशी दतिया में संवत् १६३० में रहते थे। प्रथम त्रैवार्षिक रिपोर्ट में अजयगढ़-वाले परमानंद का हनुमन्नाटक दीपिका-नामक ग्रंथ लिखा है। जो कवित्त हमने देखे हैं, वे किस परमानंद के हैं, सो हम नहीं कह सकते। ये महाशय साधारण श्रेणी के कवियों में हैं।

छाई छवि अमल जुन्हाई-सी बिछौनन पै,
तापर जुन्हाई जुदी दीपति रही उमंग,
कवि परमानँद जुन्हाई अवलोकियत,
जहाँ-तहाँ नील कज पजन परै प्रसग।
सोनजुही माल किधौं माल मालती की,
पहिचानियत कैसे सनी पकज सुगंध सग,
आवत निहारी छौंतिहारे सेज प्यारे,
पग धरत चुओई परै गहब गुलाबी रग ॥१॥

(१८०३) गिरिधरदास

सुप्रसिद्ध बाबू हरिश्चंद्र के पिता काशी निवासी बाबू गोपालचंद्रजी

इस उपनाम से काव्य करते थे। कहीं-कहीं इन्होंने अपना नाम गिरिधारी एवं गिरिधारन भी रक्खा है। यह हिंदी के अच्छे कवि थे। छोटे-बड़े सब मिलाकर इन्होंने चालीस ग्रंथ रचे हैं, जैसा कि हरिश्चंद्रजी ने भी लिखा है—"जिन श्री गिरिधरदास कवि रचे ग्रंथ चालीस।" इनके ग्रंथों में "जरासंधवध" प्रसिद्ध है। इन्होंने दशावतार, भारतीभूषण, बारहमास, षट्ऋतु एवं अन्य अनेक विषयों पर ग्रंथ निर्माण किए हैं। इनकी कविता सरस और अच्छी होती थी। इन्हें यमक का बहुत ज्यादा शौक़ था, जिससे कभी-कभी पद्माकरजी की भाँति अपने भाव तक बिगाड़ देने एव भरती पदों के रखने में भी कोई संकोच न होता था। इनका समय संवत् १९०० के लगभग था। इनका देहांत २६ या २७ वर्ष की ही अवस्था में हो गया। ये काशी के प्रतिष्ठित रईसों में से थे। हम इन्हें तोष की श्रेणी का कवि मानते हैं।

उदाहरण—

आनन की उपमा जो आनन को चाहे तऊ,
　　आन न मिलैगी चतुरानन विचारे को;
कुसुमकमान के कमान को गुमान गयो,
　　करि अनुमान भौंह रूप अति प्यारे को।
गिरिधरदास दोऊ देखि नैन वारिजात,
　　वारिजात वारिजात मान सर वारे को;
राधिका को रूप देखि रति को लजात रूप,
　　जातरूप जातरूप जातरूप वारे को॥ १॥

लाल गुलाल समेत अरी जब सों यह अंबर ओर उठी है;
देखत हैं तब सों तितही लखि चंद चकोर की चाह छुटी है।
ढारत ही गिरिधारन डीठि अबीरन के कन साथ लुटी है;
मोहन के मनमोहन को मट्टू मोहन मूठि-सी तेरी मुठी है॥ २॥

(१८०४) पजनेस

ठाकुर शिवसिंहजी ने लिखा है कि ये महाशय पन्ना में हुए और इन्होंने मधुप्रिया [खोज १६०५] और नखशिख-नामक दो ग्रंथ बनाए हैं। उन्होंने इनका जन्म-संवत् १८०२ लिखा है। इनका कविताकाल १६०० जान पड़ता है। बुँदेलखंड में जाँच करने से भी जान पड़ा कि ये महाशय पन्ना के रहनेवाले थे। हमने इनके उपर्युक्त ग्रंथों में एक भी नहीं देखा है और न ये ग्रंथ अब साधारणतया मिलते हैं। भारतजीवन-प्रेस के स्वामी ने इनके ५६ छंदों का एक ग्रंथ पजनेसपचासा नाम से प्रकाशित किया था। फिर बहुत खोज करके पीछे उन्होंने पजनेसप्रकाश में इनके १२७ छंद छापे। इससे अधिक इनके छंद देखने में नहीं आते। इनकी कविता बड़ी ओजस्विनी है। इतनी उद्दंडता बहुत कम कवियों में पाई जाती है, परंतु इन्होंने उद्दंडता के स्नेह में मधुर भाषा को तिलांजलि दे दी, और इसी कारण इनकी कविता में टवर्ग एवं मिलित वर्णों का बाहुल्य है। इन्होंने अनुप्रास का बड़ा आदर किया तथा जमकानुप्रास का भी विशेष प्रयोग इनकी रचना में हुआ है, परंतु भाषा व्रजभाषा ही है। फिर भी एकाध स्थान पर फ़ारसी मिली कविता भी आपने बनाई। इनकी रचना देखने से विदित होता है कि ये फ़ारसी और संस्कृत के पंडित थे। इनकी कविता में अश्लीलता की मात्रा विशेष है। इन्होंने उपमाएँ बहुत अच्छी खोज खोजकर दी हैं। कुल मिलाकर हम इनको सुकवि समझते हैं, क्योंकि इनके छंद बहुत ललित बने हैं। इतने कम छंदों में इतने उत्तम छंद बहुत कम कविजन बना सके हैं। हम इनको पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं। इनके छंद थोड़े होने पर भी बहुत फैले हुए हैं, अतः हम इनका एक ही छंद यहाँ लिखते हैं—

मानसी पूजा मई पजनेस मलिच्छन हीन करी ठकुराई ;
रोके उदोत सबै सुर गोत बसेरन पै सिकराली बसाई ।

जानि परै न कला कछु आजु कि काहे सखी अजया यक लाई ;
पोसे मराल कहौ केहि कारन एरी भुजंगिनि क्यों पोसवाई ।

इनके छंद देखने से अनुमान होता है कि इन्होंने एक नखशिख भी बनाया होगा ।

(१८०४) सेवक

इनका जन्म संवत् १८७२ वि० में हुआ था और छाछठ वर्ष की अवस्था भोगकर संवत् १९३८ में काशीपुरी में इन्होंने स्वर्गवास पाया । ये महाशय असनी के ब्रह्मभट्ट थे । इनके पूर्व पुरुष देवकीनंदन सरयूपारीण पयासी के मिश्र थे, परंतु उन्होंने राजा मँझौली के यहाँ बरात में भाटों की भाँति छंद पढ़े और उनका पुरस्कार भी लिया, अतः उनके स्वजनों ने उन्हें जातिच्युत कर दिया । इस पर विवश होकर उन्होंने असनी के भाट नरहरि कवि की लड़की के साथ अपना विवाह करके असनी में ही रहना स्वीकार किया । उस समय से वे और उनके वंशज सचमुच भाट हो गए । उन्हीं के वंश में ऋषिनाथ कवि परम प्रसिद्ध हुए । इन्हीं महाशय के पुत्र सुप्रसिद्ध ठाकुर कवि हुए । ठाकुर कवि काशी के बाबू देवकीनंदन के यहाँ रहते थे । ठाकुर ने इन्हीं के नाम पर सतसई का तिलक बनाया था । ठाकुर के पुत्र धनीराम हुए, जो देवकीनंदन के पुत्र जानकीप्रसाद के कवि थे और जिन्होंने उन्हीं के यहाँ रामचंद्रिका तथा रामायण के तिलक एवं रामाश्वमेध तथा काव्यप्रकाश के उल्था बनाए । इन्होंने बहुत-से स्फुट छंद भी रचे । इनके शंकर, सेवकराम, शिवगोपाल और शिवगोविंद-नामक चार पुत्र उत्पन्न हुए । शंकरजी भी अच्छे कवि थे । सेवक के पुत्र मान और उनके काशीनाथ हुए, जो आजकल असनी में वैद्यक करते हैं । शिवगोपाल के पुत्र मुरलीधर और पौत्र देवदत्त हुए । शिवगोविंद के श्रीकृष्ण, नागेश्वर और मूलचंद-नामक तीन पुत्र हुए । इन्हीं श्रीकृष्ण ने सेवक-कृत वाग्विलास और ग्रंथ में उनका

जीवनचरित्र और उपर्युक्त वंश वर्णन लिखा है। स्वयं सेवक ने भी अपने कुटुंब का वर्णन निम्न छंद द्वारा किया है—

श्रीऋषिनाथ को हौं मैं पनाती औ नाती हौं श्री कवि ठाकुर केरो,
श्रीधनीराम को पूत मैं सेवक शंकर को लघु बंधु ज्यों चेरो।
मान को बाप बचा कमिया को बचा मुरलीधर कृष्ण हू हेरो,
अश्विनी मैं घर काशिका मैं हरिशंकर भूपति रच्छक मेरो।

सेवक उपर्युक्त जानकीप्रसाद के पौत्र हरिशंकर के यहाँ रहते थे। सो इन आश्रयदाता एवं आश्रयी, दोनों के कुटुंबों की स्थिरचित्तता प्रशंसनीय है कि जिन्होंने चार पुश्तों तक अपना संबंध निबाह दिया। सेवक महाशय हरिशंकरजी को छोड़कर किसी भी अन्य राजा-महाराजा के यहाँ नहीं जाते थे। यहाँ तक कि महाराजा काशी नरेश वहीं रहते थे, परंतु इस कुटुंब ने उनसे आश्रयदाता से भी संबंध कभी नहीं जोड़ा। सेवक का यह भी प्रण था कि काशी में चाहे जितना बड़ा महाराज भी आवे, परंतु ये उससे मिलने नहीं जाते थे, और बाबू हरिशंकरजी के ही आश्रय से संतुष्ट रहते थे। एक बार काशी के प्रसिद्ध ऋषि स्वामी विशुद्धानंदजी सरस्वती ने इनके ऊपर कृपा करके अपने शिष्य महाराजा कश्मीर के यहाँ इन्हें ले जाने को कहा। स्वामीजी कहते थे कि सेवक की बिदाई वहाँ पचीस हज़ार रुपए से कम की न होगी, परंतु सेवक ने अपने बाबू साहब के रहते वहाँ जाना उचित न समझा। धन्य है, इस संतोष को।

इन्होंने वाग्विलास-नामक नायिका भेद का एक बड़ा ग्रंथ बनाया है, जिसमें १६८ पृष्ठ हैं। इसमें नृपयश, रस-रूप, भावभेद और उसके अंतर्गत नायिकाभेद, नायकभेद, सखी, दूती, षट्ऋतु, अनुभाव और दश दशाओं का वर्णन किया गया है। सेवक ने नायिका-भेद की भाँति बड़े विस्तार पूर्वक नायकभेद भी कहा है, और उसमें भी लगभग उतने ही भेद लिखे हैं, जितने कि नायिकाभेद में। इनके

बनाए हुए पीपाप्रकाश, ज्योतिषप्रकाश और बरवै नखशिख ग्रंथ भी हैं। इनमें से वाग्विलास और बरवै नखशिख हमारे पास प्रस्तुत हैं। बरवै नायिकाभेद भी अच्छा है। इसमें ६८ छंदों में नायिकाभेद का संक्षेप में वर्णन है। पंडित अंबिकादत्त व्यास ने लिखा है कि ये महाशय एक छंदोग्रंथ भी लिखते थे, परंतु उसका कहीं पता नहीं है।

इन्होंने सब विषयों पर अच्छी कविता की है। इनका षट्ऋतु तो बहुत ही प्रशंसनीय है। ये अपने पितामह ठाकुर की भाँति आशिक़ न थे, और इनकी कविता में वैसी तल्लीनता नहीं देख पड़ती, परंतु इनके सवैया ठाकुर की भाँति प्रसिद्ध हैं, एवं बहुत लोग इन्हें वैसा ही आदर देते हैं। इनकी भाषा व्रजभाषा है और वह सराहनीय है। ये महाशय अपने ग्रंथों में टीका के ढंग पर वार्ताओं में शंकाएँ लिख-लिखकर उनका समाधान भी करते गए हैं। इनके ग्रंथों में चमत्कारिक छंद भी पाए जाते हैं, परंतु उनकी बहुतायत नहीं है। इनकी कविता में प्रशस्त छंदों की अपेक्षा साधारण छंद बहुत अधिक हैं। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। उदाहरणार्थ इनके कुछ छंद नीचे लिखे जाते हैं—

उनए घन देखि रहैं उनए दुनए से लताद्रुम फूलो करैं;
सुनि सेवक मत्त मयूरन के सुर दादुर ऊ अनुकूलो करैं।
तरपैं दरपैं दवि दामिनि दीह।यही मन माँह कबूलो कर,
मनभावती के सँग मैनमई घनस्याम सबै निसि झूलो करैं॥ १॥
दधि आछत-आछत भाल मैं देखि गए अँग के रँग छीन से ह्वै;
दुख औचक वारो कहे न बनै सिधु सेवक सौंहे अरीन से ह्वै।
मृगराज के दावे विधे बनसी के विचारे भले मृगमीन से ह्वै;
हरि आए विदा को भटू के तहीं भरि आए दोऊ दृग दीन से ह्वै॥ २॥
वंसी बजावत आनि कढ़े बनिता घनी देखन को अनुरागीं;
हौं हूँ अभाग भरी डगरी मगरी गिरे चौंकि सबै डरि भागीं।

लागे कलक सेवक सों इन्हें फोरि हौं सौति सुभाव लै लागीं;
हाय हमारी जरैं ऋँखियाँ विष बान ह्वै मोहन के उर लागीं ॥ ३ ॥
जहाँ जोम कै अनीन फौन कठिन कनीन कन,
छोहे मैं विलीन जिन्हैं घूमत विमान,
जहाँ धोपन धमकि घाव चोलत चमकि नहीं,
लोहू की लमकि लेन लागी लहरान।
जहाँ रदन पै रुंडमुंड झुंडन के झुंड कटैं,
कोटिन वितुंड विंध्य वधु की समान;
तहाँ सेवक दिमान भीम रुद्र के समान,
हरिशंकर सुजान झुकि झारी किरवान ॥ ४ ॥

(१८०६) प्रतापकुँवरि बाई।

ये जाखँण गाँव परगना जोधपुर के भाटी ठाकुर गोयददासजी की पुत्री और मारवाड़ के महाराजा मानसिंहजी की रानी थीं। इनका विवाह संवत् १८८६ में हुआ था। इन्होंने कई मदिर बनवाए और ये बहुत दान पुण्य किया करती थीं। ७० वर्ष की अवस्था में, संवत् १९४३ में, इनका स्वर्गवास हुआ। इन्होंने अपने पिता के यहाँ शिक्षा प्राप्त की थी और संवत् १९०० में विधवा हो जाने पर देवपूजन तथा काव्य की ओर अधिक ध्यान लगाया। इनकी कविता देवपक्ष की है, जो मनोहर है। इनके निम्न-लिखित ग्रंथ हैं—

ज्ञानसागर, ज्ञानप्रकाश, प्रतापपच्चीसी, प्रेमसागर, रामचंद्र-नाममहिमा, रामगुणसागर, रघुवरस्नेहलीला, रामप्रेमसुखसागर, रामसुजसपच्चीसी, पत्रिका संवत् १९२३ चैत्रबदी ११ की, रघुनाथजी के कवित्त और भजनपदहरजस। इनकी गणना मधुसूदनदास की श्रेणी में है। उदाहरणार्थ हम इनके कुछ छंद नीचे देते हैं—

धरि ध्यान रटौ रघुबीर सदा धनुधारि को ध्यानु हिए धरु रे;
पर पीर में जाय कै बेगि परौ करते सुभ सुकृत को कर रे।

तरु भवसागर को भजि कै, तजि कै अघ औगुन ते डरु रे;
परतापकुँवारि कहै पदपकज पात्र धरो जनि बीसररे।

होरी खेलन की रितु भारी ॥ टेक ॥

नर तन पाय भजन करि हरि को है औसर दिन चारी।

अरे अब चेतु अनारी।

ज्ञान गुलाल अबीर प्रेम करि प्रीत तणी पिचकारी;
सास उसास राम रँग भरि-भरि सुरति सरी सी नारी।

खेल इन सग रचारी।

सुलटो खेल सकल जग खेलै उलटो खेल खेलारी;
सतगुर सीख धारु सिर ऊपर सतसंगति चलि जारी।

भरम सब दूरि गँवारी।

ध्रुव पहलाद विभीखन खेले मीराँ करमा नारी,
कहे प्रताप कुँवरि इमि खेले सो नहिं आवै हारी।

सीख सुनि लेहु हमारी।

(१८०७) महाराजा रघुराजसिंहजू देव जी० सी० एस० आई० रीवाँ-नरेश

रीवाँ-नरेशों में महाराजा जयसिंह, उनके पुत्र महाराजा विश्वनाथ सिंह और तत्पुत्र महाराजा रघुराजसिंह तीनों बहुत अच्छे कवि थे। ये महाराजागण बघेल ठाकुर थे।

महाराजा वीरध्वज सोलंकी के पुत्र महाराजा व्याघ्रदेव ने गुजरात से आकर भोरों, गोडों, लोधियों आदि से बघेलखंड जीतकर वहाँ शासन जमाया। कहते हैं कि इस कुटुंब के पूर्व पुरुष ब्रह्मचोलक अंजली के पानी एवं सूर्यांश से उत्पन्न हुए थे और इसीलिये सूर्यवंशी कहलाए। ब्रह्मचोलक से करणशाह पर्यंत ९०७ पुश्तें चोलकवंशी कहलाती रहीं। करणशाह का पुत्र सुलंकदेव हुआ। तब से वीरध्वज पर्यंत ९८२ पीढ़ियाँ सोलंकी कहलाईं। वीरध्वज के पुत्र

व्याघ्रदेव से वर्तमान महाराजाधिराज श्रीव्यंकटरमण रामानुजप्रसाद-सिंहजू देव बहादुर तक ३२ पुश्तें हुई हैं। ये लोग बघेल कहलाते हैं। ब्रह्मचोलक से अब तक ११७१ पीढ़ियाँ हुई हैं।

महाराजा व्याघ्रदेव का जन्म संवत् ६०६ में हुआ और आप संवत् ६३१ में गद्दी पर बैठे। इनके उत्पन्न होने पर ज्योतिषियों ने इनके प्रतिकूल बहुत कुछ कहा था, और ये जंगल में छोड़ दिए गए थे। कहते हैं कि वहाँ यह शिशु एक बाघिनी का स्तन पान करता पाया गया था। इसी से यह बघेला कहलाया। वास्तव में यह नाम बाघेल ग्राम से निकला है, जो रियासत बरोदा में है, जहाँ से यह वंश बघेलखंड गया था। व्याघ्रदेव ने अपना पैतृक राज्य अपने भाई सुखदेव को देकर कठेर देश को जीता, जो इनके नाम पर बघेलखंड कहलाने लगा। कहते हैं कि यहाँ के राजा रामचंद्र ने एक दिन में प्रसिद्ध गायक तानसेन को दस करोड़ रुपए दिए थे। महाराजा विक्रमादित्य ने बाधवगढ़ छोड़कर रीवाँ को राजधानी बनाया।

महाराजा जयसिंह जू देव (नंबर ११३२) का जन्म संवत् १८२१ में हुआ, और सं० १८६५ में आप गद्दी पर बैठे। संवत् १८६०-वाली बसीन की संधि द्वारा पेशवा ने बघेलखंड का वह भाग अँगरेज़ों को दिया जो बाँदा के नवाब अलीबहादुर ने जीता था। अँगरेज़ों ने कहा कि इस संधि द्वारा रीवाँ-राज्य भी उन्हें मिल गया था किंतु उन्हें यह दावा छोड़ना पड़ा और सं० १८६६ से दो वर्ष तक तीन संधियाँ अँगरेज़ों से हुईं, जिनसे रीवाँ-राज्य स्थिर हुआ। महाराजा जयसिंह ने सं० १८६६ में नाममात्र राज्य के प्रायः सब अधिकार अपने पुत्र विश्वनाथसिंह को दे दिए। राज्य में पहली अदालत (धर्मसभा) सं० १८८४ में कचहरी मिताक्षरा के नाम से स्थापित हुई। उसका मान बढ़ाने को एक बार स्वयं विश्वनाथसिंहजू

देव प्रतिवादी के स्वरूप में उसमे पधारे । महाराजा जयसिंह का स्वर्गवास सं० १८६१ में हुआ ।

महाराजा विश्वनाथसिंह जू देव (नंबर $\frac{१८७६}{१}$) का जन्म संवत् १८४६ में हुआ था और अपने पिता के स्वर्गवास होनेपर आप सं० १८६१ में गद्दी पर बैठे । आपने संवत् १९११ तक राज्य किया । आप प्रसिद्ध राधावल्लभीय प्रियदास के शिष्य थे । इन महाराज के समय में उत्कोच की चाल फैली और कई कारणों से इनके पुत्र रघुराजसिंह से इनका वैमनस्य हो गया । झगड़ों से इन्होंने कई बड़े सरदारों को देशनिकाले का दंड दिया । अंत को संवत् १८९९ में आपने अपने पिता की भाँति राज्य-प्रबंध अपने पुत्र रघुराजसिंह को दे दिया, जो बड़ी-बड़ी बातों में इनकी सम्मति ले लेते रहे । रघुराजसिंह ने देशनिर्वासित सरदारों को लौटने की आज्ञा दी और क्षत्रियों में कन्यावध की प्रथा हटाई । आपका विवाह उदयपूर के महाराणा सरदारसिंह की पुत्री से हुआ । आपके शासन से क्रूर दंड और सती की प्रथाएँ उठ गईं ।

नंबर ($\frac{१८७४}{१}$) के नीचे लिखे हुए ग्रंथों के अतिरिक्त महाराजा विश्वनाथसिंह ने परमतत्त्व, संगीतरघुनंदन, गीतरघुनंदन, तत्त्वमस्य सिद्धांत भाषा, ध्यानमंजरी और विश्वनाथप्रकाश-नामक अन्य ग्रंथ भी रचे । आपने निम्न-लिखित ग्रंथ संस्कृत भाषा में भी बनाए—राधावल्लभ-भाष्य, सर्वसिद्धांत, आनंद-रघुनंदन (दूसरा), दीक्षानिर्णय, भुक्ति-मुक्तिसदानंदसंदोह, रामचंद्राह्निक सतिलक, रामपरत्व, धनुर्विद्या और संगीतरघुनंदन (दूसरा), भाषा आनंदरघुनंदन बनारस में छप चुका है । इन महाराज के ग्रंथ अप्रकाशित बहुत हैं । आपका विशाल पांडित्य अनेकानेक उत्कृष्ट हिंदी और संस्कृत-ग्रंथों से प्रकट है, और इतने अधिक ग्रंथों की रचना से आपका भारी साहित्य-प्रेम एवं श्रमशीलता प्रत्यक्ष प्रमाणित होती है । आप बड़े दानी थे और

कवियों का सदैव अच्छा मान करते थे। अपने पुत्र रघुराजसिंह के जन्मोत्सव में आपने सोने की जंजीर समेत एक भारी हाथी दे डाला था।

महाराजा रघुराजसिंह का जन्म सवत् १८८० में हुआ था और अपने पिता के स्वर्गवास पर आप स० १९११ में गद्दी पर बैठे। आपकी मृत्यु १९३६ में हुई। आपके बारह विवाह हुए थे। आप पूर्ण पंडित, हिंदी और संस्कृत के अच्छे कवि और मृगयाव्यसनी थे। आपने अनेकानेक छोटे-बडे ग्रंथ बनाए और ६१ शेर, एक हाथी, १६ चीते और हज़ारो अन्य मृग भी अपने हाथ से मारे। आप बडे दानी और भारी भक्त भी थे और २०००० विष्णुनाम नित्यप्रति जपते थे। उपर्युक्त बातों में समय अधिक लगाने के कारण आप राज्यप्रबंध कम कर सकते थे। मरणकाल के ५ वर्ष पूर्व आपने राज्यप्रबंध बिलकुल छोड़ दिया और अँगरेज़ी सरकार की ओर से प्रबंध होने लगा। सिपाही-विद्रोह में आपने सरकार का साथ दिया था। रीवाँ के वर्तमान महाराजा का जन्म स० १९३३ में हुआ।

महाराजा रघुराजसिंहजी बडे ही कवितारसिक और कवियों के कल्पवृक्ष हो गए हैं। इन्होंने कविता प्रकृष्ट बनाई है। इनके रचे हुए ग्रंथों के नाम ये हैं—

सुंदरशतक (स० १९०३), विनयपत्रिका (१९०६), रुक्मिणी-परिणय (१९०६), आनंदांबुनिधि (१९१०), भक्तिविलास (१९२६), रहस्यपंचाध्यायी, भक्तमाल, राम-स्वयंवर (१९२६), यदुराजविलास (१९३१), विनयमाला, रामरसिकावली (१९२१), [खोज १०९४] गद्यशतक, चित्रकूट-माहात्म्य, मृगया-शतक, पदावली, रघुराजविलास, विनयप्रकाश, श्रीमद्भागवत-माहात्म्य, रामअष्टयाम, भागवत-भाषा, रघुपतिशतक, गंगाशतक, धर्मविलास, शंभुशतक, राज-रंजन, हनुमतचरित्र, भ्रमर-गीत, परमप्रबोध और जगन्नाथशतक। [खोज १९०४] इनमें से सब ग्रंथ इन्हीं महाराज ने नहीं बनाए हैं, किंतु

दो-एक के कुछ भाग इन्होंने स्वय रचे और कुछ उनके आश्रित कवीश्वरों ने बनाए, जिनके नाम रसिकनारायण, रसिकविहारी, श्रीगोविंद, बालगोविंद, और रामचंद्र शास्त्री हैं। इन लोगों का पता इनके लिखित ग्रंथों तथा नागरीप्रचारिणी-सभा के खोज की रिपोर्ट [१९००] मे लगा है। इनमें से कई ग्रंथ बहुत बडे-बडे हैं।

इनकी कविता बहुत विशद और मनमोहनी होती है। इन्होंने विविध छंदों में कविता की है। उपर्युक्त ग्रथों में से कई हमने देखे हैं।

रुक्मिणीपरिणय में रास, शिखनख, जरासंध और दंतवक्र के युद्ध अच्छे हैं। फाग आदि भी बढ़िया कहे गए हैं।

ये महाराज राम के भक्त थे, सो इनका रामाष्टयाम रुक्मिणीपरिणय से बढ़कर है। इनकी भक्ति दास भाव की थी। इनकी कविता में छंदों की छटा और अनुप्रास दर्शनीय हैं, तथा युद्ध, मृगया और भक्ति के वर्णन सुंदर हैं। ये परम प्रशंसनीय कवि थे। इनके अनेकानेक ग्रंथ बड़े ही सुंदर हैं।

अनल उदंड को प्रकाश नव खंड छायो,
ज्वाला चंड मानो ग्रहमंड फोरै जाय-जाय ,
पुरी ना लखात ज्वालमालै दरसाति एक,
लोहित पयोधि भयो छाया एक छाय-छाय ।
देवता मुनीस सिद्ध चारण गँधर्व जेते,
मानि महाप्रलै वेगि व्योम ओर धाय-धाय ;
देखि रामराय हेत दीन्ही लंक लाय सबै,
चाय भरे चले कपि राय यश गाय-गाय ॥ १ ॥

वसुधा धर मैं वसुधा धर मैं त्यौं सुधाधर मैं त्यौं सुधा मैं लसै ;
अलि वृंदन मैं अलि वृंदन मैं अलि वृंदन मैं अलिसै सरसै ।
हिय हारन मैं हर हारन मैं हिमि हारन मैं रघुराज लसै ,
व्रज वारन वारन वारन वारन वारन वार बसत बसै ॥२॥

(१८०८) शंभुनाथ मिश्र

ये महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण खजुरगाँव के राना यदुनाथसिंह के यहाँ थे, और उन्हीं की आज्ञानुसार इन्होंने शिवपुराण के चतुर्थ खंड का भाषानुवाद संवत् १६०१ में विविध छंदों में किया। शिवसिंह-सरोज में इनका एक ग्रंथ वंसवंशावली का बनाना लिखा है। यह हमने नहीं देखा। शिवपुराण की भाषा बहुत उत्तम व मधुर है, जिसमें ब्रजभाषा व बैसवाड़ी मिश्रित है। यह ग्रंथ बहुत ही ललित और विविध छंदों में शिवकथा-रसिकों व काव्य-प्रेमियों के पढ़ने-योग्य है। हम इस ग्रंथ को कथा-विषयक ग्रंथों में बहुत ही बढ़िया समझते हैं। इस ग्रंथ में १००० अनुष्टुप् छंदों का आकार है। हम इन महाशय की गणना कवि छत्र की श्रेणी में करते हैं। उदाहरण के लिये कुछ छंद यहाँ उद्धृत किए जाते हैं—

इंद्रवज्रा

ह्वैगो तुरंतै सोइ बाल नीको, जाके लखे लागत चंद फीको।
अनूप जाके सब अंग सोहैं, बिलोकि कै रूप अनंग मोहैं।
ऐसे महा सुंदर नैन राजैं, जाके लखे खंजन कंज लाजैं।
निकासि कै सार मनौ ससी को, रच्यौ बिधातै निज हाथ जी को।

हरिगीती

शुभ श्रवन नैन कपोल कुंतल भृकुटि बर नासा बनी,
अति अरुन अधर बिसाल चिबुक रसालफल सम छबि घनी।
कर चरन नवल सरोज तहँ नख जोति उडगन राजहीं,
जनु पदुम बैर बिचारि उर करि सरन तिनकी आजहीं।

नाम—($\frac{१८०८}{१}$) दलपतिराय।

कविताकाल—१६००—१६६० तक।

दलपतिराय डाह्या भाई सी० आई० ई० काठियावाड़ के देशांतर्गत झालावाड़ प्रांत में वढवाण शहर में दलपतिरायजी संवत्

१८७६ में जन्मे थे। स्वामी नारायणधर्म के साधु श्रीदेवानंदजी से कविता पढ़ी। उसके बाद अहमदाबाद में इनके गुरु ने अपने मंदिर में संस्कृत पढ़ाने के लिये रख दिया। अहमदाबाद के जज साहब अलेक्ज़ेंडर किंवलों के फ़ारवर्ड साहब को इस देश की कविता जानने की इच्छा हुई। भोलानाथ साराभाई के ज़रिए से दलपतिराय को साहब ने रख लिया और इनकी सहायता से साहब ने गुज-रात देश का इतिहास लिखना शुरू किया और 'रासमाला' नाम से छपाकर प्रकट किया और ईस्वी सन् १८८८ ई० में अहमदाबाद में 'गुजरात वर्नाक्यूलर सोसायटी' की स्थापना कर कवि को उनका सेक्रेटरी बनाया और हिंदी भाषा की कविता छुड़ाके अपनी देश-भाषा (गुजराती भाषा) में कविता करने को कहा। तब से ये अपनी भाषा में कविता करने लगे। दलपतिराय का 'काव्यसंग्रह' नाम से वृहत् ग्रंथ छपाया है। इन्हीं महाशय ने स्वामी नारायण के मूलपुरुष सहजानद स्वामी के नाम से उनका 'पुरुषोत्तममाहात्म्य' नाम का ग्रंथ बनाया है। तथा दूसरा बलरामपूर के महाराजा के लिये 'श्रवणाख्यान' नाम का ग्रंथ हिंदी में अच्छा बनाया है।

(१८०९) सरदार

ये महाशय महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह काशी-नरेश के यहाँ थे। इनका कविताकाल संवत् १९०२ से १९४० पर्यंत रहा। इन्होंने कविप्रिया, रसिकप्रिया [खोज १९०४], सूर के दृष्टकूट और बिहारीसतसई पर परमोत्तम टीकाएँ गद्य में लिखी हैं। पद्य में इन्होंने साहित्यसरसी, व्यंग्यविलास (१९१९), षट्ऋतु, हनुमतभूषण, तुलसीभूषण, मानसभूषण, शृंगारसंग्रह (१९०५), रामरत्नाकर, रामरसजंत्र, [खोज १९०४] साहित्यसुधाकर (१९०२) और रामलीलाप्रकाश [खोज १९०३] (१९०६)-नामक अद्भुत ग्रंथ बनाए हैं। इनकी रचना में एक अलौकिक स्वाद मिलता

है। इनके भाव और भाषा दोनों प्रशस्त हैं। इनकी काव्यपटुता टीकाओं से विदित होती है। वर्तमानकाल में इन्होंने अपनी कविता पुराने सत्कवियों में मिला दी है। इनके शृंगारसंग्रह में घनआनद के क़रीब १५० चोखे छंद मिलेंगे। इन्होंने अश्लील विषय के भी दो-चार छंद कहे हैं। हम इनकी गणना पद्माकर की श्रेणी में करेंगे।

उदाहरण—

वा दिन ते निकसो न बहोरि कै जा दिन आगि दे अंदर पैठो;
झाँकत फूँकत ताकत है मन मारुत मार मरोर उमैठो।
पीर सहौं न कहौं तुम सों सरदार विचारत चार कुठैठो;
ना कुच कंचुकी छोरी लला कुच कंदर अंदर बंदर बैठो।
मनि मंदिर चदमुखी चितवै हित मजुल मोद मवासिन को;
कमनीय करोरिन काम कला करि थामि रही पिय पासिन को।
सरदार चहूँ दिसि छाय रहे सब छद छरा रस रासिन को;
मन मद उसासन लेन लगी मुख देखि उदास सुवासिन को।

(१८१०) पूरनमल भाट उपनाम पूरन

इनका जन्म सवत् १८७८ के लगभग हुआ। ये दरबार अलवर के कवि थे। कविता अच्छी की है। इनके पौत्र जयदेवजी अभी अलवर-दरबार में हैं। इनकी कविता साधारण है।

उदाहरण—

ललित लवंग लवलीन मलयाचल की,
　　मंजु मृदु मारुत मनोज सुखसार है,
मौलसिरी मालती सुमाधवी रसाल मौर,
　　झौरन पै गुंजत मलिंदन को भार है।
कोकिल कलाप कल कोमल कुलाहल कै,
　　पूरन प्रतिच्छ कुहू-कुहू किलकार है;

वाटिका विहार बाग बीथिन विनोद थान,
विपिन विलोकिए बसंत की वहार है ॥ १ ॥

(१८११) विरजीकुँवरि

ये गाँव गढ़वाड़ ज़िले जमनपूर के दुर्गवंशी ठाकुर साहबदीन की धर्मपत्नी थीं। इन्होंने संवत् १६०५ में सतीविलास [खोज १६०४]-नामक ग्रंथ सती स्त्रियों के विषय में बनाया, जिससे विदित होता है कि इन्होंने उसी भाषा में कविता की है, जिसमें गोस्वामी तुलसीदास ने की। इनकी रचना प्राय: दोहा-चौपाइयों में है। सवैया आदि में इन्होंने व्रजभाषा भी लिखी है। इनकी कविता का चमत्कार साधारण है और हम इन्हें मधुसूदनदासजी की श्रेणी में रखते हैं। इनका एक सवैया नीचे लिखा जाता है—

होय मलीन कुरूप भयावनि जाहि निहारि घिनात हैं लोगू ;
सोऊ भजे पति के पदपंकज जाय करै सति लोक मैं भोगू।
ताहि सराहत हैं विधि शेप महेश बखानैं बिसारि कै जोगू ;
याते बिरजि विचारि कहै पति के पद की तिय किंकरि होजू।

(१८१२) जानकीप्रसाद

ये महाशय भवानीप्रसाद के पुत्र पँवार ठाकुर ज़िला रायबरेली के निवासी थे। शिवसिंहजी ने इन्हें विद्यमान लिखा है। इनका "नीति-विलास"-नामक ग्रथ हमने देखा है, जो सं० १६०६ का छपा हुआ है। इसमें अनेक छंदों में नीति वर्णित है। इसमें ४६ पृष्ठ और २६१ छद हैं। इस ग्रथ की कविता-छटा साधारण है। शिवसिंहजी ने इनके रघुवीरध्यानावली, रामनवरत्न, भगवतीविनय, रामनिवास रामायण और रामानंदविहार-नामक ग्रंथ और लिखे हैं। इन्होंने उर्दू में एक हिंदुस्तान की तारीफ़ भी लिखी है। हम इनको साधा-रण श्रेणी का कवि समझते हैं। उदाहरणार्थ एक छंद नीचे देते हैं—

बीर बली सरदार जहाँ तहँ जोति बिजै नित नूतन छाजै ;
दुर्ग कठोर सुठौर जहाँ तहँ भूपति मग सो नाहर गाजै।
पालै प्रजाहि महीपै जहाँ तहँ संपति श्रीपति-धाम-सी राजै ,
है चतुरंग चमू असवार पँवार तहाँ छिति छत्र बिराजै।

नाम—(१८१३) बलदेवसिंह क्षत्रिय, अवध।

रचनाकाल—१६०७।

विवरण—ये द्विजदेव महाराजा मानसिंह और राजा माधवसिंह अमेठी के कवितागुरु थे। इनकी कविता तोष की श्रेणी की है, जो बड़ी उत्तम, मनोहर, सानुप्रास एवं यमक-युक्त है—

चंदन चमेली चोप चौसर चढ़ाय चारु,
मधु मदनारे सारे न्यारे रस कारे हैं,
सुगति समीर मद स्वेद मकरंद बुंद,
बसन पराग सों सुगंध गंध धारे हैं।
बारन बिहीन सुनि मंजुल मलिंद धुनि,
बलदेव कैसे पिकवारे लाज हारे हैं,
फूलमालवारे रति बल्लरी पसारे देखौ,
कंत मतवारे कै वसंत मतवारे हैं।

(१८१४) (पंडित प्रवीन) पं० ठाकुरप्रसाद मिश्र

ये महाशय अवध प्रदेशांतर्गत पयासी के निवासी ब्राह्मण थे और महाराजा मानसिंह अयोध्या-नरेश के यहाँ रहते थे। इनकी कविता ज़ोरदार और सरस है। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। हमने इनका कोई ग्रंथ नहीं देखा। [द्वि० त्रै० रि०] से इनके सारसंग्रह-नामक ग्रंथ का पता चलता है।

उदाहरण—

भाजे भुजदंड के प्रचंड चोट बाजे बीर
सुंदरी समेत सेवैं मंदर की कंदरी ;

मुगल पठान सेख सैयद असेष धरि,
आवत हजारन मजार कैसे चौधरी।
पंडित प्रवीन कहै मानसिंह भूपति,
कमान पै अरोपत यों तीखो तीर कैवरी ;
सिंघ के समेटे गज बाज के लपेटें लवा,
तैसे भूलै भूलक चकत्तन की चौकरी ॥ १ ॥
आयो रितुराज आजु देखत घनैरी आली,
छायो महामोद मों प्रमोद वनभूमि-भूमि ;
नाचत मयूर मन मुदित मयूरनि को,
मधुर मनोज सुख चाखै मुख चूमि-चूमि।
पंडित प्रवीन मधुलंपट मधुप पुंज,
कुजनि मैं मंजरी को चाखैं रस घूमि-घूमि ;
हेली पौन प्रेरित नवेली-सी द्रुमन बेली,
फैली फूल दोलन मैं झूलि रहीं झूमि-झूमि ॥ २ ॥
सानी शिवराज की न मानी महाराज भयो,
दानी रुद्रदेव सो न सूरत सितारा लौं ;
दाना मवलाना रूम साहिबी मैं बब्बर लौं,
आकिल अकब्बर लौं बलख बुखारा लौं।
पडित प्रवीन खानखाना लौं नवाब,
नवसेरवाँ लौं आदिल दराजदिल दारा लौं ;
विक्रम समान मानसिंह सम साँची कहौं,
प्राची दिसि भूप है न पारावार धारा लौं ॥ ३ ॥

नाम—(१८१५) अनीस।

रचनाकाल—१६११।

विवरण—इनके छंद दिग्विजयभूषण में हैं। कविता सरस और प्रशंसनीय है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में

है। इनका निम्न-लिखित अन्योक्ति का छंद परम प्रसिद्ध है—

सुनिए विटप प्रभु सुमन तिहारे हम,
राखिहौ हमैं तौ सोभा रावरी बढ़ाय हैं;
तजिहौ हरखि कै तौ बिलगु न मानैं कछू,
जहाँ-जहाँ जैहैं तहाँ दूनो जसु छाय हैं।
सुरन चढ़ैंगे नर सिरन चढ़ैंगे फेर,
सुकबि अनीस हाट-बाट मैं बिकाय हैं;
देस मैं रहैंगे परदेस मैं रहैंगे,
काहू बेस मैं रहैंगे तऊ रावरे कहाय हैं।

(१८१६) शिवप्रसाद राजा सितारे हिंद, काशी

ये महाशय संवत् १८८० में उत्पन्न हुए थे और १९५२ में इनका स्वर्गवास हुआ। इन्होंने सिक्ख-युद्ध के समय अँगरेज़ों की सहायता जी तोड़कर की थी। इस पर आप शिक्षा-विभाग के सरकारी उच्च कर्मचारी अर्थात् इंस्पेक्टर नियत हुए, और इन्हें राजा तथा सी० एस्० आई० की उपाधियाँ मिलीं। ये महाशय हिंदी के बड़े ही पक्षपाती थे, विशेषतया उर्दू और संस्कृत मिश्रित खिचड़ी हिंदी के। इसी खिचड़ी हिंदी का उन्नत स्वरूप खड़ी बोली है। इन्होंने अनेकानेक पाठ्य पुस्तकें लिखीं और शिक्षा-विभाग में हिंदी को स्थिर रखकर उसका बड़ा ही उपकार किया। उस समय यह विचार उठा था कि शिक्षा विभाग से हिंदी उठा ही दी जाय। ऐसे अवसर पर राजा साहब के ही परिश्रम से यह रुक गई। इनको रची हुई पुस्तकों की नामावली यह है—

वर्णमाला, बालबोध, विद्यांकुर, वामामनरंजन, हिंदी-व्याकरण, भूगोलहस्तामलक, छोटा हस्तामलक भूगोल, इतिहास-तिमिर-नाशक, गुटका, मानवधर्मसार, सैंडफ़ोर्ड ऐंड मारटिंस स्टोरी, सिक्खों का

उदय और अस्त, स्वयंबोध उर्दू, अँगरेज़ी अक्षरों के सीखने का उपाय, बच्चों का इनाम, राजा भोज का सपना और वीरसिंह का वृत्तांत। इन ग्रंथों में से कई संग्रह-मात्र हैं, और अधिकतर राजा साहब के ही बनाए हैं। राजा साहब की भाषा वर्तमान भाषा से बहुत मिलती है, केवल वह साधारण बोल-चाल की ओर अधिक झुकती है, और उसमें कठिन संस्कृत अथवा फ़ारसी के शब्द नहीं हैं। उसमें उर्दू-शब्दों का भी कुछ आधिक्य है। इन्होंने कुछ छंद भी बनाए हैं, पर विशेष-तया गद्य ही लिखा है। ये महाशय जैनधर्मावलंबी थे।

(१८१७) गुलाबसिंहजी कविराव (गुलाब)

इनका जन्म सं० १८८७ में बूँदी में हुआ। ये संस्कृत के बड़े विद्वान् तथा डिंगल, प्राकृत और भाषा के अच्छे ज्ञाता, बूँदी दरबार के राजकवि एवं कामदार थे। ये बूँदी के स्टेट कौंसिल और वाल्टर-कृत राजपुत्रहितकारिणी सभा के सभासद् तथा रजिस्टरी के हाकिम थे। आप भाषा की कविता सरस और मधुर करते थे। इनके रचित ये ग्रंथ हैं—

गुलाबकोष १ नामचंद्रिका २ नामसिंधुकोष ३ व्यंग्यार्थ-चंद्रिका ४ बृहद्व्यंग्यार्थचंद्रिका ५ भूषणचंद्रिका ६ ललितकौमुदी ७ नीतिसिंधु ८ नीतिमंजरी ९ नीतिचंद्र १० काव्यनियम ११ वनिता-भूषण १२ बृहद्वनिताभूषण १३ चिंतातंत्र १४ मूर्खशतक १५ कृष्ण-चरित्र १६ आदित्यहृदय १७ कृष्णलीला १८ रामलीला १९ सुलो-चनालीला २० विभीषणलीला २१ लक्षणकौमुदी २२ कृष्णचरित्र में गोलोक-खंड, वृंदावन-खंड, मथुरा-खंड, द्वारिका-खंड, विज्ञान-खंड और सूची २३ तथा ९ छोटे-छोटे अष्टक तथा पावस और प्रेमपचीसी इत्यादि। इनकी कविता सरस तथा मनोहर होती थी। इनकी गणना पद्माकर की श्रेणी में की जाती है। संवत् १९५८ में इनका देहांत हुआ।

उदाहरण—

उत्पत्ति एवं विवाह तक की कथा वर्णित है। तृतीय खंड में रावण की उत्पत्ति और विजय तथा राम की उत्पत्ति से लेकर राम राज्य तक का वर्णन है।

प्रत्येक खंड के अंत में इस कवि ने उस खंड के छंदों की संख्या कह दी है। यह ग्रंथ विशेषतया दोहा-चौपाइयों में कहा गया है। इसमें यत्र-तत्र और छंद भी हैं। रघुनाथदास ने रचना में गोस्वामी तुलसीदास का अनुकरण किया है, यहाँ तक कि कई स्थानों पर गोस्वामीजी के भाव भी विश्रामसागर में आ गए हैं। इस ग्रंथ के पढ़ने से जान पड़ता है कि रघुनाथदासजी पूरे भक्त थे, और उन्होंने भक्तों के विनोदार्थ यह ग्रंथ बनाया था। इसकी रचना व्रजविलास और रामाश्वमेध के समान है। इन तीनों ग्रंथों का रचनाचमत्कार साधारण है, परंतु इनमें कथाएँ रोचक वर्णित हैं। इस ग्रंथ के उदाहरणस्वरूप हम कुछ छंद नीचे लिखते हैं—

पैहैं सुख संपति यश पावन , ह्वैहैं हरि हरि जन मन भावन।
कल्पित ग्रंथ कहै जो कोऊ , याचौं ताहि जोरि कर दोऊ।
रामकथा शुभ चिंतामनि-सी , दायक सकल पदारथ जन सी।
अभिमत फलप्रद देव धेनु-सी ; स्वच्छकरन गुरुचरन रेनु सी।
हरिभय हरणि विभाव सुता-सी ; दुखद अविद्या तूल हुता-सी।
धर्म कर्म वर बीज रसा-सी ; सुमति बढ़ावन सुख सुदसा-सी।

इस महात्मा ने संस्कृत के ग्रंथों की बहुत-सी कथाएँ लिखी हैं और कुछ श्लोक भी बनाए हैं। इससे विदित होता है कि ये संस्कृत के जाननेवाले थे। इनकी भाषा गोस्वामी तुलसीदास की भाषा से मिलती-जुलती है और उत्तमता में व्रजविलास के समान है। इनके वर्णन साधारण उत्तमता के हैं।

(१८१९) लेखराज (नंदकिशोर मिश्र)

ये महाशय भगवंतनगर के मिश्र संवत् १८८८ में उत्पन्न हुए थे।

इनकी पितामही लखनऊ के वाजपेयियों के घराने की थीं। उनके मातामह भट्टाचार्य पाँडे थे जो अवध के बादशाह के यहाँ से इलाहाबाद प्रांत के शासक नियत थे। जब वह प्रांत अँगरेज़ों को मिल गया तब वह लखनऊ में रहने लगे। उनके दोनों पुत्र बड़े विख्यात चकलेदार थे। इनके यहाँ करोड़ों की संपत्ति थी। कोई अन्य उत्तराधिकारी न होने से लेखराज की पितामही इस संपत्ति की उत्तराधिकारिणी हुईं। इनका महल वहीं था जहाँ अब विक्टोरिया पार्क बना हुआ है। समय पाकर यह सब धन लेखराज के हाथ आया और ये महाशय सुखपूर्वक लखनऊ में रहते रहे। संवत् १९१४ वाले सिपाही-विद्रोह की गड़बड़ में इन्हें लखनऊ से बाहरी ज़िमीं-दारी गँधौली ज़िला सीतापूर में सब संपत्ति छोड़ कुछ दिनों को भाग जाना पड़ा। दैववश विद्रोहियों ने इनका महल खोदकर सब ख़ज़ाना तथा माल असबाब रक्षकों के रहते हुए भी लूट लिया। इनके हाथ जो कुछ धन ये ले गए थे वही लगा और गँधौली तथा सिहपूर की ज़िमींदारी इनके पास रह गई। फिर भी ये महाशय ऐसे शांतचित्त और संतोषी थे कि कभी यह इस आपत्ति का नाम भी नहीं लेते थे।

इनको कविता का सदैव शौक़ रहा और बहुत प्रकार के उत्तम पदार्थ अपने हाथ से ये बना सकते थे। इनके यहाँ कविगण प्रायः आया करते थे। ये तथा इनके अनुज बनवारीलाल काव्य के पूर्ण ज्ञाता थे। इन्होंने रसरत्नाकर (नायिकाभेद), राधानखशिख, गंगा-भूषण और लघुभूषण-नामक चार ग्रंथ बनाए थे। गंगाभूषण में इन्होंने गंगाजी की स्तुति में ही सब अलंकार निकाले हैं। लघु-भूषण में बरवै छंदों द्वारा अलंकारों के लक्षण तथा उदाहरण कहे गए हैं। इन ग्रंथों के अतिरिक्त स्फुट छंद बहुत हैं। इनका शरीरपात काशीजी में मणिकर्णिका घाट पर शिवरात्र के दिन संवत् १९४८ में हुआ। इनके लालबिहारी (द्विजराज कवि) जुगुलकिशोर (व्रजराज

कवि) और रसिकविहारी-नामक तीन पुत्र हुए, जो अब तीनों ही स्वर्गवासी हो गए। इनके तीनों पुत्र कविता में पूर्णज्ञ हुए और प्रथम दो ने उत्कृष्ट कविता भी की। हमारे पिता के ये महाशय मित्र थे और इनके पितामह हमारे पितामह के विमात्र भाई थे। हमको कविता की बहुत बातें ये महाशय बताया करते थे। इनकी गणना हम किसी श्रेणी में नहीं कर सकते।

उदाहरण—

राति रतिरंग पिय संग सो उमंग भरि,
उरज उतंग अंग-अंग जवनंद के,
ललकि-ललकि लपटात लाय-लाय उर,
बलकि-बलकि बोल बोलत उलंद के।
लेखराज पूरे किए लाख लाख अभिलाष,
लोयन लखात लखि सूखे सुख स्वद के,
दोऊ हद रद के सुदेत छद रद के,
बिवस मैन मद के कहै मैं गई सदके।

गाजि कै घोर कढ़ो गुफा फोरिकै पूरि रही धुनि है चहुँ देस री;
दोऊ कगार बगारिकै आनन पाप मृगान को खात जु बेसरी।
तापै अघात कवौ न लख्यो गनि नेकु सकै नहिं सारद सेस री,
सो लेखराज है गंग को नीर जो अद्भुत केसरी बेसरी केसरी।

(१८२०) रघुवरदयाल

ये महाशय मध्यप्रदेशांतर्गत दुर्ग ज़िला रायपूर के वासी थे। इन्होंने संवत् १६१२ में छंदरत्नमाला-नामक एक ग्रंथ बनाया, जिसमें प्रत्येक छंद का लक्षण तथा उदाहरण उसी छंद में कह दिया। इनकी भाषा संस्कृत-मिश्रित है और कहीं-कहीं इन्होंने श्लोक भी कहे हैं। इस ग्रंथ में कुल मिलाकर १६२ छंद हैं। ये महाशय अच्छे पंडित थे। हम इन्हें साधारण श्रेणी में रक्खेंगे।

मालती सवैया

उदाहरण—

सुंदर सात निवास जहाँ गण इदु असंगल कर्ष लिवैया ;
है पुनि कर्ण सबै पद अतनि मो मन नाचत मोद दिवैया।
तेइस वर्ण पदेक सुभ्राजत यो बिधि चारिहु चर्ण रचैया ,
काव्य बिचच्छन ते सुकहैं यह लच्छन मालति छद सवैया ।

(१८२१) ललितकिशोरी साह कुंदनलाल
(१८२२) तथा ललित माधुरी साह फुदनलाल

इनका जन्म स्थान लखनऊ था। ये जाति के वैश्य प्रसिद्ध साह विहारीलालजी के पौत्र थे। ये सवत् १९१३ में श्रीवृदावन चले गए और वहाँ गोस्वामी राधागोविंदजी के शिष्य हो गए। सवत् १९१७ में इन्होंने वृदावन में प्रसिद्ध साहजी का मंदिर बनवाना आरभ किया, जिसकी स्थापना स० १९२५ में हुई। स० १९३० कार्त्तिक शु० २ को इनका स्वर्गवास हुआ। इन्होंने कई बड़े-बड़े ग्रथ निर्मित किए, जिनका वर्णन नीचे किया जायगा। उनमें विपय प्राय· एक ही है। सबमें श्रीकृष्णचद्र का अष्टयाम या समयप्रबध विशेषतया वर्णित है। समय प्रबंध व अष्टयाम में यह भेद है कि अष्टयाम में श्रीकृष्णचंद्रजी के हर घड़ी और पहर का शृगारपूर्ण वर्णन है और समयप्रबध में दिन की पृथक्-पृथक् पूजा और उपासनाओं का सविस्तर कथन है। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्णजी की विविध लीलाओं का वर्णन भी इन्होंने विस्तारपूर्वक किया है। श्रीसूरदासजी के व इन लोगों के कथनों में यह भेद है कि सूर ने सूक्ष्मतया समस्त भागवत की और मुख्यतया पूर्वार्द्ध दशम स्कध की कथाएँ कही हैं, जिससे उनके ग्रंथ में विविध विपय आ गए हैं, परतु इन लोगों ने सिवा व्रज-वर्णन के और कुछ भी नहीं कहा, और उसमें भी कृष्ण की बाल-लीला इत्यादि की कथाएँ छोड़ दी हैं। इस कारण इनके कथनो में सिवा प्रेमालाप,

मान, मानमोचन, रास, भोजन, सोने, जागने आदि के और विषय बहुत कम आए हैं। ये कविगण विशेष भक्त तथा भक्ति-विषय में लीन थे, सो इनको इतने ही विषय अलम् थे, परंतु सर्वसाधारण तो इस लीला तथा विहार में उतना आनंद नहीं पा सकते, अतः इन गोसाईं संप्रदायवाले कवियों की कविता उतनी रुचिकर नहीं होती। इन लोगों की रचनाओं से सर्वसाधारण को क्या शिक्षा मिलती है? इस प्रश्न पर विचार करने से शोकपूर्वक कहना ही पड़ता है कि इस कवितासमुदाय से साधारण जनों के चरित्र शुद्ध होने की जगह बिगड़ने की अधिक संभावना है। इस प्रथा के संचालक लोग बहुधा भक्त और विरक्त थे। उनको ये वर्णन बाधा नहीं कर सकते थे, परंतु सर्व-साधारण तो इन वर्णनों को पठन करके अपने चित्तों को वश में नहीं रख सकते। हम लोग संसारी जीव हैं। हमारे वास्ते जो कविता या प्रबंध रचे जायँ, वे शिक्षापूर्ण होने चाहिए। ऐसा न होकर यह काव्य उसका उलटा प्रभाव हम लोगों पर छोड़ता है। तिस पर भी भाषा-साहित्य को इन लोगों से लाभ ही हुआ, क्योंकि यदि इस संप्रदाय के कविगण इतनी काव्य-रचना न किए होते, तो हिंदी-साहित्य आज इतना परिपूर्ण तथा मनोरंजक न होता, अस्तु। इनके छोटे भाई साह फुंदनलाल भी कवि थे और इनके जो ग्रंथ अपूर्ण रह गए थे उनकी पूर्ति उन्होंने कर दी थी, परंतु उन्होंने अपना नाम पृथक् कहीं नहीं लिखा, न कोई ग्रंथ ही अलग बनाया। उनकी यह महानुभावता प्रशंसनीय है। किसी-किसी छंद में ललितमाधुरी नाम पड़ा है। यही उनका उपनाम था।

ललितकिशोरीजी का काव्य बड़ा ही सरस, मधुर और प्रेमपूर्ण है। इनकी रचना से जान पड़ता है कि ये भाषा, फ़ारसी तथा संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। जगह-जगह पर इन्होंने फ़ारसी, अरबी और संस्कृत के शब्दों का प्रयोग किया है। खड़ी बोली की भी कविता इन्होंने यत्र तत्र की है और कहीं-कहीं कूट भी कहे हैं। सब बातों पर निगाह

करने से इनकी रचना बहुत ही उत्कृष्ट और प्रशंसनीय है। हम इनको दास की श्रेणी का कवि मानते हैं। इनके रचे ये ग्रंथ हैं—

अष्टयाम १ से ६ तक १ जिल्द
अष्टयाम ७ से ११ तक २ ,,
लीलासंग्रह अष्टयाम ३ ,,
ख्यालादिक मानलीला ४ ,,
} १०८६ पृष्ठ

रसकलिकादल १ से २४ तक ४ जिल्द ६१७ पृष्ठ फ़ुलस्कैप साइज़। कहीं-कहीं गद्य भी इन्होंने लिखा है। द्वि० त्रै० रि० में इनका एक और ग्रंथ स्फुट पद-नामक मिला है। उदाहरण—

ग़ज़ल

मटकी को आबरू की चट चौरहे में फोड़ै;
क्या भाई-बंद गुरुजन सब दुर्जनों को छोड़ै।
उल्फ़त जहाँ कि तिन सी ललिताकिशोरी तोड़ै;
चंचल छबीले ज़ालिम जानों से नैन जोड़ै।
इस रस के पावे चसके जेहि लोकलाज खोई;
मैं बेंचती हूँ मन के माखन को लेवे कोई॥ १॥

पद

चालिस है अध चंद थके।
चंचल चारु चारि खंजन बर चितै परसपर रूप छके।
दामिनि तीनि अनेक मधुपगन ललित भुजंगम संग लके;
अष्टादस अरबिंद अचल अलि ललितकिशोरी आज टके॥ २॥

दोहा

अंग अंग सों अबुकन झरि-झरि आवत नीर।
चंद स्रवत पीयूष कै बरसत दामिनि चीर॥ ३॥
नील बरन जल जमुन तिय चपल ह्वै उत जाहिं।
[illegible] स्याम घन माहिं॥ ४॥

पद

कमल मुख खोलौ आजु पियारे ।
विकसित कमल कुमोदिनि मुकुलित अलिगन मत्त गुँजारे ;
प्राची दिसि रवि थार आरती लिए ठनी निवछारे ।
ललितकिशोरी सुनि यह बानी कुरक्ट बिसद पुकारे ,
रजनी राज बिदा माँगै बलि निरखौं पलक उघारे ॥ ५ ॥
केकी कार कोकिला कोयल मामुहि करें जुहार ,
परमन हगनि कज हित बोलैं भृंगी जैजैकार ।
मूँदौ रध बेगि प्राची दिसि इति अच कहत पुकार ,
ललितकिशोरी निरख्यो चाहत रवि नव कुंज बिहार ॥ ६ ॥
लाभ कहा कचन तन पाए ।
बचननि मृदुल कमलदललोचन दुखमोचन हरि हरखि न ध्याए ।
तन मन धन अरपन नहिं कीनो प्रान प्रानपति गुननि न गाए ;
योवन धन कलधौत धाम सब मिथ्या सिगरी आयु गँवाए ।
गुरजन गरब बिमुख रँग राने डोलत सुख सपति बिसराए ;
ललितकिशोरी मिटै ताप नहिं बिन दृढ़ चिंतामनि उर लाए ॥ ७ ॥
प्रिया मुख राजत कुटिली अलकैं ।
मानहुँ चिबुक कुंड रस चाखन द्वै नागिनि अति उमगीं थलकैं ।
बेनी छूटि परी ऍंड़ी लौं बिथुरि लटैं घुघुरारी झलकैं ,
यह अरबिंद सुधारस कारन भँवर वृंद जुरि मानहुँ ललकैं ।
चंदन भाल कुटिल भ्रू मोरी ता पर यक उपमा है झलकैं ;
गै चढ़ि अरध चंद तट अहिनी अमी लूटिबे मन करि चलकैं ।
पुहुप सचित उरमाल बिराजत चरनकमल परसत ढलढलकैं ;
मनहुँ तरग उठत पुनि ठिठुकत रूप सरोवर माहिँ बिमलकैं ।
ललित माधुरी बदनसरोजहि रास करत पिय श्रमकन झलकैं ,
भृंग हगनि पिय छबि मकरंदहि घूँटत मुदित परत नहिँ पलकैं ॥ ८ ॥

मधुकर मेरे ढिग जनि आय।
तैं हरजाई बसकलकी सब फूलन बसिजाय।
कारे सबै कुटिल जग जाने कपटी निपट लबार ;
अमृत पान करैं विष उगिलैं अहिकुल प्रतछ निहार।
देखत चिकनी सुभग चमकनी राखी मजु बनाय ,
कारी अनी बान की पैनी लगत पार ह्वै जाय।
कारी निसि चोरन को प्यारी औगुन भरी अनेक ;
ललितकिशोरी प्रीति न करिहौं कारे सों यह टेक ॥ ६ ॥

इस समय के अन्य कविजन

नाम—(१८२२/१) उन्नडजी।

ग्रंथ—(१) भगवत पिंगल, (२) मेघाडंबर, (३) खुसवो कुमारी, (४) भगवद्गीता भाषा, (५) उन्नड बावनी, (६) ब्रह्मछत्तीसी, (७) ईश्वरस्तुति, (८) नीतिमर्यादा।

रचनाकाल—१८६० के पूर्व।

विवरण—कच्छदेशांतर्गत खाखरग्राम के ठाकुर थे। इनका स्वर्गवास स० १८६२ में हुआ था।

नाम—(१८२३) आजम।

ग्रंथ—(१) षट्ऋतु, (२) नखशिख।

कविताकाल—१८६०।

नाम—(१८२४) उदयचंद ओसवाल भंडारी।

ग्रंथ—(१) रसनिवास, (२) रसशृंगार, (३) दूषणदर्पण, (४) ब्रह्मप्रबोध, (५) ब्रह्मविलास, (६) भ्रमविहंडन।

कविताकाल—१८६०।

विवरण—आश्रयदाता महाराजा मानसिंह

नाम—(१८२५) दासदलसिंह।

ग्रंथ—दलसिंहानंदप्रकाश।

कविताकाल—१८९० । [खोज १९०३]

नाम—(१८२६) परमेश्वरीदास कायस्थ, कालिंजर

ग्रंथ—स्फुट । कवित्तावली । [च० त्रै० रि०]

जन्मकाल—१८६० । मृत्यु १९१२ ।

कविताकाल—१८९० ।

विवरण—चौबे नाथूराम जागीरदार मानदेव के चुंदेलखंड के दरबारी कवि थे ।

नाम—(१८२६/१) राधेकृष्ण ।

ग्रंथ—औषधिसंग्रह । [प० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१८९० ।

नाम—(१८२७) लक्ष्मणसिंह, बिजावर के राजा ।

ग्रंथ—(१) नृपनीतिशतक, (२) समयनीतिशतक, (३) भक्तिशतक, (४) धर्मप्रकाश ।

जन्मकाल—१८६७ ।

रचनाकाल—१८९० से १९०४ तक । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१८२८) संतोषसिंह, पटियाला ।

ग्रंथ—वाल्मीकीय रामायण भाषा ।

रचनाकाल—१८९० ।

नाम—(१८२९) गणेशबख्श, रामपूर मथुरा, ज़िला सीतापूर ।

ग्रंथ—प्रियाप्रीतमविलास ।

रचनाकाल—१८९१ के पूर्व । [खोज १९०३]

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१८३०) नवलसिंह प्रधान ।

ग्रंथ—अद्भुत रामायण ।

रचनाकाल—१८६१।

विवरण—मधुसूदनदास-श्रेणी।

नाम—(१८३१) भावन पाठक, मौरावाँ, ज़िला उन्नाव।

ग्रंथ—काव्यशिरोमणि या (काव्यकल्पद्रुम)।

रचनाकाल—१८६१।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१८३१/१) अजबेस भाट (द्वितीय)।

ग्रंथ—बघेलवंशवर्णन। (१८६२)

कविताकाल—१८६२। [खोज १६०१]

विवरण—महाराजा विश्वनाथसिंह बांधव-नरेश के यहाँ थे। तोष-श्रेणी।

नाम—(१८३१/२) पं० कृष्णदत्त पांडेय।

ग्रंथ—कृष्णपद्यावली, भारत का ग़दर।

जन्मकाल—१८६२। मृत्यु काल १६१६।

रचनाकाल—१८६२।

विवरण—आपका जन्म भोजपुर ग्राम में हुआ था। आपके दोनों ग्रंथ जलकर नष्ट हो गए हैं। आप बड़े शिवभक्त थे।

उदाहरण—

लंबोदर की मातु के पति जो भंजनहार;
कर जोरे तेहि विनय करूँ जिनने मारा मार।

कलि के कराल वर व्याल सम दुःखहू से,
नेकहू न तन मन मेरो घबरात है;
पुन्य पाठ तजि के पढ़ाय पाठ पापहू को,
व्याल सम कलि मेरो घातक अपार है।
मेरो मन तन अपनाय यह कलि नीच,
बड़ों से छोड़ाय साथ नीचहूँ ते जायो है;

अरे फलि छली छलि थलि न सकैगो मोंको,
मेरो नाथ शिव अब मोपर खुश राजी है।

नाम—(१८३२) बेनोदास वंदीजन।
जन्मकाल—१८६५।
रचनाकाल—१८९२।
विवरण—मेवाड़ इतिहास के लेखक थे।

नाम—(१८३२/१) राम कवि।
ग्रंथ—(१) विजय सुधानिधि, (२) हितामृतलतिका, (३) हनुमाननाटक, (४) रसिकजीवनसंग्रह। [च० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१८९२ के लगभग।

नाम—(१८३३) शंकर पांडे।
ग्रंथ—सारसंग्रह पृ० ८०।
रचनाकाल—१८९२। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—नीति।

नाम—(१८३४) शंकरदयाल दरियाबादी।
ग्रंथ—अलंकृतमाला। [द्वि० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१८९२।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१८३४/१) गंगाराम।
ग्रंथ—शब्द ब्रह्म जिज्ञासु। [च० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१८९३ के पूर्व।

नाम—(१८३५) नैनयोगिनी।
ग्रंथ—साबरतंत्र। [द्वि० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१८९३ के पूर्व।

नाम—(१८३६) शिवदयाल खत्री, प्रयाग।

ग्रंथ—(१) सिद्धिसागरतंत्र (१८६३ सं०) (२), शिवप्रकाश (१६१०-३२) [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१८६३ ।

विवरण—तन्त्र और आयुर्वेद ।

नाम—($\frac{१८३६}{१}$) केशव कवि ।

ग्रंथ—हनुमानजन्मलीला, बालचरित्र । [द्वि० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१८६४ के पूर्व ।

नाम—($\frac{१८३६}{२}$) गदाधर दतियावासी ।

ग्रंथ—(१) वृत्तचंद्रिका (१८६४), (२) कामंदक (१८६५), (३) विरुदावली (१८६८), (४) विजेंद्र-विलास (१६०३), (५) कैसरसभाविनोद (१६३६), (६) देशाटनविनोद । [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१८६४ ।

विवरण—पद्माकर के पौत्र थे ।

नाम—(१८३७) बालकृष्ण चौबे, बूँदी ।

ग्रंथ—स्फुट काव्य ।

कविताकाल—१८६४ ।

विवरण—बिहारीलाल के वंशज ।

नाम—(१८३८) सीतलराय वंदीजन, बौंडी, बहरायच ।

कविताकाल—१८६४ ।

विवरण—साधारण श्रेणी । राजा गुमानसिंह के यहाँ थे ।

नाम—(१८३९) उत्तमदास मिश्र ।

ग्रंथ—(१) स्वरोदय, (२) शालिहोत्र [प्र० त्रै० रि०] सामुद्रिक ।

कविताकाल—१८६५ के पूर्व ।

नाम—(१८४०) घनश्यामदास कायस्थ ।

ग्रंथ—(१) अश्वमेधपर्व, (२) वसुदेवमोचिनीलीला, (३) साँझी ।

कविताकाल—१८६५ । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—महाराजा रत्नसिंह चरखारीवाले के यहाँ थे ।

नाम—($\frac{१८४०}{१}$) नत्थासिंह ।

ग्रंथ—पद्मावत । [तृ० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१८६५ ।

नाम—(१८४१) प्राणसिंह कायस्थ, चरखारी ।

ग्रंथ—स्फुट ।

जन्मकाल—१८७० । मृत्यु १९०७ ।

कविताकाल—१८६५ ।

विवरण—रियासत चरखारी में फ़ौज के बख़्शी थे ।

नाम—($\frac{१८४१}{१}$) गणेश ।

करौली के चौबे गणेश कवि ने मध्य सम्प्रदाय के गोस्वामी श्रीहरिकिशोर के पुत्र मुकुंदकिशोर के कहने से संवत् १८६५ में एक बड़ा 'रसचंद्रोदय' नाम का ग्रंथ सत्रह अध्याय का बनाया और भी कई ग्रंथ हैं, जिनमें १—रसचंद्रोदय, २—कृष्णभक्तिचंद्रिका नाटक, ३—सभासूर्य, ४—माहात्म्य, ५—नम्रशतक नाभा के राजा देवेंद्रसिंह के लिये रचा है । करौली के यदुवंशी महाराजा श्रीमदनपालसिंहजी के समय में गणेश कवि हुए और संवत् १९११ में स्वर्गवासी हुए ।

नाम—(१८४२) विष्णुदत्त, चैमलपुरा ।

ग्रंथ—(१) राजनीतिचंद्रिका (खोज १९०४), (२) दुर्गाशतक ।

कविताकाल—१८६५ ।

विवरण—ठाकुर जैगोपालसिंह के यहाँ थे ।

नाम—(१८४३) बुधजन जैन।
ग्रंथ—योगींद्रसार भाषा। [खोज १६००]
कविताकाल—१८६५।
नाम—($\frac{१८४३}{१}$) लघुमति।
ग्रंथ—(१) विवेकसागर, (२) चरनायके।
रचनाकाल—१८६५।
नाम—(१८४४) लालदास।
ग्रंथ—(१) ऊषाकथा, (२) वामनचरित्र। [द्वि० त्रै० रि०]
कविताकाल—१८६६ के पूर्व।
विवरण—मनोहरदास के पुत्र।
नाम—(१८४५) गणेशप्रसाद।
ग्रंथ—हनुमतपच्चीसी (पृ० १२)। [द्वि० त्रै० रि०]
कविताकाल—१८६६।
विवरण—श्रीकाशी-नरेशजी की आज्ञा से रचना की।
नाम—(१८४६) वलदेव ब्राह्मण, चरखारी।
ग्रंथ—विचित्र रामायण (१६०३)। [च० त्रै० रि०]
कविताकाल—१८६६।
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(१८४७) भोलासिंह, पन्ना।
कविताकाल—१८६६।
नाम—($\frac{१८४७}{१}$) रेवाराम।
ग्रंथ—(१) विक्रमविलास (१८६६), (२) दोहावली (१६०३), (३) रामाश्वमेध, (४) ब्राह्मणस्तोत्र, (५) नर्मदाष्टक, (६) गंगालहरी, (७) रत्नपरीक्षा, (८) माता के भजन, (९) कृष्णलीला के गीत, (१०) रत्नपुर का इतिहास, (११) लोकलावण्य वृत्तांत।

जन्मकाल—१८६० ।

मृत्युकाल—१९३० ।

रचनाकाल—१८९६ ।

विवरण—आप रत्नपुर-निवासी जैमिनी गोत्रीय कायस्थ थे ।

नाम—(१८४८) हरिदास कायस्थ, पन्ना ।

ग्रंथ—(१) नखशतक, (२) रसकौमुदी (१८९७) [प्र० त्रै० रि०], (३) राधिकाभूषण, (४) इतिहास-सूर्यवंश, (५) अलंकारदर्पण (१८९८) [प्र० त्रै० रि०] (६) श्रीराधाकृष्णजी को चरित्र, (७) लीला महिमा समय वरनैन को, (८) गोपालपचीसी । [प्र० त्रै० रि०]

जन्मकाल—१८७६ ।

मृत्युकाल—१९०० ।

कविताकाल—१८९६ ।

विवरण—पन्ना-नरेश महाराजा हरवंशराय के यहाँ थे ।

संवत् १८८९वाले सूर्यमल्ल-नामक कवि ने नीचे लिखे हुए कवियों के नाम अपने १८९७ में बने हुए ग्रंथ में लिखे हैं । इससे प्रकट होता है कि ये कवि १८९७ तक हुए थे । नाम ये हैं—(१८४९) अजित, (१८५०) अतीस, (१८५१) आस, (१८५२) उदय, (१८५३) कमलानाथ, (१८५४) करनी, (१८५५) कलक, (१८५६) कल्यानपाल, (१८५७) कृपाल चारण, (१८५८) कंकाली, (१८५९) कजुली, (१८६०) गजानन, (१८६१) चक्रधर, (१८६२) चामुंड, (१८६३) चिमन, (१८६४) दयालाल, (१८६५) दान, (१८६६) देवक, (१८६७) देवमणि (आपने १६ अध्याय तक चाणक्यनीति भाषा रची), (१८६८) धनपति, (१८६९) धनसुख, (१८७०) धनंजय, (१८७१) धराधर, (१८७२) धर्मसिंह यती (स्फुट

काव्य), (१८७३) नल, (१८७४) नाज़िर, (१८७५) निर्मल [खोज १६०५] (भक्ति कविता), (१८७६) नदकेसरीसिंह (सगारथलीला रची, जिसमें साधारण श्रेणी का काव्य है), (१८७७) परिचारण, (१८७८) पुरान, (१८७९) बोरी, (१८८०) भगंड, (१८८१) भरतेस, (१८८२) भागु, (१८८३) भैरव चारण (वटुकपचासा), (१८८४) मदन, (१८८५) मधुकर, (१८८६) मधुप, (१८८७) रच्छुपाल, (१८८८) रामकृष्ण की वधू, (१८८९) शिवपाल, (१८९०) सरूपदास, (१८९१) सवाईराम, (१८९२) सिरा, (१८९३) सुंदरिका, (१८९४) हरिसुख, (१८९५) हून और (१८९६) हृदयानंद, (१८९७) जयलाल का भी नाम सूर्यमल ने लिखा है। ये उनके भाई थे। इनका समय १८९७ समझना चाहिए।

नाम—($\frac{१८९७}{१}$) वदावली ।

ग्रंथ—कोकसार वैद्यक। [प० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१८९७ के पूर्व।

नाम—(१८९८) विहारी उपनाम भोजराज (भोज)।

ग्रंथ—(१) भोजभूषण, (२) रसविलास।

कविताकाल—१८९७।

विवरण—साधारण श्रेणी। महाराजा रतनसिंह चरखारी-नरेश के यहाँ थे।

नाम—(१८९९) विहारीलाल त्रिपाठी, टिकमापुर, ज़िला कानपुर।

कविताकाल—१८९७।

विवरण—ये मतिराम कवि के वंशधर हैं। तोप श्रेणी।

नाम—(१९००) वुद्धसिंह कायस्थ, वुँदेलखंडी।

ग्रंथ—(१) सभाप्रकाश [प्र० त्रै० रि०], (२) माधवानल।
कविताकाल—१८६७।
नाम—(१९०१) रामदीन त्रिपाठी तिकवाँपूर, कानपूर।
कविताकाल—१८६७।
विवरण—मतिरामवंशी साधारण कवि।
नाम—(१९०२) रावराना वंदीजन।
कविताकाल—१८६७।
विवरण—साधारण श्रेणी। रतनसिंह चरखारी नरेश के यहाँ थे।
नाम—(१९०३) शिवराम।
ग्रंथ—तरुविलास।
कविताकाल—१८६७। [खोज १९०२]
नाम—(१९०४) साहबरामजी जोशी।
ग्रंथ—(१) रोजनामचा, (२) लाला साहब री मुलाखात।
कविताकाल—१८६७।
नाम—(१९०५) सीतल, तिकवाँपूर, कानपूर।
कविताकाल—१८६७।
विवरण—साधारण श्रेणी। मतिरामवंशी।
नाम—(१९०५/१) सुदर्शन।
ग्रंथ—बारहमासा। [च० त्रै० रि०]
नाम—(१९०६) सेवक, चरखारीवाले।
कविताकाल—१८६७।
विवरण—राजा रतनसिंह चरखारी-नरेश के यहाँ थे।
नाम—(१९०७) हरप्रसाद कायस्थ, पन्ना तथा टीकमगढ़।
ग्रंथ—(१) रसकौमुदी [खोज १९०५], (२) हिसाब। [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१८९७।

विवरण—साधारण श्रेणी। कड़ा में जन्म हुआ था। हिसाब का ग्रंथ बनाया।

नाम—(१९०८) अजितदास जैन, जौनपर।

ग्रंथ—जैनरामायण।

कविताकाल—१८९८।

विवरण—वृंदावन, जैन कवि के पुत्र।

नाम—(१९०९) बादेराय भाट, डलमऊ, ज़िला रायबरेली।

जन्मकाल—१८८२।

कविताकाल—१८९८।

विवरण—राजा दयाकृष्णराय लखनऊवाले के यहाँ थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(१९०९/१) मोहन।

ग्रंथ—(१) चित्रकूट माहात्म्य, (२) केलिकल्लोल। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१८९८।

नाम—(१९१०) हरिप्रसाद।

ग्रंथ—अलंकारदर्पण।

कविताकाल—१८९८।

विवरण—महाराजा हरिवंश के यहाँ थे।

नाम—(१९११) श्रीनिवास।

ग्रंथ—जानकीसहस्रनाम। [प्र० त्रै० रि०] वर्षोत्सव आनंदनिधि।

कविताकाल—१८९९ के पूर्व।

नाम—(१९१२) धीरजसिंह कायस्थ।

ग्रंथ—(१) गणितचंद्रिका [प्र० त्रै० रि०], (२) दस्तूर-

चिंतामणि [प्र० त्रै० रि०], (३) दफ्तरमोक्षतरंग।

कविताकाल—१८६६ के पूर्व।

विवरण—धारवाई उरछा राज्य। आप दतिया में भी थे।

नाम—(१९१३) रसानंद भट्ट।

ग्रंथ—संग्रामरत्नाकर। [द्वि० त्रै० रि०] (रसानंदघन १८८५)।

कविताकाल—१८६६।

विवरण— भरतपुर-नरेश महाराजा बलवंतसिंह की आज्ञानुसार रचा।

नाम—(१९१४) आशुतोष।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९१४/१) उद्धव उपनाम औघड।

ग्रंथ—(१) कर्णजत्तमणि, (२) कुकविकुठार।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—लखतर काठियावाड़वासी औदीच्य ब्राह्मण थे।

नाम—(१९१५) कमलाकर।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९१६) करतालिया।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९१७) करुणानिधान।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९१८) कल्यान स्वामी राधावल्लभी।

ग्रंथ—स्फुट पद।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

नाम—(१९१९) कृपा मिश्र ।

ग्रंथ—(१) रसपद्धति, (२) सवैयाप्रबोध ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

नाम—(१९२०) कृपासिंधुलाल ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—साधारण श्रेणी । राधावल्लभी सम्प्रदाय के आचार्य ।

नाम—(१९२०/१) खेम ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

ग्रंथ—भक्तसारचंद्रिका । इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ।

नाम—(१९२१) गोपालनायक ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं ।

नाम—(१९२२) गोपीलाल ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९२३) चंदसखी ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—जयपूरवासी । सम्भव है कि ये १६३८वाली चंद-सखी हों ।

नाम—(१९२४) जगराज ।

कविताकाल—१९०० के प्रथम ।

नाम—(१९२५) जनार्दन भट्ट।

ग्रंथ—(१) कविरत्न (२) वैद्यरत्न, [खोज १९०२], (३) बालविवेक, (४) हाथीको शालिहोत्र। [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९०० के प्रथम।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९२६) जितऊ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

नाम—($\frac{१९२६}{१}$) जीवाभक्त राजपूत।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—भावनगर-निवासी।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९२७) ठढी सखी।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९२८) धुरधर।

ग्रंथ—शब्दप्रकाश।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनकी रचना दिग्विजयभूषण में है। साधारण श्रेणी।

नाम—(१९२९) नरसिंहदयाल।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९३०) नीलमणि।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९३०/१) पीतमलाल ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

रचनाकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—राधावल्लभीय येटी-वंशज ।

नाम—(१९३१) भरथरी ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में संगृहीत हैं ।

नाम—(१९३१/१) भाण ।

ग्रंथ—(१) भाण-विलास, (२) भाणबावनी ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—मांडवी-निवासी, गिरिनारा ब्राह्मण मौनजी के पुत्र थे ।

नाम—(१९३२) माननिधि ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

नाम—(१९३३) मीठाजी ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९३४) मुरारीदास ।

ग्रंथ—गुणविजय विवाह ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९३५) मदिनि श्रीपति ।

ग्रंथ—जनकपचीसी ।

कविताकाल—१९०० के पूर्व ।

नाम—(१९३६) युगलमजरी ।

ग्रंथ—भावनामृत। [प्र० त्रै० रि०] नृपकेलि कादंबिनी। [च० त्रै० रि०]

कविताकाल—१६०० के पूर्व।

नाम—(१९३६) रमणलाल गोस्वामी।

ग्रंथ—हितमार्गगवेषिणी।

रचनाकाल—१६०० के पूर्व।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदायाचार्य।

नाम—(१९३७) रघु महाशय।

कविताकाल—१६०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९३८) रामजस।

कविताकाल—१६०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९३९) रामराय राठौर।

कविताकाल—१६०० के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९४०) रायमोहन।

कविताकाल—१६०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९४१) रूप सनातन।

ग्रंथ—शृंगारसुख।

कविताकाल—१६०० के पूर्व। [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। कहते हैं कि रूप और सनातन दो भाई थे। रूप रहते थे राधाकुंड पर और सनातन वृंदावन में।

नाम—(१९४२) रँगीला प्रीतम।
कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९४३) रँगीली सखी।
कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९४४) लच्छनदास राजा खेमपाल राठौर के पुत्र।
कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—साधारण श्रेणी। पद-रचयिता।

नाम—(१९४५) शिवचंद्र।
कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९४६) शंकर कायस्थ, बिजावर।
ग्रंथ—स्फुट।
कविताकाल—१९०० के कुछ पूर्व।
विवरण—कवि ठाकुर के पौत्र।

नाम—(१९४७) श्याममनोहर।
कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१९४८) श्यामसुंदर।
कविताकाल—१९०० के पूर्व।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९४९) सगुणदास।
कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९५०) साँवरी सखी।

ग्रंथ—भजन।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९५१) सोनादासी।

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१९५२) हरिदत्तसिंह ब्राह्मण।

ग्रंथ—राधाविनोद। [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९०० के पूर्व।

विवरण—शाकद्वीपी ब्राह्मण, महाराजा अयोध्या के वंशज।

नाम—(१९५३) अनुज।

ग्रंथ—नखशिख।

जन्मकाल—१८७५।

कविताकाल—१९००।

विवरण—इनके नीति के छंद भी अच्छे हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(१९५४) इच्छाराम कायस्थ, छतरपूर।

ग्रंथ—(१) द्रौपदीविनय, (२) राधामाधवशतक।

जन्मकाल—१८७६। मृत्यु १९४५।

कविताकाल—१९००।

नाम—(१९५५) उमापति त्रिपाठी, उपनाम कोविद।

ग्रंथ—(१) दोहावली, (२) रत्नावली।

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी। ये महाशय अयोध्या में रहते थे।

इनकी संस्कृत की कविता उत्तम है। ये महाराज महात्मा ऋषियों की तरह माने जाते थे और ये संवत् १९२५ तक जीवित रहे हैं। अत इनका कविताकाल संवत् १९०० हो सकता है। भाषा-कविता भी भक्ति-पक्ष में उत्तम की है। खोज [१९०१] में इनका अयोध्या-माहात्म्य-नामक एक और ग्रंथ मिला है। जिसका रचनाकाल १९२४ है।

नाम—(१९५६) ऋषिजू।

जन्मकाल—१८७२।

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९५७) कमलेश।

ग्रंथ—नायिकाभेद का एक ग्रंथ।

जन्मकाल—१८७०।

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९५८) कृष्ण।

ग्रंथ—विदुरप्रजागर।

जन्मकाल—१८७०।

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी। यह कृष्ण कवि बिहारीसतसई के टीकाकार की रचना है।

नाम—(१९५९) गुलाल।

ग्रंथ—शालिहोत्र।

जन्मकाल—१८७५।

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९६०) गोकुल कायस्थ, बलरामपुर।

ग्रंथ—(१) नामरत्नाकर (पृ० ६२), (२) ग्राम-विनोद।
(पृ० २०४) (१९२९)

कविताकाल—१९००। [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—धर्म एवं नीति कही।

नाम—(१९६१) गोपाल कायस्थ, रीवाँ। देखो नं० १३०४।

ग्रंथ—गोपालपचीसी।

कविताकाल—१९००।

विवरण—महाराज विश्वनाथसिंह रीवाँ नरेश के समय में थे।

नाम—(१९६२) गोपाल कायस्थ, पन्ना।

ग्रंथ—(१) शालिहोत्र, (२) गज-विलास। [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९००। मृत्यु १९२०।

विवरण—पन्ना-नरेश हरवंशराय और नरपतिसिंह के समय में थे। ये अजयगढ़ में भी रहे थे।

नाम—(१९६३) गोपालराय भाट।

ग्रंथ—दंपतिवाक्यविलास, रससागर, वन-यात्रा, वृंदावन-माहात्म्य, धुनिविलास, रासपंचाध्यायी, भावविलास, दूषणविलास, भूषणविलास, वंसीलीला, वर्षोत्सव, वृंदावनधामानुरागावली। [तृ० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९००।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९६४) चतुर्भुज मिश्र, आगरा।

ग्रंथ—(१) व्रजपरिक्रमासतसई, (२) यशविनोद।

कविताकाल—१९००।

विवरण—ये महाशय प्रसिद्ध कवि कुलपति मिश्र के वंशज थे। कविता साधारण श्रेणी की है।

नाम—(१९६५) जवाहिरसिंह कायस्थ, पन्ना। इनका ठीक नं० (८३५/१) है।

ग्रंथ—वैद्यप्रिया।

कविताकाल—१९००।

विवरण—महाराजा मानसिंह के समय में थे।

नाम—(१९६६) दीनानाथ अध्वर्यु, मोहार।

ग्रंथ—प्रश्नोत्तरखंड भाषा।

जन्मकाल—१८७६।

कविताकाल—१९००।

नाम—(१९६७) दुलीचंद, जयपूर।

ग्रंथ—महाभारत भाषा।

कविताकाल—१९०० के लगभग।

विवरण—महाराज रामसिंह जयपूर-नरेश की आज्ञा से बनाया था।

नाम—(१९६७/१) चतुर्भुज मिश्र।

विवरण—भरतपुर-निवासी ने भरतपुर के महाराजा बलवंतसिंहजी की आज्ञानुसार सं० १८९९ में संस्कृत ग्रंथ कुवलयानंद का हिंदी-कविता में भाषांतर किया है, जिसका नाम "अलंकार आभा" रक्खा है।

उसके दोहा—

संवत रस निधि वसु शशी, शिशिर मकरगत भानु।
माघ असित तिथि पंचमी, सुरु गुरु समै प्रमान॥ १॥
मैन पढ्यौ भाषा विशद, पै ढिठौन चितवानि।
भूप सुजस अरु बालहित, लखि बरन्यो रसमानि॥ २॥

नाम—(१९६८) नंदकुमार कायस्थ, बाँदा।

कविताकाल—१९०० के लगभग।
विवरण—पन्ना से कुछ पेंशन पाते थे।
नाम—(१९६९) परमअदीजन महोबावाले।
ग्रंथ—नखशिख।
जन्मकाल—१८७१।
कविताकाल—१९००।
विवरण—तोप-श्रेणी।
नाम—(१९७०) प्रधान।
ग्रंथ—कवित्त राज नीति।
जन्मकाल—१८७५।
कविताकाल—१९००। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—($\frac{१९७०}{५}$) वनादास।
ग्रंथ—(१) विवेकमुक्तावली, (२) अरजपत्रिका, (३) नामनिरूपण, (४) रामछटा, (५) मात्रामुक्तावली, (६) हनुमद्विजय, (७) सारशब्दावली, (८) छनछावली, (९) ब्रह्मज्ञानविज्ञानछत्तीसा, (१०) परमात्मबोध, (११) ब्रह्मज्ञानपराभक्तिपरत्व, (१२) ब्रह्मज्ञानशांतिसुपुष्टि, (१३) ब्रह्मज्ञानज्ञानमुक्तावली, (१४) ब्रह्मज्ञानतत्त्वनिरूपण, (१५) खडनखाद्य, (१६) ब्रह्मज्ञानद्वार, (१७) आत्मबोध, (१८) उभयप्रबोधक रामायण। [प० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१९००।
नाम—(१९७१) बलिरामदास।
ग्रंथ—चित्तविलास।
जन्मकाल—१८७०।

कविताकाल—१९०० ।
विवरण—निम्न श्रेणी ।
नाम—($\frac{१९७१}{१}$) व्रजगोपालदास ।
ग्रंथ—फुटकरबानी की भावनाबोधिनी टीका । [तृ० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१९०० ।
विवरण—गोस्वामी रासबिहारीलाल के शिष्य थे ।
नाम—(१९७२) घसगोपाल, बुँदेलखंडी ।
ग्रंथ—भाषासिद्धांत (गद्य व्रजभाषा) ।
कविताकाल—१९०० ।
विवरण—साधारण भाषा । ग्रंथ छतरपूर में है, जालवन-वासी
        बंदीजन ।
नाम—(१९७३) भारतीदान, जोधपूरवासी ।
कविताकाल—१९०० ।
विवरण—ये महाशय मुरारिदान के पिता थे । इनकी कविता अनु-
        प्रासविभूषित साधारण श्रेणी की थी ।
नाम—(१९७४) मदनगोपाल शुक्ल, फतूहाबादी ।
ग्रंथ—(१) अर्जुनविलास, (२) वैद्यरत्न ।
जन्मकाल—१८७६ ।
कविताकाल—१९०० ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।
नाम—(१९७५) माखन ।
जन्मकाल—१८७० ।
कविताकाल—१९०० ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।
नाम—(१९७६) रणजीतसिंह धधेरे क्षत्रिय, पंचमपुर ।

ग्रंथ—कालभास्कर। [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१६००।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१६७१/१) रतनसिंह।

ग्रंथ—नटनागर-विनोद।

रचनाकाल—१६००।

विवरण—सीतामऊ-नरेश महाराज रामसिंह के पुत्र थे। (१६०२)

नाम—(१९७७) रामनाथ उपाध्याय।

ग्रंथ—(१) रसभूषण ग्रंथ (खोज १६०३), (२) मह भाषा, (३) जानकीपच्चीसी [च० त्रै० रि०] । श्रीरामसुधानिधि।

कविताकाल—१६००।

विवरण—महाराजा नरेंद्रसिंह पटियालेवाले के समय में थे

नाम—(१९७८) लक्ष्मण।

ग्रंथ—(१) धर्मप्रकाश (१६०५), (२) भक्तप्रकाश (१६ (३) नृपनीतिशतक (१६००), (४) समयनीति (१६०१), (५) शालिहोत्र, (६) रामलीला (७) भावनाशतक, (८) मुक्तिमाल (१६०७

कविताकाल—१६००।

विवरण—भावनाशतक व शालिहोत्र हमने दरबार छत पुस्तकालय में देखे हैं।

नाम—(१९७९) लक्ष्मणप्रसाद उपाध्याय, बाँदा।

ग्रंथ—नामचक्र। [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१६००।

नाम—(१९८०) लोने बंदीजन, बुँदेलखंडी ।

जन्मकाल—१८७६ ।

कविताकाल—१६०० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१६८०/१) शिवप्रसाद ।

ग्रंथ—टेक-चरित्र । [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१६०० ।

नाम—(१९८१) संपति ।

जन्मकाल—१८७० ।

कविताकाल—१६०० ।

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१९८२) हरिजन कायस्थ, टीकमगढ़ ।

ग्रंथ—(१) कविप्रिया टीका, (२) तुलसीचिंतामणि [प्र० त्रै० रि०] (१६०३) ।

कविताकाल—१६०० ।

नाम—(१९८३) हिमचलसिंह कायस्थ, छतरपूर ।

ग्रंथ—सतसई की टीका ।

कविताकाल—१६०० ।

नाम—(१९८४) रामजू ।

ग्रंथ—बिहारीसतसई टीका ।

कविताकाल—१६०१ के पूर्व ।

नाम—(१९८५) अवधेस, चरखारी बुँदेलखंड ।

कविताकाल—१६०१ ।

विवरण—ये महाराज रतनसिंह चरखारी-नरेश के यहाँ थे । सरोजकार ने भूपावाले बुँदेलखंडी का एक और नाम

जन्मकाल—१८७५ ।

कविताकाल—१६०२ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९९६) सुखलाल भाट, ओड़छा ।

ग्रंथ—(१) दस्तूरअमल, (२) नसीहतनामा, (३) राधा-कृष्ण-कटाक्ष ।

कविताकाल—१६०२ । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९९७) हरी आचार्य ।

ग्रंथ—अष्टयाम । [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१६०३ के पूर्व ।

नाम—(१९९८) गजराज उपाध्याय ।

ग्रंथ—(१) वृत्ताहार पिंगल, (२) सुवृत्तहार, (३) रामायण ।

जन्मकाल—१८७४ ।

कविताकाल—१६०३ । (खोज १६०३)

विवरण—साधारण श्रेणी । बनारस-वासी ।

नाम—(१९९९) सर्वसुखशरण ।

ग्रंथ—तत्त्वबोध । [द्वि० त्रै० रि०] बारामासाविनय ।

कविताकाल—१६०३ के पूर्व ।

विवरण—अयोध्या के महंत ज्ञात होते हैं ।

नाम—(१६६६/१) जुलफ़िकारख़ाँ ।

ग्रंथ—जुलफ़िक़ारसतसई । (खोज १६०४)

रचनाकाल—१६०३ ।

विवरण—बुंदेलखंड के शासक अलीबहादुर के पुत्र थे ।

नाम—(२०००) नरेंद्रसिंह ।

ग्रंथ—बालक-चिकित्सा।

कविताकाल—१९०३।

नाम—(२००१) अमीर, बुँदेलखंडी।

ग्रंथ—रिसालातीरदाज़ी।

कविताकाल—१९०४। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(२००२) अवधबक्स।

जन्मकाल—१८८०।

कविताकाल—१९०४।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२००३) चंद कवि।

ग्रंथ—भेदप्रकाश। [प्र० त्रै० रि०] महाभारत भाषा (१९१९)
(खोज १९०४)

कविताकाल—१९०४।

विवरण—सवाई राजा रामसिंह जयपूर-नरेश इनके आश्रयदाता थे।

नाम—(२००४) जनकलाड़िलीशरण साधु, अयोध्या।

ग्रंथ—(१) नेहप्रकाशिका [द्वि० त्रै० रि०] (पृ० ८४), (२)
नेहप्रकाश, बालअली रचित पर टीका, (३) ध्यानमंजरी।

कविताकाल—१९०४।

नाम—($\frac{२००४}{१}$) नंदराम।

ग्रंथ—(१) योगसारवचनिका, (२) यशोधरचरित्र, (३)
त्रैलोक्यसार पूजा।

रचनाकाल—१९०४।

नाम—(२००५) भीषमदास।

ग्रंथ—रामरत्न दोहाई। [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९०४।

नाम—($\frac{२००४}{१}$) हृदेश, झाँसी।

ग्रंथ—विश्ववशकरन।

रचनाकाल—१९०४।

उदाहरण—

घोर घन सघन मदांध मतवारे फिरें,
धुरवा धुकारन मों धरा धमकत है;
गरज गरजकर लरजत भूमि चूमि,
झूमत झुकत मद युद्ध झमकत है।
भनत हृदेश लखै लाडिली अटा पै चढ़ि,
अंग-अंग नग जगमग दमकत है;
नीलपट उमहि घटा सी लहरात काम,
तड़फ छटा-सी चंचला-सी चमकत है।

नाम—($\frac{२००५}{२}$) कर्पूर विजय या चिदानंद।

ग्रंथ—स्वरोदय, आध्यात्मिक स्फुट पद।

रचनाकाल—१९०५ के पूर्व।

विवरण—संवेगी साधु तथा अपने रंग में मस्त रहा करते थे।

उदाहरण—

जौ लौं तत्त्व न सूझ पड़ैरे।

सौ लौं मूढ़ भरम बस भूल्यो मत समता गहि जग सों लड़ैरे।
अकर राग शुभ कप अशुभ लख भवसागर इण भाँति मड़ैरे;
धान काज जिम मूरख खितहड़ ऊसर भूमि को खेत खड़ैरे।
उचित रीति ओलख विन चेतन निस दिन खोटो घाट घड़ैरे;
मस्तक मुकुट उचित मणि अनुपम पग भूषण अज्ञान जड़ैरे।
कुमता वश मन वक्र तुरग जिम गहि विकल्प मग माँहि अड़ैरे;
चिदानंद निज रूप मगन भया तब कुतर्क तोहि नाहिं नड़ैरे।

नाम—(२००६) परमसुख।

ग्रंथ—सिंहासनबत्तीसी।
कविताकाल—१६०५ के पूर्व। (खोज १६००)

नाम—(२००७) कृष्णाकर चारण, करौली।
ग्रंथ—स्फुट।
कविताकाल—१६०५ के लगभग।

नाम—(२००८) थानसिंह (कान्ह) कायस्थ, चरखारी।
ग्रंथ—हयग्रीव नखशिख।
जन्मकाल—१८८२।
कविताकाल—१६०५। मृत्यु १६१४।
विवरण—चरखारी नरेश रतनसिंह के समय में थे।

नाम—(२००९) फ़ाज़िलसाह बनिया, छतरपुर।
ग्रंथ—प्रेमरत्न।
कविताकाल—१६०५। (खोज १६०५)
विवरण—मधुसूदनदास-श्रेणी।

नाम—(२०१०) हरिभक्तसिंह, भिनगा-नरेश।
ग्रंथ—(१) ज्ञानमहोदधि [द्वि० त्रै० रि०] (पृ० ४०),
(२) दानमहोदधि।
कविताकाल—१६०५।

नाम—(२०११) अलखसनेही नैनदास।
ग्रंथ—गीतासार।
कविताकाल—१६०६ के पूर्व। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—($\frac{२०११}{१}$) रामलाल।
ग्रंथ—रुक्मिणीमंगल। [तृ० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१६०६ के पूर्व।

नाम—($\frac{२०११}{२}$) जयदयाल।

ग्रंथ—कृष्णप्रेमसागर। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९०६।

नाम—($\frac{२०११}{३}$) नंदन पाठक।

ग्रंथ—मानसशंकावली। [प० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९०६।

नाम—(२०१२) सुखविहार साधु।

ग्रंथ—सुखविहार।

कविताकाल—१९०६।

नाम—($\frac{२०१२}{१}$) गंगाप्रसाद व्यास।

ग्रंथ—विनयपत्रिका तिलक। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९०७ के लगभग।

नाम—($\frac{२०१२}{२}$) अमजद।

ग्रंथ—सगुनबत्तीसी। [प० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९०७।

नाम—($\frac{२०१२}{३}$) छत्रपती (पद्मावती पुरवार)

ग्रंथ—(१) द्वादशानुप्रेक्षा (१९०७), (२) मनमोदनपंचाशिका (१९१६), (३) उद्यमप्रकाश (१९२२), (४) शिक्षाप्रधान।

रचनाकाल—१९०७।

नाम—($\frac{२०१२}{४}$) जिनराज महंत।

ग्रंथ—(१) पदावली, (२) अष्टयाम। (च० त्रै० खोज)

रचनाकाल—१९०७।

नाम—(२०१३) ठाकुरप्रसाद (उपनाम पंडित प्रवीन) पयासी।

कविताकाल—१९०७।

विवरण—तोष-श्रेणी। अयोध्या के महाराजा मानसिंह के यहाँ थे।

नाम—(२०१४) भानुनाथ झा।

ग्रंथ—प्रभावतीहरण।

जन्मकाल—१८८०।

कविताकाल—१९०७।

विवरण—महाराजा महेश्वरसिंहजी दरभंगा के यहाँ थे। मैथिली भाषा में कविता की है।

नाम—(२०१५) रमैया बाबा।

ग्रंथ—(१) रमैया की कविता, (२) रमैया बाबा की कविता, (३) रमैया के कवित्त। (खोज १९०४) सेव्य स्वरूप।

कविताकाल—१९०७।

नाम—(२०१६) साहबदीन साधु, बनारसी।

ग्रंथ—संदेहबोध।

कविताकाल—१९०७। (खोज १९०४)

विवरण—महाराजा ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह, काशी के समय में थे।

नाम—($\frac{२०१६}{१}$) हरबख्शसिंह।

ग्रंथ—(१) रामायणशतक (१९०७), (२) रामरत्नावली। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९०७।

नाम—(२०१७) धीरसिंह, महाराजा।

ग्रंथ—अलंकारमुक्तावली।

कविताकाल—१९०८ के पूर्व। (खोज १९०५)

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—($\frac{२०१७}{१}$) बालकृष्ण भट्ट, गोकुलवासी।

ग्रंथ—वैद्यमातंग। [तृ० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१६०८ के पूर्व।

नाम—($\frac{२०१७}{२}$) गोपालदास।

ग्रंथ—रामायणमाहात्म्य। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१६०८।

नाम—(२०१८) विष्णुसिंह चारण, करौली।

ग्रंथ—स्फुट।

कविताकाल—१६०८।

विवरण—ये भाषा तथा संस्कृत के अच्छे कवि और पंडित थे। करौली दरबार के आप वंशपरंपरा से कवि थे।

नाम—($\frac{२०१८}{१}$) सदासुख।

ग्रंथ—(१) रत्नकरंड श्रावकाचार, (२) अर्थप्रकाशिका, (३) भगवती आराधना की टीका, (४) समयसार की टीका, (५) नित्यपूजा टीका, (६) अकलंकाष्टक की टीका।

रचनाकाल—१६०८।

विवरण—बीसवीं शताब्दी के पुराने ढंग के प्रसिद्ध लेखक।

नाम—(२०१९) देवीदत्त।

ग्रंथ—अरकपचीसी।

कविताकाल—१६०९।

नाम—($\frac{२०१९}{१}$) दौलतराम।

ग्रंथ—(१) छहढाला, (२) स्फुट पद।

रचनाकाल—बीसवीं शताब्दी का प्रारंभ।

विवरण—आसनी-निवासी पल्लीपाल थे।

नाम—($\frac{२०१९}{२}$) पन्नालाल चौधरी।

ग्रंथ—(१) वसुनंदिश्रावकाचार, (२) सुभाषितार्णव, (३)

प्रश्नोत्तरश्रावकाचार, (४) जिनदत्तचरित्र, (५) तत्त्वार्थसार, (६) सद्भाषितावली, (७) भक्तामरकथा, (८) आराधनासार, (९) धर्मपरीक्षा, (१०) यशोधरचरित्र, (११) योगसार, (१२) पांडवपुराण, (१३) समाधिशतक, (१४) सुभाषितरत्नसंदोह, (१५) आचारसार, (१६) नवतत्त्व, (१७) गौतमचरित्र, (१८) जबूचरित्र, (१९) जीवधरचरित्र, (२०) भविष्यदत्तचरित्र, (२१) तत्त्वार्थसारदीपक, (२२) श्रावकपतिप्रकाश, (२३) स्वाध्यायपाठ, (२४) विविध भक्तियाँ एवं स्तोत्र ।

रचनाकाल—बीसवीं शताब्दी का प्रारभ ।

विवरण—संस्कृत ग्रंथों के बडे भारी अनुवादक थे ।

नाम—($\frac{२०१९}{3}$) भागचद्र ।

ग्रंथ—(१) ज्ञानसूर्योदय, (२) उपदेशसिद्धांतरत्नमाला, (३) अमितगतिश्रावकाचार, (४) प्रमाणपरीक्षा, (५) नेमिनाथ पुराण ।

रचनाकाल—बीसवीं शताब्दी का प्रारंभ ।

विवरण—ईसागढ, ग्वालियर-निवासी ओसवाल जैन थे ।

नाम—(२०२०) मनराज ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविताकाल—१६०६ ।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है ।

नाम—(२०२१) लक्ष्मीप्रसाद ।

ग्रंथ—(१) शृंगारकुंडली (खोज १६०५), (२) नायिकाभेद ।

कविताकाल—१६०६ ।

विवरण—साधारण श्रेणी। ये महाराजा भानुप्रताप छत्रसालवंशी के मुसाहब थे।

नाम—(२०२१/१) श्रीधर भट्ट, जयपुरवासी।

ग्रंथ—(१) भारतसार (१९८६), (२) राजेंद्रचिंतामणि।

रचनाकाल—१९०९। [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—पद्माकर-वंशज।

नाम—(२०२२) सुंदरलाल (उपनाम रसिक) जयपुर-निवासी।

ग्रंथ—(१) सुंदरचंद्रिकारसिक, (२) कुंजकौतुक, (३) पूजा-विभास।

कविताकाल—१९०९। (खोज १९००)

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२०२२/१) नारायणदास (उपनाम रसमंजरी)

ग्रंथ—अष्टयाम। [तृ० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१० के पूर्व।

नाम—(२०२२/२) रामनेवाज तिवारी।

ग्रंथ—रसमंजरी वैद्यक। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१० के पूर्व।

नाम—(२०२३) अजबेश (द्वितीय) भाट।

ग्रंथ—बघेलवंशवर्णन।

जन्मकाल—१८८६।

कविताकाल—१९१०।

विवरण—महाराजा विश्वनाथसिंह बाधव-नरेश के यहाँ थे। तोष कवि की श्रेणी।

नाम—(२०२३/१) अब्दुलहादी मौलवी।

ग्रंथ—वसंतविहारनीति।

रचनाकाल—१९१०। (खोज १९०४)

विवरण—न० २०२६ के साथ यह ग्रंथ बनाया।

नाम—(२०२४) औघड़।

ग्रंथ—तरगविलास।

कविताकाल—१९१० के लगभग। [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—काशी नरेश ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के यहाँ थे।

नाम—(२०२५) ईश्वरीप्रसाद कायस्थ, क़न्नौज।

ग्रंथ—(१) विहारीसतसई पर कुंडलिया, (२) जीवरचावली, (३) व्याकरणमूलावली, (४) नाटकरामायण, (५) ऊषा-अनिरुद्ध नाटक, (६) तवारीख़ महोवा।

जन्मकाल—१८८६।

कविताकाल—१९१०।

नाम—(२०२६) ऋतुराज।

ग्रंथ—वसंतविहारीनीति।

कविताकाल—१९१०। (खोज १९०४) नं० ($\frac{२०२३}{१}$) के साथ यह ग्रंथ बनाया।

नाम—(२०२७) ऋषिराम मिश्र, पट्टीवाले।

ग्रंथ—वशीकरणलता।

कविताकाल—१९१०।

विवरण—साधारण श्रेणी। लखनऊ के महाराजा बालकृष्ण के यहाँ थे।

नाम—(२०२८) कुँवर रानाजी क्षत्रिय, बलरामपुर।

ग्रंथ—फ़ीलनामा (पृ० ६१ गद्य, तथा पृ० ४६ पद्य)। [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९१० ।

नाम—($\frac{2028}{1}$) गणेश ।

ग्रंथ—ब्याहविनोद । [प० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१० ।

नाम—(२०२९) गदाधरदास, समोगरावाले ।

ग्रंथ—द्विग्विजयचमू (पृ० २७८) । [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९१० ।

विवरण—आश्रयदाता बलरामपुर के महाराज दिग्विजयसिंह ।

नाम—(२०३०) गुणसिंधु, बुँदेलखंड ।

जन्मकाल—१८८२ ।

कविताकाल—१९१० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२०३१) गौरचरण गोस्वामी, श्रीवृंदावन ।

ग्रंथ—(१) जालीकुंजलाल, (२) भूषणदूषण, (३) विचित्र जाल, (४) श्रीगौरांगचरित्र, (५) चोरी है कि दग़ाबाज़ी, (६) चैतन्यविजय की समालोचना पर आलोचना, (७) अभिमन्यु-वध, (८) भवानी । आपका ठीक नं० ($\frac{2863}{1}$) है ।

कविताकाल—१९१० । वर्तमान ।

नाम—(२०३२) चैनसिंह खत्री, लखनऊ (उपनाम हरचरण)

ग्रंथ—(१) शृंगारसारावली, (२) भारतदीपिका, (३) बृहत्कविवल्लभ ।

कविताकाल—१९१० ।

विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—(२०३३) जदुनाथ।

जन्मकाल—१८८१।

कविताकाल—१९१०।

विवरण—इनके कवित्त तुलसी के संग्रह में हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—($\frac{२०३३}{१}$) जमुनाचार्य।

ग्रंथ—रमल भाषा। [प० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१०।

नाम—(२०३४) दास।

ग्रंथ—केदारपथ प्रकाश।

कविताकाल—१९१०। (खोज १९०३)

विवरण—राजा नरेंद्रसिंह पटियालावाले की केदारनाथ-यात्रा का वर्णन है।

नाम—(२०३५) द्रोणाचार्य त्रिवेदी।

ग्रंथ—प्रियादासचरितामृत।

कविताकाल—१९१०। (खोज १९०१)

विवरण—महाराष्ट्र ब्राह्मण वासुदेव के पुत्र तथा बांधव-नरेश विश्वनाथसिंह के गुरु थे।

नाम—($\frac{२०३५}{१}$) नित्यवल्लभ।

ग्रंथ—(१) धर्मार्थदर्शन, (२) स्फुट पद।

रचनाकाल—१९१०।

विवरण—राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य।

नाम—(२०३६) बलदेवदास माथुर।

कविताकाल—१९१०।

ग्रंथ—(१) कृष्णास्तव भाषा, (२) करीमा हिंदी। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(२०३७) भैरवप्रसाद कायस्थ, पन्ना।

ग्रंथ—स्फुट।

जन्मकाल—१८८४।

कविताकाल—१९१०।

नाम—($\frac{२०३८}{१}$) नाथूराम शुक्ल।

विवरण—झालावाड़ प्रांत के बीकानेर स्थान के निवासी झाला-
वाड़ा औदीच्य ब्राह्मण थे, यह ईस्वी सन् १८६१ में जन्मे
थे और ईस्वी सन् १९१३ में गुज़र गए। इनकी कविता
का नमूना—

प्रोषितपतिका नायिका

छाय छाय बादर सुरंगवारे आय-आय,
धाय-धाय आवत धुँधारे कारे धुरवा;
झिल्ली झनकार चिक्कार चहुँओर होत,
ठौर ठौर बोलत डरावने ददुरवा।
कहै 'नाथूराम' भूम धूम सों दिखात आली,
अजहूँ न आए नँदलालजू निठुरवा,
पुरवा निहार साथ लागी पचसर वाकी,
मुरवा के सुरवा सों फाट जात उरवा।

नाम—(२०३८) मकरंद राय, पुवायाँ, शाहजहाँपूर।

ग्रंथ—हास्यरस।

जन्मकाल—१८८०।

कविताकाल—१९१०।

नाम—($\frac{२०३८}{१}$) मनोरथलाल।

ग्रंथ—(१) पद्यावली, (२) स्फुट पद।

रचनाकाल—१९१०।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदायाचार्य।

नाम—($\frac{२०३८}{२}$) मोहनलाल गोस्वामी।

ग्रंथ—(१) हित शिक्षासार, (२) स्फुट पद ।

रचनाकाल—१९१० ।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदायाचार्य ।

नाम—(२०३९) मगलदास कायस्थ, पैंतेपुर जि० बाराबंकी ।

ग्रंथ—(१) ज्ञानतरंग, (२) विजय-चंद्रिका, (३) कृष्ण-प्रिया, (४) सहस्रसार्था ।

जन्मकाल—१८८५ ।

कविताकाल—१९०० । मृत्यु १९६४ ।

विवरण—ये ठाकुर महेश्वरबख़्श ताल्लुक़ेदार रामपुर मथुरा के यहाँ थे । इन्होंने छोटे-बड़े ४८ ग्रंथ निर्मित किए थे । साधारण श्रेणी ।

नाम—(२०४०) रसाल, बिलग्राम हरदोई ।

ग्रंथ—(१) बरवै अलंकार, (२) नखशिख, (३) बारह-मासा । (१८८६)

जन्मकाल—१८८० ।

कविताकाल—१९१० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—($\frac{२०४०}{१}$) रसिकसुंदर कायस्थ, जयपूर ।

नाम—(२०४१) रामप्रसाद अगरवाल, मिर्ज़ापूर ।

ग्रंथ—(१) धर्मतत्त्वसार, (२) चौंतीस अक्षरी, (३) श्रीभक्त-रसचौंतीसी ।

कविताकाल—१९१० ।

नाम—($\frac{२०४१}{१}$) लालवल्लभजी ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

रचनाकाल—१९१० ।

विवरण—राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य ।

नाम—(२०४२) हलधर ।

ग्रंथ—सुदामाचरित्र । [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९११ के पूर्व ।

नाम—($\frac{२०४२}{१}$) गुमानीलाल ।

ग्रंथ—भक्त-मालमहिमा । [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९११ ।

नाम—(२०४३) तुलसीराम अगरवाल, मीरापुर ।

ग्रंथ—भक्तमाल (उर्दू अक्षरों में) ।

कविताकाल—१९११ ।

नाम—(२०४४) दीनानाथ, बुँदेलखंडी ।

ग्रंथ—भक्तिमंजरी । [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९११ ।

विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—($\frac{२०४४}{१}$) विहारीप्रसाद ।

ग्रंथ—(१) नीतिप्रकाश, (२) दंपतिध्यानतरंगिणी ।
[प्र० त्रै० रि०]

विवरण—नौ गाँव एजेंसी में रियासत ओरछा की तरफ़ से
वकील थे ।

नाम—(२०४५) भूमिदेव ।

कविताकाल—१९११ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२०४६) भूसुर ।

जन्मकाल—१८८५ ।

कविताकाल—१९११ ।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२०४७) किशोरीशरण (उपनाम रसिक वा रसिक विहारी)

ग्रंथ—(१) रघुवर का कर्णाभरण [प्र० त्रै० रि०], (२) सीतारामरसदीपिका [प्र० त्रै० रि०], (३) कवितावली [प्र० त्रै० रि०], (४) सीतारामसिद्धांतमुक्तावली [प्र० त्रै० रि०], (५) बारहखड़ी (खोज १९०४)।

कविताकाल—१९१२ के पूर्व।

विवरण—सुदामापुर के गुजराती ब्राह्मण, सखी-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। अयोध्या में बसे थे।

नाम—(२०४८) रसिकसुंदर।

ग्रंथ—प्रियाभक्तिरसबोधिनी राधामंगल।

कविताकाल—१९१२ के पूर्व (खोज १९००)

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(२०४९) गुरुप्रसाद क्षत्रिय, आजमगढ़।

ग्रंथ—सन्निपातचंद्रिका। (पृ० ५० पद्य) [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९१२।

विवरण—वैद्यक।

नाम—(२०५०) नरहरिदास।

ग्रंथ—(१) नरहरिप्रकाश, (२) नरहरिदास की बानी [प्र० त्रै० रि०], (३) नरहरिमाला।

कविताकाल—१९१२।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(२०५१) मृगेंद्र।

ग्रंथ—(१) प्रेमपयोनिधि (१९१२), (२) कवित्तकुसुम-वाटिका (१९१७)

कविताकाल—१९१२। (खोज १९०४)

नाम—($\frac{२०५१}{१}$) रघुवंशवल्लभदेव।

ग्रंथ—मनमथबोध [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१२।

नाम—(२०५२) रामनाथ मिश्र, आजमगढ़वाले।

ग्रंथ—प्रस्तुतचिकित्सा। [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९१२।

नाम—($\frac{२०५२}{१}$) शंकरराम।

ग्रंथ—राममाला। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१२।

नाम—($\frac{२०५२}{२}$) हरिविलास।

ग्रंथ—(१) नामावली, (२) रोगाकर्षण। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१२।

नाम—(२०५३) ध्यानदास।

ग्रंथ—(१) दानलीला, (२) मानलीला, (३) हरि-चंदशत।

कविताकाल—१९१३ के पूर्व।

नाम—($\frac{२०५३}{१}$) भवानी बक्सराय।

ग्रंथ—ज्योतिषरत्न। [प त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१३ के पूर्व।

नाम—(२०५४) दामोदरजी (दास) तैलंगभट्ट, अलवर।

ग्रंथ—स्फुट काव्य।

जन्मकाल—१८८७।

कविताकाल—१९१३।

विवरण—ये अलवर दरबार के आश्रित थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२०५४/१) टीकाराम, फीरोज़ाबादी।

ग्रंथ—स्फुट।

रचनाकाल—१९१४ के पूर्व।

विवरण—योधा फ़ीरोज़ाबादी के भतीजे थे।

उदाहरण—

चोप सो काम गढ़ौ चित दै निज पंकज से कर कुंदन नायौ,
जंत्रन-मंत्रन तंत्र बड़े करि मुक्तनि गूँदि कै ओप चढ़ायौ।
बाल की नासिका बीच बड़ी नथ तामेंहि फूलि उरोजन छायौ;
सो उपमा कहै टीकम मानहु, ईश के सीस पै छत्र चढ़ायौ।

नाम—(२०५४/२) बिहारीलाल वैश्य।

जन्म—१८९०।

मृत्यु—१९२७।

ग्रंथ—(१) अमृतध्वनिछंदावली, (२) प्रहेलकादि रत्नाकर, (३) रसायनानंद, (४) वाणीभूषण, (५) वृत्त-कल्पतरु, (६) छंदार्णव, (७) छंदप्रकाश, (८) वैद्यानंद, (९) नामप्रकाश, (१०) दोषनिवारण (१९१२), (११) गणेशखंड (१९१२), (१२) गंगाष्टक (१९१६)। [च० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९१२।

नाम—(२०५५) देवीसिंह। [प्र० त्रै० रि०]

ग्रंथ—(१) अर्बुदविलास, (२) देवीसिंहविलास, (३) आयुर्वेदविलास, (४) रहसलीला, (५) नृसिंहलीला।

कविताकाल—१९१४ के पूर्व।

नाम—(२०५६) गोविंद, गोपालपुर, ज़िला गोरखपुर।

ग्रंथ—विलासतरंग (कोकसार)।

कविताकाल—१९१४ ।
विवरण—बजवे में मारे गए ।
नाम—(२०५७) घनश्याम ब्राह्मण, आज़मगढ़ ।
ग्रंथ—वैद्यजीवन (पृ० ४४) । [द्वि० त्रै० रि०]
कविताकाल—१९१४ ।
नाम—(२०५८) छत्रधारी, रामजीवन के पुत्र ।
ग्रंथ—वाल्मीकीय रामायण भाषा ।
कविताकाल—१९१४ । (खोज १९०५)
नाम—(२०५९) थिरपाल, सामर गाँव, मारवाड़ ।
ग्रंथ—गुलाबचंपा ।
कविताकाल—१९१४ ।
विवरण—कहानी (श्लोक-संख्या ४१०) ।
नाम—(२०६०) नरेंद्रसिंह, पटियाला के महाराज ।
कविताकाल—१९१४ ।
नाम—(२०६१) व्रजजीवन ।
ग्रंथ—(१) भक्तरसमाल, (२) अखिलभक्तमाल, (३) चौरासीसार, (४) चौरासीजी को माहात्म्य, (५) छंदमचौवनी, (६) हितजी महाराज की बधाई, (७) हरिसहचरीविलास, (८) हरिरामविलास, (९) मामकभक्तमाल, (१०) प्रियाजी की बधाई, (११) रामचंद्रजी की सवारी, (१२) सतसंगसार ।
कविताकाल—१९१४ । [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—साधारण श्रेणी ।
नाम—(२०६२) शालिग्राम चौबे, बूँदी ।
ग्रंथ—स्फुट ।

कविताकाल—१९१४।

विवरण—बूँदी-दरबार में थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२०६३) अच्छेलाल भाट, कन्नौज।

जन्मकाल—१८८९।

कविताकाल—१९१५।

नाम—($\frac{२०६३}{१}$) उरदाम।

विवरण—मथुरा के चौधरी श्रटक के चौबे। व्यास कवि के शिष्य। इनका 'उरदामप्रकाश' ग्रंथ बनाया हुआ है। ये संवत् १९१५ तक जीते थे। ग्वाल कवि के शिष्य थे।

जोवन मुलक लही मदन महीपजू ने,
मीन छाप देकै राखे भटजुग जोरदार;
उरज-बुरज में मवासी छल राशि मानों,
प्रियमन अतर वनक नीके और दार।
'उरदास' शिशुता शहर चढ़ि लूटि लिए,
शरम धरम कह्यो एकहू न और दार;
ये न कंज खंजन, चकोर भौंर गंजन ये,
करत कजाकी कजरारे नैन कोरदार।

नाम—(२०६४) काशी।

ग्रंथ—(१) गदर रायसो, (२) धूँमा रायसो, (३) छछूँदर रायसो।

कविताकाल—१९१५। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—($\frac{२०६४}{१}$) गणेशपुरी।

विवरण—जोधपुर अंतर्गत पर्वतसर प्रगना के 'चारवास'-नामक ग्राम के हिस्सेदार और वहीं के रहनेवाले। रोहड़िया बारहट यतावत खांप के पदमजी चारन के दो पुत्र भए। वड़े का नाम 'रूपदान' और छोटे का 'गुलजी'। यह

गुप्तजी संवत् १८८३ में जन्मे थे। जब इनकी उमर २७ वर्ष की हुई, तब साधु हो गए और अपना नाम 'गणेशपुरी' रक्खा, और काशी में जाकर संस्कृत पढ़ी। ये भाषा में अच्छी कविता करते थे। सुनने में आता है कि 'काव्य-प्रकाश' सारा ग्रंथ उनके जिह्वाग्र था। इन्हीं महाशय ने महाभारत के कर्णपर्व को भाषा में 'वीरविनोद' नाम से छपाया है। कविता में अपना नाम न रखके अपने पिता श्रीपद्मजी के नाम कविता करते थे।

गणेशपुरीजी सारे राजपूताने में प्रख्यात हैं। परंतु जोधपुर और उदयपुर में विशेष रहते थे। क्योंकि जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह इनको बहुत मानते थे।

नाम—(२०६५) कृपालुदत्त, काशी-वासी।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—ये महाशय महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी के पिता और एक अच्छे कवि थे।

नाम—(२०६६) कृष्ण।

जन्मकाल—१८८८।

कविताकाल—१९१५।

नाम—(२०६७) गयादीन कायस्थ, बाँदा।

ग्रंथ—चित्रगुप्तवृत्तांत।

जन्मकाल—१८९०।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—फ़तेहपूर में तहसीलदार थे। यह ग्रंथ ज्ञानसागर प्रेस में छपा है।

नाम—(२०६८) गोमतीदास, अवध।

ग्रंथ—रामायण।
कविताकाल—१९१५। (खोज १९०३)
नाम—(२०६९) गुरुदत्त।
जन्मकाल—१८८७।
कविताकाल—१९१५।
विवरण—शिवसिंह सवाई के पुत्र के दरबार में थे। साधारण श्रेणी।
नाम—(२०७०) खुमानसिंह कायस्थ, ठाकुरदास के पुत्र, चरखारी।
ग्रंथ—(१) रामायण, (२) गोवर्द्धनलीला। [प्र० त्रै० रि०]
जन्मकाल—१८९० के लगभग। मृ० स० १९५५।
कविताकाल—१९१५।
विवरण—श्रीमान् चरखारी-नरेशजी ने कविता पर प्रसन्न होकर पारितोषिक दिया था।
नाम—($\frac{२०७०}{१}$) जौहरीलाल शाह।
ग्रंथ—पद्मनदपंचविंशतिका की वचनिका।
रचनाकाल—१९१५।
नाम—(२०७१) तुलसीराम मिश्र, कानपूर।
ग्रंथ—सत्यसिंधु।
जन्मकाल—१८८८।
कविताकाल—१९१५ से ५८ तक।
नाम—(२०७२) निर्भयानंद स्वामी।
ग्रंथ—शिक्षा-विभाग की कुछ पुस्तकें।
कविताकाल—१९१५।
नाम—($\frac{२०७२}{१}$) मनोहरवल्लभ गोस्वामी।
ग्रंथ—(१) राधाप्रेमामृततरंगिणी, (२) कीरदूत, (३)

गोपिकागीत, (४) छंदपयोनिधि, (५) अलंकारमयूख, (६) हितभाषा, (७) हितशिक्षा, (८) आस्तिक-नास्तिक-संवाद, (९) चौरासी की टीका।

रचनाकाल—१९१५।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदायाचार्य।

नाम—(२०७३) महेशदास।

ग्रंथ—एकादशीमाहात्म्य। [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९१५।

नाम—(२०७४) शिवदीन, भिनगा, बहराइच।

ग्रंथ—कृष्णदत्तभूषण।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—राजा भिनगा के नाम ग्रंथ रचा। साधारण श्रेणी।

नाम—($\frac{२०७४}{१}$) शिवलाल कायस्थ, ओरछा।

ग्रंथ—(१) अन्नपूर्णास्तुति (१९१५), (२) नीतिशृंगार-मंजरी। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१५।

नाम—(२०७५) हरिदास बंदीजन, बाँदा।

ग्रंथ—राधाभूषण।

जन्मकाल—१८९१।

कविताकाल—१९१५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—($\frac{२०७५}{१}$) टीकाराम।

ग्रंथ—वैद्यसिकंदरी। [तृ० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९१६ के पूर्व।

चौंतीसवाँ अध्याय

दयानद-काल

(१९१६—२५)

(२०७६) महर्षि स्वामी दयानद सरस्वती और आर्य-समाज

स्वामीजी का जन्म सवत् १८८१ में औदीच्य ब्राह्मण अवाशकर के यहाँ मोरवी शहर काठियावाड़ प्रदेश में हुआ था जहाँ पर इनका नाम मूलशकर रक्खा गया। इनके पिता ने २१ बरस की अवस्था में इनका विवाह करना चाहा, परंतु इन्होंने छिपकर घर से प्रस्थान कर दिया। एक ब्रह्मचारी ने इनको शुद्ध चेतन नाम का ब्रह्मचारी बनाया। पीछे से श्रीपूर्णानंद सरस्वती से सन्यास लेकर स्वामीजी ने दयानद सरस्वती नाम धारण किया। इन्होंने कृष्ण शास्त्री से व्याकरण पढ़ा और योगानद स्वामी तथा दो और महात्माओं से योग सीखकर आबू पर्वत पर उसका अभ्यास किया। इधर-उधर भ्रमण करते हुए ये ३० वर्ष की अवस्था में हरिद्वार पहुँचे और बहुत दिन तक हिमालय पर्वत पर घूमते रहे। जहाँ-जहाँ जो कोई विद्वान् इनको मिला, उससे ये विद्या ग्रहण करते गए। इन्होंने सं० १९१७ से २० तक स्वामी विरजानदजी शास्त्री से मथुरापुरी में विद्याध्ययन किया और उन्हीं के उपदेश से लोक-सुधार का बीड़ा उठाया।

सं० १९२० म इन्होंने लोगों से शास्त्रार्थ करना प्रारभ किया। आपने शैव, वैष्णव, वल्लभीय, जैन, रामानंदी आदि मतों का खडन और इन मतों के बहुत-से पडितों को परास्त करके सं० १९२३ तक निम्न बातों को अशुद्ध ठहराया—मूर्तिपूजा, वाममार्ग, वैष्णव-मत, चोलीमार्ग, बीजमार्ग, अवतार, कठी, तिलक, छाप, पुराण, गगा आदि तीर्थ स्थानों की पवित्रता और नाम स्मरण तथा व्रत आदि। इसके पीछे १९२३ में हरिद्वारवाले कुभ-मेले के अवसर पर

पाखंड-खंडिनी ध्वजा स्थापित करके आपने बहुत से पंडितों और साधुओं को शास्त्रार्थ में पराजित किया। इसके बाद प्रयागाबाद, कान-पूर इत्यादि में स्वामीजी से बड़े-बड़े शास्त्रार्थ होते रहे, जहाँ हर जगह इनकी जीत होती रही। अततोगत्वा सं० १९२६ में इस महात्मा ने आर्या-वर्त की केंद्रस्वरूपा श्रीकाशीपुरी में पहुँचकर वहाँ के महात्माओं और पंडितों को शास्त्रार्थ के वास्ते ललकारा। आप तीन वर्ष के भीतर ५ या ६ दफ़ा काशी धाम में गए। काशी के भारी शास्त्रार्थ में हिंदू लोग विशुद्धानंद स्वामी को और समाजी लोग इन स्वामीजी को जीता हुआ कहते हैं। इसके बाद स्वामीजी पटना, कलकत्ता, मुँगेर इत्यादि पूर्वी शहरों में घूम-घूमकर शास्त्रार्थ करते रहे। अनंतर इन्होंने दक्षिण की यात्रा की, और ये जबलपूर, पूना इत्यादि होते हुए बंबई होकर काठियावाड़ पहुँचे। वहाँ भी ख़ूब शास्त्रार्थ हुए। इनका विचार बहुत दिनों से "आर्यसमाज" स्थापित करने का था, परंतु उसके स्थापन में विघ्न पड़ते रहे। अंत में चैत्र शु० ५ सं० १९३२ को बंबई के मुहल्ला गिरगाम में डॉक्टर मानिकचंदजी की वाटिका में पहले-पहल आर्य-समाज की स्थापना हुई और उसके २८ नियम बनाए गए। फिर वहाँ से पूना आदि घूमते हुए ये महाशय दिल्ली पहुँचे। वहाँ से पंजाब के प्रायः सभी शहरों में आपने शास्त्रार्थ करके हर जगह विजय पाई। इसके बाद आपने मध्यप्रदेश, राजपूताना इत्यादि में घूम-घूमकर धर्म-प्रचार किया। इस समय तक अन्य धर्म-वाले कुछ कट्टर मूर्ख इनके घोर शत्रु हो गए। उनके षड्यंत्रों से २९ सितंबर सं० १९४० को स्वामीजी को दूध में पीसकर काँच दिया गया। जिससे बहुत व्यथित होकर ये अजमेर को चले गए और बहुत समय तक पीड़ित रहे। अंत को यह भारत-भानु कार्त्तिक बदी १५ सं० १९४० को ५९ बरस तक भारत को प्रकाशित रखकर इस असार संसार को छोड़ ६ बजे संध्या को अस्त हो गया।

इन महाशय की रचना के ये ग्रंथ हैं—सत्यार्थप्रकाश, वेदांग-प्रकाश, पंचमहायज्ञविधि, संस्कारविधि, गोकरुणानिधि, आर्योद्देश्य-रत्नमाला, भ्रमोच्छेदन, भ्रांतिनिवारण, आर्याभिविनय, व्यवहार-भानु, वेदविरुद्धमतखंडन, स्वामीनारायणमतखंडन, वेदांतध्वांत-निवारण, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, ऋग्वेदभाष्य और यजुर्वेद-भाष्य। इन्होंने जितने भाषा-ग्रंथ लिखे, उनमें वर्तमान शुद्ध हिंदी का प्रयोग किया। आपकी भाषा बहुत ही सरल होती थी।

संस्कृत के बड़े भारी विद्वान् होने पर भी आपने विशेषतया हिंदी को आदर दिया और अपने प्रायः सभी ग्रंथ हिंदी में लिखे।

ऐसे महात्मा पुरुष इस संसार में बहुत कम हुए हैं। इन्होंने याव-ज्जीवन अखंड ब्रह्मचर्य व्रत रक्खा और सदैव परोपकार तथा देश-सेवा की। अपने उपदेशों में आप भारतोन्नति का बहुत बड़ा ध्यान रखते थे। यदि इनका मत पूरा-पूरा स्थिर हो जावे, तो भारत की बहुत-सी अवनतिकारिणी रस्में एकबारगी मिट जावें। जैसे महात्मा बुद्धदेव ने अपने समय की भारतमूलोच्छेदनकारिणी सभी चालों को हटाकर सीधा-सादा बौद्धधर्म चलाया था, उसी प्रकार इस महर्षि ने भारत-मुखोज्ज्वलकारी आर्य-समाज के सिद्धांतों को स्थिर किया है। यह एक ऐसी औषध है, जिसके भले प्रकार सेवन से भारत के सभी भारी रोग-दोष शांत हो सकते हैं। अर्थशास्त्र को धर्मसिद्धांतों से मिला-कर इहलोक और परलोक दोनों में सुखद मत स्थापित करने में यह महात्मा समर्थ हुआ है। वेदों को इसी महात्मा ने पुनर्जन्म-सा दिया। भारतवर्ष में बुद्धदेव, शंकर स्वामी और स्वामी दयानंद यही तीन मुख्य धर्मप्रचारक हुए हैं। इस महात्मा से संस्कृत तथा हिंदी-प्रचार को भी बहुत बड़ा लाभ पहुँचा और आर्य-समाज के

नियमानुसार हिंदी की उन्नति करना भी एक धर्म है। ये महाशय गुजराती थे, तथापि राष्ट्र-भाषा समझकर इन्होंने हिंदी ही को आदर दिया। यदि संसार के सर्वोत्कृष्ट महानुभावों की गणना की जावे, तो उसमें स्वामी दयानंदजी का नंबर अच्छा होगा। इस प्रबंध के लेखक आर्य-समाजी नहीं हैं और प्रतिमा पूजन तथा श्राद्ध इत्यादि पर पूरा विश्वास रखते हैं, तथापि उन्होंने औचित्य न छोड़ने के कारण उपर्युक्त बातें कही हैं।

४२ वर्षों में ही आर्य-समाज ने बहुत बड़ी उन्नति कर ली है, और इस समय लाखों मनुष्य पंजाब, युक्तप्रांत, राजपूताना मध्यदेश आदि में आर्य समाजी हैं। इस मत की विशेष उन्नति पंजाब में है। पंजाबियों ही ने थोड़े दिन हुए, काँगड़ी में गुरुकुल स्थापित किया, जिसमें प्राचीन प्रथा के अनुसार शिक्षा दी जाती है। दयानंद-ऐंग्लो-वैदिक कॉलेज भी स्वामीजी के अनुयायियों का स्थापित किया हुआ बहुत ही उत्तमता से चल रहा है। उसमें बहुत बड़ी संख्या में विद्यार्थी विद्याध्ययन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त बहुत-से स्कूल, अनाथालय, कन्या-पाठशाला, समाज द्वारा स्थापित और परिचालित हो रहे हैं। भारतोन्नति में समाजियों ने ख़ूब अच्छा काम किया है और कर रहे हैं। जाति को कर्मभव मानकर स्वामीजी और समाज ने पतित जातियों के उद्धार में बहुत सहायता दी। भारतधर्ममहामंडल को भी हिंदुओं ने स्वामीजी एवं आर्य-समाज ही के कारण स्थापित किया, जिससे संस्कृत और भाषा-प्रचार को बहुत लाभ हुआ और होने की आशा है। यदि समाज द्वारा हिंदू-धर्म की बुराइयों का कथन न होता, तो हिंदू उसके रक्षणार्थ कोई उपाय कभी न करते, और न सनातनधर्ममहामंडल स्थापित होता। इस मंडल की उत्तेजना से हरिद्वार में एक ऋषिकुल खोला गया है, जिसमें हिंदू-धर्म के अनुसार विद्यार्थियों की शिक्षा होती है। समाज एवं मंडल ने

उपदेशकों द्वारा सर्वसाधारण के ज्ञान-वृद्धि की रीति चलाई है, जिससे हिंदी में वक्तृता देनेवालों और वक्तृता-शक्ति की अच्छी उन्नति हो रही है। इस प्रथा के कारण बहुत-से उपदेशक और व्याख्यानदाता हुए हैं, जिनका वर्णन यथास्थान किया जावेगा। हमें खेद के साथ यह भी लिखना पड़ता है कि ऐसे बड़े-बड़े प्रसिद्ध एवं प्रवीण व्याख्यानदाताओं में भी पंडितमोहिनी विद्या के स्थान पर मूर्खमोहिनी विद्या अधिक पाई जाती है। इसका कारण शायद भारतवर्ष के साधारण जनसमुदाय की मूर्खता ही हो, और उनके युक्तिपूर्ण व्याख्यान न समझने के कारण ही मूर्खमोहक व्याख्यान दिए जाते हों, परंतु फिर भी बड़े-बड़े विद्वानों के व्याख्यानों में भी मूर्खमोहिनी शक्ति का प्रयोग देखकर परम शोक होता है। उपदेशकों की प्रशंसा में इतना अवश्य कहना चाहिए कि बहुतों की जिह्वा में ईश्वर ने इतना बल दिया है कि वे अपने श्रोताओं को रुला तक सकते हैं। समाज और मंडल दोनों के सहायक हिंदी की अच्छी उन्नति कर रहे हैं, और उन्होंने अच्छे-अच्छे ग्रंथ भी रचे हैं। समाज और मंडल द्वारा कई अच्छे-अच्छे पत्र भी परिचालित हो रहे हैं। इस निबंध को हम स्वामीजी की भाषा का एक नमूना देकर समाप्त करते हैं।

उदाहरण—

जो असम्भूति अर्थात् अनुत्पन्न अनादि प्रकृति कारण की ब्रह्म के स्थान में उपासना करते हैं, वे अंधकार अर्थात् अज्ञान और दुःखसागर में डूबते हैं और सम्भूति जो कारण से उत्पन्न हुए कार्यरूप पृथ्वी आदि भूत, पाषाण और वृक्ष आदि अवयव और मनुष्यादि के शरीर की उपासना ब्रह्म के स्थान में करते हैं, वे उस अंधकार से भी अधिक अंधकार अर्थात् महामूर्ख चिरकाल घोर दुःखरूप नरक में गिरके महाक्लेश भोगते हैं। जो सब जगत् में व्यापक है, उस निराकार

परमात्मा की प्रतिमा परिमाण सादृश्य वा मूर्ति नहीं है। जो वाणी की इयत्ता, अर्थात् यह जल है लांछित, वैसा विषय नहीं और जिसके धारण और सत्ता से वाणी की प्रवृत्ति होती है, उसी को ब्रह्म जान और उपासना कर, और जो उससे भिन्न है, वह उपासनीय नहीं। जो मन से इयत्ता कर मन में नहीं आता, जो मन को जानता है, उसी ब्रह्म को तू जान और उसी की उपासना कर, जो उससे भिन्न जीव और अतःकरण हैं, उसकी उपासना ब्रह्म के स्थान में मत कर।

(२०७७) लक्ष्मणसिंह राजा

ये महाशय आगरा के रहनेवाले थे। इनका कविताकाल संवत् १९१६ के इधर-उधर है। ये संवत् १९१२ में डिपुटी कलेक्टर नियत हुए, और १९४६ में इन्हें पेंशन मिली। सवत् १९२७ में सरकार से इन्हें राजभक्ति के कारण राजा की पदवी मिली। इनका जन्म संवत् १८८३ में हुआ, और १९५३ में इनका स्वर्गवास हुआ। राजा साहब ने पहलेपहल खड़ी-बोली में कालिदास-कृत "शकुंतला-नाटक" का अनुवाद गद्य में करके सवत् १९१९ में प्रकाशित किया। इस पुस्तक का हिंदी-रसिकों में बहुत बड़ा सम्मान हुआ, और प्रथम संस्करण की सब प्रतियाँ बहुत जल्द बिक गईं। राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद ने शिक्षा-विभाग के लिये बने हुए अपने गुटका में इसे भी उद्धृत किया। सवत् १९३२ में विलायत के प्रसिद्ध हिंदी प्रेमी फ्रेडरिक पिनकाट महाशय ने इसे इँगलिस्तान में छपवाया। इस पुस्तक को इँगलैंड में यहाँ तक आदर मिला कि यह इंडियन सिविल-सर्विस की परीक्षा-पुस्तकों में सम्मिलित की गई। सवत् १९५३ में यह फिर प्रकाशित की गई। इस बार राजा साहब ने मूल श्लोकों का अनुवाद गद्य के स्थान पर पद्य में कर दिया। सवत् १९३४ में राजा साहब ने रघुवंश का अनुवाद गद्य में मूल श्लोकों के साथ प्रकाशित किया। यह एक बहुत बड़ी पुस्तक है। इसके अनुवाद की

भाषा सरल एवं ललित है, और उसमें एक विशेषता यह भी है कि अनुवाद शुद्ध हिंदी में किया गया है। यथासाध्य कोई शब्द फ़ारसी-अरबी का नहीं आने पाया है। संवत् १९३८ में इन महाशय ने प्रसिद्ध मेघदूत के पूर्वार्द्ध का पद्यानुवाद छपवाया और संवत् १९४० में उसके उत्तरार्द्ध का भी अनुवाद प्रकाशित करके ग्रंथ पूर्ण कर दिया। यह ग्रंथ चौपाई, दोहा, सोरठा, शिखरिणी, सवैया, छप्पै, कुंडलिया और घनाक्षरी छंदों में बनाया गया है, जिनमें सवैया और घनाक्षरी अधिक हैं। इन्होंने दोहा, सोरठा और चौपाइयों में तुलसीदास की भाषा रक्खी है और शेष छंदों में व्रजभाषा। इनके गद्य में भी दो-चार स्थानों पर व्रजभाषा मिल गई है, परंतु उसकी मात्रा बहुत ही कम है। इनकी भाषा मधुर एवं निर्दोष है, परंतु इनका पद्य-भाग उतना अधिक प्रशंसनीय नहीं है, जितना कि गद्य-भाग। इनके पद्य-भाग की गणना छत्र कवि की श्रेणी में की जाती है, और गद्य के लिये इनकी जितनी प्रशंसा की जाय, वह सब योग्य है। वर्तमान हिंदी-भाषा का प्रचार जब तक भारतवर्ष में रहेगा, तब तक विद्वन्मंडली में राजा साहब का नाम बड़े आदर के साथ लिया जावेगा। इनकी रचना में से कुछ उदाहरण नीचे उद्धृत किए जाते हैं—

शकुंतला नाटक

"अनसूया—(हौले प्रियंवदा से) सखी, मैं भी इसी सोच-विचार में हूँ। अब इनसे कुछ पूछूँगी—(प्रकट) महात्मा, तुम्हारे मधुर वचनों के विश्वास में आकर मेरा जी यह पूछने को चाहता है कि तुम किस राजवंश के भूषण हो? और किस देश की प्रजा को विरह में व्याकुल छोड़ यहाँ पधारे हो? क्या कारण है, जिससे तुमने अपने कोमल गात को इस कठिन तपोवन में आकर पीड़ित किया है?"

"(१७२) पृथ्वी ऐसी जान पड़ती है, मानो ऊपर को उठते हुए

पहाड़ों की चोटी से नीचे को खिसकती जाती है। वृक्षों की पींड़ें जो पत्तों में ढकी हुई-सी थीं, खुलती आती हैं। नदियों का पतलापन मिटता जाता है और भूमंडल हमारे निकट आता हुआ ऐसा दीखता है, मानो किसी ने ऊपर को उछाल दिया है।"

मेघदूत

रस बीच मैं लै चलिया निरविंध्य वों जो मग तेरो निहारती हैं;
कटि किंकिन माना विहगम पांति तरंग उठे झनकारती हैं।
मनरंजनि चाल अनोखी चलें अरु भौंर सा नाभि उघारती हैं;
बतरात है मीत सों आदि यही तिय विभ्रम मोहनी डारती हैं।
मीत के मंदिर जाति चली मिलिहैं तहँ केतिक राति मैं नारी;
मारग सूझ तिन्हैं न परै जब सूचिका-भेद्य झुकै अँधियारी।
कंचन रेख कसौटी-सी दामिनि तू चमकाइ दिखाइ अगारी,
कीजियो ना कहुँ मेह की घोर मरैं अबला अकुलाइ बिचारी।

रघुवंश

मूल

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥ १॥

अनुवाद

वाणी और अर्थ की सिद्धि के निमित्त मैं वंदना करता हूँ। वाणी और अर्थ की नाईं मिले हुए जगत् के माता-पिता शिव पार्वती को॥१॥

क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥ २॥

अनुवाद

कहाँ वह वंश जिसका पिता सूर्य है और कहाँ थोड़े व्यवहार-वाली (मेरी) बुद्धि, मैं अज्ञानता से कठिन समुद्र को फूस की नाव से उतरना चाहता हूँ॥ २॥

मूल

मन्दः कवियशःप्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम् ।
प्रांशु लभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः ॥ ३ ॥

अनुवाद

कवियों के यश का अभिलाषी मैं मदबुद्धि हँसी को पहुँचूँगा, जैसे लबे मनुष्य के हाथ लगने योग्य फल की ओर लोभ से ऊँची बाँह करनेवाला बौना ॥ ३ ॥

(२०७८) शकरसहाय अग्निहोत्री (शकर)

ये महाशय दरियाबाद ज़िला नारहबकी-निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। इनका जन्म सवत् १८६२ विक्रमीय का है। छः सौ वर्ष से इनके पूर्व-पुरुष इसी ग्राम में रहे। इनके पिता का नाम पडित बच्चूलाल और मातामह का प० रामबक्स तिवारी था। ११ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह हुआ। इनके कोई पुत्र नहीं है, परतु दो पुत्री व दो दौहित्र वर्तमान हैं, जिनके नाम सगमलाल और कृष्णदत्त हैं। ये दोनों इन्हीं के साथ रहते हैं। संगमलाल कविता भी करते हैं। शकरसहायजी ने ३२ वर्ष की अवस्था से काम करना प्रारभ किया। पहले १६ वर्ष तक इन्होंने पाठशालाओं में अध्यापकी की और फिर २२ वर्ष पर्यंत राय शंकरबली तअल्लुक़दार के यहाँ ज़िलेदारी की। अब तीन साल से पेंशन पाते हैं। इन्होंने कविता-मंडन-नामक एक अलकार-ग्रंथ बनाया है, जिसमें ३७८ छंद हैं, जिनमें सवैया बहुतायत से हैं और घनाक्षरी कम। यह ग्रंथ अभी मुद्रित नहीं हुआ है और न क्रमबद्ध लिखा ही गया है। हम इनसे मिलने दरियाबाद गए थे, जहाँ उपर्युक्त हाल इन्हीं महाशय के द्वारा हमें विदित हुआ, परतु अपना ग्रथ ये हमें नहीं दिखा सके। इसके अतिरिक्त इन्होंने स्फुट छंद भी बनाए हैं। इस कवि में समालोचना-शक्ति बहुत तीव्र है। हमारे क़रीब ३ घंटे बातचीत करने में अभि-

छोर्ग्रीजी ने बहुत कम कवियों के विषय पूज्य भाव प्रकट किया। ये महाशय तुलसीदास और सेनापति को बहुत अच्छा समझते और पद्माकर एवं ठाकुर को बहुत निंद्य मानते थे। इनकी समालोचना में रियायत का नाम नहीं है। आप प्रत्येक विषय पर अपना स्वतंत्र विचार प्रकट किए बिना नहीं रहते थे, चाहे वह श्रोता को अप्रिय ही क्यों न हो। कविता के इतने प्रेमी थे कि जब ६॥ बजे दिन को हम इनके यहाँ गए, तब आप स्नान के लिये जा रहे थे, परंतु बिना स्नान किए ढाई ३ घंटे तक हमारे पास बैठे रहे और हमारे बहुत कहने पर भी हमारे चले आने के प्रथम आपने स्नान करना स्वीकार न किया। इनसे बात करने में हमें निश्चय हुआ कि इनके चित्त में कविता-प्रेम-पादप का सच्चा अंकुर है, परंतु इन सब बातों के होते हुए भी इनको प्राचीन कवियों के पद तथा भाव उड़ा लेने की ऐसी कुछ बानि सी पड़ गई है कि इनके उत्तम छंदों में भी चोरी का संदेह उपस्थित रहता है। फिर भी इनकी भाषा उत्तम और कविता प्रशंसनीय है। हम इनकी गणना कवि तोष की श्रेणी में करते हैं।

उदाहरण—

अँग आरसी से जुपै भाखत हौ हरि आरसी ही को निहारा करौ,
सम नैन जो खंजन जानत तौ किन खंजन ही सों इसारा करौ।
भनि संकर संकर से कुच तौ कर संकर ही पर धारा करौ,
मुख मेरो कहौ जो सुधाकर सो तौ सुधाकरै क्यों न निहारा करौ॥१॥
प्रबाल-से पायँ चुनी-से लला नख दंत दिपैं मुकतान समान;
प्रभा पुखराज-सी अंगनि मैं बिलसैं कच नीलम से दुतिमान।
कहै कबि संकर मानिक से अधरारुन हीरक सी मुसकान,
बिभूषन बसन के पहिरे बनिता बनी जौहरी की-सी दुकान॥२॥
क्रोध में आकर इस कवि ने बहुत-से भँड़ौआ भी बनाए हैं। थोड़े

दिनों से ये बेचारे कुछ विक्षिप्त से हो गए थे और संवत् १९६७ में स्वर्गवासी हुए।

(२०७९) गदाधर भट्ट

ये महाशय मिहीलाल के पुत्र और प्रसिद्ध कवि पद्माकर के पौत्र थे। इनका स्वर्गवास दतिया में, ८० वर्ष की अवस्था में, संवत् १९५५ के लगभग हुआ था। जयपुर, दतिया और सुठालिया के महाराजाओं के यहाँ इनका विशेष मान था। जयपुर के महाराजा सवाई रामसिंह की इच्छानुसार इन्होंने संवत् १९४२ में कामांधक-नामक संस्कृत-नीति का भाषा-छंदों में अनुवाद किया। अलंकारचंद्रोदय, गदाधर भट्ट की बानी, कैसरसभाविनोद, और छंदोमंजरी-नामक इनके ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। अंतिम ग्रंथ कविजी ने सुठालिया के राजा माधवसिंह के आश्रय में बनाया। इसकी कवि ने वार्तिक व्याख्या भी लिखी थी। गदाधरजी का काव्य परम प्रशंसनीय और मनोहर है। इनकी भाषा ख़ूब साफ़, सानुप्रास और श्रुतिमधुर है। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण—

चारौं ओर अटवी अटूट अवनी पै बनी,
तटिनी तड़ाग धेनुसिंहन मगार हैं;
गदाधर कहै चारु आश्रम बरन चार,
सील सत्यवादी दानी भूपति सगर हैं।
आपगा तुरग गज बाजि रथ प्यादे घने,
अधिका महेस प्रभु भक्ति मैं पगर है;
ऊमट नरेस माधवेस महाराज जहाँ,
वैरिन को मारिया सुठारिया नगर है ॥ १ ॥

जौलौं जन्हुकन्यका कलानिधि कलानिकर,
जटिल जटानि विघ भाल छवि छंद पै,
गदाधर कहै जौलौं अश्विनी-कुमार,

हनुमान नित गावैं राम सुजस अनंद पै।
जौलौं अलकेस ग्रेन महिमा सुरेस सुर,
सरिता समेन सुर भूतल फनिद पं;
विजै-नृप नन्द श्रीभवानीसिंह भूप मनि
थपत विलद तौलौं राजौ मसनद पै ॥ २ ॥

(२०८०) बालदत्त मिश्र (पूरन)

आपका जन्म सवत् १८८६ में भगवतनगर ज़िला हरदोई में प्रसिद्ध मॉंकगॉंव के मिश्रोंवाले देवमणि-वंश में हुआ था। आपके पिता पंडित बालगोविंद मिश्र बडे ही दृढ़ आचरण के मनुष्य थे और प्राचीन प्रथा के ऐसे विकट अनुयायी थे कि गुरुजनों की लाज निभाने को इनसे उन्होंने यावज्जीवन संभाषण नहीं किया। इनके बडे भाई सुखलालजी के कोई पुत्र जीवित नहीं रहा, सो इनकी स्त्री ने अपने एक-मात्र पुत्र बालदत्तजी को अपनी जेठानी को दे दिया। इस समय आपकी अवस्था सात वर्ष की थी। इसी समय से अपने काका के साथ आप इटौंजा ज़िला लखनऊ में रहने लगे। काका के पीछे आपने उनका काम-काज सँभाला और अपनी व्यापारपटुता से थोड़ी सी सपत्ति को बढ़ाकर अच्छा धन उपार्जन किया। आपने सवत् १९५६ में अपने मृत्युकाल तक साधारणतया बडी ज़िमींदारी पैदा कर ली। यावज्जीवन आपने गभीरता को निबाहा। सुरलोक-यात्रा से ३ वर्ष प्रथम आप इटौंजा छोड़ सकुटुंब लखनऊ में रहने लगे थे। बालक-पन में आपने हिंदी तथा संस्कृत का कुछ अभ्यास किया और कुछ गीता को भी पढ़ा, परतु इनके काका को इनका गीता पढ़ना इस कारण अरुचिकर हुआ कि गभीर स्वभाव को बढ़ाकर कहीं ये संसार-त्यागी न हो जावें। काका की आज्ञा मानकर इन्होंने गीता छोड़ दिया। गँधौली के लेखराज कवि इनके एक अन्य काका के पौत्र थे। गँधौली इटौंजा से केवल १२ मील पर है, सो इन दोनों महाशयों में प्रीति

बहुत थी, और जाना-आना भी बहुधा रहता था। खेमराजजी इनसे ३ वर्ष बड़े थे। इन कारणों एवं स्वभावतः रुचि होने से आपका कविता की ओर भी रुझान हो गया और सैकड़ों छंद बन गए, पर पीछे से व्यापार में विशेष रूप से पड़ जाने के कारण आपकी कविता-रचना बिलकुल छूट गई, यहाँ तक कि प्राचीन छंदों के रक्षित रखने का भी आपने प्रयत्न न किया। फिर भी प्राचीन कवियों के ग्रंथ देखने की रुचि आपकी वैसी ही रही। और हम लोगों को काव्य-तत्त्व बताने में आप सदैव चाव रखते रहे। आपकी रचना में अब केवल थोड़े-से छंद सुरक्षित हैं, जिनमें से उदाहरण-स्वरूप दो छंद यहाँ लिखे जावेंगे। आपके चार पुत्र और दो कन्याएँ दीर्घजीवी हुई खेद है कि अब आपके बड़े पुत्र और बड़ी कन्या का देहांत हो गया है। शेष छोटे तीन पुत्र इस इतिहास ग्रंथ के लेखक हैं। विशाल कवि आपके छोटे जामातृ थे। इनकी बड़ी पुत्री के दो पुत्र हैं, जिनमें छोटा भाई अनंत-राम वाजपेयी गद्य लेखन का बड़ा उत्साही है। वह कोआपरेटिव-सोसाइटी मे नौकर है। इनका पौत्र लक्ष्मीशंकर मिश्र बैरिस्टर है। वह भी कुछ-कुछ छंद बनाने और गद्य लिखने में रुचि रखता है। आप कविता में अपना नाम पूर्ण अथवा पूरन रखते थे।

उदाहरण—

लाल-से लाल बने दृग लाल के, जावक भाल बिसाल रच्यो फबि ;
त्यों अधरान मैं अंजन लीक है, पीक भरे कहि देत महाछबि।
पीत पटी बदली कटि मैं लखि, नारि सकोच नहीं स्यों रही दबि ;
पूरन प्रीति की रीति यही पिय, दच्छिन झूठ कहैं तुमको कबि।

पानी धूम इंधन समाला संग आतस के,
हिकमति कोठरी अनूप ठहरानी है ;
उठत प्रभंजन कै घन घहरात ठौर-
ठौर ठहरात जात जोर की निसानी है।

चाल की न थाह जाकी पूरन विचारि कहै,
पवन विमान यान गति तरसानी है,
नर लै समूह जूह भार लै अपार कूद,
करत न रूह फेरि ताकी दरमानी है।

(२०८१) सीतारामशरण भगवानप्रसाद (रूपकला)

आपका जन्म संवत् १८६७ में, सारन ज़िला के अंतर्गत गोवा परगने के मुबारकपूर ग्राम में, कायस्थ-कुल में, हुआ। इन्होंने फ़ारसी, उर्दू, हिंदी और अँगरेज़ी की शिक्षा पाई। ये पहले ही शिक्षा-विभाग के सब-इंस्पेक्टर नियत हुए। आप रामानंदी सम्प्रदाय के वैष्णव थे। इन्होंने सन् १८९३ ई० तक बहुत योग्यता के साथ असिस्टेंट-इंस्पेक्टरी का काम किया। उस समय आपका मासिक वेतन ३००) था। इसी समय आपने पेंशन ले ली। आपके कोई संतान न थी, गृहिणी का स्वर्गवास पहले ही हो चुका था और चित्त में भगवद्भक्ति तथा वैराग्य की मात्रा पहले ही से अधिक थी, अतः पेंशन लेने के पश्चात् आप श्रीअयोध्याजी में जाकर साधुओं की तरह वास करने लगे। इनके बनाए कुल १३ ग्रंथ हैं, जिनमें से ४ उर्दू के हैं और शेष ९ हिंदी के। आप बड़े ही मिलनसार तथा सरल-हृदय और भक्त हैं। आपके रचित ग्रंथों के नाम ये हैं—१ तन मन की स्वच्छता, २ शरीर पालन, ३ भागवत गुटका, ४ पीपाजी की कथा, ५ भगवद्वचनामृत, ६ भक्तमाल की टीका, ७ सीताराममानसपूजा, ८ भगवन्नामकीर्तन, ९ श्रीसीतारामीय प्रथम पुस्तक, १० मीराबाई की जीवनी।

(२०८२) फेरन

इनका जन्म-स्थान, समय इत्यादि कुछ ज्ञात नहीं है, परंतु इनकी कविता से विदित होता है कि ये महाराज विश्वनाथसिंहजी बांधव-नरेश के कवि थे। कविता इनकी सारगर्भित और प्रशंसनीय है। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। महाराजा

विश्वनाथसिंहजी सं० १६२० में राज्य पर थे। उसी समय यह भी विद्यमान थे। इनका कविताकाल १६२० के लगभग समझना चाहिए।

अमल अनार अरविंदन को वृंद वारि,
बिंबाफल विद्रुम निहारि रहे तूलि तूलि ;
गेंदा औ गुलाब गुललाला गुलाबास, आब
जामैं जीव जावक जपा को जात भूलि-भूलि।
फेरन फबत तैसी पायन ललाई लोल,
ईंगुर भरे से डोल उमड़त झूलि-झूलि ;
चाँदनी-सी चंदमुखी देखौ ब्रजचंद उठैं,
चाँदनी बिछौना गुलचाँदनी-सी फूलि-फूलि ॥ १ ॥
गृहिन दरिद्र गृह-त्यागिन बिभूति दियो,
पापिन प्रमोद पुन्यवतन छलो गयो ;
असित अहेश कियो सनि को सुचित्त, लघु
व्यालन अनंद शेष भारन दलो गयो।
फेरन फिरावत गुनीन निस नीच द्वार,
गुनन बिहीन तिन्हैं बैठे ही भलो भयो ;
कहाँ लौ गनाऊँ दोख तेरे एक आनन सों,
नाम चतुरानन पै चूकते चलो गयो ॥ २ ॥
जनम समै मैं ब्रज रच्छन समै मैं, सजि
समर समै मैं ज्ञान यज्ञ जप जूट मैं ;
देव देवनाथ रघुनाथ विश्वनाथ करी,
फूल जल दान बान बरखा अटूट मैं।
फेरन बिचारयो शुभ वृष्टि को विचार यश,
चारिहू जनेन को प्रसिद्ध चारि खूट मैं ;
अवध अकूट मैं गोबरधन कूट मैं,
सुतरल त्रिकूट मैं विचित्र चित्रकूट मैं ॥ ३ ॥

चंदन चहल चोवा चाँदनी चँदोवा चारु,
　　घनो घनसार घेर मींच महबूबी के ;
अतर उसीर सीर सौरभ गुलाब नीर,
　　गजब गुजारें रूग अजब अजूबी के।
फेरन फबत फैलि फूलन फरस तामैं,
　　फूल-सी फबी है बाज सुंदर सु खूबी के ;
बिसद बिताने ताने तामैं तहखाने बीच,
　　बैठी खसखाने मैं खजाने खोलि खूबी के ॥ ४ ॥

(२०८३) मोहन

इस नाम के चार कवि हुए हैं, जिनमें से हम इस समय चरखारीवाले मोहन का वर्णन करते हैं, जिन्होंने १६१६ में शृंगार-सागर नामक ग्रंथ बनाया। यह ग्रंथ हमने देखा है। इनकी कविता अच्छी होती थी। ये साधारण श्रेणी के कवि हैं।

चंद-सो बदन चारु चंद्रमा-सी हाँसी परि-
　　पूरन उमा-सो खासी सुरति सोहाती है ;
नीति प्रीति रीति रति रीति रस रीति गीत,
　　गीत गुन गोत सील सुख सरसाती है।
मोहन मसाल दीप माल मनि माल जोति,
　　जाल महताब आब दुरि दुरि जाती है ;
आछो अति अमल अनूप अनमोल तन,
　　अतन अवाल आभा अंग उफनाती है।

(२०८४) मुरारिदासजी कविराज

ये सूरजमल कविराज के दत्तक पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १८६५ में, बूँदी में, हुआ और मृत्यु संवत् १६६४ में। ये संस्कृत, प्राकृत, डिंगल तथा हिंदी भाषा के अच्छे ज्ञाता और कवि थे। इन्होंने बूँदी-नरेश रामसिंहजी की आज्ञा से वंश-भास्कर को पूरा

किया, जिस पर इन्हें बड़ा पुरस्कार दिया गया। इनकी जागीर में पाँच गाँव थे। इन्होंने वंशसमुच्चय तथा डिंगलकोष-नामक ग्रंथ बनाए। इनकी कविता प्राकृत-मिश्रित ब्रजभाषा में होती थी। इनकी गणना तोष की श्रेणी में की जाती है।

उदाहरण—

कीरति तिहारी सेत सत्रुन के आनन मैं,
ठौर ठौर अहो निसि मेचक मिलावै है ;
बहुत प्रताप तप्त साधु जन मानस को,
ऐसो सीर अमृत ज्यों सीतल करावै है।
प्रभु मे प्रतापी प्रजापालन प्रचंड दंड,
उत्तम मुजाद चित्त सज्जन चुरावै है ;
महाराव राजा श्रीदिवान रघुबीर धीर,
रावरे गुनूँ के रवि लच्छन स्वभावै है ॥ १ ॥
सेस अमरेस औ गनेस पार पावैं नहिं,
जाके पद देखि-देखि आनँद लियो करैं ;
अच्छर है मूल फेरि व्यक्त औ अव्यक्त भेद,
ताही के सहाय सब उपमा दियो करैं।
अव्यय है संज्ञा तीनौ काल मैं अमोघ क्रिया,
वाके रसलीन होय पीयुष पियो करैं ;
रचना रचावै केहि भाँति तें मुरारिदास,
ऐसे शब्द ईस्वर को मनन कियो करैं ॥ २ ॥

नाम—(२०८५) शालिग्राम शाकद्वीपी (ब्राह्मण) कोपागंज, ज़िला आज़मगढ़।

ग्रंथ—(१) काव्यप्रकाश की समालोचना, (२) भाषाभूषण की समालोचना।

विवरण—इनका जन्म संवत् १८६६ में हुआ था, और १९६० में

इनके विषय में बहुत-सी मज़ाक की बातें कही हैं। एक बार एक राजा ने इन्हें मख़मली अचकन और पायजामा दिया, पर सर के लिये कोई वस्तु टोपी आदि का देना वह भूल गए। इस पर आपने कहा कि "वाह महाराज! आपने मुझे ऐसा सिरोपाव दिया है कि घटा टोप।" इस पर लोगों ने झट टोप का भी घटा पूरा कर दिया। इनका काव्य प्रशंसनीय और सरस होता था। हम इन्हें पद्माकर कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण—

बाटिका विहंगन पै, वारि गात रंगन पै,
वायु वेग गंगन पै वसुधा वगार है;
बाँकी बेनु तानन पै, बँगले वितानन पै,
बेस औध पानन पै बीथिन बजार है।
बृंदावन वेलिन पै, वनिता नवेलिन पै,
व्रजचंद केलिन पै वसी वट मार है;
बारि के कनाकन पै, बद्दलन बाँकन पै,
बीजुरी बलाकन पै बरषा बहार है॥ १॥
चारौ ओर राजैं औध राजे धर्मराजैं,
दुस्मन की पराजै है सदाजै खतरान की;
आक्षयच वासी भगवान ते उदासी कहैं,
बीबियाँ मियाँ हैं तुम्हें खता खफकान की।
जानकी जहान की इमान की खराबी हाय,
हूआ मनसूबा तूबा कसम कुरान की;
रामजी की सादी फिरँगान की मनादी,
हिंदुवान की अबादी बरबादी तुरकान की॥ २॥
आई देखि गुय्यों मैं नरेश अँगनैया जहँ,
खेलैं चारौ भैया रघुरैया सुख पाय-पाय;

४ लक्ष्मीश्वररत्नाकर (महाराजा दरभंगा के नाम), ५ रावणेश्वर कल्पतरु (राजा गिद्धौर के नाम), ६ महेश्वरविलास (ताल्लुक़दार रामपुर मथुरा ज़िला सीतापुर के नाम), ७ मुनीश्वर-कल्पतरु (राव मल्लापुर के नाम), ८ महेंद्रभूषण (राजा टीकमगढ़ के नाम), ९ रघुवीर-विलास (बाबू गुरुप्रसादसिंह गिद्धौर के नाम), और १० कमलानंदकल्पतरु (राजा पूर्निया के नाम)। इन ग्रथों के अतिरिक्त इन्होंने नीचे लिखे हुए और भी ग्रंथ बनाए—

११ रामचंद्रभूषण, १२ हनुमतशतक, १३ सरयूलहरी, १४ राम-रत्नाकर, और १५ नायिकाभेद का एक और अपूर्ण ग्रंथ।

इनमें से बहुत से रीति, अलंकार, भाव-भेद, रसभेद तथा स्फुट विषयों पर बड़े-बड़े ग्रंथ हैं। प्रेमरत्नाकर में इन्होंने बस्ती के राजा पटेश्वरीप्रसादनारायण का भी नाम लिखा है। इनका स्वर्गवास संवत् १९६१ में, अयोध्या में, हुआ था। इनके एक पुत्र भी है।

लछिराम की भाषा ब्रजभाषा है और वह सराहनीय है। इनके वर्तमान कवि होने के कारण इनकी ख्याति बड़ी विस्तीर्ण है। इनकी कविता उत्तम और ललित होती थी। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण—

पन्नालाल माले गज-मौहर दुसाल साले,
हीरालाल मोती मनि माले परसत हैं;
महा मतवाले गजराजन के जाले घर,
बाजी खेतवाले जड़े जीन दरसत हैं।
कवि लछिराम सनमानि कै लुटावै नित,
सावन सुमेघ ज्यों हिये ते सरसत हैं;
महाराज सीतलायकस कर सौंजन सों,
बारिद ज्यों बारहौ महीने बरसत हैं।

चैत चंद चाँदनी प्रकाश छोर छिति पर,
मंजुल मरीचिका तरंग रंग चरसो ;
कोकनद, किंसुक, अनार, कचनार, लाल,
बेला, कुंद, बकुल, चमेली, मोतीलर सो ।
श्रीपति सरस स्याम सुंदरी विहारथल,
लछिराम राजै दुज आनँद अमर सो ;
योंही व्रजबागन विथोरत रतन फैल्यो,
नागर वसत रतनाकर सुघर सो ।

लछिरामजी के ग्रंथ प्रायः सब प्रकाशित हो चुके हैं, और वे बहुत करके भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुए हैं। हमारे पास इनके प्रेमरत्नाकर और रामचंद्र-भूषण-नामक दो ग्रंथ वर्तमान हैं। ये दोनों बड़े ग्रंथ हैं। प्रथम त्रैवार्षिक रिपोर्ट में इनके एक और ग्रंथ प्रताप-रसभूषण का पता चलता है, तथा [प० त्रै० रि०] में सियाराम-चरणचंद्रिका का।

(२०८८) बलदेव

($\frac{२०८८}{१}$) द्विज गंग

पंडित बलदेवप्रसाद अवस्थी उपनाम द्विज बलदेव कान्यकुब्ज ब्राह्मण कार्तिक वदी १२ संवत् १८६७ को मौज़ा मानपूर ज़िला सीतापुर में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम व्रजलाल था। वे कृषि-कार्य करते थे। बलदेवजी के तीन विवाह हुए, जिनसे इनके छः पुत्र और तीन कन्याएँ हुईं। इनके गंगाधर-नामक एक और पुत्र था जो द्विज गंग के उपनाम से कविता करता था और जिसने शृंगार-चंद्रिका, महेश्वरभूषण, और प्रमदापारिजात नामक तीन ग्रंथ संवत् १९४१, १९४४ और १९४७ में बनाए थे। परंतु दुर्भाग्यवश संभवतः संवत् १९६१ में क़रीब ३५ वर्ष की अवस्था में अपने पिता के सामने वह गोलोकवासी हुआ। इन तीन ग्रंथों में से प्रथम में

स्फुट रस-काव्य, द्वितीय में अलंकार एवं तृतीय में भावभेद और रस-भेद का वर्णन है। प्रथम में २० और द्वितोय में ११४ पृष्ठ हैं। तृतीय ग्रंथ अभी प्रकाशित नहीं हुआ है। द्विज बलदेवजी ने प्रथम ज्योतिष, कर्मकांड और व्याकरण को पढा था। इनके चित्त में प्रेम की मात्रा विशेष थी, इसी कारण इनको काव्य करने का शौक़ हुआ। इन्होंने १८ वर्ष की अवस्था में दासापुर की भक्तेश्वरी देवी पर अपनी जिह्वा काटकर चढ़ा दी थी। अपनी जिह्वा का कटा हुआ शेष भाग भी इन्होंने हमें दिखाया है। अब वह ठीक हो गई है, परन्तु उसमें काटने का चिह्न अब भी बना हुआ है। इन्होंने काशी वासी स्वामी निजानंद सरस्वती से ३२ वर्ष की अवस्था में काव्य पढ़ा। इसके पहले भी ये महाशय काव्य करते थे। संवत् १६२६ में भारतेंदु हरिश्चद्र, चंदनपाठक, शास्त्री बेचनराम, सरदार, सेवक, नारायण, रत्नाकर, गणेशदत्त व्यास आदि कवियों ने इन्हें उत्तम कवि होने की सनद दी। इस पर इन सब महाशयों के हस्ताक्षर हैं और यह अवस्थीजी ने हमें दिखाई है। सवत् १६३३ में इनके पिता का देहांत हुआ। ये महाशय काव्य से ही अपनी जीविका प्राप्त करते थे और बडे-बडे राजों-महाराजों के यहाँ जाते थे। ये महाशय काशिराज, रीवाँ-नरेश, महाराजा जयपूर और महाराजा दरभगा के यहाँ क्रम से गए हैं और उन सबके यहाँ इनका सम्मान हुआ। रामपुर मथुरा (ज़िला सीतापुरवाले) और इटौंजा (ज़िला लखनऊ) के राजाओं ने इनका विशेष सम्मान किया। इन राजाओं के नाम बलदेवजी ने ग्रंथ भी बनाए। इनकी कविता से प्रसन्न होकर बहुत-से राजाओं।ने इन्हें भूमि और अन्य वस्तुओं का पुरस्कार दिया। बस इसी प्रकार पाई हुई दो हज़ार बीघा भूमि इन्होंने पैदा की, जिसमें से ५०० बीघा बाग़ लगाने को मिली। रामपुर के ठाकुर महेश्वरबख़्शजी ने संवत् १६५४ में एक हाथी भी इन्हें दिया था। बहुत स्थानों पर इन्हें हज़ारों रुपए

मिले। वर्तमान अथवा थोड़े ही दिनों के मरे हुए कवियों में निम्न-लिखित कविगण इनके मित्र अथवा मुलाक़ाती थे—औध, लछिराम, सेवक, सरदार, हरिश्चंद्र, लेखराज, द्विजराज, व्रजराज, दीन, आनंद, अनिरुद्धसिंह, विशाल, लच्छन, देवीदत्त, जगली, महाराज रघुराज-सिंह (रीवाँ), गुरुदीन इत्यादि। ये महाशय हम लोगों पर भी कृपा करते थे और अपने बनाए हुए सब ग्रंथों की एक एक प्रति आपने हमें दी थी। आप जब लखनऊ आते थे तब हमारे ही यहाँ ठहरने की कृपा करते थे। अपना उपर्युक्त वृत्तांत एवं अपने ग्रंथों का हाल हमें इन्हीं ने बताया था, जो यथातथ्यरूपेण हमने यहाँ लिख दिया। खेद है, अब इनका स्वर्गवास हो गया। इनके दो पुत्र चक्रधर और पद्मधर भी कविता करते हैं। शोक का विषय है कि पद्मधर का देहांत हाल में हो गया। इनके ग्रंथों का हाल हम नीचे लिखते हैं—

(१) प्रताप-विनोद में पिंगल, अलंकार, चित्रकाव्य, रसभेद और भावभेद का वर्णन है। यह १७६ पृष्ठ का ग्रंथ संवत् १९२९ में रामपूर मथुरा ज़िला सीतापुर के ठाकुर रुद्रप्रतापसिंह के नाम पर बना था।

(२) शृंगार-सुधाकर में शृंगाररस, शांतरस, सज्जनों और असज्जनों का वर्णन है। यह हथिया के पवाँर दलथंभनसिंह की आज्ञा से संवत् १९३० में बना था। इसमें पचास पृष्ठ हैं। इन दलथंभनसिंह के पुत्र बजरंगसिंह हमारे मित्र थे। ये महाशय भी अच्छा काव्य करते थे और काशी-कोतवाल की पचीसी-नामक एक ग्रंथ भी इन्होंने बनाया है।

(३) मुक्तमाल में शांतिरस के १०८ छंद हैं। यह संवत् १९३१ में रानी कटेसर ज़िला सीतापूर के कहने से बना था। इसी ग्रंथ के साथ इन्हीं रानी साहबा की आज्ञा से रागाष्टयाम और समस्या-प्रकाश-नामक ४८ सफ़े के दो ग्रंथ और भी बनकर तीनों एक ही ग्रंथ

की भाँति ६७ पृष्ठ में छपे थे। रागाष्टयाम में आठ पहर के चौंसठ राग हैं और यह संवत् १६३१ में बना था। समस्याप्रकाश संवत् १६३२ में छपा था और इसमें स्फुट समस्याओं की पूर्तियाँ हैं।

(४) शृंगारसरोज ११ पृष्ठ का एक छोटा-सा ग्रंथ है, जिसमें शृंगाररस के कवित्त हैं और जो संवत् १६५० में बना था।

(५) हीराजुबिली में १३ पृष्ठों द्वारा संवत् १६५३ में महारानी के साठ वर्ष राज्य करने का आनंद मनाया गया है।

(६) चंद्रकलाकाव्य में बूँदी की चंद्रकला बाई की प्रशंसा है। यह भी संवत् १६५३ में बना था और इसमें २० पृष्ठ हैं।

(७) अन्योक्तिमहेश्वर संवत् १६५४ में रामपुर मथुरा के ठाकुर महेश्वरबख़्श के नाम पर बना था। इसमें ५६ पृष्ठों द्वारा अन्योक्तियाँ कही गई हैं।

(८) व्रजराजविहार २७० पृष्ठ का एक बड़ा ग्रंथ इटौंजा के राजा इंद्रविक्रमसिंह की आज्ञानुसार संवत् १६५४ में समाप्त हुआ। इसमें श्रीकृष्णचंद्र की कथा विविध छंदों में सविस्तर वर्णित है।

(९) प्रेमतरंग वज्रदेवजी की कविता का संग्रह-सा है। इसमें २३ पृष्ठ हैं, और यह संवत् १६५८ में बना था। इस ग्रंथ में स्फुट विषयों की कविता है।

(१०) वज्रदेवविचारार्क एकसौ पृष्ठ का गद्य-पद्यमय ग्रंथ संवत् १६६९ में बना था। इसमें पद्य का भाग बहुत ही न्यून है। इस ग्रंथ में अवस्थीजी ने बहुत से विषयों पर अपनी अनुमति प्रकट की है, और सब विषयों में इनका यही मत है कि असंभव बातों के दिखानेवाले, ज्योतिष के कहनेवाले, बड़ी-बड़ी भड़कीली दवाइयों के बेचनेवाले आदि प्रायः वंचक हुआ करते हैं। इन्होंने यत्र-तत्र ऐसे लोगों से बचने के भी अच्छे उपाय लिखे हैं। यद्यपि अवस्थीजी अँगरेज़ी नहीं पढ़े हैं, तो भी यह ग्रंथ वर्तमान काल के

विचारों के अनुकूल हैं। इसमें अवस्थीजी की स्वाभाविक बुद्धि-प्रखरता प्रकट होती है।

अवस्थीजी ने समस्या पूर्ति पर भी बहुत-सी रचना की है। आशु कविता का भी इन्हें अच्छा अभ्यास था, यहाँ तक कि इन्होंने बीस-पचीस साल से यह दर्पोक्ति का वचन कह रक्खा था कि—

"देह जो समस्या तापै कवित्त बनाऊँ चट, कलम रुकै तौ कर कलम कराइए।" इस कथन के पुष्टयर्थ इन्होंने बहुत-से छंद बहुत स्थानों पर बनाए, परंतु कहीं इनकी क़लम नहीं रुकी। इन्होंने व्रजभाषा में कविता की है और वह अच्छी है। इनकी कविता के उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं—

(द्विज बलदेव-कृत)

कहा है है कछू नहिं जानि परै सब अंग अनंग सों जोरि जरे;
ठसै बीथिन मैं बलदेव अचानक दीठि प्रकाशक प्रेम परे।
हँसि कै गे अयान दया न दई है सयान सबै हियरे के हरे;
चले कौन ये जात लिए मन मो सिर मोर की चंद्रकला को धरे।

सागर सनेह सील सज्जन सिरोमनि त्यों,
हंस कैसो न्याव लोक लायक कै लेख्यो है;
गुन पहिँचानिवे को कंचन कसौटी मनौ,
द्विज बलदेव विश्व विशद विशेख्यो है।
आछे रहौ जौलों लोक लोमस सुजस जूह,
धरम धुरंधर रुचिर रीति रेख्यो है;
राधाकृष्ण प्रेमपात्र महाराज राजन मैं,
इंद्रविकरमसिंह जंबूदीप देख्यो है।

खुर्द घटै बढ़ै राहु गसै विरही हियरे घने घाय घला है;
सो सौ कलंकित त्यों विष बंधु निसाचर वारिज वारि बला है।

प्रेम समुद्र बढ़ै बलदेव के चित्त चकोर को चोप चला है ;
काव्य सुधा बरषै निकलंक उदै जलसी तुही चंद कला है ।

(द्विज गंग-कृत)

दमकत दामिनी लौं दीपति दुचंद दुति,
दरसै अमद मनि मंदिर के दर तैं ;
झाँकति झरोखे चलि बाल ब्रजराजजू को,
सारी सेत सुंदरि सरकि गई सर तैं ।
द्विज गग अंग पर अलकैं कुटिल लुरैं,
मुक्तमाल सहित सुधारै कंज कर तैं ;
मानो कढ़यो चद लै के पन्नग नछत्र वृंद,
मंद-मंद मंजुल मनोज मानसर तैं ।

हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करेंगे ।

(२०८९) बिड़दसिंहजी (उपनाम माधव)

इनका जन्म सवत् १८६७ में अलवर के अंतर्गत किशुनपूर में हुआ था । आप जाति के चौहान हैं । आपके पूर्वजों को ३ गाँव दरबार अलवर से मिले हैं, जो अब तक इनके अधिकार में हैं । आपकी कविता सरस होती है ।

उदाहरण—

कोयल कूकते हूक हिए उठि है चपलान तैं प्रान डरैंगे ;
देखि कै बुंदन की झरि लोचन सोचन सों अँसुवान झरैंगे ।
माधव पीव की याद दिवाय पपीहरा चित्त को चेत हरैंगे ;
प्रीति छिपी अब क्यों रहिहै सखिए बदरा बदनाम करैंगे ॥ १ ॥
कलंक धरै पुनि दोष करै निसि मैं विचरै रहि बंक हमेस ;
उदै लखि मित्र को होत मलीन कमोदिनि को सुखदानि विसेस ।
रचै रुचि माधव वारुनी की रपुरे विरहीन को देत कलेस ;
न जानिए काह विचारि विरंचि धरयो यहि चंद को नाम दुजेस ॥२॥

(२०९०) लखनेस

पांडे लक्ष्मणप्रसादजी उपनाम लखनेस कवि रीवाँ नरेश महाराजा विश्वनाथसिंह के मंत्री पंडित वंशीधर पांडेय सरयूपारीण ब्राह्मण के पुत्र थे। ये पंडितजी महाराजा के बड़े ही कृपा-पात्र थे और इन्हें सेनापति और मित्र का भी पद प्राप्त था। महाराजा विश्वनाथसिंहजी के पुत्र प्रसिद्ध कवि महाराजा रघुराजसिंहजी हुए। इन्हीं के आश्रय में लखनेसजी रहते थे।

इन्होंने संवत् १९२१ में रसतरंग-नामक ११६ पृष्ठों का एक ग्रंथ कृष्णचरितामृत के गान में बनाया, जिसमें कुल मिलाकर ५७२ छंद हैं। यद्यपि यह कथाप्रासंगिक ग्रंथ है, तथापि इस रीति से बनाया गया है। कि श्रृंगाररस के अन्य काव्यों में इससे बहुत अंतर नहीं है। इसमें विविध छंद हैं, जैसे कि केशवदास की रामचंद्रिका में पाए जाते हैं, परंतु फिर भी सवैयाओं और घनाक्षरियों का प्राधान्य है। इसकी भाषा व्रजभाषा की ओर अधिक झुकती है, यद्यपि इसमें अवध की भाषा भी मिल जाती है। ग्रंथारंभ में कवि ने अपने आश्रयदाता की प्रशंसा की है, और फिर क्रमशः राजनगर और श्रीकृष्ण की उत्पत्ति से लेकर उद्धव-संदेश पर्यंत कथा का अच्छा वर्णन किया है। रास का भी वर्णन बड़ा विशद हुआ है। इनकी कविता में जहाँ कहीं अलंकार अथवा रस आ गए हैं, वहाँ उनका नाम लिख दिया गया है। इन्होंने चित्र-काव्य भी थोड़ा सा किया है, और उसे भी एक प्रकार से कथा में ही सम्मिलित कर दिया है। इनकी भाषा अच्छी और कविता प्रशंसनीय है। भाषा में रीति काव्य और कथा-प्रसंग बनाने की दो भिन्न-भिन्न प्रणालियाँ हैं, परंतु लखनेसजी ने उन दोनों को मिला दिया है। इनके ग्रंथ से कोरी कविता और कथा-प्रसंग, दोनों का स्वाद मिलता है। इनका परिश्रम संतोषदायक है। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण नीचे लिखते हैं—

राजै जैतवार रघुराज नर नाहन में,
साहस पनाह सुर माह हू तके रहैं;
विचरैं प्रफुल्लित प्रजानि-पुंज बाँधौ राज,
दुष्ट की कहा हैं वनराज हू जके रहैं।
बरनै को पार लखनेस कृपा कोर जन,
पोत सम पाय दुखसिंधु के थके रहैं;
जानु कर कज मकरंद दान पान कै कै,
इमने मलिंद गुन गान मैं छके रहैं।
पुंजनि मैं, वन पुंजनि मैं, अलि गुंजनि मैं सुभ सब्द सुहात हैं,
वेनु धनी, धरनी, धन, धाम मैं का बरनै लखनेस विख्यात हैं।
थावर जंगम जीवन को दिन जामिनि जानि न जात सिहात हैं;
ह्वै गयो कान्हमई ब्रज है सब ठेरैं नहाँ नँदनंद देखात हैं।

खोज में लक्ष्मीचरित्र-नामक इनके एक दूसरे ग्रंथ का भी वर्णन है।

(२०९१) डॉक्टर रुडाल्फ हार्नली सी० आई० ई०

इनका जन्म संवत् १८९८ में, आगरा ज़िले में, सिकंदरा के पास हुआ था। ये महाशय कॉलेजों में अध्यापक रहे, और अंत में सरकार ने इन्हें पुरातत्त्व की जाँच पर भी नियत किया। इनका उत्तरीय भारत-पर्याय भाषा समुदाय के व्याकरणोंवाला लेख परम प्रसिद्ध एवं विद्वत्तापूर्ण है। इन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि हिंदी संस्कृत एवं प्राकृत से निकली है और अनार्य भाषाओं की शाखा नहीं है। इन्होंने बिहारी-भाषा का कोष एवं चंद-कृत रासो का भी संपादन किया, पर ये ग्रंथ अपूर्ण रह गए। डॉक्टर साहब ने जैन ग्रंथ "उवासगदस-रावो" भी प्रकाशित किया। इनका हिंदी-भाषा से प्रगाढ़ प्रेम है और व्याकरण एवं भाषाओं की उत्पत्ति के विषय में इनका प्रमाण माना जाता है। अब ये विलायत चले गए हैं।

(२०९२) आनंद कवि ठाकुर दुर्गासिंह

आप ढिकोलिया ज़िला सीतापूर-निवासी हिंदी के एक प्राचीन और प्रसिद्ध कवि थे। आपने ७० वर्ष की अवस्था भोग की। आपने कुछ ग्रंथ रचे थे, और स्फुट छंद सैकड़ों बनाए हैं। आपकी कविता अच्छी है। काव्यसुधाधर में आपकी समस्या पूर्तियाँ छपा करती थीं। आप साधारणतया एक बड़े ज़मींदार थे। हमें आनंदजी ने अपने बहुत-से छंद सुनाए थे।

(२०९३) नवीनचंद्र राय

इनका जन्म संवत् १८८४ में हुआ था। पिता की शैशवावस्था में ही मृत्यु हो जाने से इनकी शिक्षा अच्छी न हो सकी, पर इन्होंने अपने ही कौशल से १६) मासिक से लेकर ७००) मासिक तक का वेतन भोगा, और विद्याव्यसन के कारण अँगरेज़ी के अतिरिक्त संस्कृत और हिंदी की भी बहुत अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। नवीन बाबू ने इन दोनों भाषाओं में प्रकृष्ट ग्रंथ बनाए और विधवा-विवाह पर भी एक पुस्तक रची। इन्होंने पंजाब में स्त्री-शिक्षा-पादप का बीज बोया और लाहौर में नार्मल फ़ीमेल-स्कूल स्थापित किया। हिंदी में आपने ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका भी निकाली। परोपकार में ये सदा लगे रहे। इनका देहांत संवत् १९४७ में हुआ।

(२०९४) बालकृष्ण भट्ट

भट्टजी का जन्म संवत् १९०१ में, प्रयाग में, हुआ था। ये महाशय संस्कृत के अच्छे विद्वान् और भाषा के एक परम प्राचीन लेखक थे। भारतेंदुजी इनके लेख पसंद करते थे। संवत् १९३४ में प्रयाग से हिंदी-प्रदीप-नामक एक सुंदर मासिक पत्र प्राय ३२ वर्ष तक निकलता रहा। भट्टजी उसके सदैव संपादक रहे। इनकी गद्य-लेखन-पटुता एवं गंभीरता सर्वतोभावेन सराहनीय है। कलिराज की सभा, रेल का विकट खेल, बाल-विवाह नाटक, सौ अजान का एक

सुजान, नूतन ब्रह्मचारी, जैसा काम वैसा परिणाम आदि लेख इनके चमत्कारिक हैं। पद्मावती, शर्मिष्ठा और चन्द्रसेन-नामक उत्तम नाटक-ग्रंथ भी भट्टजी ने रचे।

नाम—(२०९५) आत्माराम।

ग्रंथ—शृंगारसप्तशती (संस्कृत)।

विवरण—१६२५ के पीछे इन्होंने बिहारीसतसई का संस्कृत में अनुवाद किया। भारतेंदुजी ने इनको ५००) उसका पारितोषिक भी दिया। अतः इनका रचनाकाल संवत् १६२५ के लगभग है।

यथा—

अपनय भवबाधाभय राधे त्वं कुशलासि;
हरिरपि धरति हरिद्युति यदि माधवमुपयासि।

(२०९६) व्रज

गोकुल उपनाम व्रज कायस्थ का जन्म संवत् १८७७ में हुआ तथा संवत् १६६२ में ये स्वर्गवासी हुए। इनका संवत् १६१८ के लगभग कविताकाल है। ये बलरामपुर ज़िला गोंडा में हुए हैं। ये महाराजा दिग्विजयसिंह के यहाँ रहे। इन्होंने पंचदेवपंचक (१६२४), नीतिमार्तंड (१६२६), सुनोपदेश (१६३०), वामाविनोद, (१६३१), चौबीस अवतार (१६३१), शोकविनाश (१६३२), शक्तिप्रभाकर (१६३६), टिट्टिभ आख्यान (१६३७), सुहृदोपदेश, (१६३७), मृगयामयंक (१६३७), दिग्विजयप्रकाश (१६३६), महारानीधर्मचंद्रिका, एकादशीमाहात्म्य, कृष्णदत्तभूषण, अचलप्रकाश, महावीरप्रकाश, दिग्विजयभूषण संग्रह (१६२५), अष्टयामप्रकाश (१६१८), चित्रकलाधर (१६२२), दूतीदर्पण, नीतिरत्नाकर (१६२१), और नीतिप्रकाश-नामक २२ ग्रंथ बनाए हैं। इनका कोई ग्रंथ हमारे देखने में नहीं आया, पर पूछ-पाँछ से इन ग्रंथों के नाम निश्चय-पूर्वक जान

पढ़े। इनकी कविता अनुप्रास-पूर्ण परम विशद होती थी। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण—

तम नासि अवास प्रकास करैं गुन एक गनै नहिं औगुन मारैं;
दिन अंत पतंग दई प्रभुता इन संग पतंग अनेक न जारैं।
अति मित्र के द्रोही निछोही सनेह के याते सखा मित्र मेरो बिचारैं;
मनि मंजु धरैं व्रज मंदिर मैं रजनी मैं जना जनि दीपक बारैं।

नाम—(२०९७) शिवदयाल कवि पांडे (उपनाम भेष) लखनऊ।

ग्रंथ—(१) स्फुट कविता (२) दशम स्कंध भागवत भाषा क़रीब १००० विविध छंदों में अपूर्ण।

जन्मकाल—१८६६।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—ये लखनऊ रानीकटरा निवासी कान्यकुब्ज पांडे थे। इन्हें ज्योतिष में अच्छा अभ्यास था और आप कविता भी साहावनी करते थे। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है।

चित की हम ऊधौ जु बातें कहैं अवकास अकास न पाइ है जू,
यह तुंग के तुंग तरंगन के उमहे मन कौन समाइ है जू।
छुरि हैं दग कोर जु भेष कहूँ तौ अबै व्रज फेरि बहाइ है जू;
सिगरी यह रावरी ज्ञानकथा कहि कौन को कौन सुनाइ है जू॥ १॥

इस समय के अन्य कविगण

नाम—(२०६८) असकदगिरि, बाँदा।

ग्रंथ—(१) असकदविनोद, (२) रसमोदक (खोज १९०५) (१९०४)।

कविताकाल—१९१६।

विवरण—साधारण श्रेणी । ये महाराज हिम्मतबहादुर गोसाईं बाँदा के शिष्य व नवाब ग़नीबहादुर बाँदा के नौकर थे। कविता भी अच्छी करते थे।

नाम—($\frac{2068}{1}$) गोपालजी।

जन्मकाल—1882।

रचनाकाल—1916।

ग्रंथ—चंडाविलास।

विवरण—काठियावाड़ के भट्ट कवि थे।

नाम—($\frac{2068}{2}$) गोवर्धनलाल।

ग्रंथ—स्फुट पद।

रचनाकाल—1916।

विवरण—राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य।

नाम—($\frac{2068}{3}$) चपाराम, पाटन-निवासी।

ग्रंथ—(1) गौतमपरीक्षा, (2) वसुनंदिश्रावकाचार, (3) योगसार, (4) चर्चासागर।

रचनाकाल—1916।

नाम—(2099) दिलीप, चैनपुर।

ग्रंथ—रामायण टीका।

कविताकाल—1916।

नाम—($\frac{2099}{1}$) वृंदावनदास।

ग्रंथ—सामुद्रिक। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—1916।

नाम—($\frac{2099}{2}$) भवानीप्रसाद शुक्ल।

ग्रंथ—(1) दीनव्यंगशतक, (2) टपालभशतक। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—1916।

नाम—($\frac{२०९९}{३}$) मन्नालाल, चैनाडा ।

ग्रंथ—प्रद्युम्नचरित्रवचनिका ।

रचनाकाल—१९१६ ।

नाम—(२१००) लल्लू ब्राह्मण (पांडे), गाज़ीपुर।

ग्रंथ—ऊषाचरित्र (पृ० ११०), नाग्ररत्न ।

कविताकाल—१९१६ । (खोज १९०२)

नाम—(२१०१) हीरालाल चौबे, बूँदी ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविताकाल—१९१६ ।

विवरण—ये भी बूँदी-दरबार में थे ।

नाम—($\frac{२१०१}{१}$) गंगाप्रसाद, भदावर ।

ग्रंथ—विश्वभोजनप्रकाश । (च० त्रै० रि०)

रचनाकाल—१९१७ के पूर्व ।

नाम—(२१०२) सुदामाजी ।

ग्रंथ—(१) बारहखड़ी, (२) स्फुट ।

कविताकाल—१९१७ के पूर्व ।

नाम—(२१०३) हाजी ।

ग्रंथ—प्रेमनामा । [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९१७ के पूर्व ।

नाम—(२१०४) गंगादत्त ब्राह्मण राजापूर, ज़िला बाँदा

ग्रंथ—विष्णोर्दविशश्स्तोत्र ।

जन्मकाल—१८९२ ।

कविताकाल—१९१७ ।

नाम—(२१०५) भानुप्रताप, बिजावर महाराज ।

ग्रंथ—(१) शृंगारपचासा, (२) विज्ञानशतक । [प्र० त्रै० रि०

कविताकाल—राजत्वकाल १९१७ से १९५८ तक।

नाम—($\frac{२१०५}{१}$) माधवसिंह, अमेठी के राजा।

विवरण—बड़े कविता-प्रेमी थे, इन्हीं की सहायता से महाभारत-दर्पण नवलकिशोर प्रेस में छपा।

नाम—($\frac{२१०५}{२}$) मुनि आत्माराम।

ग्रंथ—(१) जैनतत्त्वादर्श, (२) तत्त्वनिर्णयप्रसाद, (३) अज्ञानतिमिरभास्कर।

रचनाकाल—१९१८।

जन्मकाल—१८९३।

मृत्युकाल—१९२३।

नाम—(२१०६) सुंदरलाल कायस्थ, राजनगर, छत्रपुर।

ग्रंथ—स्फुट।

कविताकाल—१९१८।

नाम—($\frac{२१०६}{१}$) अमृतराय।

ग्रंथ—महाभारत भाषा। (खोज १९०४)

रचनाकाल—१९१९ के पूर्व।

विवरण—नरेंद्रसिंह पटियाला-नरेश के यहाँ थे। इन्होंने यह अनुवाद उमादास, सुमेरचंद्र, देवीदत्तराय, निहाल, नगजराय, रामनाथ तथा हंसराज के साथ मिलकर किया।

नाम—($\frac{२१०६}{२}$) कुबेर।

ग्रंथ—महाभारत भाषा। ऊपर लिखा हुआ। कई लोगों के साथ रचा।

रचनाकाल—१९१९ के पूर्व।

नाम—($\frac{२१०६}{३}$) देवीदत्त राय।

ग्रंथ—महाभारत भाषा। उपर्युक्त।

रचनाकाल—१९१९ के पूर्व।

नाम—(२१०६/१) मंगलराय ।

ग्रंथ—महाभारत भाषा उपर्युक्त ।

रचनाकाल—१९१९ के पूर्व ।

नाम—(२१०६/२) हंसराज ।

ग्रंथ—महाभारत भाषा । उपर्युक्त ।

रचनाकाल—१९१९ के पूर्व ।

नाम—(२१०७) गोपालराव हरी, फ़र्रुख़ाबाद ।

ग्रंथ—दयानंददिग्विजयार्क ।

जन्मकाल—१८९४ ।

कविताकाल—१९१९ ।

रचनाकाल—१९१९ के पूर्व ।

नाम—(२१०७/१) भवानीदीन ।

विवरण—तअल्लुक़ेदार सीतापूर ।

नाम—(२१०८) लालचंद ।

ग्रंथ—सत्कर्म, उपदेश-रत्नमाला ।

कविताकाल—१९१९ ।

नाम—(२१०८/१) हरिदेव ।

नाम—(२१०९) कृष्णदास ब्राह्मण, उज्जैन ।

ग्रंथ—सिंहासनबत्तीसी । [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९२० के पूर्व ।

विवरण—आश्रयदाता राजा भीम ।

नाम—(२११०) माखन चौबे, कुलपहाड, जिला हमीरपूर ।

ग्रंथ—(१) श्रीगणेशजी की कथा, (२) श्रीसत्यनारायण कथा ।

कविताकाल—१९२० के पूर्व । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—कुलपहाड़, हमीरपूरवाले ।

नाम—(२१११) खूबचंद राठ, हमीरपुर। (उपनाम रसीले, रमेश)
ग्रंथ—तेरहमासी। [प्र० त्रै० रि०] अगचंद्रिका, होरीपङ्कज, प्रेम-पत्रिका, अवधसागर, कृष्णकुसुमाकर, माखनचोरी, घोड़ा-वृषभ-विवाद, वाक्यविलास, रसिकवशीकरण।
कविताकाल—१९२०।

नाम—(२११२) गणेशप्रसाद कायस्थ, ऐंचवारा, ज़िला बाँदा।
ग्रंथ—स्फुट।
जन्मकाल—१८९६।
कविताकाल—१९२०। मृत्यु १९५६।

नाम—(२११३) गंगाराम, बुँदेलखंडी।
ग्रंथ—(१) सिंहासनबत्तीसी, (२) देवीस्तुति, (३) राम-चरित्र। (खोज १९०३) [द्वि० त्रै० रि०]
जन्मकाल—१८९४।
कविताकाल—१९२०।
विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(२११४) टेर, मैनपुरी।
जन्मकाल—१८८८।
कविताकाल—१९२०।

नाम—(२११५) दीनदयाल कायस्थ, कोयल, ज़िला अलीगढ़।
ग्रंथ—स्फुट।
जन्मकाल—१८९५।
कविताकाल—१९२०।

नाम—(२११६) नरोत्तम, अतर्वेद ।

जन्मकाल—१८६६ ।

कविताकाल—१६२० ।

विवरण—साधारण कवि ।

नाम—(२११६/१) नाथूलाल दोसी ।

ग्रंथ—(१) सुकमालचरित्र, (२) महीपालचरित्र, (३) समाधितत्र, (४) दर्शनसार, (५) परमात्माप्रकाश, (६) सिद्धप्रियस्तोत्र, (७) रत्नकरंडश्रावकाचार । जैन संप्रदाय की स्त्री थी ।

रचनाकाल—१६२० के लगभग ।

नाम—(२११७) परमानदलल्ला पौराणिक, अजयगढ़, बुँदेलखड ।

ग्रथ—(१) नखशिख, (२) हनुमाननाटकदीपिका ।

जन्मकाल—१८६७ ।

कविताकाल—१६२० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२११७/१) पन्नालाल, दूनीवाले ।

ग्रंथ—(१) विद्वज्जनबोधक, (२) उत्तरपुराणवचनिका ।

रचनाकाल—१६२० के लगभग ।

नाम—(२११७/२) पारसदास, जयपूर-वासी ।

ग्रथ—(१) पारसविलास, (२) ज्ञानसूर्योदय, (३) सारचतुर्विंशतिका की वचनिका ।

रचनाकाल—१६२० के लगभग ।

नाम—(२११७/३) फतहलाल, जयपुरी ।

ग्रंथ—(१) विवाहपद्धति, (२) दशावतार नाटक, (३)

राजवार्तिकालंकार, (४) रत्नकरंडन्यायदीपिका, (५) तत्त्वार्थसूत्र की वचनिका।

रचनाकाल—१६२० के लगभग। जैन लेखक थे।

नाम—($\frac{२११७}{४}$) बख्तावरमल (उपनाम रतनलाल)

ग्रंथ—(१) जिनदत्तचरित्र, (२) नेमिनाथपुराण, (३) चंद्रप्रभापुराण, (४) भविष्यदत्तचरित्र, (५) प्रीतिंकरचरित्र, (६) प्रद्युम्नचरित्र, (७) व्रत कथा कोप।

रचनाकाल—१६२० के लगभग। जैन कवि थे।

नाम—($\frac{२११७}{५}$) शिवचंद्र।

ग्रंथ—(१) नीतिवाक्यामृत, (२) प्रश्नोत्तरश्रावकाचार, (३) तत्त्वार्थसूत्र की वचनिकाएँ।

रचनाकाल—१६२० अंदाज़ी। जैन कवि थे।

नाम—($\frac{२११७}{६}$) शिवजीलाल, जयपूरवासी।

ग्रंथ—(१) रत्नकरंड, (२) चर्चासंग्रह, (३) बोधसार, (४) दर्शनसार, (५) अध्यात्मतरंगिणी।

रचनाकाल—१६२० अंदाज़ी।

नाम—(२११८) व्रजचंद जैन।

ग्रंथ—श्रीरामलीला कौमुदी।

जन्मकाल—१८६०।

कविताकाल—१६२० से १६६० तक।

विवरण—इनका यह ग्रंथ वार्तिक है और कहीं-कहीं इसमें छंद भी हैं। ७० बड़े पृष्ठों का व्रजभाषा का ग्रंथ है। साधारण श्रेणी के कवि थे। ग्रंथ हमने छतरपूर में देखा है।

नाम—($\frac{२११८}{१}$) स्वरूपचंद जैन।

ग्रंथ—(१) मदनपराजयवचनिका, (२) त्रैलोक्यसार।

रचनाकाल—१९२० अंदाज़ी।

नाम—(२११८/२) हीराचंद्र अमोलक।

ग्रंथ—(१) पद्मपूजा, (२) स्फुट पद।

रचनाकाल—१९२० अंदाज़ी।

नाम—(२११९) मदनमोहन।

जन्मकाल—१८९८।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१२०) मनीराम मिश्र, साठी, कानपूर।

ग्रंथ—सीता का दर्पण।

जन्मकाल—१८९६।

कविताकाल—१९२०।

नाम—(२१२०/१) महाचंद्र जैन।

ग्रंथ—(१) महापुराण, (२) सामयिक पाठ, (३) स्फुट पद।

रचनाकाल—१९२०।

नाम—(२१२१) माखन लखेरा, पन्नावाले।

ग्रंथ—दानचौंतीसी। [प्र० त्रै० रि०]

जन्मकाल—१८९१।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१२१/१) मिहिरचंद्र, दिल्लीवासी।

ग्रंथ—(१) सज्जनचित्तविलास, (२) गुलिस्ताँ का अनुवाद, (३) बोस्ताँ का अनुवाद।

रचनाकाल—१९२०।

नाम—(२१२२) युगलप्रसाद कायस्थ, रीवाँ।

ग्रंथ—बघेलवंशावली, विनयवाटिका।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—रामरसिकावली रघुराजसिंह रीवाँ-नरेश कृत की वंशावली इन्हीं की रचना है।

नाम—(२१२३) रामकृष्ण।

ग्रंथ—नायिकाभेद।

जन्मकाल—१८८६।

कविताकाल—१९२०। [खोज १९०५] में नायिकाभेद की संवत् १९०७ की प्रति मिली है।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१२४) रामदीन बंदीजन, अलीगंज, इटावा।

जन्मकाल—१८९०।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१२५) लक्ष्मणसिंह (प्रतीतराय) कायस्थ, दतिया।

ग्रंथ—(१) जैमिनि-अश्वमेघ भाषा, (२) रामभूषण, (३) योकेंद्रयज्ञोत्सव।

जन्मकाल—१८९६।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—महाराज भवानीसिंह दतिया-नरेश के यहाँ थे।

नाम—(२१२६) लेखराज।

ग्रंथ—रामकृष्णगुणमाला।

कविताकाल—१९२०।

नाम—(२१२७) लोनेसिंह, मितौली, खीरी।

ग्रंथ—दशम स्कंध भागवत भाषा।

जन्मकाल—१८६२।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१२८) शिवप्रकाशसिंह बाबू, डुमरावँ, शाहाबादवाले।

ग्रंथ—रामतत्त्वबोधिनी (टीका विनयपत्रिका की)।

जन्मकाल—१८६१।

कविताकाल—१९२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२१२९) कुशलसिंह।

ग्रंथ—नखशिख। रामरत्नगीता।

कविताकाल—१९२१ के पूर्व।

विवरण—शिवनाथ के साथ लिखा।

नाम—(२१३०) दपताचार्य।

ग्रंथ—रसमंजरी।

कविताकाल—१९२१ के पूर्व। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२१३१) द्वारिकादास।

ग्रंथ—माधवनिदान भाषा (वैद्यक ग्रंथ)।

कविताकाल—१९२१ के पूर्व। (खोज १९००)

नाम—(२१३२) अनुनैन।

ग्रंथ—नखशिख।

जन्मकाल—१८८६।

कविताकाल—१९२१।

विवरण—कविता सानुप्रास और यमकयुक्त उत्तम है। साधारण श्रेणी।

नाम—($\frac{2132}{1}$) गोपाल कवि।

ग्रंथ—समस्या चमन। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१६२१।

नाम—($\frac{2132}{2}$) मदनसिंह कायस्थ।

ग्रंथ—(१) मदनचंद्रिका (१६२१), (२) मदनमुद्रिका (१६२३), (३) हम्मीरप्रकाश (१६२३), (४) मदनप्रताप शालिहोत्र (१६३१), (५) फ़ारसी की यात। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१६२१।

विवरण—ओरछा-नरेश हम्मीरसिंह तथा प्रतापसिंह के यहाँ थे।

नाम—(२१३३) राधाचरण कायस्थ, राजगढ़, बुँदेलखंड।

ग्रंथ—(१) यमुनाष्टक, (२) राधिकानखशिख, (३) शंभु-पचासा।

जन्मकाल—१८६६।

कविताकाल—१६२१। मृत्यु १६५१।

नाम—(२१३४) श्रीकृष्णचैतन्यदेव।

ग्रंथ—सौंदर्यचंद्रिका। [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१६२२ के पूर्व।

नाम—($\frac{2135}{1}$) दीपकुँअरि रानी।

ग्रंथ—दीपविलास। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१६२२।

विवरण—राजगढ़-नरेश महाराजा माधवसिंह की रानी थीं।

नाम—(२१३५) बख़्तावरख़ाँ, बिजावर।

ग्रंथ—धनुषसवैया।

कविताकाल—१९२२। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(२१३६) बेनी, भिंड-निवासी।

ग्रंथ—शालिहोत्र। [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९२३ के प्रथम।

विवरण—खगेश के पुत्र।

नाम—(२१३७) मानसिंह अवस्थी, गिरवाँ, ज़िला बाँदा।

ग्रंथ—शालिहोत्र।

कविताकाल—१९२३ के पूर्व। [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—साधारण।

नाम—(२१३७/१) केशवगिरि।

ग्रंथ—(१) आनंदलहरी, (२) प्रमोदनाटक। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९२३।

नाम—(२१३७/२) मजबूतसिंह, बुँदेलखंडी।

ग्रंथ—नीतिचंद्रिका। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९२३।

नाम—(२१३८) रामचरन चिरगाँव।

ग्रंथ—(१) हिंडोलकुंड, (२) रहस्यरामायन, (३) सीताराम-दंपतिविलास। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२१३८/१) लोचनसिंह कायस्थ।

ग्रंथ—लोचनप्रकाश। [च० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९२२।

कविताकाल—१९२३।

विवरण—मैथिलीशरण गुप्त के पिता।

नाम—(२१३९) भूरे, बिजावर।

ग्रंथ—बारहमासा। [प्र० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९२४ के पूर्व ।

नाम—(२१३९/१) केशवदास, टीकमगढ़वासी ।

ग्रंथ—(१) मुहूर्तप्रदीप (१९२४), (२) गणितसार (१९३०), [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९२४ ।

विवरण—महाराजा हमीरसिंह ओरछा-नरेश के यहाँ थे ।

नाम—(२१४०) जयगोविंददास ।

ग्रंथ—हनुमत्सागर (पृ० २२६) । [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९२४ ।

नाम—(२१४१) ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी, किशुनदासपूर, रायबरेली ।

ग्रंथ—रसचंद्रोदय, (कोई संग्रह भी) ।

जन्मकाल—१८८२ ।

कविताकाल—१९२४ तक ।

विवरण—साधारण श्रेणी । इनके पास भाषा-साहित्य का अच्छा पुस्तकालय था ।

नाम—(२१४२) दलपतिराम ।

ग्रंथ—श्रवणाख्यान ।

कविताकाल—१९२४ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२१४३) पंचम, डलमऊ, रायबरेली ।

कविताकाल—१९२४ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२१४३/१) रसरूप ।

ग्रंथ—(१) श्यामविलास (१९२४), (२) विनयरसामृत, (३) राधिकाजू को नखशिख । [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१६२४।

विवरण—पिपरी राज्य छत्रपुरवासी।

नाम—($\frac{२१४३}{२}$) शंकरलाल।

ग्रंथ—कृष्णचंद्रिका। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१६२४।

विवरण—रजधान ज़िला कानपुरवासी।

नाम—($\frac{२१४३}{३}$) स्वामी हरिसेवक साहब संत।

ग्रंथ—सेवकयहर, सेवकतरंग।

रचनाकाल—१६२४।

जन्मकाल—सं० १८८६।

मृत्युकाल—१६४६।

विवरण—आप बलिया-निवासी शिवगोपाल के पुत्र थे। आप योगशास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे।

उदाहरण—

वचन बिस्वास दो मदद गुरु आसले,
त्रिगुण बिस्तौल बधूप करु ग्राम को;
लोप संतोष अरु ज्ञान गोला बना,
वीर ना गने रण शीत और घाम को।
बंधु सुत नारि परिवार सब बहर बनो है,
ढाल कर चाल अरह जाम को,
कहैं हरिसेवक पद शीश दे गुरू को,
विषय को मारि ललकारि ले राम को।
जै जै जै वालमीक बलिया जो प्रकट कियो,
चारों दिशि खाई जाकी चौकी मुनीश्वर की,
पूरब पराशर दक्षिण गंगागर्ग दर दर भृगु,
दक्षिण हैं कपिलदेव उत्तर दे कुलेश्वर की।

मध्यपुरी राजे विपुल साधु सब गाजें तामें,
धाम छवि छाजें हुक्म रानी चक्रेश्वर की ;
गादी है वजार यस कायस्थ वजीरापुर,
तामह हरिसेवक खास किंकर परमेश्वर की ।

नाम—(२१४४) खान ।
कविताकाल—१९२५ के पूर्व ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२१४५) हनुमानदास ।
ग्रंथ—गानमाला ।
कविताकाल—१९२५ के पूर्व ।

नाम—(२१४६) कमलाकांत वकील, गोरखपूर ।
ग्रंथ—हालाविहार ।
जन्मकाल—१९०० ।
कविताकाल—१९२५ वर्तमान ।

नाम—(२१४७) कमलेश्वर कायस्थ, मदरा, जिला गाजीपूर ।
ग्रंथ—(१) सत्यनारायण, (२) स्फुट ।
कविताकाल—१९२५ । मृत्यु १९६८ ।

नाम—(२१४८) कालिदास चारण ।
कविताकाल—१९२५ ।
विवरण—मूली काठियावाड़ के निवासी तथा राजा यशवंत-
सिंह के यहाँ थे । इनकी कविता वीररस-पूर्ण है ।

नाम—(२१४९) केसरीसिंह ।
कविताकाल—१९२५ ।
विवरण—ओल निवासी भूपसिंह के पुत्र थे । पालीताने में
भी रहे ।

नाम—(२१४८) चंडीदत्त ।

जन्मकाल—१८६८ ।

कविताकाल—१६२५ ।

विवरण—महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे। साधारण श्रेणी ।

नाम—(२१४९) चंडीदान कविराजा चारण, कोटा ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

कविताकाल—१६२५ ।

विवरण—ये भी अच्छी कविता करते थे और देवीजी का एकाध कवित्त रोज़ बना लेते थे, तब भोजन करते थे। इस कारण देवीजी के कवित्त इनके हज़ारों हैं । साधारण श्रेणी ।

नाम—(२१४९/१) ज्येष्ठालाल ।

कविताकाल—१६२५ ।

विवरण—बीजापूर-निवासी चारण थे ।

नाम—(२१४९/२) ठाकुरप्रसाद लाला ।

ग्रंथ—(१) प्रश्नचंद्रिका (१६२५), (२) माधवविलास (१६२५), (३) भार्पेंदुरश्मि (१६३८) ।

रचनाकाल—१६२५ । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—ओरछावासी ।

नाम—(२१५०) तपसीराम कायस्थ, मुबारकपूर, सारन ।

ग्रंथ—(१) रमूज़ महरवफ़ा, (२) प्रेमगगतरंग, (३) वक़ाया देहली ।

कविताकाल—१६२५ । मृत्यु १६४२ ।

नाम—(२१५१) देवीप्रसाद कायस्थ, मऊ, छत्रपूर ।

ग्रंथ—वैद्यकल्प।

जन्मकाल—१८६७।

कविताकाल—१२५। मृत्यु १९४६।

नाम—(२१५२) नारायणदास भाट।

ग्रंथ—ऊधवव्रजगमनचरित्र। [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९२५।

विवरण—बनारस।

नाम—($\frac{२१५२}{१}$) आदितराम।

यह काठियावाड़ के देशांतर्गत 'नवानगर'-शहर के निवासी। प्रश्नोरा ब्राह्मण थे। इन्होंने "भगीत्यादित"-नामक बहुत अच्छा ग्रंथ बनाया है। इनका स्वर्गवास सं० १९४९ में हुआ।

कवित्त

यह जगजाल माँहि मगन रहो हों ताहि,
देके सतसंग भक्त जन भाव कीजिए;
मन की ए वासना विलासना कराओ कछु,
होऊँ यह सुमति कुमति मति छीजिए।
कहत 'अदितराम' सुनो यह मेरी आस,
छोरि जग पाम खास दासपद दीजिए;
एहो व्रजनाथ मोहिं कीजिए सनाथ अब,
पाय साथ हाँथ गहि, नाथ गहि लीजिए।

नाम—($\frac{२१५२}{२}$) गुलाबसिंह धाऊजी।

भरतपूर के रहनेवाले जाति के गूजर थे। यह संवत् १८७८ में जन्मे और संवत् १९४९ में स्वर्गवासी हुए। ये भरतपूर के महाराजा जसवंतसिंह के धाभाई होने से भरतपूर राज्य के बड़े उमराव थे। उनके बनाए ग्रंथों के नाम १—प्रेमसतसई सात सौ दोहा में

छपे हैं। २—कार्त्तिकमाहात्म्य। फुटकर छप्पय ५०० और फुटकर पद ५०० बनाया है। और कवि रसआनंद के पास 'हितकल्पद्रुम' (हितोपदेश भाषा) बनाके छपवाया है तथा 'सामुद्रिकसार' ग्रंथ नरोत्तम कवि के पास बनाकर छपाया है।

रचनाकाल—१६२५।

नाम—(२१५३) परमेश बदीजन, सतावाँ, रायबरेली।

ग्रंथ—कृष्णविनोद (पृ० ७८)।

जन्मकाल—१८६६।

कविताकाल—१६२५। थोड़े दिन हुए स्वर्गवास हुआ।

विवरण—तोष-श्रेणी।

नाम—(२१५४) प्रेमसिंह उदावत राठोड़, खडेला गाँव, मारवाड़।

ग्रथ—राजा कामकेतु की वार्ता (इतिहास)।

कविताकाल—१६२५। मृत्यु १६५६।

विवरण—आश्रयदाता महाराज यशवंतसिंह। श्लोक सं० ६००।

नाम—(२१५५) बुधसिंह (रसीले) कायस्थ, बेरी।

ग्रंथ—स्फुट।

जन्मकाल—१६००।

कविताकाल—१६२५। मृत्यु १६५०।

नाम—(२१५६) मथुराप्रसाद (उपनाम लकेश) कायस्थ, कालपी।

ग्रंथ—(१) रावणदिग्विजय, (२) रावणवृंदावनयात्रा, (३) रावण शिवस्वरोदय, (४) दोहावली।

जन्मकाल—१८६६।

कविताकाल—१६२५।

विवरण—आप कालपी में वकील थे। रामलीला के रसिक ही न थे, वरन् रावण बनते भी थे, और अपने को रावण का अवतार कहते थे। उपनाम भी लंकेश रक्खा था।

नाम—(२१५७) महेशदत्त शुक्ल अवधराम के पुत्र धनौली, जिला बारहबंकी।

ग्रंथ—(१) विष्णुपुराण भाषा गद्य-पद्य, (२) अमरकोष-टीका, (३) देवी भागवत, (४) वाल्मीकीय रामायण, (५) नृसिंहपुराण, (६) पद्मपुराण, (७) काव्यसंग्रह, (८) उमापति-दिग्विजय, (९) उद्योगपर्व भाषा, (१०) माधवनिदान, (११) कवित्तरामायण टीका।

जन्मकाल—१८९७।

कविताकाल—१९२५। मृत्यु १९६०।

नाम—(२१५८) मूलचंद कायस्थ, खैराबाद, जिला सीतापूर।

ग्रंथ—(१) धर्म सागर, (२) भजनावली ७ भाग।

जन्मकाल—१९००।

कविताकाल—१९२५। मृत्यु १९५०।

नाम—(२१५९) रघुनंदन भट्टाचार्य।

ग्रंथ—(१) सनातनधर्मसिद्धांत, (२) धर्मसिद्धांतसंहिता, (३) दिग्विजयाश्वमेध, (४) पाखंडमुंडिनिदर्शन, (५) कृत्यवाद, (६) शब्दार्थनिरूपण, (७) दाननिरूपण, (८) लक्षणावाद, (९) सद्रूपण, (१०) सदाशिवास्तुति।

जन्मकाल—१८९९।

कविताकाल—१९२५।

ग्रंथ—चित्रगुप्तेश्वर पुराण।

जन्मकाल—१८९७।

कविताकाल—१९२५।

नाम—($\frac{२१६०}{१}$) गुमानसिंह।

विवरण—मेवाड़ उदयपूर राज्यांतर्गत वाटरडा गाँव निवासी, उदयपूर राज्य के पटावत, वाटरडा गाँव के पास ठाकुर के भयात थे। लछनपुरा गाँव-निवासी गुमानसिंहजी का जन्मकाल संवत् १८९७ का था। इनका रचनाकाल संवत् १९२५ है। इनके बनाए हुए ग्रंथों के नाम—(१) मनिपालचन्द्रिका, (२) मोक्षभुवन, नव खंडों में, (३) योगभानुप्रकाशिका (भगवद्गीता की टीका), (४) गीतासार (भागवत अध्याय ५० श्लोक की टीका। (५) पातंजल सूत्र पर छंदबद्ध टीका। ये पाँच छपे हुए हैं और बाक़ी (६) योगांगशतक, (७) राजनीति, (८) जंत्री इत्यादि ग्रंथ बनाए हैं।

नाम—(२१६१) रामकुमार कायस्थ, बाँदा।

ग्रंथ—स्फुट।

जन्मकाल—१९००।

कविताकाल—१९२५। मृत्यु १९५५।

नाम—(२१६२) रामप्रतापजी, जयपूर।

ग्रंथ—स्फुट।

कविताकाल—१९२५।

नाम—($\frac{२१६२}{१}$) औघड़ उर्फ़ उद्धव।

विवरण—इनका जन्मस्थान काठियावाड़ के झालावाड़ प्रांत के सखतर गाँव में हुआ। जाति के औदीच्य। जन्म संवत् १८९७ वैशाख सुदी ५ बुधवार। इन्होंने सखतर दरबार

में श्रीकरणसिंहजी के नाम से एक ग्रंथ कर्ण-जस्त-मणि-नामक बनाया है। दूसरा ग्रंथ कुकविकुठार-नामक है।

कविताकाल—१६२५।

स्वय दूतिका

दिन है घरीक एक नेक तो बटोही सुन,
मेरी कही मान ना तौ पाछे पछिताइ है;
तस्कर चहूँघा फिरे तस्कर तमाम धाम,
रहत अकेली धाम काहू न सहाइ है।
बालम बिदेस छायो जोबन नरेश ऊधौ,
पायो ना सँदेस याते मागत सहाइ है;
आखिर करोगे कहूँ रजनि निबेरा डेरा,
याते इत रहो बेरा डेरा चित चाइ है।

नाम—(२१६३) राजभजनवारी, गजपुर, ज़िला गोरखपुर।

ग्रंथ—स्फुट काव्य।

कविताकाल—१६२५।

विवरण—राजा बस्ती के यहाँ थे।

नाम—(२१६३/१) गोपालजी।

विवरण—काठियावाड़ देशांतर्गत जेहिसवार प्रांत में स्वस्थान भावनगर राज्य के तावे सिहोर-नामक क़िस्सा में थे। राव (भाट) मालसिंह के गोपाल नाम का पुत्र हुआ। इन्होंने लोका गच्छ के जैनसाधु पानाचंदजी की सगति से कविता सीखी। इनका जन्मकाल १८८२ का था। और सवत् १६२० में स्वर्गगामी हुए। इनका चंडीविलास-नामक देवी-स्तुति का ग्रंथ है।

नाम—(२१६४) शिवप्रकाश कायस्थ, अपहर, ज़िला छपरा।

ग्रंथ—(१) उपदेशप्रवाह, (२) भागवतरससंपुट, (३) लीलारसतरंगिणी, (४) सतमर्गविलास, (५) भजनरसामृतार्णव, (६) भागवततत्त्वभास्कर, (७) विनयपत्रिका टीका, (८) गीतावली टीका, (९) रामगीता टीका, (१०) वेदस्तुति की टीका, (११) इतिहासलहरी।

जन्मकाल—१९००।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—डुमरावँ के प्रसिद्ध दीवान जयप्रकाशलाल के लघु भ्राता थे।

नाम—(२१६५) श्याम कवि मिश्र, आगरा।

ग्रंथ—स्फुट।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—ये कुलपति मिश्र के वंशधर हैं।

नाम—($\frac{२१६५}{१}$) दीपसिंह।

विवरण—कुँवरदीपसिंहजी धावई करौली के गुज़ारेदार (मारवाड़) थे। यह संवत् १९३६ में गुज़र गए। इनके बनाए हुए ग्रंथ—(१) दीपसागर, (२) जगन्नाथध्यानमंजरी, (३) ध्यानपंचाशिका, (४) करुणापचीसी, (५) ज्ञानशतक।

नाम—($\frac{२१६५}{२}$) रसआनंद।

विवरण—भरतपुर ताबा के बेशया ग्राम के रहनेवाले जाति के जाट थे। यह संवत् १८९२ में पैदा हुए और संवत् १९२९

में स्वर्गवासी हुए अर्थात् ७७ वर्ष की आयु भोग कर मरे।

ग्रंथ—(१) हितकल्पद्रुम (संस्कृत हितोपदेश भाषा में किया है), (२) संग्रामकलाधर (विराटपर्व), (३) समर-रत्नाकर (अश्वमेध), (४) विजयविनोद (करौली के राजा की लड़ाई के विषय में), (५) मौजप्रकाश, (६) शिखनख, (७) गंगा भू आगमन।

इनकी कविता का नमूना—

कवित्त

केकी भेकी कठिनहु टीको मरि जैयो शिर,
　　और परगात जरि जैयो कोकिलान को;
केतकी सकुल कुल अनल वितंल जैयो,
　　हूजियो कतल कुल ललित लतान को।
भने "रसआनँद" यों बीज निरबीज जैयो,
　　तेज हत विक्रम निगोडे पचवान को,
पिय रटि-रटि पपिहा को कंठ कटि जैयो,
　　यश मिटि जैयो यजमारे बदरान को।

नाम—(२१६६) हनुमानदीन मिश्र, राजापुर, ज़िला बाँदा।

ग्रंथ—(१) वाल्मीकीय रामायण, (२) दीपमालिका।

जन्मकाल—१८६२।

कविताकाल—१६२५।

नाम—($\frac{२१६६}{१}$) रणमलसिंह राजा साहब।

विवरण—झालावाड़ प्रांत में ध्रांगधरा स्थान के झाला राजा साहब श्रीरणमलसिंहजी अमरसिंह के कुमार थे। अमरसिंह सन् १८४८ में स्वर्गवासी हो गए। पीछे उनके कुमारजी २२ वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे और सन् १८६६ में

नाम—(२१६४) शिवप्रकाश कायस्थ, अपहर, ज़िला छपरा।

ग्रंथ—(१) उपदेशप्रवाह, (२) भागवतरससंपुट, (३) लीलारसतरंगिणी, (४) सतमार्गविलास, (५) भजनरसामृतार्णव, (६) भागवततत्त्वभास्कर, (७) विनयपत्रिका टीका, (८) गीतावली टीका, (९) राम-गीता टीका, (१०) वेदस्तुति की टीका, (११) इतिहास-लहरी।

जन्मकाल—१९००।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—डुमराँव के प्रसिद्ध दीवान जयप्रकाशलाल के लघु भ्राता थे।

नाम—(२१६५) श्याम कवि मिश्र, आगरा।

ग्रंथ—स्फुट।

कविताकाल—१९२५।

विवरण—ये कुलपति मिश्र के वंशधर हैं।

नाम—($\frac{२१६५}{१}$) दीपसिंह।

विवरण—कुँवरदीपसिंहजी धावई करौली के गुजारेदार (मारवाड़) थे। यह संवत् १९३६ में गुज़र गए। इनके बनाए हुए ग्रंथ—(१) दीपसागर, (२) जगन्नाथध्यानमंजरी, (३) ध्यानपचाशिका, (४) करुणापचीसी, (५) ज्ञान-शतक।

नाम—($\frac{२१६५}{२}$) रसआनंद।

विवरण—भरतपुर ताबा के वेशया ग्राम के रहनेवाले जाति के जाट थे। यह संवत् १८९२ में पैदा हुए और संवत् १९२६

वर्तमान प्रकरण

पैंतीसवाँ अध्याय

वर्तमान हिंदी एवं पत्र-पत्रिकाएँ
(१९२६—१९४५)

भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र के अतिरिक्त कोई परमोत्तम कवि इस समय में नहीं हुआ। उनके अतिरिक्त उत्कृष्ट कवियों की गणना में महाराजा रघुराजसिंह और सहजराम ही के नाम आ सकते हैं, पर ये भी प्रथम श्रेणी के न थे, यद्यपि इनकी कविता आदरणीय अवश्य है। इनके अतिरिक्त साधारणतया उत्कृष्ट कवियों में गोविंद गिल्ला-भाई, द्विजराज, ब्रजराज, विशाल, पूर्ण, श्रीधर पाठक, हनुमान्, मुरारिदान और ललित की भी गणना हो सकती है। इस समय में चद्रकला आदि कई स्त्रियों ने भी मनोहारिणी कविता की है, जैसा कि आगे समालोचनाओं से प्रकट होगा। प्राचीन प्रथा के कवियों में नायिकाभेद, अलंकार, षट्ऋतु और नखशिख के ही ग्रंथों के बनाने की कुछ परिपाटी-सी पड़ गई थी। अच्छे कविगण प्राय. इन्हीं विषयों पर रचना करते थे और कथाप्रसग अथवा अन्य विषयों पर कम ध्यान देते थे। इस काल में प्राचीन प्रथानुयायी कविगण तो पुराने ही ढर्रे पर विशेषतया चल रहे हैं, पर बहुत-से नवीन प्रथा के लोग इस रीति को अनुचित समझने लगे हैं। थोड़े ही विषयों को ले लेने से शेष उत्तम विषय छूट जाते हैं और कविता का मार्ग संकुचित हो जाता है। आजकल रेल, तार, डाक, छापेखानों आदि के विराट्

२६ वर्ष राज्य करके स्वर्गवासी हुए। राजा साहब अच्छे विद्वान् थे।

नाम—(२१६७) हरीदास भट्ट, बाँदा।

ग्रंथ—राधाभूषण। व्याधहरन। [प्र० त्रै० रि०]

जन्मकाल—१६०१।

कविताकाल—१६२५।

विवरण—शृंगारविषय।

नाम—(२१६८) हिरदेस बंदीजन, झाँसी।

ग्रंथ—शृंगारनौरस।

जन्मकाल—१६०१।

कविताकाल—१६२५।

विवरण—इनकी कविता उत्तम और मनोहर है, तोष श्रेणी के कवि हैं।

वर्तमान प्रकरण

पैंतीसवाँ अध्याय

वर्तमान हिंदी एवं पत्र-पत्रिकाएँ
(१९२६—१९४५)

भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र के अतिरिक्त कोई परमोत्तम कवि इस समय में नहीं हुआ। उनके अतिरिक्त उत्कृष्ट कवियों की गणना में महाराजा रघुराजसिंह और सहजराम ही के नाम आ सकते हैं, पर ये भी प्रथम श्रेणी के न थे, यद्यपि इनकी कविता आदरणीय अवश्य है। इनके अतिरिक्त साधारणतया उत्कृष्ट कवियों में गोविंद गिल्ला-भाई, द्विजराज, ब्रजराज, विशाल, पूर्ण, श्रीधर पाठक, हनुमान्, मुरारिदान और ललित की भी गणना हो सकती है। इस समय में चंद्रकला आदि कई स्त्रियों ने भी मनोहारिणी कविता की है, जैसा कि आगे समालोचनाओं से प्रकट होगा। प्राचीन प्रथा के कवियों में नायिकाभेद, अलंकार, पट्ऋतु और नखशिख के ही ग्रंथों के बनाने की कुछ परिपाटी-सी पड़ गई थी। अच्छे कविगण प्रायः इन्हीं विषयों पर रचना करते थे और कथाप्रसंग अथवा अन्य विषयों पर कम ध्यान देते थे। इस काल में प्राचीन प्रथानुयायी कविगण तो पुराने ही ढर्रे पर विशेषतया चल रहे हैं, पर बहुत-से नवीन प्रथा के लोग इस रीति को अनुचित समझने लगे हैं। थोड़े ही विषयों को ले लेने से शेष उत्तम विषय छूट जाते हैं और कविता का मार्ग संकुचित हो जाता है। आजकल रेल, तार, डाक, छापेख़ानों आदि के विशद

प्रबंधों के कारण हम लोगों को दूर-दूर के मनुष्यों तक से मिलने और भाव प्रकाशन का पूरा सुभीता हो गया है। अँगरेज़ी राज्य के पूर्ण रीति से स्थापित हो जाने से भी कविता को बड़ा लाभ पहुँचा है। इस राज्य ने अच्छी शांति स्थापित कर दी, जिससे भाषा ने भी उन्नति पाई। इतने पर भी कुछ पूर्व-प्रथानुयायियों ने नई सुभीता-वाली बातों से केवल समस्यापूर्ति के पत्र चलाने का काम लिया। समस्यापूर्ति में चमत्कारिक काव्य प्रायः कम मिलता है। पाँच-छः वर्षों से अब समस्यापूर्ति के पत्रों का बल क्षीण होता देख पड़ता है। और विविध विषयों के पत्रों की उन्नति दिखाई देती है। बहुत दिनों से हिंदी में बारहमासाओं के लिखने की चाल चली आती है। इनमें प्रत्येक मास में विरहिणी स्त्रियों की विरह-वेदना का वर्णन होता है। सबसे पहला बारहमासा ख़ुसरो का कहा जाता है और दूसरा, जहाँ तक हमें ज्ञात है, केशवदास ने बनाया। इनके पीछे किसी भारी प्रचीन कवि ने बारहमासा नहीं कहा। इधर आकर बजहन, बहाव, गणेशप्रसाद आदि ने मनोहर बारहमासे लिखे हैं। ऐसे ग्रंथों में खड़ी-बोली का विशेष प्रयोग होता है। इनके अतिरिक्त सैकड़ों बारह-मासे बने हैं, पर इनकी रचना अधिकतर शिथिल है। बहुतों में रचयि-ताओं के नामों तक का पता नहीं लगता।

अब तक कविता भी विशेषतया व्रजभाषा में ही होती थी, पर अब पंडितों का विचार है कि एक प्रांतीय भाषा परम मनोहारिणी होने पर भी समस्त देशीय हिंदी-भाषा का स्थान नहीं ले सकती। उनका मत है कि केवल ऐसी साधु बोली जो एकदेशीय न हो और जो उन सब प्रांतों में व्यवहृत हो, जहाँ हिंदी का प्रचार है, वास्तव में हमारी भाषा कहलाने की योग्यता रख सकती है। उनके मत में खड़ी-बोली ऐसी है और कविता इसी में लिखी जानी चाहिए। १७वीं शताब्दी में गंग एवं जटमल ने खड़ी-बोली में गद्य लिखा। पर गद्य-

काव्य में इसका प्रचार लल्लूलाल तथा सदल मिश्र के समय से विशेष हुआ। राजा लक्ष्मणसिंह तथा राजा शिवप्रसाद ने इसे और भी उन्नति दी। भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा प्रतापनारायण मिश्र के समय से गद्य की बहुत ही संतोषदायिनी उन्नति हुई, और इस समय सैकड़ों उत्कृष्ट गद्य-लेखक वर्तमान हैं। इनमें बदरीनारायण चौधरी, गंगाप्रसाद अग्निहोत्री, भुवनेश्वर मिश्र, मेहता लज्जाराम, शिवनंदन-सहाय, व्रजनंदनसहाय, साधुशरणप्रसादसिंह, किशोरीलालगोस्वामी श्यामसुंदरदास, गोविंदनारायण मिश्र, गदाधरसिंह, अमृतलाल चक्रवर्ती, अयोध्यासिंह, देवीप्रसाद, जगन्नाथदास (रत्नाकर), गौरीशंकर-हीरा-चंद्र ओझा, गोपालराम, महावीरप्रसाद द्विवेदी, मदनमोहन मालवीय, सोमेश्वरदत्त सुकुल एवं अन्यान्य अनेक परम प्रतिभाशाली लेखक हैं। प्राय: साठ वर्षों से हिंदी में समाचार-पत्र भी निकलने लगे हैं। और इनकी दिनोंदिन उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है। इस समय कई दैनिक पत्र भी हिंदी में निकल रहे हैं। गद्य में विविध प्रकार के अच्छे और उपकारी ग्रंथ लिखे गए, और अनुवादित हुए तथा होते जाते हैं। अँगरेज़ी राज्य का प्रभाव अब बैठ चुका है। इससे भाँति-भाँति के नवागत लाभकारी भाव देश में फैल रहे हैं। अँगरेज़ी-शिक्षा का भी यही प्रभाव पड़ता है। इसने देशभक्ति की मात्रा बहुत बढ़ा दी है। अँगरेज़ी राज्य से जीवन-होड़-प्राबल्य दिनोंदिन बढ़ता जाता है। इससे देशवासियों का ध्यान उपयोगी विषयों की ओर खिंच रहा है। इन कारणों से हिंदी में नवीन विचारों का समावेश स्वयं होता जाता है और विविध विषयों के ग्रंथ दिनोंदिन बनते जाते हैं। यदि यही हाल स्थिर रहा, जैसा कि दृढ़ आशा की जाती है, तो पचास वर्ष के भीतर हिंदी की बहुत बड़ी उन्नति हो जावेगी और इसमें किसी प्रकार के ग्रंथों की कमी न रहेगी। पद्य में खड़ी-बोली का कुछ कुछ प्रचार बहुत काल से चला आता है, जैसा कि ऊपर स्थान-

स्थान पर दिखलाया गया है, पर पूर्णबल से पहलेपहल खड़ी-बोली की पद्य-कविता सीतल कवि ने बनाई। इस महाकवि ने अपने 'गुल्ज़ार-चमन'-नामक ग्रंथ में सिवा खड़ी बोली के और किसी भाषा का प्रयोग ही नहीं किया। इसके तीनों चमन मुद्रित हमारे पास हैं। सीतल के पीछे श्रीधर पाठक ने खड़ी-बोली की प्रशंसनीय कविता की, और महावीरप्रसाद द्विवेदी, अयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त, सनेही, बालमुकुंद गुप्त, नाथूरामशंकर, मन्नन द्विवेदी आदि ने भी इसी प्रथा पर अच्छी रचनाएँ की हैं। हमने भी 'भारतविनय'-नामक प्रायः एक सहस्र छंदों का ग्रंथ एवं एक अन्य छोटी सी पुस्तक खड़ी-बोली में बनाई है। अभी कुछ कवि खड़ी-बोली में कविता नहीं करते और कुछ को इसमें उत्तम कविता बन सकने में अब भी संदेह है, पर इसकी भी उन्नति होने की अब पूर्ण आशा है।

थोड़े दिनों से हिंदी में उपन्यासों की बड़ी चाल पड़ गई है। इनसे इतना उपकार अवश्य है, कि इनकी रोचकता के कारण बहुत-से हिंदी न जाननेवाले भी इस भाषा की ओर झुक पड़ते हैं। उपन्यास-लेखकों में देवकीनंदन खत्री, गोपालराम, किशोरीलाल गोस्वामी, गंगाप्रसाद गुप्त आदि प्रधान हैं। इस समय प्रेमचंदजी के उपन्यास और कहानियाँ बहुत लोकप्रिय हैं।

नाटक-विभाग हिंदी में बहुत दिनों से स्थापित नहीं है और न इसकी अभी तक अच्छी उन्नति हुई है। सबसे पहले नेवाज कवि ने शकुंतला नाटक बनाया, पर वह स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है, वरन् विशेषतया कालिदास-कृत शकुंतला नाटक के आधार पर लिखा गया है। यह पूर्णरूप से नाटक के लक्षणों में भी नहीं आता, क्योंकि इसमें यवनिकादि का यथोचित समावेश नहीं है। ब्रजवासीदास-कृत प्रबोधचंद्रोदय नाटक भी इसी तरह का है। केशवदास-कृत विज्ञानगीता भी नाटक

के ढंग पर लिखा गया है, पर उसमें इन ग्रंथों से भी कम नाटकपन है, यहाँ तक कि उसे नाटक कहना ही व्यर्थ है। देवमायाप्रपंच नाटक में भी यवनिका आदि के प्रबंध नहीं हैं। इसे देव कवि ने बनाया। प्रभावती और आनंदरघुनंदन भी पूर्ण नाटक नहीं हैं। सबसे पहला नाटक भारतेंदु हरिश्चंद्र के पिता गिरधरदास ने सं० १९१४ में बनाया, जिसका नाम "नहुष नाटक" है। राधाकृष्णदास ने उसका संपादन किया। इसके पीछे राजा लक्ष्मणसिंह ने शकुंतला का भाषानुवाद किया। नाटकों का प्रचार हिंदी में प्रधानतया हरिश्चंद्र ही ने किया। उन्होंने बहुत-से उत्तम नाटक बनाए, जिनमें से कई का अभिनय भी हुआ। इनके अतिरिक्त श्रीनिवासदास, तोताराम, गोपालराम, काशीनाथ खत्री, पुरोहित गोपीनाथ, लाला सीताराम आदि ने भी नाटक बनाए और अनुवादित किए हैं। पं० रूपनारायण पांडे ने डी० एल्० राय के बहुत-से नाटकों के अनुवाद किए हैं। बाबू जयशंकर प्रसाद ने कई उत्तम मौलिक नाटक लिखे हैं। श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव और पं० बदरीनाथ भट्ट के हास्यरसात्मक नाटक लोग पसंद करते हैं। राधाकृष्णदास, प्रतापनारायण मिश्र, देवकीनंदन त्रिपाठी, बालकृष्ण भट्ट, गणेशदत्त, राधाचरण गोस्वामी, चौधरी बदरीनारायण, गदाधर भट्ट, जानी बिहारीलाल, अंबिकादत्त व्यास, शीतलप्रसाद तिवारी, दामोदर शास्त्री, ठाकुरदयालसिंह, अयोध्यासिंह उपाध्याय, गदाधरसिंह, ललिताप्रसाद त्रिवेदी, राय देवीप्रसाद पूर्ण, बालेश्वरप्रसाद, महाराजकुमार खड्ग लालबहादुर मल्ल आदि कविगण इस समय के नाटककार हैं। शोक है कि इनमें कुछ महाशय अब नहीं हैं।

बिहार-प्रांत में हिंदी-भाषी अन्य प्रांतों के देखते नाटक-विभाग बहुत दिनों से अच्छी दशा में है। स्वयं विद्यापति ठाकुर ने 'द्रह्वीं शताब्दी में दो नाटक-ग्रंथ लिखे। लाल झा ने सं० १८३७ में गौरी-परिणय

नाटक बनाया, तथा सं० १९०७ में भानुनाथ झा ने प्रभावतीहरण नाटक निर्माण किया, जिसमें मैथिल भाषा के अतिरिक्त प्राकृत तथा संस्कृत का भी प्रयोग किया गया। हर्षनाथ झा ने भी इसी समय कई ग्रंथ बनाए, जिनमें ऊषाहरण मुख्य है। व्रजनंदनसहाय और शिवनंदनसहाय ने भी नाटक रचे हैं।

फिर भी कहना ही पड़ता है कि हिंदी में नाटक-विभाग अभी बिलकुल संतोषदायक दशा में नहीं है। भारतेंदु, श्रीनिवासदास आदि के रचित नाटकों के अतिरिक्त अधिकांश शेष उत्तम नाटक-ग्रंथ या तो नाटक हैं ही नहीं, अथवा केवल अनुवाद-मात्र हैं।

हिंदी इतिहास-विषयक अभी तक कोई अच्छा ग्रंथ नहीं है। सबसे प्रथम प्रयत्न इस विषय में भूषण के समकालिक कालिदास कवि ने किया। पर उन्होंने केवल हज़ार छंदों का हज़ारा-नामक एक संग्रह बनाया। इस ग्रंथ से इतना लाभ अवश्य हुआ कि जिन कवियों के नाम इसमें आए हैं, उनके विषय में ज्ञात हो गया कि वे या तो कालिदास के समकालिक थे, अथवा पूर्व के। बहुत-से कवियों की रचनाएँ भी इसी ग्रंथ के कारण सुरक्षित रहीं। संवत् १६६० के लगभग प्रवीण कवि ने सारसंग्रह नामक एक ग्रंथ संगृहीत किया, जिसमें प्राय १५० कवियों की कविता पाई जाती है। यह अमुद्रित ग्रंथ पंडित युगलकिशोर के पास है। दलपतिराय बंसीधर ने संवत् १७९२ में अलंकाररत्नाकर नामक एक संग्रह बनाया, जिसमें उन्होंने अपने अतिरिक्त ४४ कवियों के छंद लिखे। भक्तमाल, कविमाला (१७१८), सत्कविगिराविलास (१८०३), विद्वन्मोदतरंगिणी (१८७४) और रागसागरोद्भव (१९००) भी कुछ प्राचीन संग्रह हैं। सूदन ने भी प्राय· १५० कवियों के नाम लिखे हैं। भाषाकाव्यसंग्रह स्कूलों की एक पाठ्य-पुस्तक-मात्र थी। संवत् १९३० के लगभग ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने शिवसिंहसरोज-नामक एक अनमोल ग्रंथ बनाया, जिसमें

उन्होंने प्रायः एक सहस्र कवियों का सूक्ष्म हाल प्रचुर श्रम द्वारा एकत्र किया। दि माडर्न वर्नैक्युलर लिटरेचर ऑफ़् हिंदुस्तान और 'कविकीर्ति-कलानिधि' को भी डॉक्टर ग्रियर्सन तथा पंडित नकछेदी तिवारी ने लिखा। पर ये ग्रंथ विशेषतया 'सरोज' पर ही अवलंबित हैं। सरकार हाल में आर्थिक सहायता देकर काशीनागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा हिंदी-पुस्तकों की खोज सं० १६५७ से करा रही है। इससे बहुत-से उत्तम ग्रंथों और कवियों का पता लग रहा है। खोज पूरे इस प्रांत तथा राजस्थान इत्यादि में हो जाने पर उससे इतिहास की उत्तम सामग्री मिल सकेगी।

हिंदी में समालोचना की चाल बहुत थोड़े दिनों से चली है। प्राचीन प्रथा के लोग समझते थे कि समालोचना करने में किसी भी कवि की निंदा न करनी चाहिए। इस विचार के कारण समालोचना की उन्नति प्राचीन काल में न हुई। सबसे प्रथम हिंदी में महाकवि दास ने समालोचना की ओर कुछ ध्यान दिया, पर बहुत दबी कलम से कहने के कारण उन्होंने किसी के विषय में अधिक न कहा। भारतेंदुजी भी इस ओर कुछ झुके थे, यहाँ तक कि उत्तरी हिंद के वे एक-मात्र वर्तमान समालोचक कहलाते थे। समालोचक-नामक एक पत्र भी निकला था, और छत्तीसगढ़-मित्र भी समालोचना पर विशेष ध्यान देता था, पर काल गति से ये दोनों पत्र अस्त हो गए। अन्य पत्र-पत्रिकाएँ भी समय-समय पर समालोचना करती हैं। ब्रजनंदनप्रसाद एवं महावीरप्रसाद द्विवेदी ने कुछ समालोचनाएँ लिखी हैं। "हिंदी-नवरत्न"-नामक समालोचना ग्रंथ थोड़े ही दिन हुए हमने भी बनाया था। इस समय मासिक पत्रों में समालोचना लिखी जाती है और दो साल से कृष्णविहारी मिश्र हिंदी समालोचक नाम का एक पत्र निकाल रहे हैं। यदि उसका आकार कुछ बढ़ाकर उसे मासिक कर दिया जाय, तो उससे इस अंग के पूर्ण होने की विशेष आशा है।

आजकल रामलीला और रासलीला मे भी हिंदी का प्रचार कुछ-कुछ होता है। इनमें राम और कृष्ण की कथाओं का अभिनय किया जाता है। रामलीला प्रथम तो साधारण जनों के ही द्वारा विजयदशमी के अवसर पर और कहीं-कहीं दीवाली पर्यंत की जाती थी, पर थोडे दिनों से रास-मंडलियों की भाँति रामलीला की भी अभिनय मंडलियाँ स्थिर हुई हैं, जिन्होंने रास-मंडलियों से बहुत अधिक उन्नति कर ली है और जो वर्तमान थिएटरों के कुछ-कुछ बराबर पहुँच गई हैं। राममंडलियाँ भी प्राचीन रीति पर थिएटर की-सी लीलाएँ करती हैं, यद्यपि इनसे अब तक बहुत कम उन्नति हो सकी है। समय-समय पर ग्रामों में कहीं-कहीं बहुत दिनों से वर्षा ऋतु में आल्हा गाने की परिपाटी चली आती है। इसका छंद तुकांतहीन बड़ा ही ओजकारी होता है। इसमें महोवे के राजा परिमाल तथा वीरवर आल्हा-ऊदन का वर्णन होता है, जो प्राय लड़ाइयों से भरा है। आल्हा की प्रतियाँ थोडे ही दिनों से छपी हैं। यह नहीं ज्ञात है कि इसकी रचना किस कवि ने कब की थी। कहा जाता है कि चंद के समकालीन जगनिक बंदीजन ने पहले-पहल आल्हा बनाया, पर उस समय की भाषा का कोई अंश भी अब आल्हा में नहीं है। कहते हैं कि कन्नौज के किसी कवि ने वर्तमान आल्हा बनाया, पर इसका कोई प्रमाण नहीं है। जो कुछ हो, आल्हा की कविता स्थान-स्थान पर परम ओजस्विनी और मनोहर है। पँवारा भी एक प्राचीन काव्य समझ पड़ता है। पर इसके रचयिता का भी पता नहीं है और न इसकी कोई मुद्रित अथवा लिखित प्रति ही मिलती है। पँवारा विशेषतया पासी लोग गाते हैं और उसमें देशीय राजाओं एवं ज़िमींदारों का हाल रहता है। जहाँ जो पँवारा प्रचलित है वहाँ के बड़े आदमियों का यश उसमें वर्णित होता है। यह पँवार राजाओं के यशोवर्णन से प्रारंभ हुआ जान पड़ता है, जैसा कि इसके नाम से प्रकट होता है। यदि कोई मनुष्य श्रम करके पासी

आदिकों से इसे एकत्र करे, तो विदित हो कि इसकी रचनाएँ कैसी हैं। अभी तो पँवारा ऐसा नीरस समझा जाता है, कि लोग निंदा करने में किसी नीरस और लंबे प्रबंध को पँवारा कहते हैं।

हिंदी के सौभाग्य से पिछले ३० या ३५ वर्ष के अंदर पाँच-सात सभाएँ भी काशी, मेरठ, जौनपूर, आरा, प्रयाग, कलकत्ता आदि में स्थापित हुईं। काशी-नागरीप्रचारिणी सभा ने संवत् १९५० में जन्म ग्रहण किया। तभी से इसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली जाती है। यह बराबर नागरीप्रचारिणी पत्रिका निकालती रही है और अब ग्रंथ-माला एवं लेखमाला भी निालकने लगी है। ग्रथमाला में अच्छे-अच्छे ग्रंथ निकल गए और निकालते जाते हैं। हिंदी को युक्तप्रांत के न्यायालयों में जो स्थान मिला है, वह अधिकांश में इसी के प्रयत्नों का फल है। इसने तुलसी-कृत रामायण और पृथ्वीराज रासो की परम शुद्ध प्रतियाँ प्रचुर श्रम द्वारा प्रकाशित कीं और २८ साल से सरकार से सहायता लेकर हिंदी के प्राचीन ग्रंथों की खोज में यह बड़ा ही सराहनीय श्रम कर रही है। इसने पदकों, प्रशसापत्र आदि के द्वारा उत्तम लेख-प्रणाली चलाने का प्रबंध किया और लेखकों को बहुत प्रोत्साहन दिया। अनेकानेक प्रयत्नों से इसने हिंदी-भाषा और नागरी अक्षरों का प्रचार बढ़ाया। बहुत-से विद्वानों की सहायता से यह एक वैज्ञानिक कोष तैयार कर चुकी है, अब एक वृहत् कोष भी बना रही है, जो पूर्ण होने पर आ चुका है, इस समय तक इसके ४० खंड निकल चुके हैं। यह इतिहास भी इसी की प्रेरणा से बना है।

आरा-नागरीप्रचारिणी सभा प्राय २५ वर्षों से बिहार में स्थापित है। इसने भी हिंदी के प्रचार में परम प्रशसनीय श्रम किया है। अब तक हिंदी का कोई सर्वमान्य व्याकरण नहीं था। इस सभा ने एक ऐसा व्याकरण भी तैयार करा लिया है।

मेरठ-सभा ने भी हिंदी-प्रचार में अच्छा श्रम किया, पर दुर्भाग्य-

वश पंडित गौरीदत्त का स्वर्गवास हो जाने से वह अब सुषुप्तावस्था को प्राप्त हो गई है। जौनपूर सभा का भी परिश्रम अच्छा है, पर इसकी भी दशा संतोषदायिनी नहीं है। प्रयाग की नागरीप्रवर्द्धिनी सभा अभी थोड़े ही दिनों से स्थापित हुई है, पर तो भी इसके उत्साह से हिंदी के विशेष उपकार होने की आशा है। कलकत्ते की एक लिपि विस्तार-परिषद् ने भी कई साल तक अच्छा काम किया था। उसका अस्तित्व हिंदी के लिये बड़े गौरव का था, परंतु श्रीशारदा-चरण जज हाईकोर्ट का देहांत हो जाने से उसका लोप हो गया। इसी अभिप्राय से इस सभा ने देवनागर-नामक पत्र निकाला था, जिसमें सभी भाषाओं के लेख नागरी-लिपि में लिखे जाते थे, वह भी बंद हो गया। भाषाओं के एकीकरण में यह सभा परमोपयोगिनी थी। देश में बहुत काल से नागरी-लिपि का प्रचार चला आता है। अब मद्रास एवं बंगाल के विद्वानों ने भी इसी लिपि को ग्राह्य माना है, और गुजरात में भी इसका प्रचार बढ़ता देख पड़ता है। यहाँ तक कि श्रीमान् बड़ौदा-नरेश ने नागराक्षरों की शिक्षा आवश्यक कर दी है। नागरीप्रचारिणी सभा के प्रयत्नों से १९६७ के नवरात्र में काशी में प्रथम हिंदी-साहित्य-सम्मेलन नामक एक महती सभा हुई थी, जिसमें अन्य विषयों के साथ एक लिपि-विस्तार के उपायों पर विचार हुआ था। प्रयाग और कलकत्ते में भी इसके अधिवेशन हुए। अब तो सम्मेलन एक प्रतिष्ठित संस्था है। इसके १८ अधिवेशन हो चुके हैं। एक अधिवेशन के सभापति महात्मा गांधी थे। इसके द्वारा परीक्षाएँ होती हैं। उससे हिंदी का बड़ा हित है। इसकी ओर से प्रतिवर्ष १२००) का मंगलाप्रसाद पुरस्कार हिंदी के उत्कृष्ट लेखक को दिया जाता है। सम्मेलन पुस्तक-प्रकाशन का भी काम करता है। इसके द्वारा हिंदी-विद्यापीठ नाम का एक शिक्षालय भी चलता है। इसकी ओर से सम्मेलन-पत्रिका भी निकलती है। इसका काम बहुत व्यापक है।

पौष १९६७ में इसी बात के पुष्टयर्थ प्रयाग में एक लिपि-विस्तार-सम्मेलन हुआ, जिसमें भारतवर्ष के सभी देशों से विद्वान् महाशयों ने मदरास के जस्टिस कृष्णा स्वामी ऐयर के सभापतित्व में नागराक्षरों के प्रचारार्थ योग दिया, और उन्हें सारे देश के लिये सर्वमान्य ठहराया। अब हिंदी के सुदिन-से आते देख पड़ते हैं। इन सभाओं के अतिरिक्त और भी छोटी बड़ी सभाएँ यत्र-तत्र नागरी प्रचारार्थ स्थापित हुई हैं। भारतधर्म-महामंडल और आर्य समाज आदि धार्मिक सभाएँ भी व्याख्यानों, लेखों, पत्रों एवं ग्रंथों द्वारा हिंदी-प्रचार में अच्छी सहायता कर रही हैं। इन सभाओं ने सबसे अधिक उपकार व्याख्यानदाता उत्पन्न करके किया है। बहुत-से सनातनधर्मी और आर्य-समाजी उपदेशक धारा बाँधकर उत्तम हिंदी में घंटों व्याख्यान दे सकते हैं। इनके नाम समालोचनाओं, चक्र एवं नामावली में मिलेंगे। सामाजिक तथा जातीय सभाएँ भी हिंदी-प्रचार को अनेक प्रकार से लाभ पहुँचा रही हैं।

आजकल हिंदी-भाषा के छापेख़ाने बहुत हैं और उनकी छपाई भी बढ़िया होती है। उनमें वेंकटेश्वर, लक्ष्मीवेंकटेश्वर, निर्णय-सागर, इंडियन-प्रेस, भारतमित्र, नवलकिशोर-प्रेस, भारतजीवन, भारत, हरिप्रकाश, खड्गविलास, वैदिक-यन्त्रालय, लहरी-प्रेस काशी, बर्मन-प्रेस, गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लक्ष्मीनारायण प्रेस, बेलवेडियर-प्रेस, हिंदी-प्रेस, रामनारायण-प्रेस, अभ्युदय-प्रेस, हिंदोस्तान-प्रेस, प्रताप-प्रेस, वर्तमान-प्रेस ब्रह्म प्रेस इटावा, सनातनधर्म-प्रेस मुरादाबाद, ज्ञानमंडल-प्रेस काशी, ओंकार प्रेस, कृष्ण-प्रेस आदि प्रसिद्ध हैं। हिंदी में एक-मात्र क़ानूनी पुस्तकें तथा नज़ीरें छापनेवाला क़ानून-प्रेस, कानपुर भी प्रशंसनीय काम करता है।

समय समय पर समस्यापूर्ति के लिये स्थान स्थान पर कवि-समाज तथा मंडल भी स्थापित हुए हैं। उनमें से प्रधान-प्रधान नाम नीचे लिखे जाते हैं—

काशी-कविमंडल, काशी-कविसमाज, बिसवाँ कविमंडल, रसिक-समाज कानपूर, हल्दी-कविसमाज, फ़तेहगढ़-कविसमाज, कालाकाँकर-कविसमाज इत्यादि ।

ये सब समाज प्राय. ५० वर्ष के भीतर स्थापित हुए हैं । इन सबमें अधिकांश वही कविगण पूर्तियाँ भेजते थे । इनके पत्रों से वर्तमान कवियों के नाम ढूँढ़ने में हमें बड़ी सुविधा मिली है । इन सबमें समस्यापूर्ति की जाती थी, और इनमें बहुत-से छंद प्रशंसनीय भी बनते थे । पर इस प्रथा से स्फुट छंद लिखने की रीति चलती है, जो विशेषतया शृंगार-रस के होते हैं । अब भाषा में शृंगार-कविता की आवश्यकता बहुत कम है, क्योंकि भूतकाल में कविता का यह अंग उचित से अधिक ऐसे-ही-ऐसे स्फुट छंदों द्वारा भर चुका है । अब हिंदी गद्य में वर्तमान प्रकार के विविध उपकारी विषयों पर रचना की आवश्यकता है, और नाटक-विभाग की पूर्ति और भी आवश्यक है । स्फुट छंदों के लिये अब स्थान बहुत कम है । फिर भी यह समस्यापूर्ति की प्रथा स्फुट छंदों ही की रचना बढ़ाती है । इन्हीं एवं अन्य कारणों से हमने संवत् १९५७ में एक लेख द्वारा समस्यापूर्ति की रीति को परम निंद्य कहा था । उस समय इस प्रथा का ख़ूब ज़ोर था, पर अब उतना नहीं है । फिर भी इस रीति को उठाकर उन पत्रों के बंद कर देने से लाभ नहीं है, वरन् उन्हीं में उत्तम और लाभकारी विषयों पर छंदोबद्ध प्रबंध या कविता का छपना हमारी तुच्छ बुद्धि में उचित है । इस हेतु कई समाजों का टूट जाना और उनके पत्रों का बंद हो जाना बड़े दुःख की बात है, जैसा कि आजकल हुआ है, और अधिकांश समाज व समस्या के पत्र बंद भी हो गए ।

हमने स्थान-स्थान पर शृंगार-कविता एवं अन्य अनुपयोगी विषयों की रचनाओं की निंदा की है । फिर भी ऐसे ग्रंथों के रचयिताओं की

प्रशंसा भी इसी ग्रंथ में पाई जावेगी। इससे कुछ पाठकों को ग्रंथ में परस्पर विरोधी भावों के होने की शंका उठ सकती है। बहुत-से वर्तमान लेखकों का यह भी मत है कि शृंगार-काव्य ऐसा निंद्य है कि हिंदी में उसका होना न होने के बराबर है, और यदि ऐसे ग्रंथ फेंक भी दिए जावें, तो कोई विशेष हानि नहीं। इन कारणों से उचित जान पड़ता है कि इस विषय पर हम अपना मत स्पष्टतया प्रकट कर देवें।

सबसे पहले पाठकों को कविता के शुद्ध लक्षण पर ध्यान देना चाहिए। पंडितों का मत है कि अलौकिक आनंद देना काव्य का मुख्य गुण है। कुलपति मिश्र ने काव्य का लक्षण यह कहा है—

"जगते अद्भुत सुखसदन शब्दरु अर्थ कवित्त,
यह लक्षण मैंने कियो समुझि ग्रंथ बहु चित्त।"

इसी आशय का एक लक्षण हमने भी कहा था—

"वाक्य अरथ वा एकहू जहँ रमनीय सु होय;
गिरमौरहु शशिभाल मत काव्य कहावै सोय।"

इन लक्षणों के अनुसार उपर्युक्त प्रकार के ग्रंथ भी आदरणीय हैं। जो प्रबंध जैसा ही आनंद देता है, वह वैसा ही अच्छा काव्य है, चाहे जो विषय उसमें कहा गया हो। फिर वर्णन जैसा ही उत्कृष्ट होगा, कविता भी उसकी वैसी ही प्रशंसनीय होगी। विषय की उपयोगिता भी काव्योत्कर्ष को बढ़ाती है, पर साहित्य-चमत्कार-वर्द्धन की वह एकमात्र जननी नहीं है। इस कारण अनुपयोगी विषयवाले चमत्कृत ग्रंथों को हम तिरस्करणीय नहीं समझते। किसी प्रसिद्ध आचार्य ने भी ऐसे ग्रंथों के प्रतिकूल मत प्रकट नहीं किया है। इन ग्रंथों से भी साहित्य-भंडार खूब भरा हुआ देख पड़ता है और वास्तव में है। अभी उपयोगी विषयों के अभाव से बहुत लोगों को ये ग्रंथ आँख में से लड़के समझ पड़ते हैं, परंतु जिस समय लाभकारी विषयों के ग्रंथ

प्रचुरता से बन जावेंगे, जैसा शीघ्र हो जाने की दृढ़ आशा की जाती है, उस समय इन ग्रंथों के बाहुल्य से भी हिंदी की महिमा एवं गौरव में ख़ूब सहायता मिलेगी। आजकल भी ग्रंथ-भंडार की बहुतायत से हिंदी भारत की सभी वर्तमान भाषाओं से बहुत आगे बढ़ी हुई है। हम अनुचित विषयों पर शोक अवश्य प्रकट करते हैं, परंतु हिंदी के सभी उत्कृष्ट ग्रंथों का समादर पूर्णरूप से करना बहुत उचित समझते हैं।

निदान इस वर्तमान काल में हिंदी ने बहुत अच्छी उन्नति की है और उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होने के चिह्न चारों ओर से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अब हम इस अध्याय को इसी जगह समाप्तप्राय कर इस काल के लेखकों के कुछ विस्तृत वृत्तांत आगे समालोचना, चक्र और नामावली द्वारा लिखते हैं। जिन महाशयों के नाम चक्र अथवा नामावली-मात्र में आए हैं, उन्हें भी हम न्यून नहीं समझते। केवल विस्तार-भय से ऐसा करने को हम बाध्य हुए हैं। इनमें से कतिपय महानुभावों के ग्रंथ देखने अथवा विशेष हाल जानने का भी सौभाग्य हमें नहीं प्राप्त हुआ।

इस भाग में संवत् १९२६ से अब तक का हाल लिखा गया है। इसे हमने दो भागों में विभक्त किया है, अर्थात् प्रथम हरिश्चंद्र काल (१९४५ तक) और द्वितीय गद्य-काल (अब तक)। इन दोनों भागों के पूर्व और उत्तरा-नामक दो-दो उपविभाग किए गए हैं।

इस प्रकरण के मुख्य विषय को उठाने से प्रथम हम पत्र-पत्रिकाओं का भी कुछ वर्णन करना उचित समझते हैं।

समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ

हिंदी में प्रेस के अभाव से समाचारपत्रों का प्रचार थोड़े ही दिनों से हुआ है। वारन हेस्टिंग्स के समय में संवत् १८३७ के लगभग बनारस ज़िले में किसी स्थान पर खोदने से दो प्रेस निकले थे, जिनमें

वर्तमान समय की भाँति टाइप इत्यादि सब सामान था और टाइप जोड़ने का क्रम भी प्रायः आजकल के समान ही था। पुरातत्त्ववेत्ता अँगरेज़ों का यह मत है कि यह प्रेस कम-से-कम एक हज़ार वर्ष का प्राचीन है। इस हिसाब से स्वामी शंकराचार्य के समय तक में प्रेस होने का पता चलता है, फिर भी छापे का प्रचार यहाँ अँगरेज़ी राज्य के पूर्व बिलकुल न था, और इसी कारण समाचार-पत्र भी प्रचलित न थे। "हिंदी-भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास"-नामक एक ग्रंथ बाबू राधाकृष्णदास ने सन् १८९४ (संवत् १९५१ में प्रकाशित कराया था, जो नागरीप्रचारिणी सभा, काशी से अब भी मिलता है। इसमें प्राचीन पत्र-पत्रिकाओं के वर्णन पाए जाते हैं। आशा है, सभा इसका एक नया संस्करण निकालकर आगे का हाल भी पूरा कर देगी।

सबसे पहला हिंदी-पत्र "बनारस अख़बार" था, जो संवत् १९०२ में राजा शिवप्रसाद की सहायता से निकला। इसकी भाषा खिचड़ी थी और सभ्य-समाज में इसका आदर नहीं हुआ। इसके संपादक गोविंदरघुनाथ थत्ते थे। साधु हिंदी में एक उत्तम समाचारपत्र निकालने के विचार से कई सज्जनों ने काशी से 'सुधाकर' पत्र निकाला। सबसे पहले परमोत्कृष्ट पत्र जो हिंदी में निकला, वह भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र द्वारा संपादित 'कविवचनसुधा' था, जो संवत् १९२५ से प्रकाशित होने लगा। सुधा पत्र पहले मासिक था, पर थोड़े ही दिनों बाद पाक्षिक होकर साप्ताहिक हो गया। इसकी लेखन-शैली बहुत गंभीर तथा उत्तम थी। इसमें गद्य तथा पद्य में लेख निकलते थे, और वह सभी तरह से संतोषदायक थे। संवत् १९३७ के पीछे भारतेंदुजी ने यह पत्र पंडित चिंतामणि को दे दिया, जिनके प्रबंध से यह संवत् १९४२ तक निकलकर बंद हो गया। संवत् १९२१ में बाबू कार्त्तिकप्रसाद ने कलकत्ते से 'हिंदी-दीप्ति प्रकाश' निकाला। यह पत्र

प्रसिद्ध पत्र हिंदी प्रदीप से अलग था। इसी साल बिहार से 'बिहार-बंधु' का जन्म हुआ। भारतेंदुजी ने संवत् १९३० में "हरिश्चंद्र मैगज़ीन" निकाली, जिसका नाम बदलकर दूसरे साल 'हरिश्चंद्रचंद्रिका' कर दिया, जो संवत् १९४२ तक किसी प्रकार निकलती रही। संवत् १९३४ में भारतमित्र, मित्रविलास, हिंदी-प्रदीप और आर्यदर्पण-नामक प्रसिद्ध पत्रों का जन्म हुआ। 'भारतमित्र' पं० दुर्गाप्रसाद तथा अन्य महाशयों ने निकाला। यह पहला साप्ताहिक पत्र है, जो बड़ी उत्तमता से निकाला गया, और जिसकी प्रणाली बड़ी गौरवान्वित रही है। इसके संपादकों में हरमुकुंद शास्त्री और बालमुकुंद गुप्त प्रधान हुए। गुप्तजी के लेख बड़े ही हँसी दिल्लगी-पूर्ण तथा गंभीर होते थे। कुछ दिनों से इसका एक दैनिक संस्करण भी निकलने लगा है। परंतु कुछ दिनों से भारतमित्र में उस रोचकता तथा उच्च विचार का अभाव देख पड़ता है। 'मित्रविलास' पंजाब का एक बढ़िया हिंदी पत्र था। "हिंदी-प्रदीप" प्रयाग से पंडित बालकृष्णजी भट्ट ने निकाला। इसमें बड़े ही गंभीर तथा उच्च कोटि के लेख निकलते रहे। यह पत्र हिंदी-भाषा का गौरव समझा जाता था, और घाटा खाकर भी भट्टजी उदारभाव से इसे बहुत दिनों तक निकालते रहे। परंतु हाल में कुछ राजनैतिक अड़चन पड़ी, जिस पर विवश होकर भट्टजी ने इसे बंद कर दिया। संवत् १९३५ में कलकत्ता से 'सारसुधानिधि' और 'उचित वक्ता'-नामक पत्र निकले। उचित वक्ता को स्वर्गीय पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र ने निकाला और 'सारसुधानिधि' के संपादक प्रसिद्ध लेखक पंडित सदानंदजी थे। संवत् १९३६ में उदयपुराधीश महाराणा सज्जन-सिंहजू देव ने प्रसिद्ध पत्र 'सज्जनकीर्तिसुधाकर' निकाला। महाराणाजी के अकाल मृत्यु से हिंदी की बड़ी ही क्षति हुई। संवत् १९३९ में पंडित प्रतापनारायण मिश्र ने कानपूर से प्रसिद्ध ब्राह्मण पत्र निकाला, जिसने पठित समाज में अपने लेखों के चटकीले-

पन से बहुत ही आदर पाया, परंतु ग्राहकों की अनुदारता से यह स्थायी न हो सका। संवत् १९४० में हिंदी का प्रसिद्ध पत्र 'हिंदोस्तान' पहले-पहल प्राय दो वर्ष अँगरेज़ी में निकला, फिर प्रायः दो मास अँगरेज़ी तथा हिंदी में निकलकर एक बरस तक अँगरेज़ी, हिंदी और उर्दू में छापा गया। उस समय तक यह मासिक था। इसके पीछे यह दस महीने तक साप्ताहिक रूप से अँगरेज़ी में इँगलैंड से निकला। १ नवंबर सं० १९४२ से यह पत्र दैनिक कर दिया गया। इस पत्र के स्वामी राजा रामपालसिंह सदा इसके संपादक रहे और सहकारी संपादकों में बाबू अमृतलाल चक्रवर्ती, पंडित मदनमोहन मालवीय और बाबू बालमुकुंद गुप्त-जैसे प्रसिद्ध लोगों की गणना है। राजा साहब के मृत्यु के साथ-ही-साथ यह पत्र भी विलीन हो गया। कुछ दिन पश्चात् उनके उत्तराधिकारी हमारे मित्र राजा रमेशसिंहजी ने 'सम्राट्' पत्र को पहले साप्ताहिक और फिर दैनिक रूप में निकाला, परंतु हिंदी के अभाग्य से राजा रमेशसिंहजी की असामयिक मौत के कारण वह भी बंद हो गया। सं० १९४० से प्रसिद्ध पत्र 'भारतजीवन' बाबू रामकृष्ण वर्मा ने साप्ताहिक रूप में काशी से निकाला, जिसमें बहुत दिन तक नागरी-प्रचारिणी सभा की कार्यवाही छपती रही और अभी तक वह किसी तरह चल रहा है। संवत् १९४२ में कानपुर से भारतोदय दैनिक पत्र बाबू सीताराम के संपादकत्व में निकला, जो एक ही साल चलकर बंद हो गया। संवत् १९४४ व ४६ में 'आर्यावर्त' और 'राजस्थान'-नामक दो पत्र आर्य समाज की तरफ़ से निकले। संवत् १९४९ में 'सुगृहिणी' मासिक पत्रिका हेमंतकुमारीदेवी ने निकाली। सं० १९४६ में श्रीमती हरदेवी ने 'भारतभगिनी' मासिक रूप में निकाली। संवत् १९४७ में सुप्रसिद्ध पत्र 'हिंदी-बंगवासी' का जन्म हुआ, जो कुछ दिन बड़ी उत्तमता से चलता रहा था और जिसकी ग्राहक-संख्या

शायद सब हिंदी-पत्रों से अधिक थी। परंतु अब उसमें रोचकता का अभाव-सा हो गया है। पंडित कुंदनलाल ने संवत् १९४८ से कुछ दिन "कवि व चित्रकार" पत्र निकाला, पर उनके स्वर्गवास होने पर वह बंद हो गया।

बंबई का श्रीवेंकटेश्वर-समाचार भी एक नामी साप्ताहिक पत्र है, जो प्रायः ३५ वर्ष से हिंदी की अच्छी सेवा कर रहा है। इधर प्रयाग से अभ्युदय पत्र बहुत अच्छा निकल रहा है। यह पहले साप्ताहिक था, फिर अर्द्ध साप्ताहिक रूप में निकलता रहा और इसके पीछे कुछ समय तक दैनिक रहकर अब फिर साप्ताहिक निकल रहा है। इसके लेख तथा टिप्पणियाँ सारगर्भित होती हैं। वर्तमान भी कानपूर से दैनिक निकलता है। कुछ दिन में लखनऊ का आनंद भी दैनिक कर दिया गया है। कानपूर का प्रताप बहुत अच्छी श्रेणी का पत्र है। यह कुछ दिन तक दैनिक निकलता रहा। असहयोग के समय में इसने बहुत ही स्वतंत्रता से काम किया, इसी कारण सरकार का कोप-भाजन हो जाने से उसे दैनिक से साप्ताहिक हो जाना पड़ा। लखनऊ के बालमुकुंद वाजपेयी ने लक्ष्मण-नामक पत्र निकाला था, जो कुछ दिन बहुत स्वाधीनता से चलकर बंद हो गया। कलकत्ते से स्वतंत्र, विश्वमित्र, मतवाला, हिंदू-पंच, श्रीकृष्ण-संदेश इत्यादि कई अच्छे पत्र निकलते हैं। आगरे का 'आर्यमित्र' दिल्ली के हिंदू-संसार, तथा अर्जुन बढ़िया पत्र हैं। महात्मा गांधीजी का 'हिंदी-नवजीवन' पत्र भी बड़ा प्रतिष्ठित पत्र है। लखनऊ से बाबू कृष्णबलदेव वर्मा ने "विद्याविनोद"-नामक साप्ताहिक पत्र कुछ दिन प्रकाशित किया था। "हिंदीकेसरी" तथा कर्मयोगी को गरम दलवालों ने निकाला। कुछ दिन भारतमित्र के अतिरिक्त सर्वहितैषी पत्र भी दैनिक निकलता रहा। इनके अतिरिक्त अन्य पत्र भी अच्छा काम कर रहे हैं। बनारस का "आज" अच्छा दैनिक पत्र है।

संवत् १९५६ से सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका सरस्वती का विकास

प्रयाग मे हुआ और प्राय सभी तत्कालीन नामी लेखक उसमें लेख देने लगे। इसके सपादन का भार पहले पाँच सज्जनों की एक समिति पर रहा और पीछे से केवल बाबू श्यामसुंदरदास बी० ए० को यह काम सँभालना पड़ा। अत में पडित महावीर-प्रसाद द्विवेदी ने सपादन-भार उठाया और एक वर्ष को छोड़, जब कि पडित देवीप्रसाद शुक्ल बी० ए० संपादकत्व के काम पर रहे, द्विवेदीजी इसे बड़ी योग्यता के साथ चलाते रहे, द्विवेदीजी के अवसर ग्रहण करने पर अब इसे पदुमलाल पुन्नालाल बख्सी तथा देवीदत्त शुक्ल उत्तमता से चला रहे हैं। कमला, लक्ष्मी, सुदर्शन, समालोचक, छत्तीसगढ़-मित्र, राघवेंद्र, मर्यादा, इंदु, यादवेंद्र इत्यादि कई पत्र-पत्रिकाएँ इसी ढग पर निकलीं, पर स्थिर न रह सकीं। स्त्रियों के उपयोगी पत्र-पत्रिकाओं में भारतभगिनी, स्त्रीधर्मशिक्षक, आर्य महिला, गृहलक्ष्मी और स्त्री-दर्पण हैं। स्त्रियोपयोगी पत्र पत्रिकाओं में चाँद बढ़िया है। काशी-नागरीप्रचारिणी सभा एक मासिक पत्रिका, एक त्रैमासिक ग्रथमाला और एक लेख-माला प्रकाशित करती थी, परतु अब त्रैमासिक पत्रिका बहुत अच्छे रूप में निकल रही है। देवनागर ने अनेक भाषाओं के लेखों को नागरी अक्षरों में प्रकाशित कर और अन्य उपायों द्वारा हिंदी-भाषा और विशेषतया नागरी लिपि का अच्छा उपकार किया। परतु हिंदी के दुर्भाग्य से वह स्थायी न हो सका। चित्रमय जगत् हिंदी-पत्रों में बड़े ही गौरव का है। कविता-संबधी पत्रों में रसिकवाटिका, रसिकमित्र, काव्यसुधाधर, हल्दी-कविकीर्तिप्रचारक, व्यास पत्रिका, काव्य-कौमुदी, कवि इत्यादि कई पत्र निकले, जिनमें कतिपय कवियों की रचनाएँ अच्छी कही जा सकती हैं। जासूस, व्यापारी, खेतीबारी, देहाती, निगमागमचंद्रिका, सद्धर्मप्रचारक, लक्ष्मी, सनातनधर्म-पताका, अवधसमाचार, अमृत, अबला-हितकारक, आर्यप्रभा,

दर्शनीय है। चंद्रावली से इनके असीम प्रेम और भक्ति का अच्छा परिचय मिलता है। सत्यहरिश्चंद्र भारतेंदुजी की कवित्व-शक्ति का एक अद्भुत नमूना है। प्रेमयोगिनी में इन्होंने अपने विषय की बहुत-सी बातें लिखी हैं। इसमें हँसी मज़ाक़ का अच्छा चमत्कार है। द्वितीय भाग इनके रचित इतिहास-ग्रंथों का संग्रह है, जिसमें काश्मीर-कुसुम, बादशाहदर्पण और चरितावली प्रधान हैं। चरितावली में इन्होंने अच्छे अच्छे महानुभावों के चरित्रों का वर्णन किया है। तृतीय भाग में राजभक्तिसूचक काव्य है। इसमें १३ ग्रंथ हैं, परंतु उनकी रचना उत्कृष्ट नहीं हुई है। चतुर्थ भाग का नाम भक्तिसर्वस्व है। इसमें १८ भक्तिपक्ष के ग्रंथ हैं, जिनमें वैष्णवसर्वस्व, वल्लभीय-सर्वस्व, उत्तरार्द्ध भक्तमाल तथा वैष्णवता और भारतवर्ष उत्तम रच-नाएँ हैं। पंचम भाग का नाम काव्यामृतप्रवाह है। इसमें १८ प्रेम-प्रधान ग्रंथ हैं, जिनमें प्रेमफुलवारी, प्रेमप्रलाप, प्रेममालिका और कृष्ण-चरित्र प्रधान हैं। नाटकावली के अतिरिक्त भारतेंदुजी का यह भाग प्रशंसनीय है। छठे भाग में हँसी-मज़ाक़ के चुटकुले और छोटे-छोटे कई निबंध तथा अन्य लोगों के बनाए हुए कई ग्रंथ हैं, जो इनके द्वारा प्रकाशित हुए थे।

इनकी कविता का सर्वोत्तम गुण प्रेम है। इनके हृदय में ईश्वरीय एवं सांसारिक प्रेम बहुत अधिक था; इसी कारण इनकी रचना में प्रेम का वर्णन बहुत ही अच्छा आया है। भारतेंदुजी अपने समय के प्रतिनिधि कवि थे। इनको हिंदूपन तथा जातीयता का बहुत ही बड़ा ध्यान रहता था। हास्य की मात्रा भी इनकी रचनाओं में विशेषरूप से पाई जाती है। वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, अंधेरनगरी और प्रेमयोगिनी में हास्यरस का अच्छा समावेश है। इनकी कविता बड़ी सबल होती थी और विविध विषयों के वर्णनों में इस कवि ने अच्छी शक्ति दिखलाई है। सौंदर्य को यह सभी स्थानों

पर देखता और अपनी कविता में उसे हर स्थान पर सन्निविष्ट करता था। रूपक भी भारतेंदुजी ने बहुत विशद लिखे हैं। राजनीतिक तथा सामाजिक सुधारों पर इन्होंने अपने विचार जगह-जगह पर सबल भाषा में प्रकट किए हैं। इस कविरत्न ने पद्य में व्रजभाषा का और गद्य में खड़ी-बोली का विशेषतया प्रयोग किया है, परंतु उर्दू, खड़ी बोली, व्रजभाषा, मारवाड़ी, गुजराती, बँगला, पंजाबी, मराठी, राजपूतानी, बनारसी, अवधी आदि सभी भाषाओं में उत्कृष्ट और सरस रचनाएँ की हैं। इन्होंने गद्य और पद्य प्रायः बराबर लिखे हैं। ग्रंथों के अतिरिक्त बाबू साहब ने कई समाचारपत्र और पत्रिकाएँ चलाईं। वर्तमान हिंदी की इनके कारण इतनी उन्नति हुई कि इनको इसका जन्मदाता कहने में भी अत्युक्ति न होगी। यदि इनका विशेष वर्णन देखना हो, तो हमारे रचित नवरत्न में देखिए।

उदाहरण—

हम हूँ सब जानतीं लोक की चालन क्यों इतनो बतरावती हौ;
हित जामें हमारो बने सो करौ सखियाँ तुम मेरी कहावती हौ।
हरिचंदजू या में न लाभ कछू हमैं बातन क्यों बहरावती हौ;
सजनी मन हाथ हमारे नहीं तुम कौन को का समुझावती हौ॥१॥

पचि मरत वृथा सब लोग जोग सिरधारी;
साँची जोगिन पिय बिना बियोगिन नारी।
बिरहागिनि धूनी चारों ओर लगाई;
बंसीधुनि की मुद्रा कानों पहिराई।
लट उरझि रही सोइ लटकाई लट कारी;
साँची जोगिन पिय बिना बियोगिन नारी।
है यह सोहाग का अटल हमारे बाना;
असगुन की मूरति ख़ाक न कभी चढ़ाना।
सिर सेंदुर देकर चोटी गूथ बनाना;

सिवजी-से जोगी को भी जोग सिखाना।
पीना प्याला भर रखना वही ख़ुमारी;
साँची जोगिन पिय बिना वियोगिन नारी ॥२॥

× × ×

भरित नेह नव नीर नित बरसत सुरस अथोर;
जयति अपूरब घन कोऊ लखि नाचत मन मोर ॥ ३ ॥

× × ×

उठहु बीर रणसाज साजि जय ध्वजहि उड़ाओ;
लेहु म्यान सों खड्ग खींचि रन रंग जमाओ।
परिकर कसि कटि उठौ धनुष सों धरि सर साधौ;
केसरिया बानो सजि-सजि रनकंकन बाँधौ।
जो आरजगन एक होय निज रूप बिचारैं,
तजि गृह-कलहहिं अपनी कुलमरजाद सँभारैं।
तौ अमीरखाँ नीच कहा याको बल भारी;
सिंह जगे कहुँ स्वान ठहरिहै समर मँझारी।
चींटिहु पद तल परे डसत ह्वै तुच्छ जंतु इक,
ये प्रतच्छ अरि इन्हैं उपेछै जौन ताहि धिक।
धिक तिन कहँ जे आर्य होय यवनन को चाहैं,
धिक तिन कहँ जे इनसों कछु संबंध निबाहैं।
उठहु बीर सब अस्त्र साजि माँडहु घन संगर,
लोह-लेखनी लिखहु आजबल दुवन हृदै पर ॥ ४ ॥

× × ×

सब भाँति दैव प्रतिकूल होय यहि नासा;
अब तजहु बीरवर भारत की सब आसा।
अब सुख-सूरज को उदै नहीं इत ह्वै है;
सो दिन फिरि अब इत सपनेहूँ नहिं ऐ है।

स्वाधीनपनो बल बीरज सबै नसै है ;
मंगलमय भारत भुव मसान ह्वै जै है।
सुख तजि इत करि है दु सहि दुःख निवासा ;
अब तजहु बीरवर भारत की सब आसा ॥ ९ ॥

यहाँ कवि ने स्वाधीनपनो आदि शब्दों से मानसिक स्वतंत्रता का भाव लिया है न कि राजनीतिक का। यह कवि भारत का अँगरेज़ों से संबंध मंगलकारी समझता था, और राजभक्ति के इसने कई ग्रंथ रचे। इसके विलाप भारतीय मानसिक दुर्बलता-विषयक हैं।

(२१७०) तोताराम

इनका जन्म संवत् १९०४ में, कायस्थ-कुल में, हुआ था। कुछ दिन सरकारी नौकरी करके इन्होंने अलीगढ़ में वकालत जमाई, जहाँ इनकी आय प्राय अयुत मुद्रा सालाना थी। आप प्रकृति से परम सुशील थे। अलीगढ़ में हम लोगों का इनसे परिचय हुआ था, और इन्हें हमने अपना लवकुश-चरित्र सुनाया था। इन्होंने कुछ दिन भारतबंधु-नामक साप्ताहिक पत्र भी निकाला। केटो-कृतांत-नामक इन्होंने एक नाटक-ग्रंथ बनाया और बाल्मीकीय रामायण का आप राम-रामायण-नामक एक उल्था स्वच्छ दोहा-चौपाइयों में बनाते थे, पर वह पूर्ण न हो सका। उसका बालकांड इन्होंने हमें दिया था। हम इनकी गणना मधुसूदनदास की श्रेणी में करेंगे। संवत् १९५१ में इनका शरीर-पात हुआ।

(२१७१) देवीप्रसाद मुंशी

ये महाशय गौड़ कायस्थ मुंशी नत्थनलाल के पुत्र थे। इनका जन्म नाना के घर जयपुर में माघ सुदी १४ संवत् १९०४ को हुआ था। संवत् १९२० से १९३४ पर्यंत ये नवाब टोंक के यहाँ नौकर रहे और संवत् १९२६ से महाराज जोधपुर के यहाँ कर्मचारी हो गए। ये महाशय बहुत दिनों तक मुंसिफ़ रहे, और मनुष्य-गणना आदि का

काम करके दरबार की ओर से प्राचीन शिलालेखों आदि की खोज का भी काम करते रहे। प्रत्येक पद पर अपने ऊँचे अफ़सरों को इन्होंने अच्छे काम से सदैव प्रसन्न रक्खा। पहले इन्हें उर्दू गद्य और पद्य लिखने का चाव था, पर पीछे से ये हिंदी-गद्य के भी अच्छे लेखक हो गए। इन्होंने उर्दू की बहुत-सी पुस्तकें बनाई और हिंदी में भी दरबार की आज्ञा से क़ानून तथा मनुष्य-गणना आदि से संबंध रखनेवाले छोटे-बड़े कई उपयोगी ग्रंथ रचे। इन्होंने सबसे अधिक श्रम इतिहास पर किया और बहुत छान-बीन करके इस विषय पर बहुत-से परमोपयोगी ग्रंथ रचे, जिन्हें इन्होंने ऐसी सरल भाषा में लिखा है कि प्रत्येक हिंदी पढ़ लेनेवाला परम स्वल्पज्ञ मनुष्य भी समझ सकता है। इतिहास के विषय पठित समाज में इनका प्रमाण माना जाता था। महिलामृदुवाणी तथा राजरसनामृत-नामक दो काव्य-ग्रंथ भी इन्होंने संगृहीत किए और कवियों की एक नामावली संकलित की थी। इनके रचे हुए ऐतिहासिक जीवन-चरित्रों के नायक ये हैं—

अकबर, शाहजहाँ, हुमायूँ, तुहमास्प (ईरान का शाह), बाबर, शेरशाह, साँगा (राणा), रतनसिंह, विक्रमादित्य (चित्तौर), बनवीर, उदयसिंह, प्रतापसिंह, पृथ्वीराज (जयपुर), पूरनमल, रतनसिंह, आसकरण, राजसिंह (जयपुर), भारामल, भगवानदास, मानसिंह, बीकाजी, नराजी, लूणकरण, जैतसी, कल्याणमल, मालदेव, बीरबल (दो भागों में), मीराबाई, जसवंतसिंह (मारवाड़), ख़ानख़ाना और औरंगज़ेब।

इनजीवनियों के अतिरिक्त नीचे लिखे हुए मुंशीजी के अन्य ग्रंथ हैं—

जसवंत स्वर्गवास, सरदारसुखसमाचार, विद्यार्थीविनोद, स्वप्न राजस्थान, मारवाड़ का भूगोल तथा नक़्शा, प्राचीन कवि, बीकानेर राज-पुस्तकालय, इंसाफ़संग्रह, नारीनवरत्न, महिलामृदुवाणी, मारवाड़ के प्राचीन शिलालेखों का संग्रह, सिंध का प्राचीन इतिहास, यवनराज-

वंशावली, मुग़लवंशावली, युवतीयोग्यता, कविरत्नमाला, अरबी भाषा में संस्कृत-ग्रंथ, रूठी रानी, परिहारवंशप्रकाश और परिहारों का इतिहास।

इन ग्रंथों का हाल हमें स्वयं मुंशीजी से ज्ञात हुआ है। आपने कविरत्नमालावाले कवियों के नामों की एक हस्त-लिखित सूची भी हमारे पास भेजने की कृपा की। इसमें ७६९ नाम हैं। उपर्युक्त ग्रंथों में बहुत-से हमने देखे हैं और उनमें से बहुत-से हमारे पास वर्तमान भी हैं। इन्होंने इतिहास-ग्रंथों में गद्य काव्य न लिखकर सीधी-सादी इबारत में सत्य घटनाएँ लिखने का प्रयत्न किया। रूठी रानी एक प्रकार से उपन्यास भी है। इनके अच्छे गद्य-लेखों की भाषा सुलेखकों की-सी होती थी। इनके प्रयत्नों से हिंदी में इतिहास-विभाग की अच्छी पूर्ति हुई है।

उदाहरण—

"दूसरे चित्र में एक सिंहासन बना था। ऊपर शामियाना तना था। उस सिंहासन पर एक भाग्यवान् पुरुष पाँव-पर-पाँव रक्खे बैठा था; तकिया पीठ से लगा था, पाँच सेवक आगे-पीछे खड़े थे और वृक्ष की शाखा उस सिंहासन पर छाया किए हुए थी।"

जहाँगीरनामा (पृष्ठ १४४)

आपने ऐतिहासिक कामों की उन्नति के लिये नागरीप्रचारिणी सभा काशी को प्राय १००००) रु० का दान दिया। थोड़े दिन हुए कि आपका शरीर-पात हो गया। आपके प्रयत्नों से हिंदी-साहित्य-विभाग की अच्छी पूर्ति हुई है।

(२१७२) जगमोहनसिंह

इनका जन्म संवत् १९१४ में, विजयराघवगढ़ में, हुआ। ठाकुर सरयूसिंहजी इनके पिता एक राजा थे, पर संवत् १९१४-१५वाले विद्रोह में उनका राज्य सरकार ने ज़ब्त कर लिया। जगमोहनसिंहजी ने काशी में विद्या पढ़ी, जहाँ इनसे भारतेंदुजी से स्नेह हुआ।

ये १६ वर्ष की ही अवस्था में कविता करने लगे थे। पहले इन्हें सरकार ने तहसीलदार नियत किया और दो ही वर्ष में, संवत् १६३६ में, एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर कर दिया। यह वही पद है जो यहाँ डिपुटी कलेक्टर के नाम से प्रख्यात है। इन्होंने सरकारी नौकरी के समय भी साहित्य-रचना को नहीं भुलाया और अवकाश पाकर ये बराबर ग्रंथ-रचना करते रहे। इनका शरीर-पात थोड़ी ही अवस्था में, संवत् १६५५ में, हो गया। इनके बनाए हुए ग्रंथ ये हैं—श्यामास्वप्न, श्यामसरोजिनी, प्रेमसंपत्तिलता, मेघदूत, ऋतुसंहार, कुमारसंभव, प्रेम-हज़ारा, मज्जनाष्टक, प्रलय, ज्ञानप्रदीपिका, सांख्य (कपिल) सूत्रों की टीका, वेदांतसूत्रों (बादरायण) पर टिप्पणी और चानी वादं विलाप। हमारे देखने में इनके ग्रंथ नहीं आए, पर सुनते हैं कि वे उत्कृष्ट हैं।

उदाहरण—

आई शिशिर बरोरु शालि अरु ऊखन संकुल धरनी,
प्रमदा प्यारी ऋतु सोहावनी क्रौंच रोर मनहरनी।
मूँदे मंदिर उदर झरोखे भानु किरन अरु आगी;
भारी बसन हसन मुख बाला नवयौवन अनुरागी।

(२१७३) गदाधरसिंह (बाबू)

इनका जन्म संवत् १६०५ में हुआ था। इन्होंने कुछ दिन व्यापार किया, पर उसके न चलने से सरकारी नौकरी कर ली और अंत तक उसे करते रहे। हिंदी की इन्हें बड़ी रुचि थी और इन्होंने अंत समय अपना पुस्तकालय एवं सब धन काशी-नागरीप्रचारिणी सभा को दे दिया। इन्होंने कादंबरी, बंगविजेता, दुर्गेशनंदिनी, और ओथेलो के भाषानुवाद किए, तथा रोमन उर्दू की पहली पुस्तक, एवं भगवद्गीता-नामक पुस्तकें बनाईं। ये ऐतिहासिक और पौराणिक विवरण की डायरी-नामक एक अच्छी पुस्तक लिख रहे थे, पर वह असमाप्त रह गई और संवत् १६५५ में इनका शरीर-पात हो गया।

(२१७४) श्रीनिवासदास लाला

ये महाशय अजमेरा वैश्य लाला मंगीलाल के पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १९०८ कार्तिक सुदी परिवा को मथुरा में हुआ था। राजा लक्ष्मणदास की ओर से ये महाशय उनकी दिल्लीवाली कोठी के संचालक और एक बड़े रईस थे। इनकी कविता अमृत में डुबोई होती थी। भारतेंदु के अतिरिक्त इन्हीं ने हिंदी में उत्कृष्ट नाटक बनाए हैं। तप्ता संवरण, संयोगिता स्वयंवर, तथा रणधीर प्रेममोहनी-नामक इन्होंने तीन नाटक-ग्रंथ बनाए, जिनका पूर्ण समादर हिंदी-पठित समाज में हुआ, विशेषतया अंतिम दोनों का। इनके अंतिम नाटक के अनुवाद उर्दू और गुजराती में हुए और वह खेला भी गया। इन्होंने परीक्षागुरु-नामक एक उपन्यास भी बनाया, पर वह ऐसा अच्छा नहीं है जैसे कि इनके अन्य ग्रंथ हैं। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करेंगे। इनकी अकालमृत्यु संवत् १९४४ में हो गई, जिससे हिंदी के नाटक-विभाग को बड़ी क्षति पहुँची।

(२१७५) रामपालसिंहजी राजा कालाकाँकर जिला प्रतापगढ़

इनके पिता का नाम लाल प्रतापसिंह और पितामह का राजा हनुमंतसिंह था। इनका जन्म संवत् १९०५ में हुआ। इनके पिता ग़दर के समय अँगरेज़ों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। राज साहब की शिक्षा का प्रबंध इनके दादा राजा हनुमंतसिंह ने किया। इन्होंने अठारह वर्ष की अवस्था तक हिंदी, फ़ारसी और अँगरेज़ी में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली थी। राजा हनुमंतसिंह के और कोई उत्तराधिकारी न होने तथा इनके पिता के लड़ाई में मारे जाने के कारण ये इन पर विशेष प्रेम रखते थे। अतः राजा हनुमंतसिंह-जी ने अपने जीते जी इनको कालाकाँकर की अपनी रियासत का मालिक कर दिया। राजा रामपालसिंहजी के विचार ब्राह्मो-धर्म के

समान "एकं ब्रह्म द्वितीयो नास्ति" पर थे और हिंदू-धर्म के रस्म-रवाजों पर वे ध्यान नहीं देते थे; इस कारण समय पर राजा हनुमंत-सिंह और उनके बिरादरीवाले इनसे बहुत ही नाराज़ हुए। राजा रामपालसिंह ने उनका क्रोध शांत करने को अपना राज्याधिकार फिर उन्हें वापस दे दिया। थोड़े दिन के बाद ये अपनी रानी समेत इँगलैंड गए। वहाँ इनकी रानी का देहांत हो गया। इँगलैंड में राजा साहब ने विद्योपार्जन में अच्छा श्रम किया और फ्रेंच तथा जर्मन भाषाएँ भी सीखीं तथा गणित एवं तर्क-शास्त्र में अभ्यास किया। वहीं इन्होंने संवत् १८८३ से १८८५ तक हिंदोस्थान-नामक एक त्रैमासिक पत्र निकाला, जिसने कई अँगरेज़ों में हिंदी-प्रेम जाग्रत् किया। इसी समय राजा हनुमंतसिंह का देहांत हो गया, अतः ये कालाकाँकर आए और रियासत का उचित प्रबंध करके दुबारा इँगलैंड गए। अब की बार ये वहाँ से एक मेम को अपनी रानी बनाकर लाए। ये रानी साहबा भी संवत् १९५४ में हैज़े से मर गईं। इसके बाद राजा साहब ने एक विवाह और किया। संवत् १९४२ से आप हिंदोस्थान को दैनिक करके कालाकाँकर से निकालने लगे। तब से बहुत अर्थ-हानि होने पर भी ये बराबर उसे यावज्जीवन निकालते रहे। राजा साहब हिंदी तथा फ़ारसी के अच्छे कवि थे। आपके विचार आधुनिक विद्वानों के समान बड़े ही निडर थे। बहुत दिन तक ये काँगरेस में शरीक होते रहे। राजा साहब के हिंदी-प्रेम तथा उन्नत विचारों का यहाँ के राजा लोगों को अनुकरण करना चाहिए। आपने कालाकाँकर में एक हनुमंत-स्कूल भी खोला था, जो अच्छी दशा में था। उसे कॉलेज करने की इनकी इच्छा थी, जैसा कि इन्होंने अपने वसीयतनामे में लिखा था। राजा साहब का देहांत १८ साल हुए हो गया। तभी से उक्त दैनिक पत्र हिंदोस्थान बंद हो गया। इनके उत्तराधिकारी साहित्य-प्रेमी राजा रमेशसिंहजी ने एक

दैनिक पत्र सम्राट्-नामक जारी किया था, परंतु कुटिल काल की गति से वह भी रमेशसिंहजी के साथ ही अस्त हो गया।

(२१७६) गोविंद गिल्लाभाई

इनका जन्म सिहोर रियासत भावनगर में श्रावण सुदी ११ संवत् १६०५ को हुआ था। आपके पिता का नाम गिल्लाभाई है। आप गुजराती हैं, और इसी भाषा में रचना करते थे, परंतु पीछे से हिंदी में भी करने लगे। आपके पास बहुत-से ग्रंथ हैं और आप हिंदी के बड़े प्रेमी तथा उत्साही हैं। आपने नीति-विनोद, शृंगार-सरोजिनी (१६६५), षट्ऋतु (१६६६), पावस-पयोनिधि (१६६२), समस्यापूर्तिप्रदीप, वक्रोक्तिविनोद, श्लेषचंद्रिका (१६६७), गोविंद ज्ञानबावनी (१६६०), प्रारब्ध-पचासा (१६६६) और प्रवीन सागर की बारह-लहरी-नामक चौदह पद्य ग्रंथ बनाए हैं, जो प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें काव्य अच्छा है। बहुत दिनों तक आप सरकारी नौकरी करते रहे। खेद है कि हाल ही में आपका स्वर्गवास हो गया। आपकी कविता ब्रजभाषा में है। आपने निम्न-लिखित ग्रंथ और भी रचे हैं—

(१) विवेक विलास, (२) लक्षण-बत्तीसी (१६२६), (३) विष्णु विनय-पचीसी (१६३७), (४) परब्रह्मपचीसी (१६३७), (५) प्रबोधपचीसी (१६३७), (६) शिखनखचंद्रिका (१६४१), (७) राधारूपमंजरी (१६४१), (८) भूषण-मंजरी (१६४५), (९) शृंगारषोडशी (१६४५), (१०) भक्तिकल्पद्रुम (१६४५), (११) राधामुखषोडशी (१६५०), (१२) पयोधरपचीसी (१६५१), (१३) नैनमंजरी (१६५३), (१४) छबिसरोजिनी (१६५४), (१५) प्रेमपचीसी (१६५४) (१६) साहित्यचिंतामणि प्रथम भाग (१६६५), (१७) रसायली-रहस्य (१६७१), (१८) बोधबत्तीसी (१६७३), (१९) शब्द-

विभूषण (१६७४), (२०) गोविंदहज़ारासंग्रह (१६७५), (२१) अन्योक्ति गोविंद (१६७७), (२२) अलंकारअंबुधि (अपूर्ण), (२३) प्रेम-प्रभाकरसंग्रह (अपूर्ण)।

(२१७७) रसिकेश (उपनाम रसिकविहारीजी)

इनका जन्म संवत् १६०१ में हुआ था। आप कुछ समय में वैरागी होकर अयोध्या में कनकभवन के महंत हो गए और अपना नाम आपने जानकीप्रसाद रक्खा। वैरागी होने के पूर्व आप पन्ना में दीवान थे। आपने रामरसायन (६०८ पृष्ठ), काव्य-सुधाकर (पृष्ठ १४७), इश्क़ अजायब, ऋतुतरंग, विरहदिवाकर, रसकौमुदी, सुमति-पचीसी, सुयशकदंब, क़ानून मजमूआ, रागचक्रावली, संग्रहवित्तावली, मनमंजन, संगृहीतसंग्रही, गुरुपचासी आदि २६ ग्रंथ रचे हैं। इनके प्रथम दो ग्रंथ हमारे पास इस समय प्रकाशित रूप में वर्तमान हैं। रामरसायन में रामायण की कथा है और काव्य-सुधाकर में छंद, रस, भाव, अलंकार आदि काव्यांगों का अच्छा वर्णन है। इनका शरीर पात हुए थोड़े दिन हुए हैं। आपका काव्य चमत्कारिक है। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रखते हैं। इन्होंने उर्दू मिश्रित भाषा में भी रचना की है। इनका रामायण भी अच्छी है।

उदाहरण—

झूमैं हैं चहूँघा गजराज-से रसाल भू मैं,
घूमैं हैं समीर तेज तरल तुरंग ज्यों;
किंसुक गुलाब कचनार औ अनारन के,
प्यादे भाँति-भाँति लसैं सहित उमंग त्यों।
छाई नव बल्ली छटा छहरि रही है घनी,
तेई रथ राजैं मोर भ्रमत अभंग क्यों,
रसिकबिहारी साज साजि ऋतुराज आयो,
छायो बन बाग सेना लीन्हे चतुरंग यों।

(२१७८) नृसिंहदास कायस्थ

ये संवत् १९६६ में प्राय: ६५ वर्ष की अवस्था पाकर छतरपूर में मरे। इनकी संतान वर्तमान हैं। ये प्रथम कालिंजर में रहते थे, पर पीछे छतरपूर में रहने लगे। ये वैद्यक करते थे। इनका ग्रंथ 'संतनाम-मुक्तावली' इन्हीं के हाथ का लिखा हमने देखा है। इसमें ६० छंद हैं, जिनमें दोहे व पद प्रधान हैं। ये साधारण कवि थे।

उदाहरण—

संत नाम-मुकतावली, निज हिय धारन हेत,
रची दास नरसिंह ने, श्रद्धा भक्ति समेत।
हौं नहिं काव्यकलाकुशल, विनय करौं कर जोरि;
छमहु संत अपराध मम, काव्य कलित अति थोरि।

(२१७९) महारानी वृषभानुकुँवरिजी देवी

ये उर्छा के वर्तमान महाराजा की पहली महारानी थीं। इनका छोटा पुत्र विजावर का महाराज है। और इनकी कन्या छतरपूर की महारानी थीं। इनके बड़े पुत्र टीकमगढ़ (उर्छा का राजस्थान) में थे। इनका शरीर-पात प्राय: ६० वर्ष की अवस्था में हुआ था। इन्होंने पदों में रामयश का गान किया है। इनकी कविता बढ़िया है। छतरपूर में इनके दंपति-विनोद-लहरी (४६ पृष्ठ), बधाई (६ पृष्ठ), मिथिलाजी की बधाई (१४ पृष्ठ), बना (२१ पृष्ठ), होरीरहस्य (१६ पृष्ठ), झूलनरहस्य (२१ पृष्ठ), और पावस (७ पृष्ठ)-नामक ग्रंथ प्रस्तुत हैं। इन सबमें सीताराम का ही वर्णन है। [प्र० त्रै० रि०] में इनके भजविरुदावली (१९४२), औरंगचंद्रिका (१९६०) तथा दान-लीला (१९६१) नामक तीन और ग्रंथों का पता चलता है। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण—

रघुवर दीन वचन सुनि लीजै।

भवसागर को पार नहीं है तदपि पार मोहिं कीजै।
जो कोउ दीन पुकारै प्रभु को श्रमित दोप दलि दीजै;
सुनि विनती वृषभानुकुँवरि की अब प्रभु मेहर करीजै।

(२१८०) ललिताप्रसाद त्रिवेदी (ललित)

यह मल्लावाँ ज़िला हरदोरी अवधप्रदेश के वासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और प्राय. कानपूर में रहा करते थे। इन्होंने काव्य से जीविका नहीं की, किंतु उसे अपने चित्तविनोदार्थ पढ़ा था। यह कानपूर में ग़ल्ले की दूकान पर मुनीबी का काम करते थे। काव्य का बोध इनको बहुत अच्छा था। हम इनसे दो-एक बार कानपूर में मिले हैं। इन महाशय ने रामलीला के वास्ते एक जनकफुलवारी-नामक ३० पृष्ठ का ग्रथ निर्माण किया था और इसी के अनुसार गुरुप्रसादजी शुक्ल रईस कानपूर के यहाँ धनुपयज्ञ में लीला होती थी। इन्होंने इसमें ग्रथ निर्माण का समय नहीं दिया, परतु हमको अनुमान से जान पड़ता है कि यह संवत् १९४० के लगभग बना होगा। ललितजी का लगभग ६० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हुआ। द्वि० त्रै० खोज में "ख्यालतरंग"-नामक इनका एक ग्रथ और मिला है। इनकी कविता रोचक और सरस है। उसकी रचना राम-चंद्रिका के समान विविध छंदों में की गई है, और कविता प्रशंस-नीय है, परंतु रामचद्र और विश्वामित्रजी की बातचीत जो अत में कराई गई है वह अयोग्य हुई है। ऐसी बातें गुरु और शिष्य नहीं कर सकते। ललितजी के कुछ स्फुट छंद और समस्यापूर्तियाँ देखने में आती हैं। इन्होंने दिग्विजयविनोद-नामक एक ग्रंथ नायिकाभेद का महाराजा दिग्विजयसिंहजी के नाम पर सवत् १९३० में बनाया था, जो मुद्रित भी हो गया है, परतु महाराजा साहब के यहाँ से इनको कुछ पारितोषिक इत्यादि नहीं मिला। शायद इसी कारण रुष्ट होकर इन्होंने काव्य से जीविका चलाना निंद्य

समझकर नौकरी कर ली। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। इनके कुछ छंद नीचे दिए जाते हैं।

उदाहरण—

सुखद सुजन ही के मान के करनहार,
दीनन के दारिद-दवा को जलधर हौ;
कहै कवि ललित प्रभाव के प्रभाकर से,
बस रसहो के जसही के सुधाकर हौ।
आछे रहौ राजन के राज दिगविजैसिंह,
धीर-धुरधर सुखमा के मानसर हौ;
सोभा सील बर हौ परम प्रीति पर हौ,
निगम नीतिधर हौ हमारे देवतर हौ॥ १॥

अगरे जतान युत सगरे बिटप बर,
सुमन समूह सोहैं अगरे सुवेस को;
भौंरन के भार डार-डार पै अपार दुति,
कोकिल पुकार हरै त्रिविध कलेस को।
कहत बनै न कछू ललित निहारिबे मैं,
उमहो परत सुख मानौ देस-देस को;
जनक सो राजत जनकजू को बाग ताको,
नंदन मो लागै मन नंदन सुरेस को॥ २॥

मार-लजावनहार कुमार हौ देखिबे को दृग ये ललचात हैं;
भूले सुगध मों फूले सरोज से आनन पै अलिहू महरात हैं।
नेक चले मग मैं पग द्वै ललिते श्रम-सीकर से सरसात हैं;
तोरिहौ कैसे प्रसून लला ये प्रसूनहु ते अति कोमल गात हैं॥३॥

(२१८१) गोविंदनारायण मिश्र

ये भाषा के एक अच्छे विद्वान् तथा सुयोग्य लेखक थे। आपका जन्म १६१६ में हुआ था, आपने कई पत्रों का संपादन-कार्य उत्तमता से

किया, आप मस्कृत तथा हिंदी में अच्छी योग्यता रखते थे। द्वितीय हिंदी-साहित्य सम्मेलन के सभापति होकर आपने एक सारगर्भित एव प्रशसनीय वक्तृता दी। आपका कविताकाल संवत् १९३० से समझना चाहिए। इनका एक ग्रथ "विभक्तिविचार" हमने देखा है, जिससे इनकी विद्वत्ता प्रकट होती है। पर इस विषय में हम इनसे सहमत नहीं हो सकते, क्योंकि हिंदी यद्यपि अधिकांश में सस्कृत एव प्राकृत से निकली है, तथापि उसका रूप उक्त भाषाओं से बहुत कुछ भिन्न है और हर बात में हम उसे सस्कृत-व्याकरण से नियमबद्ध नहीं करना चाहते। आपका प्राकृतविचार-नामक लेख भी दर्शनीय है। आपने शिक्षा-सोपान और सारस्वतसर्वस्व-नामक दो ग्रथ भी लिखे हैं और सैकड़ों अच्छे लेख आपके वर्तमान हैं। थोड़े ही दिन हुए आपका शरीरात हो गया।

(२१८२) सहजराम

ये महाशय अवधप्रदेशातर्गत ज़िला सुलतानपूर के बँधुवा ग्राम-निवासी सनाढ्य ब्राह्मण थे। शिवसिंहजी ने इनका जन्म सवत् १९०५ दिया है। इनका बनाया हुआ प्रह्लाद-चरित्र नामक ४५ पृष्ठ का एक उत्कृष्ट ग्रथ हमारे पास वर्तमान है और इनकी रामायण के भी तीन काड (किष्किधा, सुदर और लका) हमने देखे हैं। अपने ग्रथों में इन्होंने समय का कोई ब्यौरा नहीं दिया है। इनका कविताकाल १९३० समझना चाहिए। इन ग्रथों की भाषा और रचना सब गोस्वामी तुलसीदासजी की भाँति है। इस सत्कवि ने अपनी कविता बिलकुल गोस्वामीजी में मिला दी है। ऐसी उत्तम कविता दोहा-चौपाइयों में गोस्वामीजी और लाल के अतिरिक्त शायद कोई भी कवि नहीं कर सका है। इसके भक्ति, ज्ञान आदि के विचार सब गोस्वामीजी से मिलते से हैं, और रचना-शैली भी वही है। प्रह्लाद-चरित्र की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी

हैं। हम इस कवि को कथा-प्रासंगिक कवियोंवाली छत्र कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणार्थ इनके कुछ छंद नीचे लिखे जाते हैं—

रामनाम लिखि बाँचन लागे; धिक-धिक करि दोउ भूसुर भागे।
सुनि पहलाद वचन कह दीना; मोंहि धिक कत महिदेव प्रवीना।
धिक नरेस जो प्रजा सतावै, धिक धनवंत उथिरता पावै।
धिक सुरलोक सोकप्रद सोई, पुनरागमन जहाँ ते होई।
धिक नर देह जरापन रोगा, राम भजन बिन धिक जप जोगा।
कोउ कह धिक जीवन गुनहीना; धौं कह सुत कोउ विभव विहीना।
सबै असत्य सत्य मत एहा; राम भजन बिनु धिक नर देहा।
धिक छत्री जो समर सभीता, बैखानस बिषयन मन जीता।
धिक धिक तपसी तप करहिं, तन कसि मन बस नाहिं;
परमारथ पथ पाँउ धरि, फिरि स्वारथ लपटाहिं।
हटकि-हटकि हारे निपट, पटकि-पटकि महि पानि,
जाय पुकारे राउ पहँ, बालक सठ हठ खानि।

× × ×

रंभ मास बीते यहि भाँती; महा वायु किय प्रकट तहाँती।
भयो अधीर पीर तन माहीं, छिन मुर्छित छिन रुदन कराहीं।
रूप चतुरभुज दीख न आगे, कहाँ-कहाँ करि रोवन लागे।
कीन्हेउ जबहिं पयोधर पाना; भूली सुमति मोह लपटाना।
जननी उबटन तेल कराबा, अति पुनीत पलना पौढ़ावा।
काटहिं कीट दुसह दुख पावा; रहै रोय मुख बचन न आवा।
क्रीड़ा करत बालपन बीता; तरुन भए तरुनी मन जीता।
नूतन बसन अलंकृत सोहैं; चलैं बाम पुनि-पुनि जग मोहैं।
फूले फिरत विमोह बस, भूले विषय विलास,
बहु ममता समता बिगत, लखै न खल निज नास।

जो कदाचि धन धाम बिलोका, तिन समान मानै त्रैलोका।
जे धन हीन दीन मुख बाए; जहँ-तहँ जाचहिं पेट खलाए।
नहिं जप जोग भोग मन लावा; यह वह करत जरापन आवा।
तन भा अबल बदन रदहीना, तृष्णा तरुन होय तन छीना।

अन इच्छित आई जरा, सहज राम सित केस,
मनहुँ बिसिख सित पुंख ते, भेदेउ काल नरेस।

जिमि-जिमि देह जरापन आवा; तिमि-तिमि तृष्णा तरुन कहावा।
अन इच्छित तन बसी बुढ़ाई; नीच मीच-भगनी दुखदाई।
थके चरन कर कंपन लागे, प्रिय बालक जल देहुँ न माँगे।
खाँसि-खाँसि थूकहिं महि माहीं; सुन सुत बधू देखि अनखाहीं।

चिंता मगन न लगन कछु, हरिपद पंकज धूरि;
आइ गँवायो जनम जड़, मगन मनोरथ भूरि।

(२१८३) जीवनराम भाट

ये खजुरहरा ज़िला हरदोई-निवासी थे। इनका शरीर-पात प्रायः ६० वर्ष की अवस्था में हुआ था। ये अन्य भाटों की भाँति इधर-उधर घूम-फिरकर छंद पढ़कर ही अपना निर्वाह करते थे। जगन्नाथ पंढितराज-कृत गंगा-लहरी का भाषा पद्यानुवाद इन्होंने किया था। इनकी रचना साधारण श्रेणी की थी।

उदाहरण—

देखी मैं बरात रामलीला की इटौंजा मध्य,
शोभा रूप धाम राजा राम को विवाह है;
बोलैं चोपदार धूम धौंसा की धुकार सुनि,
चित्त नर नारिन के चौगुनो उछाह है।
भारी भीर भूधर गयदन की भीम घटा,
साजे गजराज पै बिराजे सीता-नाह है;

जीवन सुकवि प्रेम अवर विचार करें,
आपु महराज सीस कीन्हे छत्र छाँह हैं।

नाम—($\frac{२१८३}{१}$) शिवकवि भाट, असनी।

ग्रंथ—स्फुट।

रचनाकाल—१९३१।

विवरण—साधारण श्रेणी के कवि थे। इनके भड़ौवा सुने गए हैं।
देखिए नं० ७२५।

(२१८४) वेनीसिंह ठाकुर परसेहँडी, सीतापुर

आपका जन्म संवत् १८७१ में हुआ था। आप हिंदी-साहित्य के अच्छे मर्मज्ञ थे। कविजन आपके यहाँ प्राय: आया-जाया करते थे। आपने सं० १९३१ में शृंगाररत्नाकर-नामक एक संग्रह बनाया था, जो एक लेखक की असावधानी से लुप्त हो गया। आपका देहांत १९४१ में हुआ। आपके पुत्र रामेश्वर बख़्शसिंह भी एक सुकवि थे। इनका भी स्वर्गवास हो गया।

(२१८५) हनुमान

ये महाशय प्रसिद्ध कवि सरदार बंदीजन के पुत्र और काशी के रहनेवाले थे। हमने इनका कोई ग्रंथ नहीं देखा है, परंतु इनके स्फुट छंद बहुतायत से मिलते हैं। इन्होंने शृंगाररस की कविता की है। इनकी भाषा ब्रजभाषा है और वह संतोषदायिनी है। इनकी कविता मनोहर और सरस है। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणार्थ इनके दो छंद नीचे लिखे जाते हैं—

ननदी औ जेठानी नहीं हँसतीं तौ हिनू तिनहीं को बखानती मैं,
घरहाई बगार न जो करतीं तौ भलो औ बुरो पहिचानती मैं।
हनुमान परोसिनि हू हित की कहतीं तौ अठान न ठानती मैं,
यह मीत तिहारी सुनौ सजनी रहती कुलकानि तौ मानती मैं॥१॥
निज बाल सों और जे बाल तिन्हैं पुनि की कुलकानि सिखावती हैं;
ननदी औ जेठानी हमारे तरु हँसी खोलन ही जो चितावती हैं।

हनुमान न नेकौ निहारैं कहूँ दृग नीचे किए सुख पावती हैं,
बड़भागिनि पी के सोहाग भरी कयों आँगन हू लों न आवती हैं ॥२॥

इनके पुत्र कविवर सीतलाप्रसादजी से विदित हुआ कि इनका शरीर-पात संवत् १९३६ में, ३८ वर्ष की अवस्था में, हुआ। द्विज कवि मन्नालाल से हनुमान की घनिष्ठ मैत्री थी।

(२१८६) नंदराम

ये महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण मौज़ा सालेहनगर ज़िला लखनऊ के रहनेवाले थे। यह स्थान गोमतीजी के बसहरी घाट से ४ मील और हमारे जन्मस्थान इटौंजा ग्राम से ८ मील की दूरी पर स्थित है। संवत् १९३४ में ये महाशय हमसे इटौंजा में मिले थे। शृंगारदर्पण की एक हस्त-लिखित प्रति भी इनके पास थी, जिसके बहुत-से छंद इन्होंने हमको सुनाए। इनकी अवस्था उस समय लगभग चालीस वर्ष की थी और उसके प्रायः दश वर्ष के पीछे इनका शरीर-पात हुआ। अतः इनके जन्म और मरणकाल संवत् १८९४ और १९४४ के आसपास हैं।

इन्होंने शृंगारदर्पण-नामक १५४ पृष्ठों (मँझोली साँची) का एक बड़ा ग्रंथ भावभेद और रसभेद के वर्णन में संवत् १९२९ में बनाया, जिसकी रीति प्रणाली पद्माकरजी के जगद्विनोद से मिलती है। इसमें दोहा, सवैया और घनाक्षरी छंद बहुतायत से हैं, परंतु कहीं छप्पय आदि दो-एक अन्य प्रकार के भी छंद आ गए हैं। इन्होंने अपनी भाषा में बाह्याडंबरों को स्थान नहीं दिया है और वह मधुर एवं निर्दोष है। इनके भाव भी साधारणतः अच्छे हैं। इनकी पुस्तक भारतजीवन यंत्रालय में मुद्रित हो चुकी है, जिसके अंत में इनके सात स्फुट छंद भी लिखे गए हैं। शिवसिंहसरोज में शांतरस के कवित्त बनानेवाले एक नंदराम का नाम लिखा है, पर उनके समय के निश्चय में कुछ भी नहीं कहा गया है। जान

पड़ता है कि ये नंदराम दूसरे थे, क्योंकि शृंगारदर्पण के रचयिता नंदराम ने ऐसे सरस व अच्छे छंद नहीं कहे हैं। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

मोर किरीट मनोहर कुंडल मंजु कपोलन पै झलकाली ;
पीत पटा लपटा तन साँवरे भाल पटीर की रेख रसाली।
त्यों नँदरामजू बेनु बजावत आजु लखे बन मैं बनमाली,
नैन त्वारिबे को मन होत न मोहन रूप निहारि कै आली।

(२१८७) लक्ष्मीशंकर मिश्र, एम० ए० रायबहादुर

ये महाशय सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनका जन्म संवत् १९०६ में हुआ था और संवत् १९६३ में इनका स्वर्गवास हुआ। पहले ये बनारस कॉलेज में गणित के अध्यापक थे, पर संवत् १९४२ में सरकार ने इन्हें शिक्षा-विभाग में इंस्पेक्टर नियत कर दिया। इन्होंने गणित-कौमुदी-नामक एक पुस्तक हिंदी में बनाई और बहुत दिन तक काशी-पत्रिका चलाई। बहुत दिनों तक ये नागरीप्रचारिणी सभा के सभापति रहे और यथाशक्ति सदैव हिंदी की उन्नति करते रहे। बहुतेरी पाठ्य-पुस्तकें भी इन्होंने शिक्षा-विभाग के लिये संपादित कीं।

(२१८८) रामद्विज

आपका नाम रामचंद्र था और आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आपका जन्म संवत् १९०७ में हुआ था। आप हाई स्कूल अलवर के अध्यापक थे। आपकी कविता सरस, अनुप्रास-पूर्ण और श्रेष्ठ होती थी। इनके जानकीमंगल नामक ग्रंथ से नीचे कुछ उदाहरण दिए जाते हैं।

उदाहरण—

राम हिय सिय लसी जैमाल। (टेक)
मानहु घन बिच रच्यो चपला सुरपतिचाप बिसाल।
लखिकै सरस सूर तन कसमे ज्यों जखाम जलजाल ;
कहि द्विज राम धाम सुर गावत जनु कल कंठन जाल॥ १॥

सवैया

भौरन मौर मनोहर मौलि अमोल हरा हिय मोतिया भायो ;
नूतन पल्लव साजि भँगा पटुका कटि सोन जुही छवि छायो ।
कोकिल गायन भौंर बराती चढ़ो पवमान तुरंग सुहायो ,
छाइ उछाह दिगंतन राम ललाम बसंत बनो बनि आयो ॥ २ ॥

(२१८९) गौरीदत्त

सारस्वत ब्राह्मण पंडित गौरीदत्तजी का जन्म संवत् १८६३ में हुआ था। ४५ वर्ष की अवस्था तक इन्होंने अध्यापक का काम किया और फिर अपना पद छोड़कर ये परमार्थ में प्रवृत्त हुए। उसी दिन अपनी सारी संपत्ति इन्होंने नागरी-प्रचार में लगा दी और अपनी शेष आयु-भर ये स्वयं भी इसी काज में लगे रहे। इन्होंने ग्राम-ग्राम और नगर-नगर फिरकर निरंतर नागरी-प्रचार पर व्याख्यान दिए और नागरी पढ़ाने को पाठशालाएँ स्थापित कीं। पंडितजी ने बहुत-से ऐसे खेल और गोरखधंधे बनाए, जिनमें लोगों का जी लगे और वे इसी प्रकार से नागरी लिपि जान जायँ। मेलों, तमाशों आदि में जहाँ अन्य लोग अपनी दूकानें ले जाते थे, वहाँ ये अपना नागरी का झंडा जाकर खड़ा करते थे। नागरी-प्रचार में ये महाशय इतने तल्लीन थे कि जयराम के स्थान पर लोग भेंट होने पर इनसे 'जय नागरी' कहते थे। मेरठ का नागरी स्कूल इन्हीं के प्रयत्नों से बना था। यह अब तक भली भाँति चल रहा है। इन्होंने मेरठ-नागरीप्रचारिणी सभा भी अपने उत्साह से चलाई और स्त्री-शिक्षा पर तीन पुस्तकें बनाईं। इनका बनाया हुआ गौरीकोप भी प्रसिद्ध है। आपका गद्य मनोहर होता था। इनका स्वर्गवास संवत् १९६२ में हुआ। इनकी समाधि पर मोटे अक्षरों में 'गुप्त सन्यासी नागरीप्रचारानंद' अंकित है।

(२१९०) मोहनलाल विष्णुलाल पांड्या

इनका जन्म संवत् १९०७ में हुआ था। ये भारतेंदु हरिश्चंद्र

के मित्र थे। थोड़ी अँगरेज़ी पढ़कर इन्होंने देशी रियासतों में नौकरी की और अंत में पेंशन पाकर मथुरा में रहते थे। इन्होंने हिंदी पर सदैव विशेष रुचि रक्खी और उसमें १२ पुस्तकें बनाईं। पुरातत्त्व पर इनकी बहुत अधिक रुचि रही है, और चंद-कृत पृथ्वीराज रासो को संपादित करके ये प्रकाशित कराते थे। जिसे पीछे से सभा ने पूर्ण कराया। रासो के विषय में इनका प्रमाण माना जाता था। थोड़े दिन हुए इनका शरीर-पात हो गया।

(२१९१) राधाचरण गोस्वामी

इनका जन्म संवत् १६१५ में, वृंदावन में, हुआ था। इन्हें हिंदी तथा संस्कृत में अच्छी योग्यता थी और थोड़ी सी अँगरेज़ी भी इन्होंने पढ़ी थी। ये महाशय वल्लभीय सम्प्रदाय के गोस्वामी थे और हिंदी पर इनका सदैव भारी प्रेम रहा। संवत् १६३२ में आपने कविकुल-कौमुदी-नामक एक सभा स्थापित की। इन्होंने गद्य के सैकड़ों उत्तम लेख लिखे और भारतेंदु-नामक एक मासिक पत्र भी निकाला था, पर वह बंद हो गया। ये महाशय वृंदावन के एक प्रतिष्ठित रईस थे। सरोजिनी-नामक इनका एक नाटक भी उत्तम है। आपने और भी कई छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी हैं, १ विधवाविपत्ति, २ विरजा, ३ जाविग्री, ४ यमलोक की यात्रा, ५ स्वर्गयात्रा, ६ मृण्मयी, ७ कल्पलता, ८ बालविधवा इत्यादि पुस्तकें आपकी रची हैं। आप बड़े सज्जन और योग्य पुरुष थे। आपके साथ बैठने में बड़ी प्रसन्नता होती थी। खेद है, आपका भी देहांत हो गया।

नाम—(२१९२) जगदीशलालजी गोस्वामी (जगदीश), बूँदी।

ग्रंथ—(१) व्रजविनोद नायिकाभेद, (२) साहित्य-सार, (३) प्रस्तारप्रकाश पिंगल, (४) नृपरामपचीसी, (५) लालबिहारीप्रागट्यपचीसी, (६) लालबिहारीअष्टक,

(७) करुणाष्टक, (८) महावीराष्टक, (९) नीतिअष्टक, (१०) पटउपदेश, (११) ध्यानषटपदी, (१२) कृष्णशत, (१३) विनयशत, (१४) गुरु-महिमा, (१५) अष्टचालीसा, (१६) सम्प्रदायसार, (१७) तत्त्वप्रकाश, (१८) पदपद्मावली।

विवरण—सं० १९७० में वर्तमान थे। आप प्रसिद्ध गोस्वामी गदाधरलालजी के वंश में हैं। इस समय आपकी अवस्था लगभग ६५ साल की होगी। इनकी कविता प्रशंसनीय होती है।

सरद सरोज सी सुखात दिन द्वैक हीतैं,
हेरि-हेरि हिय मैं हिमत सरसावैरी ;
कहै जगदीस बात सिसिर सुहात नाहि,
सुनति बसंत सुखकंत बिसरावैरी।
ग्रीखम बिखम ताप तन को तपाय तिय,
बोलत न बैन सन नैन मुरझावैरी ;
पावस पयान पिय सुनिकै सयानि आज,
अबुज अनूप दृग बुंद बरसावैरी ॥ १ ॥

कमल नैन कर कमल कमल पद कमल कमल कर ;
अमल बदन मुख चंद विकट सिर चंद चंद धर।
मधुर मंद मुसक्यानि कान कुंडल अति सोभित ;
बसन पीत मनि माल माल गुंजन मन लोभित।
जगदीस सौंह सलकै अधर मंद-मंद मुरली बजत,
व्रजचंद अनंद अलोकि अलि आवत लखि मनमथ लजत ॥२॥

(२१९३) कार्त्तिकप्रसाद खत्री

इनका जन्म संवत् १९०८ में कलकत्ते में हुआ था। इनके माता-पिता का देहांत इनकी बाल्यावस्था में हो गया, सो इनका

पढ़ना भली भाँति न हो सका। इन्होंने बहुत-से व्यापार किए, पर जमकर ये कोई व्यापार न कर सके। अंत में काशीजी में रहने लगे। हिंदी का इन्हें सदैव से बड़ा प्रेम था और इन्होंने अनुवाद मिलाकर प्रायः २० पुस्तकें रचीं। प्रेमविलासिनी और हिंदी-प्रकाश-नामक दो पत्र भी आपने निकाले और प्रसिद्ध पत्रिका सरस्वती की प्रथम संपादक-समिति में यह भी सम्मिलित थे। इनका देहांत संवत् १९६१ में, काशीजी में, हुआ। ये महाशय हिंदी के एक बहुत अच्छे लेखक थे और इनका गद्य परम रुचिर होता था। इनके ग्रंथों में से इला, प्रमिला, मधुमालती और जया हमारे पास प्रस्तुत हैं।

(२१९४) केशवराम भट्ट

इनका जन्म संवत् १९१० में, महाराष्ट्र-कुल में, हुआ था। इन्होंने १९३१ में बिहारबंधु पत्र निकाला। पीछे से ये शिक्षा-विभाग में नौकर हो गए। ये हिंदी के अच्छे लेखक और परम प्रेमी थे। विद्या की नींव, भारतवर्ष का इतिहास (बँगला से अनुवादित), शमशाद सौसन नाटक, सज्जाद संबुल नाटक, हिंदी-व्याकरण, एक जोड़ अँगूठी, और रासेलस (अनुवाद)-नामक पुस्तकें इन्होंने लिखीं। इनका देहांत संवत् १९६७ के लगभग हुआ। ये बिहार के रहनेवाले थे।

(२१९५) तुलसीराम शर्मा

ये परीक्षित गढ़ ज़िला मेरठ निवासी थे। इनका जन्म संवत् १९१२ में हुआ। आप संस्कृत के बड़े भारी पंडित एवं आर्य-समाज के प्रधान उपदेशकों में थे। आपने सामवेदभाष्य, मनुभाष्य, न्यायदर्शनभाष्य, श्वेताश्वतरोपनिषद्भाष्य, ईश, केन, कठ, मुंडक-भाष्य, हितोपदेश भाषा, सुभाषितरत्नमाला और दयानंदचरितामृत-नामक ग्रंथ बनाए।

(२१९६) गोविंद कवि

ये महाशय पिपलोदपुरी के राजा दूलहसिंह के आश्रय में रहते थे, और उन्हीं की आज्ञा से संवत् १९३२ में इन्होंने हनुमन्नाटक का भाषा

छंदानुवाद किया। ये महाशय कवि टीकाराम के पुत्र जाति के ब्राह्मण थे। आपने संस्कृत-मिश्रित भाषा को आदर दिया है, इस कारण उसमें मिलित वर्ण बहुत आ जाने से ओज की प्रधानता और प्रसाद एवं माधुर्य की कमी हो गई है। इन्होंने अपने छंदों के चतुर्थ पदों में कहीं कहीं 'पर हाँ' शब्द बिलकुल बेकार लिख दिए हैं, जो न तो अर्थ का समर्थन करते हैं और न छंद का। उन्हें छोड़कर पढ़ने से छंद और अर्थ दोनों पूरे होते हैं। तो भी इस ग्रंथ की कविता बहुत ज़ोरदार है और इसमें प्रभावशाली छंद बहुत पाए जाते हैं। नाटक में १३२ पृष्ठ हैं और सब प्रकार के छंद रामचंद्रिका एवं गुमान-कृत नैपध की भाँति रक्खे गए हैं। ग्रंथ बहुत सराहनीय बना है। इस कवि ने अनुप्रास को भी आदर दिया है। हम गोविंदजी को छत्र कवि की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण—

फुल्लित गल्ल करैं फुतकार प्रफुल्ल नसापुट कोटर आयो;
ओघ अहंकृत पावक पुंज हलाहल घूमि तितै प्रगटायो।
अंध समान किए सब लोकन अंबर लौं छिति छोरन छायो,
लोयन लाल कराल किए ततकाल महा बिकराल लखायो।
निखिल नरेंद्र निकाय कुमुद जिमि जानिए;
तिनको मुद्रित करन मिहिर मोहिं मानिए।
कार्तवीर्य प्रति कहे यथा मम बोल हैं;
पर हाँ! सो सुनि लीजै राम श्रवण जुग खोल हैं।

इस ग्रंथ में राम के राज्याभिषेक तक का वर्णन है।

(२१९७) अयोध्याप्रसाद खत्री

ये महाशय बलिया के रहनेवाले थे, पर इनकी बाल्यावस्था से ही इनके पिता मुज़फ़्फ़रपूर (बिहार) में रहने लगे। कुछ दिन इन्होंने अध्यापक का काम किया और पीछे से कलेक्टर के

पेशकार हो गए; जिस पद पर ये मृत्यु पर्यंत रहे। इनका स्वर्गवास ४ जनवरी संवत् १९६१ में, ४७ वर्ष की अवस्था में, हो गया। इन्होंने यावज्जीवन खड़ी-बोली का पद्य में प्रचार करने और छंदों से व्रजभाषा उठा देने का प्रयत्न किया। इस विषय में इन्हें इतना उत्साह था कि कुछ कहा नहीं जाता। खड़ी-बोली के आंदोलन पर एक भारी लेख भी छपवाकर इन्होंने उसे बेदाम वितरण किया था। उसकी एक प्रति इन्होंने अपने हाथ से हमें भी काशी में सभा के गृहप्रवेशोत्सव में दी थी। जिस लेखक से ये मिलते थे उससे खड़ी-बोली के विषय में भी बातचीत अवश्य करते थे। खड़ी-बोली के प्रचार को ही ये अपना जीवनोद्देश्य समझते थे। ऐसे उत्साही पुरुष बहुत कम देखने में आते हैं। इस विषय पर आपने इँगलैंड में भी एक लेख छपवाया था। संवत् १९३४ में इन्होंने एक हिंदी-व्याकरण प्रकाशित किया। इनके अकाल-स्वर्गवास से खड़ी-बोली के आंदोलन को बड़ी क्षति पहुँची। इस आंदोलन को पूर्ण बल के साथ पहलेपहल इन्हीं ने उठाया। आपने इसमें इतना उत्साह दिखाया कि आपको देखते ही खड़ी-बोली की याद आ जाती थी।

(२१९८) मुंशीराम महात्मा

इनका जन्म संवत् १९१५ में हुआ था। आप बड़े ही धर्मात्मा पुरुष थे। आप गुरुकुल काँगड़ी के अध्यक्ष थे। आपने भारी आय की वकालत छोड़कर फ़क़ीरी को अपनाया और भारत की प्राचीन पठन-पाठन शैली का सजीव उदाहरण गुरुकुल स्थापित किया। यहाँ महात्मा बनाए जाने को बालक पढ़ाए जाते हैं। आप हिंदी के भी लेखक थे। प० लेखराम का जीवनचरित्र, आदिम सत्यार्थ-प्रकाश एवं धर्म-विषयक कई छोटे-छोटे निबंध और अपना जीवन वृत्तांत लिखे हैं। आपका जीवन धन्य था। आर्य-समाज के एक भारी दल के आप नेता थे। सद्धर्मप्रचारक-नामक एक भारी पत्र भी

आप बहुत दिनों तक निकालते रहे। आपने नेपोलियन का जीवन-चरित्र लिखा है। आप हिंदी क एक बडे अच्छे व्याख्यानदाता और बडे ही उत्साही पुरुप थे। चतुर्थ हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के आप सभापति हुए थे। श्रद्धानद के नाम मे आप सन्यासी हो गए थे। शुद्धि-सस्कार में आपने बडा सराहनाय प्रयत्न किया था। देश के बडे भारी नेताओं में स आप एक थे। सन् १९२६ ई० में एक मुसलमान ने आपको गोली से मार डाला।

नाम—(२१९८/१) रणजोरसिंह महाराजा।

ग्रंथ—(१) उष्ट्रशालिहोत्र, (२) श्वानचिकित्सा, (३) गजशालिहोत्र, (४) विहगविनोद, (५) मृगयाविनोद, (६) वकरा भेड पालन, (७) बनिजप्रकाश, (८) उपवनविनोद, (९) मखज़नी हिंदी, (१०) फ़ायदे ज़हर, (११) गृहविद्या, (१२) किताव जर्राही, (१३) वैद्यप्रभाकर, (१४) सतानशिक्षा, (१५) सगीत-सग्रह, (१६) दायागरी। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९२६।

विवरण—आप अजयगढ़के महाराजा थे। आपका जन्म सवत् १९०५ में हुआ तथा सवत् १९१६ में आप गद्दी पर बैठे।

(२१९९) शिवसिंह सेंगर

ये महाशय मौज़ा काँथा ज़िला उन्नाव क ज़िमींदार रजीतसिंह के पुत्र और बख़्तावरसिंह के पौत्र थे। इनका जन्म सवत् १८९० में हुआ था और ४५ वरस की अवस्था में इनका स्वर्गवास हुआ। आप पुलीस में इस्पेक्टर थे। इनको काव्य का बडा शौक़ था और इन्होंने भाषा, सस्कृत और फ़ारसी का अच्छा पुस्तकालय सगृहीत किया था, जो इनके अपुत्र मरने के कारण अब इनके भतीजे नौनिहालसिंह के अधिकार में है। हमने इसे वहाँ जाकर देखा है।

इन्होंने प्रश्नोत्तरखंड और शिवपुराण का भाषा गद्य में अनुवाद किया और शिवसिंहसरोज-नामक एक बड़ा ही उपयोगी ग्रंथ संवत् १६३४ में बनाया। उसमें प्राय: एक सहस्र कवियों के नाम, जन्म-काल और काव्य के उदाहरण लिखे हैं। इन्होंने कविता भी अच्छी की है।

इनका नाम शिवसिंहसरोज लिखने के कारण भाषा-साहित्य में चिरकाल तक अमर रहेगा। जिस समय में कोई भी सुगम उपाय कवियों के समय व ग्रंथों के जानने का न था, उस समय ये बड़ी मेहनत और धन व्यय से इस ग्रंथ को बनाकर भाषा-साहित्य-इतिहास के पथ-प्रदर्शक हुए। हिंदी-प्रेमियों और भाषा पर आपका अगाध ऋण है।

इनकी कविता सरस व मनोहर है और कविता की दृष्टि से हम इनको साधारण श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण—

महिस से मारे मगरूर महिपालन को,
　　　बीज से रिपुन निरबीज भूमि कै दई;
सुंभ औ निसुंभ से सँघारि कारि म्लेच्छन को,
　　　दिल्ली दल दलि दुर्गी ढेर बिन लै लई।
प्रबल प्रचंड भुजदंडन सों सस्त्र गहि,
　　　चंड मुंड खलन खेलाय खाक कै गई;
रानी महरानी हिंद लंदन की ईसुरी सैं,
　　　ईस्वरी समान प्रान हिंदुन के ह्वै गई॥ १॥
फहफही कारुनी फलित फलफूलन की,
　　　फजरबी फालिदी फलोदा फदकन में;
सँगर सुफपि हूँद सागर्री छिटोर पारी,
　　　ठाठ सब छूटे टगि लेत टहलन में।

फहरैं फुहारे फबि रही सेज फूलन सों
फेन-सी फटिक चौतरा के पहलन मैं ;
चाँदनी चमेली चारु फूले बीच बाग आजु,
बसिए बटोही मालती के महलन मैं ॥ २ ॥

(२२००) श्रीकृष्ण जोशी

ये एक बड़े सज्जन पहाड़ी ब्राह्मण थे। आप पहले बोर्ड माल के दफ़्तर में नौकर थे, पर वहाँ से पेंशन लेकर बाराबंकी ज़िला में राजा पृथ्वीपालसिंह की रियासत के मैनेजर हुए। आपका जन्म संवत् १९१० के इधर-उधर हुआ होगा। आपकी बुद्धि बड़ी कुशाग्र थी। आपने सूर्य की गरमी से शीशों द्वारा भोजन पकाने की भानुताप-नामक मशीन ईजाद की थी। आप हिंदी के लेखक और बड़े ही सज्जन पुरुष थे। थोड़े दिन हुए आपका शरीरांत हो गया।

(२२०१) चंद्रिकाप्रसाद तेवारी

ये रायसाहब ज़िला उन्नाव के निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। आपकी अवस्था प्राय ७३ साल की है। आप बहुत दिनों से अजमेर में रहते थे। इनकी पुत्री इँगलैंड के प्रसिद्ध बैरिस्टर पंडित भगवान-दीन दुबे को ब्याही है। तेवारीजी रेल के ऊँचे कर्मचारी थे। आपने एक नौकरी से पेंशन ले ली और दूसरी में फिर आप अच्छा वेतन पाते थे। अब आपने उसे भी छोड़ दिया है। आप बड़े उत्साही पुरुष हैं। स्वामी दादूदयाल के ग्रंथ आपने शुद्धतापूर्वक प्रकाशित किए हैं। आप गद्य के अच्छे लेखक हैं।

नाम—(२२०२) ज्ञारसीराम चौबे, बूँदी।

ग्रंथ—(१) वंशप्रदीप, (२) सर्वसमुच्चय, (३) ललितलहरी, (४) रघुवीरसुयश-प्रकाश।

जन्मकाल—१९१०।

कविताकाल—१९३५।

विवरण—ये महाशय बूँदी-दरबार में वंश-परंपरा से कवि हैं।
आपकी कविता प्रशंसनीय होती है।

उदाहरण—

राजत गँभीर मरजाद मैं कुसल धीर,
करत प्रताप पुंज प्रगटित आठौ जाम,
चहुवान-मुकुट प्रकासित प्रबल आजु,
तेरे त्राम त्रसित नसाए सत्रु धाम-धाम।
नीति निपुनाई धरि पालत प्रजा को नित,
साहिबी मैं सुंदर अमंद ह्वै बढ़ायो नाम;
पारावार सदृश प्रियव्रत प्रभाकर से,
पारथ से पृथु से पुरंदर से राजा राम।

(२२०३) रुद्रदत्तजी शर्मा

इनका जन्म सं० १९०१ में हुआ था। योगदर्शन-भाष्य, स्वर्ग में महासभा, स्वर्ग में सबजेक्ट कमेटी नामक पुस्तकें आपने लिखीं। आप 'आर्यमित्र' के संपादक थे। इनकी रचना से धर्म संबंधी वर्तमान विचारों का अच्छा ज्ञान होता है। हाल में इनका स्वर्गवास हो गया।

इस समय के अन्य कविगण

समय संवत् १९२६ के पूर्व

नाम—(२२०४) छेदालाल ब्रह्मचारी, कानपूर।

ग्रंथ—कई ग्रंथ।

नाम—(२२०५) तुलसी ओझा।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२०६) नरेश।

ग्रंथ—नायिकाभेद का कोई ग्रंथ।

विवरण—तोष-श्रेणी।

नाम—(२२०७) नवनिधि।

ग्रंथ—संकटमोचन ।

विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—(२२०८) पारस ।

विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—(२२०९) विद्याप्रकाश, कन्नौज ।

ग्रंथ—मनखेलवार ।

जन्मकाल—१८९८ ।

विवरण—कुछ समय के लिये आप ब्रह्मचारी हो गए थे । आप बड़े ज़िंदादिल पुरुष हैं ।

नाम—(२२१०) मथुरादास कायस्थ, फीरोज़पूर ।

ग्रंथ—(१) जड़तत्त्वविज्ञान, (२) जगत्पुरुषार्थ ।

जन्मकाल—१८९९ ।

नाम—(२२११) मंगलदेव आर्य संन्यासी ।

ग्रंथ—(१) कुरीतिनिवारण, (२) विधवासंताप ।

जन्मकाल—१८९९ ।

नाम—(२२१२) रसिया (नजीब) ।

विवरण—महाराजा पटियाला के यहाँ थे ।

नाम—(२२१३) लक्ष्मणानंद संन्यासी ।

ग्रंथ—ध्यानयोगप्रकाश ।

नाम—(२२१४) शिवप्रसाद मिश्र, सचेंडी, कानपूर ।

ग्रंथ—संध्याविधि ।

जन्मकाल—१८९९ ।

नाम—(२२१५) शेखर ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

समय संवत् १९२६

नाम—(२२१६) चरणदास, कँदैली, ज़िला नरसिंहपुर ।

ग्रंथ—(१) धर्मप्रकाश, (२) विनयप्रकाश, (३) गुरुमहात्म, (४) धन-संग्रह।

जन्मकाल—१९०१।

नाम—(२२१७) रामनाथसिंह राजा उपनाम नरदेव।

ग्रंथ—देवीस्तुति आदि स्फुट छंद।

जन्मकाल—१८९९। १९५१ तक।

नाम—(२२१८) सूर्यप्रसाद (हंस), पन्हौना, उन्नाव।

जन्मकाल—१९०२।

विवरण—आपका ३० वर्ष की अवस्था में शरीरपात हो गया।

समय संवत् १९२७

नाम—(२२१९) गोपाललाल।

ग्रंथ—नसीहतनामा [द्वि० त्रै० रि०], धेय कौमुदी।

विवरण—बस्ती के इंस्पेक्टर मदारिस।

नाम—(२२२०) ठाकुर लक्ष्मीनाथ मैथिल।

नाम—(२२२०/१) दलपति।

नाम—(२२२१) दुर्गादत्त व्यास, काशी।

ग्रंथ—कवितासंग्रह। [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—सुप्रसिद्ध अंबिकादत्त व्यास के पिता थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(२२२१/१) देवकीनंदन त्रिपाठी।

ग्रंथ—नंदोत्सव (१९२७), (२) सैकड़े में दस दस प्रहसन (१९३२), (३) सीता हरण, (४) वेश्या घातक का नाटक, (५) रुक्मिणी-हरण, ।(६) रक्षाबंधन, (७) एक-एक के तीन-तीन, (८) प्रचंड गोरक्षा नाटक, (९) गोवध निवारण नाटक, (१०) बाल-विवाह नाटक, (११) लक्ष्मी-सरस्वती मेलन। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९२७।

नाम—(२२२२) नवीन भट्ट, विलगराम, ज़ि० हरदोई।

ग्रंथ—(१) शिवतांडव भाषा, (२) महिम्न भाषा।

जन्मकाल—१८६८।

विवरण—कविता बड़ी सरस और मनोहर करते थे।

नाम—($\frac{२२२२}{१}$) वलदेवसिंह वैश्य।

ग्रंथ—रससिंधु। [तृ० त्रै० रि०]

विवरण—सपेरां, ज़िला मथुरा के निवासी थे।

नाम—(२२२३) वलभद्र कायस्थ, पन्ना।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—पन्ना के महाराज नरपतिसिंह के यहाँ थे। मालूम पड़ता है कि इन्होंने भी कोई नखशिख बनाया है। कविता तोष कवि की श्रेणी की है।

नाम—($\frac{२२२३}{१}$) वालकृष्ण चौवे।

ग्रंथ—(१) कपिला ज्ञान, (२) तत्त्व वोध, (३) नीति सार, (४) ब्रह्म स्तुति, (५) आत्मवोध। [च० त्रै० रि०]

नाम—(२२२४) वालकृष्णदास।

ग्रंथ—सूरदासजी के दृष्टकूट पर टीका।

विवरण—गिरधरलालजी के शिष्य थे। भक्ति-रस की कविता की है। साधारण श्रेणी के कवि थे। (खोज १९००)

नाम—(२२२५) भगवतलाल सोनार, अकौना, ज़िला वहरायच।

ग्रंथ—(१) बेचुऽष्टक, (२) उत्सवरत्न।

विवरण—वर्तमान।

नाम—(२२२६) रत्नचंद बी० ए०, जसवतनगर, इटावा।

ग्रंथ—(१) न्यायसभा नाटक, (२) भ्रमजाल, (३) चातुर्य-
वार्णव, (४) नूतनचरित्र, (५) हिंदी-उर्दू-नाटक,
(६) काम्रेस-संवाद ।

जन्मकाल—१८९७ (१९६८ तक)

नाम—(२२२७) रामरसिक साधु ।

ग्रंथ—विवेकविलास ।

विवरण—झाँसी के रहनेवाले । गुरु का नाम गंगागिरि ।
[प्र० त्रै० रि०]

नाम—(२२२७/१) रामवल्लभाशरण ।

ग्रंथ—भक्तिसार सिद्धांत । [पं० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९२७ ।

नाम—(२२२७/२) शरणकिशोरजी ।

नाम—(२२२७/३) शंकरलाल कायस्थ ।

नाम—(२२२७/४) सूरजदास ।

ग्रंथ—(१) रामजन्म, (२) एकादशी माहात्म्य । [च० त्रै० रि०]

समय संवत् १९२८

नाम—(२२२८) इंद्रमलजी भाट, अलवर ।

जन्मकाल—१९०२ ।

विवरण—अलवर-दरबार के कवि थे ।

नाम—(२२२९) दुर्गाप्रसाद ।

ग्रंथ—गजेंद्रमोक्ष (खोज १९०४), हस्तध्यान मौक्ष [प्र० त्रै०रि०]

नाम—(२२३०) फूलचंद्र ब्राह्मण, बैसवारेवाले ।

ग्रंथ—अनिरुद्धविवाह । [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२२३०/१) रामदयाल ।

ग्रंथ—परमधाम बोधिनी, राम नाम तत्त्वबोधिनी, (३) भक्ति-रसबोधिनी।

रचनाकाल—१८२६ के पूर्व।

नाम—($\frac{2230}{2}$) रसिकविहारी।

नाम—($\frac{2230}{3}$) सरयूप्रसाद मिश्र।

ग्रंथ—(१) आख्यान मंजरी भाषानुवाद, (२) मातृशिक्षा, (३) दिव्यदंपती, (४) प्रस्थानभेद, (५) धर्मप्रशंसा, (६) जयदेवचरित, (७) पाणिनी, (८) नेपाल का इतिहास, (९) मानवचरित्र, (१०) प्राकृत प्रकाश, (११) श्रीमदन भूति विवरण, (१२) तत्त्वत्रय।

जन्मकाल—१९०१। मृत्युकाल १९६४।

रचनाकाल—१९२९ लगभग।

विवरण—आप संस्कृत के पंडित और हिंदी के अच्छे लेखक थे।

नाम—(२२३१) हनुमंत ब्राह्मण, बिजावर।

ग्रंथ—गीत माला।

जन्मकाल—१९०३।

विवरण—राजा भानुप्रतापसिंह बिजावर के यहाँ थे। कविता साधारण श्रेणी की है।

समय संवत् १९२९

नाम—(२२३२) हीरालाल कायस्थ, बिजावर, छत्रपूर।

ग्रंथ—नर्मदा जागेश्वर विलास।

जन्मकाल—१९०४।

कविताकाल—१९३४। [प्र० त्रै० रि०]

समय संवत् १९३० के लगभग।

नाम—(२२३३) कालिकाप्रसाद।

ग्रंथ—प्रेमदीपिका। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२२३३/१) जोगजीत।
ग्रंथ—पंच मुद्रा। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(२२३४) परमानंद कायस्थ, ललितपुर।
ग्रंथ—(१) रामायणमानसतरंगिणी, (२) अपराधभंजिनी-चालीसी। प्रथम त्रैवार्षिक खोज रिपोर्ट में इनके (१) प्रमोदरामायण (१९४२), (२) विक्रमविलास (१९४०), (३) हनुमत पैंतीसी (१९४४), (४) नीतिसुधा मंदाकिनी (१९४८), (५) जानकीमंगल (१९४८), (६) मंजुरामायण (१९४९), (७) हनुमत विरुदावली (१९५०), (८) रामायण मानसदर्पण (१९५०) (९) प्रनिपालप्रभाकर (१९५१), (१०) प्रताप चंद्रोदय (१९५६), (११) रामायण मानस-चंद्रिका (१९५८), (१२) मृगया चरित्र (१९५८), (१३) मजावली रामायण (१९६०), (१४) वर्ण-संतोषी (१९६०), (१५) महेंद्र धर्म-प्रकाश (१९६१), (१६) सामंत रत्न (१९६१), (१७) प्रताप नीति-दर्पण (१९६१), (१८) ब्रह्मकायस्थकीगुर्दी (१९६२), (१९) पन्नाभरणप्रकाश (१९६४), (२०) राजभृत्यप्रकाश (१९६४), (२१) नीतिमुक्तावली (१९६४), (२२) राजनीतिमंजरी (१९६४), (२३) माधव-विलास (१९६४), (२४) नीति सारावली, (२५) लछमन पचीसी, (२६) हनुमत सुमिरनी, (२७) राम पचीसी, (२८) जानकीशृंगाराष्टक, (२९) [illegible]ष्टक, (३०) विश्वंभर सुमिरनी, (३१) महेंद्र-[illegible], (३२) रमाभुकमयाद, (३३) रसपरीक्षा-[illegible] ग्रंथों का पता चलता है।

विवरण—आश्रयदाता श्रोड़छानरेश महाराजा महेंद्र रुद्रप्रताप-
सिंह थे। इनका राजत्वकाल १९२७ से १९५० तक था।

नाम—(२२३५) शंभूनाथ कायस्थ।

ग्रंथ—सुहितशिष्य।

विवरण—झाँसी में डाक-इंस्पेक्टर थे।

समय १९३०

नाम—(२२३६) कान्ह वैस, वैसवाड़े के।

ग्रंथ—देवीविनय। [प्र० त्रै० रि०]

जन्मकाल—१९००

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२३७) कामताप्रसाद (सेवक) कायस्थ, तारा-
पूर, ज़िला फ़तेहपूर।

ग्रंथ—(१) राघोबत्तीसी, (२) हरिनामपचीसी।

जन्मकाल—१९०४।

नाम—(२२३८) कालीप्रसाद कायस्थ, बिजावर।

ग्रंथ—लीलावती के एक भाग का छंदोबद्ध अनुवाद।

जन्मकाल—१९०५।

नाम—(२२३९) काशीप्रसाद कायस्थ, पन्ना।

जन्मकाल—१९०५।

नाम—(२२४०) केदारनाथ त्रिपाठी, सरायमीरा।

जन्मकाल—१९०४। १९३८ तक।

नाम—(२२४१) खड्गबहादुर मल्ल महाराजकुमार।

ग्रंथ—(१) महारास नाटक, (२) बालविवाह विदूषक नाटक,
(३) भारत-आरत नाटक, (४) कल्पवृक्ष नाटक,
(५) हरतालिका नाटिका, (६) भारतललना नाटक,
(७) रसिकविनोद, (८) फागअनुराग, (९) बालोप-

देश, (१०) बालविवाह-विषयक लेक्चर, (११) सद्धर्म-निर्णय, (१२) रतिकुसुमायुध, (१३) सपने की सपत्ति, (१४) वेश्यापचरण ।

विवरण—नाटककार हैं । रङ्गविलास प्रेस क़ायम किया, जिससे बहुत-से हिंदी के उत्तम ग्रंथ प्रकाशित हुए ।

नाम—(२२४२) गणेशदत्त ।

ग्रंथ—सरोजनी नाटक ।

नाम—(२२४३) गणेशभाट ।

विवरण—महाराजा बनारस ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के दरबार में थे । साधारण श्रेणी ।

नाम—(२२४४) गदाधर भट्ट ।

ग्रंथ—मृच्छकटिक ।

विवरण—अनुवाद ।

नाम—(२२४५) गुणाकरत्रिपाठी काँथा, ज़िला उनाव

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२२४६) गुरदीनबंदीजन पैंतेपुर, ज़िला सीतापुर ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२२४७) गोकुलचंद ।

ग्रंथ—बूढ़े मुँह मुँहासे लोग चले तमाशे (नाटक) ।

नाम—(२२४८) चोवा हरिप्रसाद बंदीजन, ढोलपुर ।

विवरण—इनकी स्फुट रचना अच्छी है । साधारण श्रेणी ।

नाम—(२२४९) छितिपाल राजा माधवसिंह, अमेठी ।

ग्रंथ—(१) मनोजलतिका, (२) देवीचरित्र सरोज, (३) त्रिदोष ।

देखो नं० (२१०८) ।

नाम—(२२५०) जानी बिहारीलाल (१९६७ तक) ।

ग्रंथ—विज्ञान विभाकर आदि कई ग्रंथ ।
विवरण—नाटककार थे । आप भरतपूर राज्य के दीवान थे और आपको रायबहादुर की पदवी मिली थी ।
नाम—(२२५१) जानी मुकुंदलाल ।
ग्रंथ—मुकुंदविनोद ।
विवरण—आप उदयपुर कौंसिल के मेंबर थे ।
नाम—(२२५२) ठग मिश्र, डुमरावँ, जानकीप्रसाद के पुत्र।
जन्मकाल—१९०३ ।
नाम—(२२५३) ठाकुरदयालसिंह ।
ग्रंथ—(१) मृच्छकटिक, (२) वेनिस का सौदागर ।
विवरण—नाटक अनुवादित किए हैं ।
नाम—(२२५४) दलेलसिंह, दुरजनपुर ।
जन्मकाल—१९१५ ।
नाम—(२२५५) दामोदर शास्त्री ।
ग्रंथ—(१) रामलीला, (२) मृच्छकटिक, (३) बालखेल, (४) राधामाधव, (५) मैं वही हूँ, (६) नियुद्धशिक्षा, (७) पूर्वदिग्यात्रा (८) दक्षिणदिग्यात्रा, (९) लखनऊ का इतिहास, (१०) संक्षेप रामायण, (११) चित्तौरगढ़ ।
विवरण—नाटककार थे ।
नाम—(२२५६) दीनदयाल (दयाल), बेंती, ज़िला रायबरेली।
विवरण—मौन कवि के पुत्र, साधारण श्रेणी ।
नाम—(२२५७) देवकीनंदन तेवारी ।
ग्रंथ—(१) जयनरसिंह की, (२) होलीखगेश, (३) चक्षुदान ।
विवरण—अच्छे नाटककार थे ।
नाम—(२२५८) देवीप्रसाद ब्रह्मभट्ट, बिलगराम, ज़िला हरदोई ।

जन्मकाल—१९०० ।

नाम—(२२५९) द्विजकवि मन्नालाल बनारसी ।

ग्रंथ—प्रेमतरंगसंग्रह ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२२६०) नीलसखी, जैतपुर, बुँदेलखंड ।

जन्मकाल—१९०२ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२२६१) नैसुक, बुंदेलखंड ।

जन्मकाल—१९०४ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२२६२) नौने वदीजन, बाँदा ।

जन्मकाल—१९०१ ।

विवरण—तोषश्रेणी । हरिदास के पुत्र ।

नाम—(२२६२/१) परमानंदजी गोस्वामी ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विवरण—राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य ।

नाम—(२२६३) परागीलाल चरखारी । देखो नं० ८८६ ।

ग्रंथ—रसानुराग ।

नाम—(२२६४) कालिकाराव ग्वालियरवाले ।

ग्रंथ—कविप्रिया पर टीका ।

जन्मकाल—१९०१ ।

नाम—(२२६५) वल्लभ चौबे, जयपुर ।

विवरण—जयपुर दरबार के राजकवि हैं । काव्य अच्छा करते हैं ।

नाम—(२२६६) बल्लूलाल कायस्थ, (जन ब्रजचंद) तेलिया नाला, बनारस । (१९६० तक)

ग्रंथ—रामलीलाकौमुदी।

नाम—(२२६७) बालेश्वरप्रसाद।

ग्रंथ—वेनिस का सौदागर।

विवरण—मर्चेंट ऑफ़ वेनिस का अनुवाद है।

नाम—(२२६८) विजयानंद शर्मा, बनारस।

ग्रंथ—सच्चा सपना।

विवरण—गद्य-लेखक थे।

नाम—(२२६९) महानंद वाजपेयी, बैसवारेवाले।

ग्रंथ—बृहच्छिवपुराण भाषा।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—मधुसूदनदास श्रेणी।

नाम—($\frac{२२६९}{१}$) मन्नालाल।

ग्रंथ—सत्वबोधमोक्षसिद्धि। [च० त्रै० रि०]

नाम—(२२७०) माधवानंद भारती, बनारसी।

ग्रंथ—शंकरदिग्विजय भाषा।

जन्मकाल—१९०२।

विवरण—मधुसूदनदास की श्रेणी।

नाम—(२२७१) मानिकचंद्र कायस्थ, ज़िला सीतापुर।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२७२) मिहींलाल, उपनाम मलिंद, डलमऊ, राय-बरेली।

जन्मकाल—१९०२।

विवरण—साधारण श्रेणी। गौरा के तअल्लुक़ेदार भूपालसिंह के कवि।

नाम—(२२७३) मीतूदास गौतम, हरधौरपुर, फ़तेहपूर।

जन्मकाल—१६०१।

विवरण—हीनश्रेणी।

नाम—(२२७४) मुन्नाराम।

ग्रंथ—संतनकल्पलतिका। [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—ज़िला प्रतापगढ़-निवासी।

नाम—(२२७५) रघुनाथप्रसाद कायस्थ, चरखारी।

ग्रंथ—(१) शृंगारचंद्रिका, (२) षट्ऋतुदर्पण, (३) काव्य-सुधारसाकर, (४) रसिकयसीकर, (५) संगीतसुधा-निधि, (६) मोदमहोदधि, (७) दुर्गाभक्तिप्रकाश, (८) मनमौजप्रकाश, (९) शांतिपचासा, (१०) राधिकानखशिख, (११) रसिकमनोहर, (१२) राधाकृष्णपचासा।

जन्मकाल—१९०४। १९४८ तक रहे।

नाम—(२२७६) रसरंग, लखनऊ।

ग्रंथ—हनुमंतजस तरंगिनी, सीताराम नखशिख। [प्र० त्रै० रि०]

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२७७) रामनाथ कायस्थ (राम)

ग्रंथ—हनुमन्नाटक, महाभारत भाषा [खोज १९०४], नख शिख।

जन्मकाल—१८९८।

विवरण—साधारण श्रेणी। सरोज में इस नाम के दो कवि दिए हैं, पर दोनों एक ज्ञात पड़ते हैं।

नाम—(२२७८) रामगोपाल सनाढ्य, अलवर।

जन्मकाल—१८९६।

विवरण—आप अलवर-दरबार में वैद्य थे। कविता भी उत्तम करते थे।

नाम—(२२७९) रामभजन, गजपूर, गोरखपूर।

विवरण—राजा बस्ती के यहाँ रहे थे।

नाम—(२२८०) लक्ष्मीनाथ।

ग्रंथ—लक्ष्मीविलास।

विवरण—आप महाराज मानसिंह के भतीजे थे।

नाम—(२२८१) लछिराम बदीजन, होलपूरवाले।

ग्रंथ—शिवसिंहसरोज नायिका भेद।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२८२) शीतलप्रसाद तेवारी।

ग्रंथ—जानकीमंगल।

विवरण—नाटक रचयिता हैं।

नाम—(२२८३) शंकर त्रिपाठी, विसवाँ, सीतापूर।

ग्रंथ—(१) रामायण, (२) वज्रसूची ग्रंथ। [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—हीन श्रेणी। अपने पुत्र सालिक के साथ बनाई।

नाम—(२२८४) शंकरसिंह तालुक़दार, चँड़रा, सीतापूर।

ग्रंथ—काव्याभरण सटीक, महिम्नादर्श। [तृ० त्रै० रि०]

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२८५) श्रीमती।

ग्रंथ—अद्‌भुत चरित्र या गृहचढी नाटक।

नाम—(२२८६) सालिक, विसवाँ, सीतापूर।

ग्रंथ—रामायण।

विवरण—हीन श्रेणी। अपने पिता शंकर के साथ बनाई।

नाम—(२२८७) साँवलदासजी साधु, उदयपूर।

ग्रंथ—भजन।

नाम—($\frac{२२८७}{१}$) सियारघुनंदनशरण उपनाम झूमकलाल।

ग्रंथ—(१) पचदशी, (२) नवरसविहार, (३) सिया-प्रीतमरहस्यसार। [च० त्रै० रि०]

नाम—(२२८८) सुखदीन।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२८९) सुदर्शनसिंह राना, चदापूर।

ग्रंथ—सुदर्शनकविता संग्रह।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२९०) सूखन।

जन्मकाल—१९०१।

विवरण—साधारण श्रेणी

नाम—(२२९१) हनुमतसिंह हाडा, क़िला नैणवे।

जन्मकाल—१९०५।

विवरण—ये महाशय राजा बूँदी के २००००) सालाना ग्रामदनी के जागीरदार तथा क़िलेदार हैं। संस्कृत तथा भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनकी कविता साधारण श्रेणी की है।

नाम—(२२९२) हरखनाथ झा, विहार।

ग्रंथ—ऊषाहरण नाटक।

जन्मकाल—१९०४।

नाम—(२२९३) हरिदास साधु निरंजनी।

ग्रंथ—(१) रामायण, (२) भरथरी गोरख संवाद [खोज १९०२], (३) दयालजी का पद। [खोज १९०२]

जन्मकाल—१९०१।

नाम—(२२९४) हिमाचलराम, ब्राह्मण शाकद्वीपी भटौली, ज़िला फ़ैज़ाबाद ।

ग्रंथ—कालीनाथन लीला, दधिलीला ।

जन्मकाल—१६०४ ।

विवरण—निम्नश्रेणी के कवि । इनकी पुस्तक हमने देखी है ।

नाम—(२२९५) होमनिधिशर्मा ।

ग्रंथ— (१) हुक्कादोषदर्पण, (२) जाति-परीक्षा ।

जन्मकाल—१६०५ ।

नाम—(२२९६) मदनपाल ।

ग्रंथ—निघंट भाषा । [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१६३१ के पूर्व ।

समय संवत् १९३१

नाम—(२२९७) कुतूरीलाल, मिथिला ।

ग्रंथ—कवित्त अकार्ला ।

नाम—(२२९८) रामचंद्र ।

ग्रंथ—सामक्रीमा भाषा ।

नाम— (२२९९) अग्रअली ।

ग्रंथ—अष्टयाम । [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१६३२ के पूर्व ।

समय संवत् १९३२

नाम—(२३००) कन्हैयालाल अग्निहोत्री, गोंड़वा, ज़िला हरदोई ।

ग्रंथ—(१) ज्योतिषसारावली, (२) अवतारपचीसी, (३) शम्भुसाठिका ।

जन्मकाल—१६०७ वर्तमान ।

नाम—($\frac{2300}{1}$) वसीधर ।
ग्रंथ—भोज प्रबंधसार । [प० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१९३२ ।
नाम—(२३०१) रामचरण कायस्थ, गौहार, बुँदेल-
खंड ।
ग्रंथ—हनुमतपचासा ।
जन्मकाल—१९०७ ।
नाम—(२३०२) रामसेवक शुक्ल, बलसिंहपूर, सीतापूर।
ग्रंथ— (१) स्फुट, (२) अक्षरावली, (३) ध्यानचिंतामनि ।
जन्मकाल—१९०८ ।
नाम—($\frac{2302}{1}$) दूलनदास ।
ग्रंथ—शब्दावली [पृ० १५४]। [द्वि० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१९३३ के पूर्व ।
नाम—($\frac{2302}{2}$) रघुवरशरण ।
ग्रंथ—(१) जानकीजू को मंगलाचरण, (२) पना, (३) राम-
मंत्र रहस्य । [प्र० तथा च० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१९३३ के पूर्व ।

समय संवत् १९३२

नाम—(२३०३) अलीमन ।
नाम—(२३०४) केशवराम विष्णुलाल पंड्या ।
ग्रंथ—गणेशगंज आर्य-समाज का इतिहास ।
नाम—($\frac{2304}{1}$) जगतेश ।
ग्रंथ—रसिक समाज अथवा माला भूषण । [प० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१९३२ ।
जन्मकाल—१९०८ ।

नाम—(२३०५) ज़ालिमसिंह कायस्थ, अकबरपूर, ज़िला, फ़ैज़ाबाद ।

ग्रंथ—(१) तर्कसंग्रहपदार्थादर्श, (२) गीता टीका, (३) कई उपनिषदों की टीका ।

विवरण—ये महाशय लखनऊ में पोस्टमास्टर थे। अब पेंशन ले ली । इसके पीछे रियासत ग्वालियर में रहे,अब वहाँ से चले गए ।

नाम—(२३०६) तारानाथ ।

विवरण—आप महाराज मानसिंह के भतीजे थे ।

नाम—(२३०७) धनुर्धरराम ब्राह्मण, मु० डगडीहा, राज रीवा ।

जन्मकाल—१९०८ ।

नाम—(२३०८) परमहंस, इलाहाबाद ।

ग्रंथ—आरत भजन ।

नाम—($\frac{२३०८}{१}$) बद्रीविशाल उपनाम लाल व लखीर ।

ग्रंथ—व्रजविनोद हज़ारा ।

कविताकाल—१९३३ ।

जन्मकाल—१९१२ ।

विवरण—माध्व सम्प्रदाय के अनुयायी ।

नाम—(२३०९) बलदेवप्रसाद कायस्थ, मौज़ा खटवारा, डा० राजपूर, ज़िला बाँदा ।

ग्रंथ—(१) रामायण रामसागर, (२) शक्ति चंद्रिका, (३) विष्णुपदी रामायण, (४) भारतकल्पद्रुम, (५) हनुमतहाँक, (६) हनुमानसाटिका, (७) बजरंगबीसा, (८) चंडीशतक, (९) बलदेवहज़ारा, (१०) कान्हवंशावली, (११) उक्तिपरीक्षा, (१२) ज्ञानप्रभाकर ।

जन्मकाल—१९०८ ।

विवरण—सब छोटे-बड़े २७ ग्रंथ आपने बनाए हैं । महाराजा प्रतापसिंह कटारीवाले के यहाँ थे ।

नाम—(२३०९/१) बालकराम ।

ग्रंथ—बालकराम के कवित्त । [च० त्रै० रि०]

नाम—(२३०९/२) वृंदावन, अग्रवाल ।

ग्रंथ—पराधीन सफाई ।

नाम—(२३०९/३) मर्दनसिंह राजकुमार ।

ग्रंथ—छंदमाल । [प० त्रै० रि०]

नाम—(२३०९/४) शीतलादीन मिश्र (उपनाम द्विजचट)

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

विवरण—सलेथू-निवासी सोनेसिंह के पुत्र हैं ।

नाम—(२३१०) माधोगिरि गोसाईं, मकनपुर, ज़िला मिरज़ापूर ।

ग्रंथ—(१) काव्यदीपक, (२) माधो संगीत सुधा, (३) नीतिशृंगारवैराग्यशतक, (४) कविप्ररामायण, (५) हनुमान अष्टक, (६) पर्वविलास, (७) गंगास्तोत्र ।

जन्मकाल—१९०८ ।

नाम—(२३११) रामानंद ।

ग्रंथ—(१) भगवद्गीता भाषा, (२) भजनसंग्रह । [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—पहले फ़ौज में सूबेदार थे । पेंशन लेकर संन्यासी हो गए ।

नाम—(२३१२) कुंजविहारीलाल ।

ग्रंथ—मुग्धावली ।

नाम—(२३१३) हरदेवबख़्श कायस्थ, पैंतेपूर, ज़िला बारहबंकी।

जन्मकाल—१६०८।

नाम—(२३१४) हरिविलास खत्री, लखनऊ।

ग्रंथ—गोविंदविलास (पृ० २६८)। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२३१५) अर्जुनसिंह, बनारस।

ग्रंथ—कृष्णरहस्य।

कविताकाल—१६३४ के पूर्व।

विवरण—हीन श्रेणी। नारायण के शिष्य।

समय संवत् १६३४

नाम—(२३१६) अजीतसिंहजी महाराज।

जन्मकाल—१६०६।

विवरण—ये महाराज खेतड़ी-नरेश थे, जो हाल ही में अकबर के रौज़े से गिरकर मर गए। ये कविता भी करते थे।

नाम—(२३१७) कृष्णसिंह राजा भिनगा, ज़िला बहरायच।

ग्रंथ—गंगाष्टक।

जन्मकाल—१६०६।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२३१८) जनकधारीलाल कुर्मी, दानापूर।

ग्रंथ—सुनीतिसंग्रह।

जन्मकाल—१६०६।

नाम—(२३१९) देवदत्त शास्त्री, कानपूर।

ग्रंथ—वैशेषिक-दर्शन-भाष्य, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकेंदुपराग।

जन्मकाल—१६०६।

विवरण—आप गुरुकुल मथुरा के अध्यापक रहे हैं।

नाम—(२३२०) भगवानदास, मु० ऊँचाक, ज़िला हज़ारीबाग़।
ग्रंथ—(१) प्रेमशतक, (२) गोविंदशतक, (३) कृष्णाष्टक, (४) पद्यामृतकल्याण, (५) गीतामाहात्म्य, (६) गौरीस्वयंवर, (७) गोविंदाष्टक आदि अनेक ग्रंथ रचे हैं।
जन्मकाल—१९०६।

नाम—(२३२१) भैरवदत्त त्रिपाठी, सरायमीरा।
ग्रंथ—वाल्मीकीय अयोध्याकांड भाषा।

नाम—(२३२२) मातादीन शुक्ल, मौज़ा अजगर, ज़िला प्रतापगढ़।
ग्रंथ—(१) रसमारिणी, (२) नानार्थनवसंग्रहावली।
विवरण—साधारण कवि हैं। इनकी रसमारिणी हमारे पास है। दोहों में रस व नायिकाभेद कहा है।

नाम—(२३२३) मंगलसेन शर्मा, अँबहटा—सहारनपूर।
ग्रंथ—श्राद्धविवेक।
जन्मकाल—१९०६।

नाम—(२३२४) रघुनाथप्रसाद ब्राह्मण, मु० बिरसुनपूर, राज्य पन्ना।
जन्मकाल—१९०६।

नाम—(२३२५) रमादत्त त्रिपाठी, नैनीताल।
ग्रंथ—(१) शिक्षावली, (२) बालबोध, (३) गणितारंभ, (४) नीतिसार।
जन्मकाल—१९०६।

नाम—(२३२६) रामप्रकाश शर्मा, मिर्ज़ापूर।
ग्रंथ—(१) विवाहपद्धति, (२) सत्योपदेश।

जन्मकाल—१९०६ ।

नाम—(२३२७) लतीफ़ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२३२७/१) सूरजवली ।

ग्रंथ—जैमिनिपुराण भाषा । [प० त्रै० रि०]

नाम—(२३२८) हीरा प्रधान ।

ग्रंथ—नर्मदाजागेश्वरविलास ।

समय सवत् १९३५ के पूर्व

नाम—(२३२९) जमुनादास ।

ग्रंथ – जमुनालहरी । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(२३३०) दयाराम वैश्य ।

ग्रंथ—(१) सीताचरित्र उपन्यास, (२) मनुस्मृति आल्हा ।

जन्मकाल—१९०६ ।

नाम—(२३३१) फरासीसी वैद्य ।

ग्रंथ—अजुलिपुरान, इजीलपुरान ।

नाम—(२३३१/१) रविराज ।

ग्रंथ—नर्मदालहरी ।

मृत्युकाल—१९५१ ।

रचनाकाल—१९३५ के लगभग ।

विवरण—मूली काठियावाड़ के चारण थे। इन्होंने जाडेजा ठाकुर केसरीसिंह की प्रशंसा में कविता की है ।

नाम—(२३३१/२) राधासर्वेश्वरीदास (उपनाम हितस्वामिनी-शरण)

ग्रंथ—हितस्वामिनी अष्टक, स्फुट पद ।

जन्मकाल—१९१० के लगभग ।

विवरण—राधावल्लभीय महात्मा पुरुष।

समय संवत् १९३५

नाम—(२३३१/३) गंगाधर भट्ट, ओरछावासी।

ग्रंथ—(१) प्रतापमार्तंड (१९२४), (२) व्यवहारकौस्तुभ, (३) रत्नपरीक्षा। [प्र० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९३५।

नाम—(२३३२) चिम्मनलाल वैश्य, तिलहर, शाहजहाँपूर।

ग्रंथ—(१) गृहस्थाश्रम, (२) दयानंदजीवनचरित्र, (३) नीतिशिरोमणि आदि २० ग्रंथ हैं।

जन्मकाल—१९१०।

नाम—(२३३३) जदुदानजी चारण।

ग्रंथ—(१) ज़िमींदारी री पोथियान रीनचाकरी ओर चाकरी री विगति, (२) ताज़ीमी सरदारी रान री त्रवगति।

विवरण—राजपूतानी कवि।

नाम—(२३३४) जनकेस वंदीजन, मऊ, बुँदेलखंड।

जन्मकाल—१९१२।

विवरण—ये कवि महाराज छतरपूर के यहाँ थे। इनकी कविता तोष कवि की श्रेणी की है।

नाम—(२३३५) मोहनलाल, चरखारीवासी।

ग्रंथ—(१) शालिहोत्र, (२) श्रीनरसिंहजू को चरित्र। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(२३३५/१) युगलकिशोर।

विवरण—ज़िंदरौ राज्य के चारण थे।

नाम—(२३३६) रविदत्त शास्त्री वैद्य, पेगी, जिला रोहतक।

ग्रंथ—वैद्यक के ४६, ज्योतिष के १६, व्याकरण के ४, न्याय के ७ ग्रंथ।

जन्मकाल—१९११।

विवरण—आप गौड़ ब्राह्मण हैं। आप ग्रंथ-रचना में विशेष रुचि रखते हैं।

नाम—($\frac{२३३६}{१}$) रविराम।

ग्रंथ—संगीतादित्य।

विवरण—जामनगर-निवासी प्रश्नोरा नागर ब्राह्मण थे।

नाम—(२३३७) श्रीहर्षजी ब्राह्मण, काशी।

ग्रंथ—(१) राधाकृष्ण होरी (पृ० १८), (२) राधाजी को व्याह (पृ० १२)। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२३३८) सीताराम वैश्य, पैंतेपूर, ज़िला बारहवंकी।

ग्रंथ—ज्ञानसारावली।

जन्मकाल—१९०७।

सैंतीसवाँ अध्याय

उत्तर हरिश्चंद्र-काल (१९३६—४५)

(२३३९) भीमसेन शर्मा

इनका जन्म संवत् १९११ में, एटा ज़िले में, हुआ था। संस्कृत विद्या में अच्छा अभ्यास करके ये महाशय काशी में आर्यसमाजी हो गए और बहुत दिन तक समाज के अच्छे उपदेशकों में रहे। पीछे-से इनका मत बदल गया और ये फिर सनातनधर्मी होकर ब्राह्मण-सर्वस्व-नामक एक पत्र निकालने लगे। ये महाशय एक अच्छे उपदेशक और पूर्ण पंडित हैं। हिंदी और संस्कृत में ये बड़ी सुगमता के साथ उत्तम व्याख्यान देते हैं। ये अपनी धुन के बड़े पक्के हैं। इनका छापाखाना इटावे में है और वहीं से ब्राह्मणसर्वस्व निकलता है।

सन् १९१२ से ये कलकत्ता की युनिवर्सिटी के कॉलेज में वेद-व्याख्याता के पद पर काम कर रहे हैं।

(२३४०) बलदेवदास

ये महाशय श्रीवास्तव कायस्थ, मौज़ा दौलतपूर, परगना कल्यानपूर, ज़िला फ़तेहपूर के रहनेवाले थे। स्वामी सीतारामजी इनके मंत्रगुरु थे, जिनकी आज्ञा से इन्होंने संवत् १९२६ में जानकीविजय-नामक २२ पृष्ठ का एक ग्रंथ बनाया। इसकी कथा अद्भुत रामायण के आधार पर कही गई है। वास्तव में यह कथा बिलकुल निर्मूल है, क्योंकि अद्भुत रामायण कोई प्रामाणिक ग्रंथ नहीं है। बलदेवदास ने प्रधानतः दोहा-चौपाइयों में यह ग्रंथ लिखा है, परन्तु कहीं-कहीं और भी छंद लिखे हैं। इन्होंने गोस्वामीजी के मार्ग का अधिकतर अवलंब लिया है, यहाँ तक कि दो-चार जगह उन्हीं के पद अथवा भाव भी इन्होंने अपनी कविता में रख दिए हैं। इनकी गणना कथा-प्रसंग के कवियों में मधुसूदनदास की श्रेणी में की जा सकती है।

राम रजाय सुनत सब वीरा; सजे सवेग सेन रनधीरा।
चले प्रथम पैदल भट भारी; निज-निज अस्त्र-शस्त्र सब धारी।
मनिगनजटित चलीं रथ पाँती; भरे विपुल आयुध बहु भाँती।
चले तुरंग बहु रंगविरंगा; जुग पदचर प्रति सूरन संगा।

अमित विमाल गात मानु महाकाल की सी,
पीतपट देखि कै छटा की छवि छपकन,
राजैं मुंडमाल रुंडजाल भुजदंड थानु,
भाल दृग नख्वर कृपान सान लपकन।
छूटे विकराल बाल नैन बलदेव लाल,
दिव्य मुख देखि कै दिनेस दुति झपकन;
मालक के पालिबे को काली ने निकारी जीह,
लाल-लाल लोहू से लपेटी लार टपकन।

(२३४१) फ्रेडरिक पिनकाट

इनका जन्म संवत् १८९३ में, इँगलैंड देश में, हुआ, और वहीं ये प्राय. अपने जीवन पर्यंत रहे। पर भारतीय भाषाओं पर आपका इतना प्रेम था कि आर्थिक दरिद्रता होते हुए भी आपने संस्कृत, उर्दू, गुजराती, बँगला, तामिल, तैलंगी, मलायलम, और कनाडी भाषाएँ सीखीं। अंत में इनको हिंदी से भी प्रेम हुआ और इसे सीखकर इनका अन्य भाषाओं से प्रेम इसके माधुर्य के आगे फीका पड़ गया। इन्होंने हिंदी में सात पुस्तकें संपादित कीं, जिनमें कुछ इन्हीं की बनाई हुई भी थीं। आपने यावज्जीवन हिंदी का हित और हिंदी-लेखकों का प्रोत्साहन किया। अंत में संवत् १९५२ में ये भारत को पधारे, पर इसी संवत् के फ़रवरी में इनका शरीर पात लखनऊ में हो गया। आप हिंदी के अच्छे जाननेवालों में से थे।

(२३४२) अंबिकादत्त व्यास साहित्याचार्य

इनका जन्म संवत् १९१५ चैत्र सुदी ८ को जयपूर में हुआ था। ये महाशय गौड़ ब्राह्मण थे और काशी इनका निवासस्थान था। संस्कृत के ये अच्छे विद्वान् थे, और यावज्जीवन पाठशालाओं एवं कॉलेजों में संस्कृत पढ़ाने का काम करते रहे। इनके अंतिम पद का वेतन १००) मासिक था। अपनी नौकरी के संबंध से ये महाशय बिहार में बहुत रहे। इनका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। ये महाशय संस्कृत तथा भाषा गद्य-पद्य के अच्छे लेखक थे, और इन्होंने चार नाटक-ग्रंथ भी बनाए हैं। यत्र तत्र इन्हें बहुत-से प्रशंसापत्र तथा उपाधियाँ मिलीं, और इनकी आशुकविता की भी सराहना हुई। इन्होंने संस्कृत और हिंदी मिलाकर ७८ ग्रंथ निर्माण किए हैं, जिनके नाम सन् १९०१वाली सरस्वती के पृष्ठ ४४४ पर लिखे हैं। ललिता नाटिका, गोसंकट नाटक, मरहट्टा नाटक, भारतसौभाग्य नाटक, भाषाभाष्य, गद्यकाव्य-मीमांसा, बिहारी-विहार, बिहारीचरित्र, शीघ्र-

लेख-प्रणाली और निज वृत्तांत इनके ग्रंथों में प्रधान हैं। विहारी-विहार में विहारी-सतसई के दोहों पर कुंडलियाँ लगाई गई हैं। इसकी रचना प्रशंसनीय होने पर भी कुछ शिथिल है। गद्यकाव्य-मीमांसा बहुत ही विद्वत्तापूर्ण पुस्तक है। कविता की दृष्टि से इनकी गणना साधारण श्रेणी में भी जा सकती है। इनकी अकाल-मृत्यु से हिंदी में गवेषणा विभाग की बड़ी हानि हुई। इनकी कविता का महत्त्व जैसा इनके गद्य में है, वैसा पद्य में नहीं।

उदाहरण—

"अब गद्य-विभाग की परीक्षा की जाती है। यहाँ साहित्यदर्पण-कार के कथनानुसार तीन गद्य तो असमास, अल्पसमास, दीर्घ-समास हैं, और चौथा वृत्तगंधि है। परंतु यह विचारना है कि प्रथम ही तीन गद्यों से सरस्वती का सारा गद्यभंडार भर जाता है, फिर कौन-सा स्थान शेष रह जाता है, जहाँ वृत्तगंधि गद्य स्थिर हो!! हाँ, वृत्तगंधि गद्य जब होगा, तब उन्हीं तीन में से कोई-सा होगा। इस-लिये इसे प्रविभाग कहें तो कहें, पर गद्य-विभाग में तो रख ही नहीं सकते।"

परनिंदा आपनो कबहुँ नहिं चोरी करिहैं ;
जनन को है पीर कबहुँ नहि जीवन हरिहैं।
मिथ्या अप्रिय बचन नाहि काहू सन कहिहैं,
पर उपकारन हेत सबै विधि सब दुख सहिहैं।

(२३४३) बदरीनारायण चौधरी (प्रेमघन)

आपके पिता का नाम गुरुचरणलाल था। ये पहले मिर्ज़ापुर में रहते थे, परंतु पीछे विशेषतया भीनजगंज, ज़िला गोंडा में रहने थे। इनका जन्म संवत् १९१२ भाद्रकृष्ण ६ को मिर्ज़ापुर में हुआ। ये सरयूपारीय ब्राह्मण उपाध्याय भरद्वाजगोत्री थे। आप बहुत दिन तक नागरीनीरद तथा आनंदकादंबिनी-नामक मासिक पत्र निकालते रहे। ये भारतेंदुजी

के साथियों में थे और भाषा के बड़े प्राचीन लेखक तथा कवि थे। एक बार हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति नियत किए गए थे। आपके रचित निम्न-लिखित ग्रंथ हैं—

(१) भारतसौभाग्य नाटक, (२) प्रयाग-रामागमन नाटक, (३) हार्दिकहर्षादर्श काव्य, (४) भारतबधाई, (५) आर्याभिनंदन, (६) मंगलाश, (७) क़लम की कारीगरी, (८) शुभसम्मिलन काव्य, (९) आनंदअरुणोदय, (१०) युगलमंगल स्तोत्र, (११) वर्षाबिंदुगान, (१२) बसंत-मकरंद-बिंदु, (१३) कजली-कादंबिनी, (१४) वारांगना-रहस्य महानाटक, (१५) संगीतसुधासरोवर, (१६) पीयूषवर्षा, (१७) आनंदबधाई, (१८) पितरप्रलाप, (१९) कलिकालतर्पण, (२०) मन की मौज, (२१) युवराजाशिष, (२२) स्वभावबिंदुसौंदर्य गद्यकाव्य, (२३) शोकाश्रुबिंदु पद्य, (२४) विधवाविपत्तिवर्षा गद्य, (२५) भारतभाग्योदय काव्य, (२६) कांता कामिनी उपन्यास, (२७) वृद्धविलाप प्रहसन, (२८) आत्मोल्लास काव्य, (२९) दुर्दशा दत्तापुर।

पटरानी नृप सिंधु की त्रिपथागामिनी नाम,
तुहिं भगवति भागीरथी बारहिं बार प्रनाम।
बारहिं बार प्रनाम जननि सब सुख की दाइनि,
पूरनि भक्तन के मनोरथनि सहज सुभाइनि।
ब्रह्मलोकहू लौं करि निज अधिकार समानी;
पूरो मम मन-आस सिंधु नृप की पटरानी ॥ १ ॥

कौन भरोसे अब इत रहिए कुमति आय घर घाली;
फूल्यो फूट बैर फलि फैल्यो विधि की कठिन कुचाली।
चलिए बेगि इहाँ ते आली।
जिन कर नाँहि छड़ी ते करिहैं कहा करद करवाली,
छमा-कवच-धारी ये बिहँसत खाय लात औ गाली।

जिनमों सँभरि सकत नहिं मन की धोती ढीलोढाली ;
देश-प्रबंध करेंगे वे यह कैसी ख्यामख्याली ।
दास वृत्ति की चाह चहूँ दिसि चारहु बरन बढ़ाली,
करत खुसामद झूठ प्रशंसा मानहु चने ढफाली ॥ २ ॥

इनका गद्य और पद्य पर अच्छा अधिकार था, और ये हिंदी के बड़े लेखकों में से थे । इनको हिंदी का सदैव से अच्छा शौक़ था । थोड़े दिन हुए इनका शरीर-पात हो गया ।

नाम—(२३४४) लक्ष्मीनारायणसिंह कायस्थ, सिकंदराबाद, ज़िला बुलंदशहर ।

ग्रंथ—तैलंगबोध ।

रचनाकाल—१९३७ ।

विवरण—ये महाशय हैदराबाद में नौकर थे । इन्होंने ख़ालिकबारी की तरह तैलंग भाषा के शब्दों का कोष बनाया है, जिसमें तैलंगी शब्दों के अर्थ हिंदी में कहे हैं । यह पुस्तक मतबा निज़ामी हैदराबाद में छपी है ।

नाम—(२३४५) ईश्वरीसिंह चौहान (ईश्वर), किसुनपुर, राज्य अलवर ।

रचना—स्फुट काव्य ।

जन्मकाल—१९११ ।

रचनाकाल—१९३८ ।

विवरण—इनके बड़े भाई माधव भी अच्छे कवि थे और आपकी भी कविता सरस होती है ।

उदाहरण देखिए—

कबहूँ नहिं माधौ समाधि की रीति न ग्राह की ज्ञान मैं जोति जगी ;
कबहूँ परजंक मैं संग न कीनी मयंकमुखी रस प्रेम पगी ।
कवि ईसुर प्यारी की थामन है कबहूँ नहिं चित्त की चाह ठगी ;

यह श्रायु गई सब हाय वृथा गर सेली लगी न नवेली लगी ॥१॥

(२३४६) त्रिलोकीनाथजी, (उपनाम भुवनेश कवि)

ये महाशय शाकद्वीपी ब्राह्मण महाराजा मानसिंह अयोध्या-नरेश के भतीजे थे। महाराजा मानसिंह के अपुत्र अवस्था में स्वर्गवास होने पर उनके दौहित्र महाराज सर प्रतापनारायण महामहोपाध्याय और इनमे राज्यप्राप्त्यर्थं बहुत बड़ी लड़ाई अदालतों में हुई, जिसमें इनको पराजय हो गई। ये महाशय भाषा के अच्छे कवि थे और इन्होंने पहले चाणक्यनीति का एकादश अध्याय पर्यंत भाषा छंदों में अनुवाद किया, और फिर संवत् १९३७ में भुवनेशभूषण-नामक ५० पृष्ठों का स्फुट शृंगार कविता का एक स्वतंत्र ग्रंथ बनाया। इस ग्रंथ के अंत में कुछ चित्र कविता भी की गई है। भुवनेश-विलास, भुवनेशचक्रप्रकाश, भुवनेशयंत्रप्रकाश-नामक इनके और ग्रंथ हैं। इनके भाई नरदेव, लक्ष्मीनाथ और तारानाथ भी कवि थे। इनके कुटुंब में और दो तीन महाशय भी काव्य-रचना करते थे। इनके पितृव्य महाराजा मानसिंहजी उपनाम द्विजदेव अच्छे कवि हो गए हैं। भुवनेशजी का स्वर्गवास हुए क़रीब ३७ वर्ष के हुए हैं। इनके ग्रंथों का एवं इनके कुटुंबियों के कवि होने का हाल भुवनेशभूषण ग्रंथ में इन्होंने लिखा है। इन्होंने व्रजभाषा में कविता की है, जो सरस और मनोहर है। हम इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। उदाहरणार्थ इनका केवल एक छंद नीचे लिखा जाता है—

कर कंज केवार पै राजि रहे छहरी छिति लौं छुटिकै अलकैं,
अँगिराति जम्हाति भली विधि सों अधनैननि आनि परीं पलकैं।
भुवनेशजू भापे बनै न कछू मुख मंजुल अंबुज से झलकैं,
मनमोहन नैन मलिंदन सो रस लेत न क्यों कदिकै कलकैं।

(२३४७) डॉक्टर सर जी० ए० ग्रियर्सन सी० आई० ई०

इनका जन्म विलायत में, संवत् १९१२ में, हुआ था। आप सिविल-

सर्विस पास करके भारत में १८९९ पर्यंत रहे। इनको हिंदी से बड़ा अगाध प्रेम था, और सदैव इनके द्वारा हिंदी का उपकार होता रहा है। इन्होंने मैथिली भाषा का व्याकरण, बिहारी-कृषक जीवन, और बिहारी बोलियों का व्याकरण-नामक ग्रंथ बनाए, तथा बिहारी-सतसई, पद्मावती, भाषाभूषण, तुलसी-कृत रामायण आदि ग्रंथों को संपादित किया। इन ग्रंथों के अतिरिक्त आपने माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ़् हिंदुस्तान-नामक इतिहास-ग्रंथ शिवसिंहसरोज एवं अन्य ग्रंथों के आधार पर भाषा-साहित्य के विषय बनाया। इसमें प्रायः सब बड़े कवियों के नाम आ गए हैं। आजकल भी ये महाशय भाषाओं की खोज का ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़् इंडिया, कई भागों में लिखी है, जो पूरी प्रकाशित हो चुकी है। इसमें इन्होंने हिंदी की बड़ी प्रशंसा की है। अब ये महाशय विलायत में रहकर पेंशन पाते हैं। आपका हिंदी प्रेम एवं श्रम सर्वथा सराहनीय है।

नाम—(२३४८) गदाधरजी ब्राह्मण, बाँसी।

ग्रंथ—(१) धृतसुधातरंगिणी (पद्य, ६६ पृ० १९५६), (२) देवदर्शनस्तोत्र (पद्य, १० पृ० १९५८), (३) काव्यकल्पद्रुम (गद्य, ६२ पृ० १९५९), (४) कामांकुश-मदतरंगिणी (गद्य, ४२ पृ० १९५९), (५) बदरीनाथ-माहात्म्य (पद्य, ५२ पृ० १९५९), (६) गजशाला-चिकित्सा (गद्य, ७७ पृ० १९६०), (७) वैद्यनाथ-माहात्म्य (पद्य, १४ पृ० १९६०), (८) अश्वचिकित्सा (पद्य, ३३८ पृ० १९६१), (९) हरिहरमहात्म्य (पद्य, १० पृ० १९६२), (१०) भागुपपासी (पद्य, १० पृ० १९६३), (११) नारीचिकित्सा (गद्य, १२८ पृ० १९६२), (१२) जगन्नाथमाहात्म्य, (१३) नयनगाढ़-तिमिरभास्कर, (१४) तैल-सुधातरंगिणी, (१५) नेत्र-

घृतसुधातरंगिणी, (१६) चूरनसंग्रह, (१७) प्रमेहतैल-सुधातरगिणी, (१८) वृहत्‌रसराजमहोदधि, (१९) रामेश्वरमाहात्म्य, (२०) अयोध्यातीर्थयात्राज्ञान, [द्वि० त्रै० रि०] (२१) जर्राहीप्रकाश ।

विवरण—वर्तमान । ये महाशय अच्छे वैद्य हैं, और कविता भी करते हैं । आपकी अवस्था इस समय लगभग ७८ साल के होगा ।

(२३४९) नाथूरामशंकर शर्मा

ये हरदुआगंज अलीगढ़ के निवासी हिंदी के एक प्रसिद्ध सुकवि हैं । आप समस्यापूर्ति अच्छी करते थे, और आजकल खड़ी बोली की भी ललित रचना करते हैं । आपकी अवस्था इस समय प्राय' ७८ साल की है । आपने 'अनुरागरत्न', 'गर्भरंडारहस्य', वायसविजय आदि अनेक उत्तम ग्रंथ बनाए हैं ।

(२३५०) भगवानदास खत्री, लखनऊ

ये हिंदी के पुराने लेखक तथा शुभचिंतक हैं । इन्होंने कई पुस्तकें गद्य तथा पद्य की हिंदी में लिखी हैं । इनके बनाए और अनुवादित पश्चिमोत्तर देश का भूगोल, ग्रेडलास्वागत, योगवासिष्ठ इत्यादि हमने देखे हैं । इनके अतिरिक्त और भी बहुत-से ग्रंथ आपने रचे तथा अनुवादित किए हैं ।

नाम—(२३५१) चंडीदान कविराजा मीशन चारण, बूँदी।

ग्रंथ—(१) सारसागर, (२) बलविग्रह, (३) वंशाभरण, (४) तीजतरंग, (५) बिरुदप्रकाश ।

जन्मकाल—१८४८ ।

कविताकाल—१९३९ ।

मृत्यु—१९४९ ।

विवरण—महाराव राजा विष्णुसिंह बूँदी-नरेश के दरबार में थे ।

इनकी कविता प्रशंसनीय है। इनकी गणना तोष की श्रेणी में की जाती है।

उदाहरण—

घूमत घटा से घनघोर से घुमँड़ घोर,
उमड़त आए कमठान तें अधीर से;
धपट धपेट धरगीन की चलाचल तें,
धूरि धूम धूमत धकात धलि धीर से।
मसत मतंग रामसिंह महिपालजू के,
दाकिनि दराए मद्‌धाकिनी धकीर से;
साजे मोटमारन अपारन के जैतवार,
धारन के अचल पहारन के पीर से।

नाम—(२३५२) राव अमान।

ग्रंथ—(१) लाल-गाथा-चरित्र, (२) लालचरित्र, (३) महाराज सवतसिंहजी की कविता, (४) महाराज सवतसिंहजी का जस।

कविताकाल—१९३६ सक।

विवरण—इनकी रचना देखने में नहीं आई।

(२३५३) कालीप्रसाद त्रिवेदी

ये बनारसवाले हैं। इनका रचनाकाल १९२० के लगभग है। आपने भाषा-रामायण और सीय-स्वयंवर के अतिरिक्त अनेक मदरसों की पुस्तकें रचीं।

नाम—(२३५३/१) गुलाबसिंह धाऊजी।

जन्मकाल—१८७८।

कविताकाल—१९४०।

ग्रंथ—प्रेमसतसई, भाणिकनादाम्य, फुटकर छप्पय, फुटकर पद, हितावर्द्धन, मानुष्टिश्मार।

विवरण—ये भरतपूर के महाराज जसवंतसिंह के धा भाई थे और संवत् १९४५ में इनका स्वर्गवास हुआ।

(२३५४) दुर्गाप्रसाद मिश्र पंडित

इनका जन्म संवत् १९१६ में, रियासत कश्मीर में, हुआ था। ये महाशय संस्कृत, हिंदी और बँगला में परमप्रवीण थे, और अँगरेज़ी भी जानते थे। जीविकार्थ ये मकुटुंब कलकत्ते में रहते थे। इन्होंने कई पत्र चलाए तथा संपादित किए। प्रसिद्ध पत्र भारतमित्र इन्हीं का चलाया हुआ है। इसके अतिरिक्त सारसुधानिधि, उचितवक्ता और मारवाड़ीबंधु-नामक पत्र भी इन्होंने चलाए। इन्होंने २०-२२ पुस्तकें अनुवाद आदि मिलाकर लिखीं। इनका स्वर्गवास १९६७ में हो गया। ये महाशय हिंदी के परमोत्तम लेखकों में से थे।

नाम—(२३५५) मातादीन द्विवेदी (हरिदास), गजपूर गोरखपूर।

रचना—स्फुट काव्य, २०० छंद।

जन्मकाल—१९११।

रचनाकाल—१९४०।

विवरण—कविता सरस है।

उदाहरण—

टेसू पलासन औ कचनार अनार की डार अँगार लखायगो ;
तापर पौन प्रसंगन ते रज के कन धूम के धार सो छायगो।
त्यों ही कछारन मैं सरसौं के प्रसूनन पै जरदी दरसायगो,
हाय दई हरिदास न आए वसंत बिसासी कसाई सो आयगो।

नाम—(२३५६) नकछेदी तेवारी (उपनाम अजान कवि)

ग्रंथ—(१) कविकीर्तिकलानिधि, (२) मनोजमंजरीसंग्रह, (३) भँड़ौआसंग्रह, (४) वीरोल्लास, (५) खड्गावली, (६) होरीगुलाल, (७) लछिराम की जीवनी।

जन्मकाल—१९१६ ।
कविताकाल—१९४० ।
विवरण—ये महाशय हरदोई ग्राम निवासी त्रिपाठी थे। इन्होंने स्फुट काव्य तथा गद्य रचना की और बहुत-सी साहित्य-संबंधी पुस्तकें भी प्रकाशित कराईं। आपने कवि-कीर्तिकलानिधि-नामक ग्रंथ भी रचा, जिसमें भाषा के कवियों का हाल और ग्रंथ इत्यादि लिखे। यह ग्रंथ विशेषतया शिवसिंहसरोज के आधार पर लिखा गया। आपके भाषा-प्रेम और गवेषणा आदरणीय थे। थोड़े दिन हुए आपका देहावसान हो गया।

परभात लौं केलि करी ललना बगरे कच पेंचिन ज्यौं छहरैं ;
रसराती उनींदी भईं अँखियाँ रद लागे कपोलन मैं छहरैं ।
दरकी अँगिया मैं उरोज लसैं कट तापै प्रभात परी लहरैं ;
मनौ केसरि कुंभ के शृंग पै सुंदर साँपिनि के चेटुवा विहरैं ।

(२३५८) रामकृष्ण वर्मा

इनका जन्म संवत् १९१६ में, काशीपुरी में, हुआ था। इनके पिता हीरालाल वर्मा थे। रामकृष्णजी ने बी० ए० तक पढ़ा था, पर आप उस परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सके। ये गद्य और पद्य दोनों के लेखक थे। इन्होंने १९५० में भारतजीवन पत्र निकाला। इनके भारतजीवन-प्रेस में कविता के अच्छे-अच्छे ग्रंथ छपे, पर ये उनका मूल्य अधिक रखते थे। नाटकों की भी रचना इन्होंने की है। इनका शरीर-पात संवत् १९६२ में हो गया। इनके रचित तथा अनुवादित ग्रंथ ये हैं—

(१) कृष्णकुमारी नाटक, (२) पद्मावती नाटक, (३) वीर नारी, (४) अकबर उपन्यास, प्रथम भाग, (५) ठगवृत्तांत-माला, (६) कथासरित्सागर, १२ भाग संपूर्ण, (७) पोस्टेडुक

वृत्तांतमाला, (८) ठग-वृत्तांतमाला, चार भाग, (९) पुलीस-वृत्तांतमाला, (१०) भूतों का मकान, (११) स्वर्णबाई उपन्यास, (१२) संसारदर्पण, (१३) बलवीरपचासा, (१४) विरहा, (१५) ईसाईमत-खंडन, (१६) चित्तौरचातकी।

नाम—(२३५८) जानकीप्रसाद पँवार, जोहवेनकटी, ज़िला रायबरेली।

ग्रंथ—(१) शाहनामा (उर्दू में भारत का इतिहास), (२) रघुवीरध्यानावली, (३) रामनवरत्न, (४) भगवती-विनय, (५) रामनिवास रामायण, (६) रामानंद-विहार, (७) नीति-विलास।

कविताकाल—१९४०।

विवरण—इनकी कविता उत्कृष्ट यमक एवं अन्य अनुप्रास-युक्त है। इनकी गणना तोष की श्रेणी में है—

वंदत अनंदकंद कीरति अमंद चंद,
दरन कुफंद वृंद घायक कुमति के,
सिधि-बुधि-दायक विनायक सकल लोक,
सो हैं सब लायक त्यों दायक सुमति के।
कोमल अमल अति अरुन सरोज ओज,
लजित मनोज बरदानि सुभ गति के;
विघनहरन मुद मंगल करनहार,
असरन सरन चरन गनपति के।

(२३५९) लालविहारी मिश्र (उपनाम द्विजराज)

ये महाशय प्रसिद्ध कवि लेखराज, गँधौली, ज़िला सीतापूर निवासी के बड़े पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १९१५ के लगभग हुआ था और संवत् १९६२ में इनका स्वर्गवास हुआ। इनके दो पुत्र और एक कन्या विद्यमान हैं, पर उनका ध्यान कविता की ओर नहीं है।

द्विजराजजी बाल्यावस्था से ही कविता के प्रेमी थे और इन्होंने सदैव उत्तम छंद बनाने की ओर ध्यान रक्खा। इनकी कविता परम सरस और गंभीर भावों से भरी होती थी। और इनकी भाषा सानुप्रास, मनोहर, एवं टकसाली होती थी। इनके ग्रंथ अभी मुद्रित नहीं हुए हैं, पर वे इनके पुत्रों के पास सुरक्षित हैं। वे सब ग्रंथ इस समय हमारे पास मौजूद हैं। इनके नाम ये हैं—श्रीरामचंद्रनखशिख, दुर्गास्तुति, भव्यार्णवलहरी, वासुदेवपंचक, नामनिधि, प्यारीजू को शिखनख, वर्णमाला, विजयमंजरीलतिका, विजयानंदचंद्रिका और स्फुट काव्य। दुर्गास्तुति, भव्यार्णवलहरी। विजयमंजरीलतिका और विजयानंदचंद्रिका में दुर्गादेवी की स्तुति की गई है और शत्रु विनाश की प्रार्थना भी है। नामनिधि और वर्णमाला में इन्होंने प्रत्येक अक्षर लेकर अखरावट की भाँति उस पर रचना की है। ये ग्रंथ अपूर्ण हैं। इनके ग्रंथ आकार में सब छोटे छोटे हैं, और कुल मिलाकर इनकी रचना प्रायः २०० पृष्ठों की होगी। पर इन्होंने थोड़ा बनाकर आदर-णीय तथा सारगर्भित कविता करने का प्रयत्न किया, और उसमें ये सफल-मनोरथ भी हुए। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रक्खेंगे।

फरकै लगीं राजन-सी अँखियाँ भरि भावन भौंहैं मरोरै लगीं;
अँगिरात कछू अँगिया की तनी छवि छाकि छिनौ छिन छोरै लगीं।
बलि जैये परे द्विजराज कहैं मन मौज मनोज हलोरै लगीं;
बतियान में आनँद घोरै लगीं दिन द्वै ते पियूष निचोरै लगीं।
सनि संगम देवन देस हुतै लखि वारिज भौंर लजाने रहैं;
बिमलै न प्रवाल कै बिंब जपा गहराई कै ओगन खाने रहैं।
अरुनाई सियावर पाँयन ते उपमान सबै अपमाने रहैं,
द्विजराज जू देखौ दिनेस भजौ करनोपज भाव गुमाने रहैं।

(२३६०) सुधाकर द्विवेदी महामहोपाध्याय

इनका जन्म संवत् १९१७ में, काशीपुरी में, हुआ और उसी पुरी

में १६६७ में अकस्मात् इनका शरीर-पात हो गया। ये ज्योतिष के बहुत बड़े पंडित थे, और भाषा एवं संस्कृत का बहुत अच्छा ज्ञान रखते थे। इनकी कीर्ति विलायत तक फैली थी। इन्होंने १७ ग्रंथ हिंदी में रचे। ये कुछ कविता भी करते थ और गद्य के बहुत भारी लेखक थे। जायसी की पद्मावत बड़े श्रम से इन्होंने संपादित की थी। ये सरल हिंदी के पक्षपाती थे। काशी-नागरीप्रचारिणी सभा के आप सभापति भी रहे हैं।

(२३६१) रामशंकर व्यास (पंडित)

आपका जन्म संवत् १६१७ में हुआ था। आपने कई स्थानों पर नौकरी की और २५०) मासिक पर एक रियासत के मैनेजर रहे। आपने कई वर्ष कविवचनसुधा और आर्यमित्र का संपादन किया। आप भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र के अंतरंग मित्रों में थे। और उन्हें वह उपाधि पहले इन्हीं ने दी थी। व्यासजी ने खगोल-दर्पण, वाक्यपंचाशिका, नैपोलियन की जीवनी, बात की करामात, मधुमती, वेनिस का बाँका, चंद्रास्त, नूतनपाठ, और राय दुर्गाप्रसाद का जीवनचरित्र-नामक ग्रंथ रचे। आप गद्य के एक अच्छे लेखक थे।

(२३६२) जामसुता जाड़ेचीजी श्रीप्रताप बाला

ये महारानी जामनगर के महाराज रिड़मलजी की राजकुमारी तथा जोधपुर के भूतपूर्व महाराज श्रीतख़्तसिंह की महारानी थीं। इनका जन्म संवत् १८६१ और विवाह संवत् १६०८ वैक्रमीय में हुआ था। ये बड़ी ही उदारहृदया और प्रजा को पुत्रवत् माननेवाली थीं। इन्हें स्वधर्म पर बड़ी ही श्रद्धा थी। इन्होंने अकाल में बड़ी उदारता से भोजन वितरण किया था और कई मंदिर भी बनवाए। यद्यपि काल की कराल गति से इनको कई स्वजनों की अकाल मौत के असह्य दुःख भोगने पड़े, तथापि इन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा और धर्म पर अपना पूर्व-वत् विश्वास दृढ़ रक्खा। ये बड़ी विदुषी थीं और इन्होंने बहुत

स्फुट भजन बनाए हैं। इनके बहुत-से पद "प्रतापकुँवरि रत्नावली"-नामक पुस्तक में छपे हैं। इनकी रचना बहुत सरस और भक्तिपूर्ण है, और वह सुकवियों कृत कविता की समानता करती है। उदाहरणार्थ इनके दो पद उद्धृत किए जाते हैं—

प्यारी लागे सुंदर री स्याम सुजान। (टेक)
मंद-मंद मुख हास बिराजै कोटिन काम लजान;
अनियारी अँखियाँ रसभीनी बाँकी भौंह कमान।
दाड़िम दसन अधर अरुनारे बचन सुधा सुख खान;
जानसुता प्रभु सों कर जोरे हौ मम जीवन प्रान।

दरस मोहि देहु चतुरभुज स्याम। (टेक)
करि किरपा करुनानिधि मोरे सफल करौ सब काम।
पाव पलक बिसरूँ नहिं तुमको याद करूँ नित नाम;
जानसुता की यही बीनती आनि बसौ उर धाम।

इनका कविताकाल १९४१ जान पड़ता है।

(२३६३) आर्यमुनिजी

इनका जन्म संवत् १९११ में हुआ था। आप दयानंद-ऐंग्लो-वैदिक कॉलेज, लाहौर के एक सुयोग्य अध्यापक हैं। वेदांतार्य-भाष्य, गीताप्रदीप और न्यायार्य-भाष्य ग्रंथ आपके निर्मित किए हुए हैं।

(२३६४) महेश

राजा शीतलाबख्शबहादुरसिंह उपनाम महेश बस्ती के राजा थे। ये महाशय कवियों के बड़े आश्रयदाता थे और कवि लछिराम का इनके यहाँ बड़ा सत्कार था। इनका शृंगार-शतक-नामक एक ग्रंथ हमारे देखने में आया है। ये संवत् १९४१ के लगभग तक जीवित थे। इनकी कविता अच्छी हुई है। हम इनको साधारण श्रेणी में रखते हैं।

सुनि बोल सुहावन तेरे अटा यह टेक हिये में धरौं पै धरौं,
मढ़ि कंचन चोंच पखौवन मैं मुकताहल गूँदि भरौं पै भरौं।
सुख-पींजर पालि पढ़ाय घने गुन-औगुन कोटि हरौं पै हरौं,
बिछुरे हरि मोहिं महेश मिलैं तोहिं काग ते हंस करौं पै करौं ॥१॥

(२३६५) प्रतापनारायण मिश्र

इनके पिता का नाम संकटाप्रसाद था। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण बैजेगाँव, ज़िला कानपूर के मिश्र थे। इनका जन्म संवत् १९१३ आश्विन शुक्ल ९ को हुआ। इन्होंने पहले अपने पिता से कुछ संस्कृत पढ़ी, फिर स्कूल में नागरी तथा अँगरेज़ी की शिक्षा पाई और उसी के साथ-साथ उर्दू और फ़ारसी का भी अभ्यास किया। इनका मन पढ़ने में नहीं लगता था, अत. ये कोई भाषा भी अच्छी तरह नहीं पढ़ सके। हिंदी पर इनका विशेष प्रेम था और जातीयता भी इनमें कूट-कूटकर भरी थी। ये गो-भक्त भी बड़े थे, और हरिश्चंद्रजी को पूज्य दृष्टि से देखते थे। काँगरेस के ये बड़े पक्षपाती थे। इनका मत यह था कि—चहहु जु साँचौ निज कल्यान, तौ सब मिलि भारतसंतान। जपौ निरंतर एक जबान; हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान। काव्य करना इन्होंने ललित त्रिवेदी मल्लावाँ-निवासी से सीखा था।

ये महाशय एक उत्तम कवि और बड़े ही ज़िंदादिल मनुष्य थे। प्रतिभा इनमें बहुत ही विलक्षण थी। इनका स्वर्गवास संवत् १९५१ में, ३८ वर्ष की अवस्था में, हो गया। ये महाशय मज़ाक़ की कविता बहुत चटकीली करते थे, जो कभी-कभी ग्रामीण भाषा में भी होती थी। 'अरे बुढ़ापा तोहरे मारे अब तौ हम नकन्याय गयन' आदि इनके छंद बड़े मनोहर हैं। ये कानपुर में रहते थे और इन्होंने ब्राह्मण-नामक एक पत्र भी सन् १८८३ से निकाला था, जो दस वर्ष तक चलता रहा। इनके रचित तथा अनुवादित निम्न-लिखित ग्रंथ हैं—पर कोई बृहत् ग्रंथ बनाने के पहले ही ये

को अस तुम बिन दूसर जेहिका गोबर लगे पवित्तर होय ॥ ४ ॥

× × ×

आगे रहे गनिका गज गीध सुतौ अब कोऊ दिखात नहीं हैं;
पाप-परायन ताप भरे परताप समान न आन कहीं हैं।
हे सुख-दायक प्रेमनिधे जग यों तौ भले औ बुरे सबहीं हैं,
दीनदयाल औ दीन प्रभो तुमसे तुमही हमसे हमहीं हैं ॥ ५ ॥

× × ×

सिर चोटी गुँधावती फूलन सों मेहँदी रचि हाथन पावन मैं,
परताप त्यों चूनरी सूही सजी मनमोहनो हावन भावन मैं।
निसि द्योस बितावतीं पीतम के सँग झूलन मैं औ झुलावन मैं,
उनही को सुहावन लागत है धुरवान की धावन सावन मैं ॥ ६ ॥

अनुवादित ग्रंथ—(१) राजसिंह, (२) इंदिरा, (३) राधारानी, (४) युगलागुरीय (वंकिमचंद्र के बँगला उपन्यासों से), (५) चरिताष्टक, (६) पचामृत, (७) नीतिरत्नावली, (८) कथामाला, (९) संगीत शाकुंतल, (१०) वर्ण-परिचय, (११) सेनवंश, (१२) सूबे बंगाल का भूगोल।

रचित ग्रंथ—(१) कलिकौतुक (रूपक), (२) कलिप्रभाव (नाटक), (३) हठी हमीर (नाटक), (४) गोसंकट (नाटक), (५) जुआरी खुवारी (प्रहसन), (६) प्रेमपुष्पावली, (७) मन की लहर, (८) शृंगारविलास, (९) दंगलखंड (आल्हा), (१०) लोकोक्तिशतक, (११) तृप्यताम्, (१२) ब्रैडला-स्वागत, (१३) भारतदुर्दशा (रूपक), (१४) शैव-सर्वस्व, (१५) मानस विनोद, (१६) सौंदर्यमयी।

संगृहीत ग्रंथ—(१) रसखानशतक, (२) प्रतापसंग्रह।

उर्दू का ग्रंथ—(१)दीवान बिरहमन।

(२२६६) जगन्नाथप्रसाद (भानु)

आपका जन्म श्रावण शुक्ल १० संवत् १९१६ को नागपूर में हुआ था। आप बिलासपूर मध्य-प्रदेश में असिस्टेंट बंदोबस्त अफ़सर रहे हैं; जहाँ आपको ७००) मासिक मिलता था, अब ये पेंशन पाते हैं। आप काव्य-विषय का बहुत अच्छा ज्ञान रखते हैं। पिंगल तथा सर्वांग काव्य के आप अच्छे ज्ञाता हैं। आपके रचित छंद प्रभाकर तथा काव्य-प्रभाकर इस बात के साक्षि-स्वरूप हैं। आप गद्य के अच्छे लेखक हैं, और पद्य-रचना भी अच्छी करते हैं। आपके रचित निम्न-लिखित ग्रंथ हैं। आप संस्कृत, हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, प्राकृत, उड़िया, मराठी, अँगरेज़ी आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं।

(१) छंद प्रभाकर, (२) काव्यप्रभाकर, (३) नवपंचामृत रामायण, (४) कालप्रबोध, (५) दुर्गा सान्वय भाषा टीका, (६) गुलज़ार सख़ुन उर्दू, (७) काव्य-कुसुमांजलि, (८) छंदसारावली, (९) हिंदी-काव्यालंकार, (१०) अलंकारप्रश्नोत्तरी, रसरत्नाकर, काव्यप्रबंध इत्यादि। गवर्नमेंट ने आपको रायसाहब की पदवी से विभूषित किया है।

छंद को प्रबंध त्योंही व्यंग्य नायकादि भेद,
　　उद्दीपन भाव अनुभाव पति बामा के;
भाव संचारी अलंकारो रस भूषन है,
　　दूषन अदूषन जे कविता ललामा के।
काव्य को विचार भानु लोक हित सार कीप,
　　काव्य परभाकर में साजि राख्यो नामा के;
कोविद प्रवीनन को कृपा मानि भेंट देत,
　　कर्णाधार कीजै धारि आदर सुदामा के॥ १॥

नाम—(२३६७) मानालाल (द्विजराम) त्रिवेदी, मल्हारगढ़,
　　ज़िला इन्दौर।

ग्रंथ—(१) साहित्यसिंधु, (२) नखशिख।

जन्मकाल—१९१७।

कविताकाल—१९४२।

मृत्युकाल—संवत् १९८३।

विवरण—आप सुकवि थे।

> कीधौं कंज मंजु ये बनाए हैं विरंचि जुग,
> लोचन भँवर हित मुदित मुरारी के;
> कीधौं पारिजात के हैं लोहित नवल पात,
> दुति दरसात यों प्रवाल लाल भारी के।
> कवि द्विजराम कीधौं पिय अनुराग लसै,
> देखि मन फँसै अति आनँद अपारी के,
> जावक जपा गुलाब आब के हरनहार,
> सोहत चरन वृषभानु की दुलारी के॥ १॥

(२३६८) शिवनंदनसहाय

आप आरा ज़िला अख़्तियारपूर ग्राम के क़ानूनगो-वंशी एक कायस्थ महाशय के यहाँ संवत् १९१७ में उत्पन्न हुए। अँगरेज़ी में एंट्रेंस पास करके आपने दीवानी में नौकरी कर ली थी। आप फ़ारसी भी अच्छी तरह जानते हैं। आप गद्य तथा पद्य के प्रसिद्ध और अच्छे लेखक हैं। नाटक-रचना भी आपने की है। आपका रचित हरिश्चंद्र-जीवन-चरित्र हमने देखा है। यह बड़ा ही प्रशंसनीय ग्रंथ है। भाषा में शायद इससे अच्छे जीवन-चरित्र कम होंगे। आपकी भाषा और समालोचना बहुत अच्छी होती है एवं कविता भी आपने अच्छी की है। आपके रचित ग्रंथ ये हैं—

(१) बंगाल का इतिहास, (२) विचित्र संग्रह स्वरचित पद्य, (३) कविताकुसुम (पद्य), (४) सुदामा नाटक (गद्य-पद्य), (५) कृष्ण-सुदामा (पद्य), (६) भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र की

जीवनी, (७) बाबू साहबप्रसादसिंह की जीवनी, (८) श्रीसीता-रामशरण भगवानप्रसाद की जीवनी, (९) बाबा सुमेरसिंह साहबज़ादे की जीवनी, (१०) गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी।

आप उर्दू की भी शायरी करते और समस्यापूर्ति भी मंडलों और समाजों में भेजते हैं।

(२३६९) उमादत्तजी (उपनाम दत्त)

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण दरबार अलवर के कवियों में हैं। आपकी अवस्था इस समय लगभग ६० साल की होगी। इनकी कविता बड़ी ही सरस तथा सोहावनी होती है।

उदाहरण—

गेह ते निकसि बैठि बेंचत सुमनहार,
　　देह-दुति देखि दीह दामिनि लजा करै;
मदन उमग नव जोबन तरंग उठैं,
　　बसन सुरंग अंग भूषन सजा करैं।
दत्त कवि कहै प्रेम पालत प्रवीनन सों,
　　बोलत अमोल बैन बीन-सी बजा करै;
गजब गुजारत बजार मैं नचाय नैन,
　　मंजुल मजेज भरी मालिनि मजा करै॥ १॥

मूछि जाती सौतैं सब दीरघ दिमाक देखि,
　　रसिक बिलोकि होत बिकल निहारे मैं;
भरत न भारं थकै गारुड़ बिचारे जरी,
　　जंत्र-मंत्र बिबिध प्रकार उपचारे मैं।
दत्त कवि कहै मन धरत न धीर धरौं,
　　ऐसे बसैं कुटिल कटाच्छ कुमकारे मैं;
बिषधर भारे नाग कारे नैन नागिनि के,
　　काटि छिपि जात हाय पलक पिटारे मैं॥ २॥

(२३७०) रामनाथजी कविराव बूँदी

ये कविराव गुलाबसिंह के भतीजे तथा दत्तक पुत्र हैं। आप संस्कृत तथा भाषा के अच्छे पंडित और कवि, दरबार बूँदी के आश्रित हैं। कविता अच्छी करते हैं। इस समय आपकी अवस्था लगभग ६० वर्ष की होगी। आपने छोटे बड़े ११ ग्रंथ बनाए, जिनके नाम समस्यासार, सती-चरित्र, रामनीति, नीतिसार, शंभुशतक, परमेश्वराष्टक, गणेशाष्टक, सूर्याष्टक, दुर्गाष्टक, शिवाष्टक, और नीति-शतक हैं।

उदाहरण—

वदन वलित अति मंडित विचित्र भाल,
    तम के समूह सम भ्रात गिरिराज के;
मदजल भरत चलत लचकत भूमि,
    पर दल मलत सुनत गल गाज के।
कहै रामनाथ भननात भौंर चारौ ओर,
    लखि अभिलाख होत मन सुख साज के;
कज्जल ते कारे बलवारे दिग दंतिन ते,
    उन्नत दतारे भारे रामसिंह राज के॥ १॥

(२३७१) सीताराम बी० ए०, (उपनाम भूप कवि)

ये महाशय कायस्थ-कुलोद्भव अयोध्या-निवासी लाला शिवरत्न के पुत्र हैं। इन्होंने बी० ए० पास करके फ़ैज़ाबाद स्कूल में द्वितीय शिक्षक का पद ग्रहण किया। थोड़े दिनों के पीछे आप डेपुटी-कलेक्टर नियत हुए और आजकल पेंशनर हैं। इनकी अवस्था प्राय ७० वर्ष की है। ये महाशय संस्कृत और भाषा के अच्छे विद्वान् हैं, और इनकी प्रकृति ऐसी श्रमशील रही है कि ये अपने सरकारी कार्य के अतिरिक्त देशोपकारार्थ भी कुछ-न-कुछ लिखा ही करते हैं। इन्होंने संवत् १९४३ तक कालिदास कृत रघुवंश के सात सर्गों का भाषा-

नुवाद किया था और फिर संवत् १९४९ में उसे पूर्ण किया। फिर क्रमशः इन्होंने कालिदास-कृत मेघदूत, कुमारसम्भव, ऋतुसंहार और शृंगारतिलक का अनुवाद किया। रघुवंश और कुमारसम्भव की रचना दोहा-चौपाइयों में, मेघदूत की घनाक्षरियों में, और शेष दोनों छोटे-छोटे ग्रंथों की विविध छंदों में हुई है। इस कवि ने कालिदास की कविता का चमत्कार लाने का उतना प्रयत्न नहीं किया जितना कि सीधी-सादी कथा कहने का। इसी कारण योरपियन समालोचकों ने तो इनकी मुक्त-कंठ से प्रशंसा की, परन्तु हिंदी के सब समालोचकों ने इनकी कविता को उतना पसंद नहीं किया। इन्होंने कविसम्मानित शब्दों को विशेष आदर नहीं दिया है, और जहाँ ऐसे शब्द आ सकते थे, वहाँ भी कहीं-कहीं अप्रयुक्त शब्द रख दिए हैं। यह भी एक कारण था जिससे कि कविजनों ने इनकी कविता बहुत पसंद नहीं की। इन्होंने कालिदास की रीति पर प्रत्येक एक अध्याय में एक ही छंद रक्खा है और जैसे अंत के दो-एक छंदों में कालिदास ने छंद बदल दिए हैं, उसी तरह इन्होंने भी किया है। यह रीति आदरणीय है, परंतु बहुत उत्कृष्ट काव्य न होने से एक ही छंद लिखने से वर्णन प्रायः अरुचिकर हो जाता है। इन सब बातों के होते हुए भी इन्होंने परिश्रम बहुत किया है और संस्कृत से अनभिज्ञ पाठकों का इनके ग्रंथों द्वारा उपकार अवश्य हुआ है। इन सब ग्रंथों में कोई विशेष दोष नहीं है, और इनकी भाषा श्रुतिकटु-दोष से रहित और मधुर है। इन सबमें मेघदूत और ऋतुसंहार की रचना अच्छी है। हमारे लाला साहब ने संस्कृत के कुछ नाटकों का भी उल्था किया है, जिनमें से मृच्छकटिक, महावीरचरित, उत्तर रामचरित, मालतीमाधव, मालविकाग्नि मित्र, और नागनंद हमने देखे हैं। इनकी रचना गद्य और पद्य दोनों में हुई है। हमको इनके अन्य ग्रंथों की अपेक्षा नाटक-रचना

अधिक रुचिकर हुई। गद्य में इन्होंने खड़ी बोली का प्रयोग किया है, और वह सर्वथा आदरणीय है। गद्य में हम लाला साहब को उत्तम लेखक समझते हैं। दोहा-चौपाइयों में इन्होंने अवध की भाषा का प्राधान्य रक्खा है, परंतु घनाक्षरी आदि में अवधी और ब्रजभाषा का मिश्रण कर दिया है। इन्होंने पद्य में खड़ी बोली का प्रयोग नहीं किया। इन महाशय ने गद्य के भी ग्रंथ लिखे हैं, जिनमें सावित्री का वर्णन हमारे पास मौजूद है। आपने और भी बहुत-से छोटे-छोटे ग्रंथ बनाए हैं, जिनको यहाँ लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है, इधर इन्होंने कलकत्ता-विश्वविद्यालय के लिये हिंदी कविता का एक विशाल और उत्कृष्ट संग्रह तैयार किया है। इनकी गणना हम मधुसूदनदास की श्रेणी में करते हैं। उदाहरणार्थ इनके कुछ छंद नीचे लिखे जाते हैं—

महाकाल जो बसत महेसा, यह रहि तासु समीप नरेसा।
पाख अँधेरेहु करत बिहारा, शुक्लपक्ष सुख लहत अपारा॥ १॥

राखत सँयोग आस प्रान सों पियारि आजु,
करहुँ मनोरथ अनेक जिय धीर धरि;
आपन सोहाग मम जीवन अधार जानि,
होहु ना निरास कछु चित्तहि उदास करि।
यहि जग कौन सुख भोगत सदैव भूप,
काहि पुनि दुःख एक रहत जनम भरि,
ऊपर उठावत गिरावत धरनि पर,
चक्र-कोर-सरिस नचावत सबहिं हरि॥ २॥

सुनत अप्सरन गीत मनोहर, भए समाधि भंग नहिं शंकर,
जिन-निज चित्त-वृत्ति धरि साधी। सकै तोरि को तासु समाधी॥ ३॥

बन लगत डाढ़ा प्रबल चहुँ दिसि भूमि सब लखियत जरी;
लू चलत इत-उत उड़त सूखे पात रूखन सन झरी।

दिननाथ तेज प्रचंड यस नहिं नीर देखिय ताल में ;
दर लगत देखत बन सकल यहि कठिन ग्रीषम काल में ॥ ४ ॥

नाम—(२३७२) फ़तेहसिंहजी (चंद) राजा, पवाँया, जिला शाहजहाँपूर ।

ग्रंथ—(१) चंद्रोपदेश, (२) वर्णव्यवस्था, (३) फलित ज्योतिष सिद्धांत, (४) प्लेग-प्रतिकार, (५) स्फुट काव्य, समस्यापूर्ति इत्यादि ।

कविताकाल—वर्तमान ।

विवरण—ये पवाँया के राजा हैं । कविता अच्छी करते हैं और काव्य तथा कवियों के बड़े प्रेमी हैं । आपकी अवस्था इस समय लगभग ६५ साल के होगी । यह ग्रंथ हमने देखे हैं । इनके अतिरिक्त शायद आपके और भी ग्रंथ हों ।

(२३७३) बलवंतराव

ये सेंधिया (प्रिंस) ग्वालियर-निवासी हैं । ये भी हिंदी गद्य लिखते हैं । आपका एक लेख सरस्वती पत्रिका की पुरानी संख्या में है । आपकी अवस्था इस समय लगभग ६४ साल के होगी ।

(२३७४) सूर्यप्रसाद मिश्र

ये सकतपुर ज़िला फ़र्रुख़ाबाद के निवासी हैं । आप हिंदी के अच्छे व्याख्यानदाता एवं आर्य-समाजी हैं । आपने कान्यकुब्ज सभा के हित में विशेष यत्न किया, और बहुत-से लेख भी लिखे । कुछ दिन के लिये आप मार्तंडानंद नाम धारण करके फ़क़ीर भी हो गए थे, परंतु अब फिर गृहस्थ हैं । आपकी अवस्था प्राय: ६४ वर्ष की होगी । नुस्राग की मृत्यु और मार-पूजा-नानक दो ग्रंथ आपके हैं ।

(२३७५) दीनदयालु शर्मा व्याख्यान-वाचस्पति

ये भारतधर्ममहामंडल के सबसे बड़े व्याख्यानदाता हैं । आपकी वाणी में बड़ा बल है, और आप बहुत उत्तम व्याख्यान देते हैं । भार-

की अवस्था प्रायः ७० वर्ष की होगी। आपने घूम-घूमकर भारत में सभी प्रांतों में व्याख्यान दिए हैं, और अच्छी सफलता प्राप्त की है।

(२३७६) महावीरप्रसाद द्विवेदी

द्विवेदीजी का जन्म १६२१ मे हुआ था। आप दौलतपूर, ज़िला रायबरेली के निवासी हैं। आप पहले जी० आई० पी० रेल के झाँसी में हेडक्लॉर्क थे, जहाँ आपका मासिक वेतन १५०) था, परतु हिंदी प्रेम के कारण आपने वह नौकरी छोड़कर संवत् १६६० से सरस्वती का सपादन आरभ किया, और तब से बराबर बड़ी योग्यता से आप उसे सं० १६७६ तक चलाते रहे। आपके सपादकत्व में सरस्वती ने बड़ी उन्नति की है। केवल एक साल अस्वस्थता के कारण आपने इस काम से छुट्टी ले ली थी। हिंदी की उन्नति का कार्य आप सदैव बड़े उत्साह से करते रहे। दो साल से आपने अस्वस्थ रहने के कारण सरस्वती का काम छोड़ दिया है, फिर भी कुछ-न-कुछ लोग इनसे लिखवा ही लेते हैं। आपने अपना अमूल्य पुस्तकालय नागरीप्रचारिणी सभा को दान कर दिया है, और अपनी संपत्ति का भी एक भाग हिंदी-प्रचार के लिये नियत कर दिया है। कुछ लोगों का विचार है कि आप वर्तमान समय में सर्वोत्कृष्ट गद्य-लेखक हैं। आपने बहुतेरे छोटे-बड़े ग्रंथों का गद्यानुवाद किया है। आपने कई समालोचना-ग्रंथ भी लिखे हैं, जिनमें नैषधचरितचर्चा और विक्रमांकदेवचरितचर्चा प्रधान हैं। कालिदास की भी समालोचना आपने लिखी है। आपने खड़ी बोली की कुछ कविता भी की है, जो प्राय. २०० पृष्ठों के ग्रंथ-स्वरूप में छपी है। आजकल आप अपने जन्म-स्थान दौलतपूर में रहते हैं। आपके ग्रंथों में हिंदी-भाषा की उत्पत्ति, शिक्षा, सपत्तिशास्त्र, वेकनविचाररत्नावली, स्वतन्त्रता, सचित्र हिंदी-महाभारत, जलचिकित्सा आदि हमने देखे हैं। इधर आपके लेखों के कुछ पुस्तकाकार सग्रह और निकले हैं।

प्रेम और प्रचुर प्रीति से किया है।" इनकी कविता अच्छी है। इनकी गणना मधुसूदनदास की श्रेणी में की जाती है। उदाहरणार्थ दो छंद नीचे दिए जाते हैं—

अविगत आनँदकंद, परम पुरुष परमात्मा ;
सुमिरि सु परमानंद, गावत कछुक हरि-जस विमल ॥ १ ॥
भगत हृदय सुखदैन, प्रेम पूरि पावन परम ;
लहत श्रवन सुनि बैन, भववारिधि तारन तरन ॥ २ ॥

(२३७९) ज्वालाप्रसाद मिश्र

इनका जन्म संवत् १६१६ में, मुरादाबाद में, हुआ था। ये महाशय संस्कृत तथा हिंदी के बहुत अच्छे विद्वान् थे और स्वतंत्र ग्रंथ तथा अनुवाद मिलाकर कितने ही ग्रंथ इन्होंने बनाए। भारतधर्म-महामंडल के ये उपदेशक थे और मंडल ने इन्हें विद्यावारिधि एवं महोपदेशक की उपाधियाँ प्रदान की थीं। हिंदी में ये महाशय बहुत उत्तमतापूर्वक धारा बाँधकर व्याख्यान देते थे और सारे भारत में घूम-घूमकर सनातनधर्म पर व्याख्यान देना इनका काम था। कई सभाओं में आर्य-समाजी पंडितों से इन्होंने शास्त्रार्थ में जय पाई। आपने शुक्ल यजुर्वेद पर 'मिश्रभाष्य'-नामक एक विद्वत्तापूर्ण टीका रची। इसके अतिरिक्त तीस उत्कृष्ट संस्कृत ग्रंथों का आपने भाषानुवाद भी किया। तुलसी-कृत रामायण एवं बिहारी-सतसई की टीकाएँ भी पंडितजी की प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त दयानंदतिमिरभास्कर, जातिनिर्णय, अष्टादशपुराण, सीतावनवास नाटक, भक्तमाल आदि कई अच्छी पुस्तकें भी इन्होंने लिखीं। इनकी विद्वत्ता तथा लेखनशक्ति बड़ी प्रशंसनीय है। कुछ दिन हुए आपका स्वर्गवास हो गया।

(२३८०) माननीय मदनमोहन मालवीय

इन महानुभाव का जन्म संवत् १६१६ में, प्रयाग में, हुआ था।

आपने २२ वर्ष की अवस्था में बी० ए० पास किया और संवत् १९४४ से आठ वर्ष हिंदोस्थान-नामक हिंदी दैनिक पत्र का संपादन किया। इस पत्र के लेख देखने से मालवीयजी की हिंदी की योग्यता का परिचय मिलता है। संवत् १९४९ में आपने एल्० एल्० बी० परीक्षा पास कर ली और तभी से आप प्रयाग हाईकोर्ट में वकालत करते थे। आपने वकालत में लाखों रुपए पैदा किए और फिर भी देश हित की ओर प्रधानतया ध्यान रक्खा। आप छोटे तथा बड़े लाट की सभाओं के सभ्य हैं और युक्तप्रांतों के राजनीतिक विषय में नेता हैं। १९६६ में लाहौर की कांग्रेस के आप सभापति हुए थे। प्रयाग में हिंदू-बोर्डिंग-हाउस केवल आपके प्रयत्नों से बन गया। आपने सदैव लोकहित-साधन को अपना एकमात्र कर्तव्य माना है, और वकालत से बहुत अधिक ध्यान इस ओर रक्खा है। अब आप वकालत छोड़कर लोक-हित ही में लगे रहते हैं। आप अँगरेज़ी के बहुत बड़े व्याख्यान-दाताओं में हैं और शुद्ध हिंदी में धारा-प्रवाह उत्तम व्याख्यान आपके बराबर कोई भी नहीं दे सकता। वर्तमान समय के बड़े-बड़े व्याख्यानदाताओं के व्याख्यानों में हमें बहुधा मूर्खतोत्पादिनी जिह्वा ही देख पड़ी, पर मालवीयजी के व्याख्यानों में पंडित-मोहिनी जिह्वा पूर्ण-रूपेण पाई जाती है। आपका जन्म धन्य है और आपका नाम वास्तव में सार्थक है। मालवीयजी ने कोई हिंदी का ग्रंथ नहीं रचा, पर आप लेखक बहुत अच्छे हैं। हिंदू-विश्वविद्यालय आप ही के परिश्रम का फल है। आप जिस समय इसका चंदा करने निकलते हैं तब लाखों ही रुपए इकट्ठे कर लाते हैं। ईश्वर आपको चिरायु करे।

(२३८९) माधवप्रसाद मिश्र

ये कूंगड़ जिला रोहतक के निवासी थे। आप १८ साल हुए करीब ४० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवासी हुए। आप सुदर्शन मासिक पत्र के संपादक और गद्य हिंदी के बड़े ही प्रबल लेखक थे। आपने

कुछ छंद भी कहे हैं। आपने दर्शन-शास्त्र पर दो-एक लेख लिखे थे और स्फुट विषयों पर अनेकानेक गभीर प्रबंध रचे। आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे और प्राय गंभीर विषयों ही पर लेख लिखते थे। आपका रहना विशेषतया काशी में होता था। आपकी अकाल मृत्यु से हिंदी को बड़ी हानि हुई।

(२३८२) जुगुलकिशोर मिश्र, (उपनाम व्रजराज कवि)

आपका जन्म संवत् १९१८ में, गँधौली, ज़िला सीतापूर में, हुआ था। आपके पिता पंडित नंदकिशोर मिश्र उपनाम लेखराज एक परम प्रसिद्ध हिंदी के कवि थे। बाल्यावस्था में व्रजराजजी ने फ़ारसी तथा हिंदी पढ़कर अपने चचा बनवारीलालजी से कविता सीखी, जो महाशय रचना तो नहीं करते थे, परंतु दशांग कविता में बड़े ही निपुण थे। लेखराजजी साधारणतया एक बड़े ज़िमींदार थे। इनकी प्रथम स्त्री से द्विजराज का जन्म हुआ और द्वितीय से व्रजराज और रसिकविहारी उपनाम साधू का। लेखराजजी रईसों की भाँति रहते थे और अपना प्रबंध कुछ भी नहीं देखते थे। इस कारण इनके ज्येष्ठ पुत्र द्विजराजजी सब प्रबंध करते थे। इनके बहुव्ययी होने के कारण सब आय उड़ जाती थी और कुछ ऋण भी हो गया। व्रजराजजी अच्छे प्रबंधकर्ता थे, सो ये बातें इनको बहुत अरुचिकारिणी हुईं। अत. अपने पिता से कहकर इन्होंने संपत्ति का प्रबंध अपने हाथ में ले लिया। इस बात से द्विज-राजजी से इनसे मनोमालिन्य हो गया, जो दिनोंदिन बढ़ते-बढ़ते प्रचंड शत्रुता की हद तक पहुँच गया। कभी इनके हाथ में प्रबंध रहता था, कभी द्विजराज के। इस प्रकार प्रबंध ठीक कभी न हुआ और ऋण बना ही रहा। कुछ दिनों में इन्हें पेशाब रुकने का रोग हो गया, जिससे ये मरणप्राय अवस्था को पहुँच गए। २८ वर्ष की अवस्था में डॉक्टर के शस्त्राघात से इनके प्राण बचे, परंतु रोग कुछ-

कुछ बना ही रहा। संवत् १९४९ में इनके पिता का स्वर्गवास हुआ। मृत्यु के पूर्व उन्होंने आधी रियासत द्विजराजजी को दे दी और आधी ब्रजराजजी एवं साधू को। ब्रजराजजी अपुत्र थे और साधू से इनसे विशेष मेल था, इसी कारण जेतराजजी ने ऐसा बटवारा किया कि उनके दोनों पुत्रवान् लड़कों के संतान अंत में आधा आधा पावें। अपने पिता के पीछे इन्होंने तो प्रबंध करके तीन ही वर्ष में सब अपने भाग का पैत्रिक ऋण चुका दिया, पर द्विजराजजी का ऋण बहुत बढ़ गया।

ब्रजराजजी ब्रजभाषा कविता में बड़े ही निपुण थे। हमने आज तक ऐसा हिंदी कविता-रीति निपुण मनुष्य नहीं देखा। सब कविता के जाननेवालों में रीति-नैपुण्य में हम इन्हीं को सिरे मानते हैं। बड़े-बड़े कविगण इनके शिष्य हैं। हममें से शुकदेवबिहारी मिश्र ने भी इन्हीं से कविता-रीति पढ़ी। सं० १९६९ में ये ऐसे अस्वस्थ हो गए थे कि इनको जीवन की आशा नहीं रही थी। उस समय इन्होंने साधू और शुकदेवबिहारी से यही कहा था कि "मरने का मुझे कुछ भी पश्चात्ताप नहीं है, परंतु केवल इतना खेद है कि मेरे पास जो कविता रत्न है वह तुममें से किसी ने न ले लिया और वह अब मेरे ही साथ जाता है।" ईश्वर ने इन्हें फिर नीरोग कर दिया और फिर ये पूर्ववत् अच्छे हो गए। केवल रोग का थोड़ा-सा खटका, जो इनका चिरसाथी था, वर्तमान रहा। इनके पास हस्त-लिखित हिंदी के उत्तम ग्रंथों का अच्छा संग्रह था। ग्रंथावलोकन का इन्हें अच्छा शौक था, पर ये स्वयं रचना बहुत नहीं करते थे। फिर भी समस्यापूर्ति आदि पर सैकड़ों छंद आपने बनाए हैं। समस्यापूर्ति के पत्रों का क्रम आप ही के अनुरोध से निकला था। आप साहित्य-पारिजात नामक एक उत्तम कविता का ग्रंथ बना रहे थे, जो पूर्ण नहीं हुआ था। देव-कृत शब्द-रसायन पर आप काव्यामृत-टिप्पणी भी लिखते थे।

दुर्भाग्य वश वह भी अपूर्ण ही रही। आपकी कविता बड़ी ही सरस होती थी और उसमें ऊँचे ऊँचे भाव बहुत रहते थे। हम इनकी गणना तोष की श्रेणी में करते हैं। सन् १६१७ में इनका भी शरीर-पात हो गया।

उदाहरण—

समुहातहि मैली प्रभा को धरैं नित नूतन आनि के फोरयो करैं,
सरसी ढिग जात मुँदेई लखात न या डर सों दग जोरयो करैं।
ब्रजराज हितै नभ ओर चितै नहि तू भरमै यो निहोरयो करैं,
तऊ आरसी कज मसी सकुचैं इनसों कवलौं मुख मोरयो करैं॥ १॥

सारी सिर वैंजनी मैं कचन बुटी की ओप,
मुकुत किनारी चहुँ ओरन गसत हैं,
जरवीली जरित जरी की जाफरानी पाग,
कोर मैं जमुरंदी जवाहिर लसत हैं।
रतन-सिंहासन पै दीन्हे गल वाहीं,
मुख-चंद मुसुकाय भवताप को नसत हैं,
या विधि अनद-भरे राधा ब्रजचद सदा,
दंपति चरण मेरे हिय मैं बसत हैं॥ २॥

(२३८३) गोपालरामजी गहमर, जिला गाजीपूर-निवासी

आपका जन्म १६१३ में हुआ था। आप हिंदी गद्य के प्रसिद्ध लेखक हैं। कई वर्षों से आप जासूस-पत्र के संपादक हैं। अच्छे उप-न्यास भी आपने कई लिखे हैं। चतुरचचला, माधवीककण, भानमती, सौभद्रा, नए वावू, मैं और मेरा दाता तथा अनेक जासूसी उपन्यास आपके वनाए हुए भाषा-ससार को चमत्कृत कर रहे हैं। आपका कविताकाल सवत् १६४५ से समझना चाहिए। आपकी बनाई हुई प्रायः १०० पुस्तकें हैं। चित्रागदा, सोना शतक तथा वसंतविकास-नामक तीन पद्य ग्रंथ भी आपने रचे हैं।

दुर्भाग्य वश वह भी अपूर्ण ही रही। आपकी कविता बड़ी ही सरस होती थी और उसमें ऊँचे ऊँचे भाव बहुत रहते थे। हम इनकी गणना तोष की श्रेणी में करते हैं। सन् १९१७ में इनका भी शरीर-पात हो गया।

उदाहरण—

समुहातहि मैली प्रभा को धरें नित नूतन आनि कै फोरयो करैं ;
सरसी ढिग जात मुँदेई लखात न या डर यों दृग जोरयो करैं।
ब्रजराज हितै नभ ओर चितै नहिं तू भरमै यों निहोरयो करैं,
तऊ आरसी कज ससी मकुचैं इनसों कचलों मुख मोरयो करैं ॥ १ ॥

सारी सिर बँजनी मैं कचन त्रुटी की ओप,
मुकुत किनारी चहुँ ओरन गसत हैं,
जरवीली जरित जरी की जाफरानी पाग,
कोर मैं जमुरंदी जवाहिर लसत हैं।
रतन सिंहासन पै दीन्हे गल बाहीं,
मुख-चद मुसुकाय भवताप को नसत हैं,
या विधि अनद-भरे राधा ब्रजचद सदा,
दंपति चरण मेरे हिय मैं बसत हैं ॥ २ ॥

(२३८३) गोपालरामजी गहमर, जिला गाजीपूर-निवासी

आपका जन्म १९१३ में हुआ था। आप हिंदी गद्य के प्रसिद्ध लेखक हैं। कई वर्षों से आप जासूस-पत्र के संपादक हैं। अच्छे उपन्यास भी आपने कई लिखे हैं। चतुरचचला, माधवीकंकण, भानमती, सौभद्रा, नए बाबू, मैं और मेरा दाता तथा अनेक जासूसी उपन्यास आपके बनाए हुए भाषा-ससार को चमत्कृत कर रहे हैं। आपका कविताकाल सवत् १९४९ से समझना चाहिए। आपकी बनाई हुई प्रायः १०० पुस्तकें हैं। चित्रांगदा, सोना शतक तथा वसंतविकास-नामक तीन पद्य ग्रंथ भी आपने रचे हैं।

उदाहरण—

जा कहँ रति कढ़ि पूत खिलाई, पय निज छातिन केर पिलाई।
सोई प्रद्युम्न-पती रति नारी; भाल लिखी लिपि को मक टारी।

(२३८४) ज्वालाप्रसाद वाजपेयी

इनका उपनाम भखजातक था। ये तार गाँव ज़िला उन्नाव के निवासी थे। आपका रचनाकाल संवत् १९४५ के लगभग समझ पड़ता है। आप साधारण श्रेणी के कवि थे।

(२३८५) अमृतलाल चक्रवर्ती

ये नावरा ज़िला चौबीस-परगना के निवासी संवत् १९२० में उत्पन्न हुए थे। आप एक प्रसिद्ध प्राचीन लेखक हैं और समय-समय पर हिंदी बंगवासी, वेंकटेश्वर एवं हिंदोस्तान का संपादन किया, तथा आपकी रची हुई पुस्तकों के नाम ये हैं—गीता की हिंदी-टीका, सिखयुद्ध, महाभारत, सामुद्रिक, गीत-गोविंद गद्यानुवाद, देश की बात, विलायत की चिट्ठी, भरतपुर का युद्ध, सती सुखदेई, हिंदू-विधवा और चंदा। आप धन्य हैं कि बंगाली होकर भी हिंदी पर इतना अनुराग रखते हैं। वृंदावन में होनेवाले सोलहवें साहित्य-सम्मेलन के सभापति आप ही थे।

(२३८६) श्रीधर पाठक

ये महाशय पक्की गली आगरा के रहनेवाले और नहर-विभाग में उच्च पदाधिकारी थे। अब पेंशन लेकर लूकरगंज प्रयाग में रहने लगे हैं। इनका जन्म १९१६ में हुआ था। ये बहुत दिनों से कविता करते हैं, और ऊजड़ ग्राम, हर्मिट (एंजिलाइना), श्रांतपथिक तथा एकांतवासी योगी-नामक चार ग्रंथ अँगरेज़ी कविता के पद्यानुवाद खड़ी बोली में बना चुके हैं, और अपनी स्फुट कविता का संग्रह-स्वरूप मनोविनोद-नामक एक ग्रंथ प्रकाशित कर चुके हैं। इसमें कुछ संस्कृत कविता के अच्छी व्रजभाषा में भी मनोहर अनुवाद हैं। आराध्य शोकांजलि, गोखले गुणाष्टक, गोखले प्रशस्ति, गोपिका गीत देहरादून, भारत गीत, घनाष्टक,

जगत सचाई-सार तथा पद्यसंग्रह-नामक इनकी नौ कविता-पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस तरफ़ कुछ और छोटे-छोटे ग्रंथ आपने रचे हैं। पाठकजी ने खड़ी वोली तथा व्रजभाषा दोनों की कविता परम विशद की है, और इनका श्रम सर्वतोभावेन प्रशंसनीय है। गद्य के भी लेख इनके अच्छे होते हैं। इन्होंने अपनी रचना में पद-मैत्री की प्रधानता रक्खी है, और कुछ चित्रकाव्य भी किया है। आपने प्राचीन शृंगार-रस-वर्णन की प्रणाली छोड़कर साधारण कामकाजी वातों का वर्णन अधिक किया है। उद्योग, परिश्रम, वाणिज्य आदि की प्रशंसा इनकी रचना में बहुत है। सामाजिक सुधारों पर भी इनका ध्यान है। इनकी रचना में अनुवादों की संख्या स्वतंत्र-रचना से बहुत अधिक है, पर इनके अनुवाद स्वतंत्र-रचनाओं का-सा स्वाद देते हैं। आप लखनऊ के साहित्य-सम्मेलन में प्रधान रह चुके हैं।

उदाहरण—

ए घन स्यामता लो मैं घनी तन विज्जु छटा को पितंवर राजै,
दादुर-मोर-पपीहा-मई अलवेली मनोहर बाँसुरी वाजै।
सो विधि सों नवला अवला उर आस विलास हुलास उपाजै;
जो कछु स्याम कियो व्रजमंडल सो सब तू भुवमंडल साजै ॥१॥

× × ×

उस कारीगर ने कैसा यह सुंदर चित्र बनाया है;
कहीं पै जलमै कहीं रेतमै कहीं धूप कहिं छाया है।

× × ×

नव जोबन के सुधा सलिल में क्या विष-बिंदु मिलाया है;
अपनी सौख्य वाटिका में क्या कंटक वृक्ष लगाया है ॥२॥
प्रानपियारे की गुन-गाथा साधु कहाँ तक मैं गाऊँ;
गाते-गाते नहीं चुकै वह चाहे मैं ही चुक जाऊँ ॥३॥

× × ×

चंचल जो सफरी फरकैं मनु मंजु लसी कटि किंकिनि डोरी,
सेत विहगनि की सुठि पंगति राजति सुंदर हार लौं गोरी।
तीर के वृच्छ विसाल नितंब सुमंद प्रवाह भई गति थोरी;
राजति या ऋतु मैं सरिता गजगामिनि कामिनि सी रसबोरी ॥४॥

(२३८७) गौरीशंकर-हीराचंद ओझा रायबहादुर

इन पंडितजी का जन्म संवत् १९२० में, सिरोहीराज्यांतर्गत रोहिड़ा ग्राम में, हुआ था। आप सहस्र औदीच्य ब्राह्मण हैं। आपने संस्कृत तथा भाषा की अच्छी योग्यता प्राप्त की है, और आप अँगरेज़ी भी जानते हैं। पुरातत्त्व-अनुसंधान में आपको बड़ी रुचि है, इस विषय में आप परम प्रवीण हैं। ये अजमेर अजायब-घर के अध्यक्ष हैं। आपने प्राचीन लिपिमाला, कर्नल टाड का जीवन-चरित्र, सिरोही का इतिहास, टाड राजस्थान के अनुवाद पर टिप्पणियाँ और सोलंकियों का इतिहास-नामक राजपूताना का इतिहास-ग्रंथ रचे हैं। प्राचीन लिपिमाला के पढ़ने से प्राचीन लिपियों के जानने में योग्यता प्राप्त हो सकती है। पंडितजी ऐतिहासिक ग्रंथमाला-नामक एक पुस्तकावली प्रकाशित कर रहे हैं जिसमें इतिहास-ग्रंथ छपते हैं। आप एक सुलेखक और परम सतोगुणी प्रकृति के मनुष्य हैं, और आपके प्रयत्नों से भाषा में इतिहास-विभाग के पूर्ण होने की आशा है। आप हिंदी-साहित्य-सम्मेलन से १२००) पुरस्कार पा चुके हैं।

(२३८८) विनायकराव (पंडित)

आपका जन्म १९१२ में हुआ था। आप १००) मासिक पर होशंगाबाद के हेड मास्टर थे। अंत में १२०) के वेतन से आपने पेंशन पाई। आपने हिंदी की प्रायः २० पुस्तकें रचीं, जो विशेषतया शिक्षा विभाग की हैं। आपने रामायण की विनायकी टीका की है, जो प्रशंसनीय है और काव्य-रचना भी की है।

(२३८९) विशाल कवि (भैरवप्रसाद वाजपेयी)

इनका जन्म संवत् १९२६ में, लखनऊ शहर, मोहल्ला खेतगली में, हुआ था। आपके पिता का नाम पंडित कालिकाप्रसाद था। आप उपमन्युगोत्री चूड़ापतिवाले आँक के वाजपेयी थे। आपका विवाह हमारी दूसरी बहन के साथ संवत् १९३८ में हुआ था और उसी समय से आप हमारे यहाँ विशेष आने-जाने लगे तथा कुछ वर्षों के पीछे हमारे ही यहाँ रहने भी लगे। इन कारणों से इनसे हम लोगों का विशेष प्रेम हो गया था। आपने अँगरेज़ी-मिडिल पास किया, पर उसकी प्रसन्नता में एंट्रेंस में अच्छा परिश्रम न किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि इस परीक्षा में आप उत्तीर्ण न हो सके। हमारे पिताजी कवि थे, तथा गँधौली-निवासी लेखराजजी और उनके पुत्र लालविहारी और जुगुलकिशोर भी कविता करते थे। ये लोग हमारी बिरादरी में हैं और इनके यहाँ जाना-आना सदैव रहता था। शिवदयालु पांडेय उपनाम भेष कवि भी हमारे संबंधी थे और हमारे यहाँ आया-जाया करते थे। इन कारणों से हमारे यहाँ कविता की सदैव चर्चा रहती थी। सो विशालजी को भी बाल्यावस्था से ही काव्य-रचना का शौक़ हो गया। पहले तुलसी-कृत रामायण एवं काशिराज का भाषा-भारत इन्होंने पढ़ा और पीछे हमारे पिताजी से केशवदास की रामचंद्रिका पढ़ी। इसी के पीछे आप काव्य-रचना करने लगे। लालविहारीजी ने इनका कविता का नाम विशाल रख दिया और तभी से ये इसी नाम से रचना करने लगे। एंट्रेंस फ़ेल हो जाने के पीछे इनके माता-पिता का देहांत हो गया। इनके भाई-बहन आदि कोई निकट का संबंधी न था। इधर जीविका-निर्वाह की कोई चिंता न थी। सो इनका मन काम-काज से छूटकर कविता ही में लग गया। अब आपने गँधौली में प्रायः डेढ़ साल रहकर पंडित जुगुलकिशोर मिश्र से दशांग कविता सीखी।

यह हाल संवत् १९५३ के इधर-उधर का है। इसके पूर्व सिसेंडी के राजा चंद्रशेखर के इलाक़े में कुछ दिन आपने ज़िलेदारी की थी, पर उससे आपका जी इतना ऊबा था कि उसे छोड़कर आप भाग गए थे। गँधौली से कविता सीखकर आप फिर लखनऊ में हमारे यहाँ रहने लगे। आपकी कई पुश्तों से कुछ सकल्प की भूमि ठाकुर रामेश्वरबख़्श रईस परसेहँडी के इलाक़े में चली आती है। उसी के संबंध से आप ठाकुर साहब के यहाँ जाने-आने लगे और ठाकुर साहब के भी कविता-प्रेमी होने के कारण आपका उनसे प्रेम विशेष बढ़ गया। उनकी प्रशंसा के आपने बहुत-से छंद बनाए हैं। आपके पूर्व पुरुष ठाकुर साहब के पूर्व-पुरुषों के गुरु थे, सो ठाकुर साहब इनमें भी गुरु-भाव रखते थे। इसी भाव का एक विशालाष्टक रचकर ठाकुर साहब ने इनकी बड़ी प्रशंसा की है। कुछ काम न होने से आप उस प्रांत के कुछ अन्य रईसों के यहाँ भी जाने-आने लगे। इनमें से ठाकुर दुर्गाबख़्श के आपने उत्तम छंद रचे। ठाकुर अनिरुद्धसिंह और दीन कवि से आपका विशेषतया मित्र-भाव था। विशालजी प्रकृति से कुछ आलसी भी थे, सो कोई अन्य कार्य न होने पर भी आपने कविता बहुत नहीं बनाई। आपके कई पुत्र और कन्याएँ हुईं, पर दुर्भाग्य-वश उनमें से कोई भी जीवित नहीं रहीं। इनके मरण-काल में एक चार वर्ष का पुत्र था, पर वह भी इन्हीं के केवल २० दिन पीछे विस्फोटक रोग से मर गया। विशालजी विशेषतया मधुर-प्रिय थे। संवत् १९६१ में आपको कुछ खाँसी आने लगी, जो मधुर भोजन के कारण शांत न हुई। दूसरे वर्ष एक भारी फोड़ा हो गया जो इन्हें बेहोश करके चीरा गया। उसकी दवा में फ्रूट माल्ट आदि खाने से फोड़ा तो अच्छा हो गया, परंतु खाँसी कुछ बढ़ गई। आपने इस पर कुछ विशेष ध्यान न दिया और इसकी साधारण दवा होती रही। इसी के साथ कुछ हलका बुख़ार भी प्रायः छ: मास के

पीछे आने लगा, पर किसी ने उसे जान नहीं पाया। शरीर से आप स्थूल थे, सो अस्वस्थता में भी अच्छे देख पड़ते थे। संवत् १९६३ में खाँसी शांत न होते देखकर हम लोगों ने इन्हें बहुत समझाया कि ये भोजन में पूरा बराव करें और दवा जमकर की जावे। उसी समय से आपने दवा पर अच्छा ध्यान दिया और पथ्य का भी पूरा विचार रक्खा, परतु लाख-लाख दवा करने पर भी ईश्वरेच्छा के आगे कोई वश न चला और प्रायः एक वर्ष और रुग्ण रहकर सवत् १९६४ में २५ दिसबर सन् १९०७ ई० को इनका शरीर-पात हो गया।

विशालजी की प्रकृति बड़ी शात थी, और इन्हें क्रोध आते हमने कभी नहीं देखा। आपसे मज़ाक़ में कोई पेश नहीं पाता था। बड़े-बड़े उस्ताद मज़ाक़िए आपसे पराजित हो गए। आपके साथ बैठने में चित्त सदैव प्रसन्न रहता था, चाहे जितना बड़ा दु:ख हो क्यों न हो। आपमें सभाचातुरी की मात्रा बहुत थी और हास्य-रस के तो आप आचार्य ही थे। हमारी कविता ये सदैव बड़े प्रेम से सुनते और हमें अपनी सुनाते थे। दूसरे की रचना आप इतनी पसद करते थे कि यद्यपि लवकुशचरित्र एक परम साधारण ग्रंथ था, तथापि उसकी प्रशसा में आपने एक छोटा-मोटा प्रायः १५० छदों का ग्रंथ ही रच डाला। होली से सबंध रखनेवाले अश्लील विषयों पर भी आपने बहुत रचना की है। होलिकाभरण-नामक एक अलंकार-ग्रथ आपने ऐसा रचा, जिसके प्रत्येक दोहे में अलकार अश्लील वर्णन में निकाला। उसमें सब अलकार आ गए हैं। इसी प्रकार नायिका-भेद के भी बहुत-से छद इसी विषय में रचे गए। ये छद सवैया एवं घनाक्षरी हैं और बहुत उत्तम बने हैं, परतु कहीं पढ़ने योग्य नहीं हैं। आपने दोहा-चौपाइयों में एक श्रवणोपाख्यान बनाया था, परतु वह गुम हो गया। पाप-विमोचन-नामक ८४ सवैया कवित्तों का आपने एक शंकर-स्तुति का ग्रंथ रचा था, जो अच्छा है। अपने मित्रों

एवं रईसों की प्रशंसा के आपने बहुत-से उत्कृष्ट छंद बनाए और भँड़ौआ छंदों की भी अच्छी बहुतायत रक्खी। शृंगार-रस एवं अन्य विषयों के भी स्फुट छंद आपने सैकड़ों रचे। आपके अश्लील, भँड़ौआ और प्रशंसा के छंद बहुत अच्छे बनते थे। हम आपको तोष की श्रेणी में समझते हैं।

उदाहरण—

अँगरेजी पढ़ी जब सों तब सों हमरो तुमपै बिसवास नहीं;
तुम हौ कि नहीं यहै सोचो करैं परमान मिलै परकास नहीं।
बिनु जाने न होत सनेह बिसाल सनेह बिना अभिलास नहीं;
यहि कारन ते हमको सिवजी तरिबे की रही कछु आस नहीं ॥१॥
जीव बधै न हरै परसंपति लोगन सों सति बैन कहै नित;
काल पै दान यथागति दै पर-तीय कथान मैं मौन रहै नित।
तृष्णहि त्यागै बड़ेन नवै सब लोगन पै करुना को गहै नित;
शास्त्र समान गनै सिगरे सुखदा यह गैल बिसाल अहै नित ॥२॥
जो पर-तीय रम्यो न कबौं तौ कहा दुख झेलत गंग के भारन;
जो भवसूल नसावत हौ तौ करयो केहि हेत त्रिसूल है धारन।
देत जु मोछ बिसाल सदा तौ लपेटे रहौ कत ब्याल हजारन;
कामहि जारयो जु हे सिव तौ गिरिजा अरधंग धरयो केहि कारन ॥३॥
आवत हैं परभात इतै चलि जात हैं रात उतै निज गोहैं;
मोढिग जो पै रहैं कबहूँ तबहूँ उतही की लिए रहैं टोहैं।
सौंहैं बिसाल करैं इत लाखन पै अभिलापि उतै मन मोहैं;
होति अरी हिय हानि खरी तऊ लालची लोचन लाल को जोहैं ॥४॥
कैलिया कूकन लागी बिसाल पलास की आँच मों देह दहै लगी;
बौरन लागे रसाल नवै कल कंजन को अलि भीर चहै लगी।
जीव को लेन लगे पपिहा तिय मान की बात क्यों मोसों कहै लगी,
आजु हहा न मिलै छिन कंत सों बीर बसंत बयारि बहै लगी ॥५॥

जलदान की वृष्टि भई चहुँघा महिमंडल को दुख दूरि गयो ,
खल श्रास जवास नसी छिन मैं यक ध्यानिन वास प्रकास जयो ।
दुज दादुर वेद रटैं सुख सों मन साल विहाय विसाल भयो ,
पिक मागध गान करैं जस को ऋतु पावस कै नृप नीति मयो ॥६॥

(२३९०) रामराव चिंचोलकर

इनका संवत् १९६० के लगभग प्राय. ४० वर्ष की अवस्था में देहांत हो गया। आपकी प्रकृति बड़ी ही सौजन्यपूर्ण और सरल थी। आप पंडित माधवराव सप्रे के साथ छत्तीसगढ़-मित्र का संपादन करते थे। एक वार हमने मज़ाक़ में कहा कि इस पत्र को 'नाऊगढ़मित्र' भी कह सकते हैं, क्योंकि 'नाऊ' को छत्तीसा कहते हैं। इस पर आपने केवल इतना ही कहा कि "ऐसा !" और ज़रा भी बुरा न माना। आप छत्तीसगढ़-निवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे।

नाम—(२३९१) शिवसंपति सुजान भूमिहार, उदियावँ, जिला आजमगढ़।

ग्रंथ—(१) शतक, (२) शिक्षावली, (३) शिवसंपति-सर्वस्व, (४) नीतिशतक, (५) शिवसंपतिसंवाद, (६) नीतिचंद्रिका, (७) आर्यधर्मचंद्रिका, (८) वसंतचंद्रिका, (९) चौतालचंद्रिका, (१०) सभा-मोहिनी, (११) यौवनचंद्रिका, (१२) जौनपुर-जलप्रवाह-विलाप, (१३) मनमोहिनी, (१४) पचरा प्रकाश, (१५) भारतविलाप, (१६) प्रेमप्रकाश, (१७) अजचंदविलास, (१८) प्रयागप्रपंच, (१९) सावन-विरहविलाप, (२०) राधिका-उराहनो, (२१) ऋतु-विनोद, (२२) कजलीचंद्रिका, (२३) स्वर्णकुँवरि-विनय, (२४) शिवसंपतिविजय, (२५) शत्रुसंहार, (२६) शिवसंपति साठा, (२७) प्राणपियारी, (२८)

कलिकालकौतुक, (२६) उपाध्यायी-उपद्रव, (३०) चित-चुरावनी, (३१) स्वारथी संसार, (३२) नए बाबू, (३३) पुरानी लकीर के फ़क़ीर, (३४) शतमूर्ख प्रकाशिका, (३५) भूमिहारभूषण, (३६) कलियुगोपकार-ब्रह्म-हत्या।

जन्मकाल—१६२०।

कविताकाल—१६४५।

(२३९२) लाजपतराय (लाला)

इनका जन्म सवत् १६२२ में, ज़िला लुधियाना के जगरन नाम नगर में, एक अग्रवाल वैश्य घराने में, हुआ था। आपने वकालत में अच्छी ख्याति पाई और आर्य-समाज एव देशहित-साधन के कार्यों के कारण आपको बहुतेरे भारतवासी ऋषिवत् पूज्य समझते हैं। लाला साहब ने दयानन्द-कॉलेज को अच्छी सहायता दी और अकाल-पीड़ितो के लिये श्लाघ्य श्रम किया। एक बार राजद्रोह के संदेह में आप प्राय. छः मास तक बर्मा में क़ैद कर दिए गए थे। हिंदी-गद्य-लेखन की ओर भी आपका ध्यान रहता है। आपने अच्छे-अच्छे लेख लिखे हैं। आपने भारतवर्ष का इतिहास-नामक एक इतिहास-ग्रथ लिखा है। आपकी आयु का अधिक समय देश हित के कामों में लगता है। आजकल देश-नेताओं में आपका नंबर बहुत अच्छा माना जाता है।

इस समय के अन्य कविगण

समय स० १९३६

नाम—($\frac{२३९२}{१}$) आदिलराम। सगीतादित्य ग्रथ भाषा में बनाया।

रचनाकाल—सवत् १६३६।

नाम—(२३९३) दयानिधि ब्राह्मण, पटना।

विवरण—कविता बहुत रोचक और उत्तम है। इनकी गणना तोष की श्रेणी में है।

नाम—(२३९४) साधोराम कायस्थ, मौज़ा पनगरा, ज़िला बाँदा।

ग्रंथ—(१) रामविनयशतक, (२) चित्रकूटमाहात्म्य।

समय सं० १९३७

नाम—(२३९५) कालीचरण (सेवक) कायस्थ, नरवल, कानपूर।

विवरण—कायस्थ कानफ्रेंस गज़ट के संपादक थे।

नाम—(२३९६) जगन्नाथसहाय कायस्थ, बड़ा बाज़ार, हज़ारीबाग।

ग्रंथ—(१) आनंदसागर, (२) प्रेमरसामृत, (३) भक्त-रसनामृत, (४) भजनावली, (५) कृष्णबाललीला, (६) मनोरंजन, (७) चौदह रत्न, (८) गोपालसहस्र नाम।

नाम—(२३९७) ठकुरेशजी।

ग्रंथ—स्फुट छंद लगभग १०००।

जन्मकाल—१९१२।

नाम—(२३९८) ठाकुरदास।

ग्रंथ—(१) भक्तकवितावली (१९५०), (२) रुक्मिणीमंगल [प्र० त्रै० रि], (३) कृष्णचंद्रिका (१९३७), (४) श्रीजानकीस्वयंवर (१९४८), (५) गोवर्द्धनलीला मेला सदन (१९४०)।

नाम—(२३९९) देवीसिंह राजा, चँदेरी।

ग्रंथ—(१) नृसिंहलीला, (२) आयुर्वेदविलास, (३) रहस-

लीला, (४) देवासिंहविलास, (५) अर्बुदविलास, (६) बारहमासी।

विवरण—मधुसूदनदास की श्रेणी में।

नाम—(२४००) द्वारिकाप्रसाद ब्राह्मण, बस्ती।

ग्रंथ—चौतालवाटिका। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२४०१) नारायणदास, वृंदावन।

जन्मकाल—१९१२।

नाम—(२४०१/१) प्रियादास भटनागर, सिकंदराबाद, देहली।

नाम—(२४०२) मथुराप्रसाद ब्राह्मण, सुकुलपुर।

ग्रंथ—(१) गोपालशतक, (२) मथुराभूषण, (३) हनुमत-विरदावली, (४) फागविहार।

जन्मकाल—१९१५।

नाम—(२४०३) रघुनाथप्रसाद कायस्थ, काशी।

ग्रंथ—राधानखशिख (पृ० ७६)। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२४०४) रामचरित्र तेवारी, आज़मगढ़।

ग्रंथ—जंगल में मंगल।

नाम—(२४०४/१) महाराजा विजयसिंह, शिवपुर, बड़ौदा।

ग्रंथ—(१) विजयरसचंद्रिका।

कविताकाल—१९३७।

जन्मकाल—१९१६।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(२४०५) सन्नूलाल गुप्त, बुलंदशहर।

ग्रंथ—(१) स्त्रीसुबोधिनी, (२) बालाबोधिनी, (३) सुरभि-संताप।

जन्मकाल—१९१२।

नाम—(२४०६) सीताराम ब्राह्मण, शकरगंज, राज्य रीवाँ।

जन्मकाल—१९१२।

नाम—(२४०७) हरदेवबख़्श (हरदेव) कायस्थ।

ग्रंथ—(१) पिंगलभास्कर, (२) ऊपाचरित्र, (३) जानकी-विजय, (४) लवकुशी।

जन्मकाल—१९१२।

समय सं० १९३८ के पूर्व

नाम—(२४०८) किनाराम, बाबा रामनगर, बनारस।

ग्रंथ—रामरसाल। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२४०९) बोधीदास।

ग्रंथ—बोधीदास-कृत झूलना। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—($\frac{२४०९}{१}$) भैरवनाथ मिश्र।

ग्रंथ—चंडीचरित्र। [तृ० त्रै० रि०]

रचनाकाल—१९३८ के पूर्व।

विवरण—चेतराम के पुत्र थे।

समय सं० १९३८

नाम—(२४१०) गिरिजादत्त शुक्ल, महेशदत्त के पुत्र, धनौली, ज़िला बारहबंकी।

ग्रंथ—(१) श्रीकृष्णकथाकर, (२) संस्कृतव्याकरणाभरण।

जन्मकाल—१९१३।

विवरण—ये तहसीलदारी की पेंशन पाते थे और अच्छे पंडित तथा भाषाप्रेमी थे।

नाम—(२४११) गुलाबराम राव।

ग्रंथ—नीतिमंजरी।

नाम—($\frac{२४११}{१}$) दासानंद, छत्रपूरवासी।

ग्रंथ—हरदौलजू को ख्याल। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(२४१२) दरियाव दौवा। इनका ठीक नंबर ($\frac{१२८१}{१}$) है।

नाम—(२४१३) दुर्गाप्रसाद कायस्थ, चरखारी, बुँदेलखंड।

ग्रंथ—(१) भानुपुराण, (२) गोवर्धनलीला, (३) भक्तिश्रृंगारशिरोमणि, (४) ध्यानस्तुति, (५) मिलापलीला, (६) राधाकृष्णाष्टक।

जन्मकाल—१९१३।

नाम—(२४१४) पचदेव पाडे, रेवती, बलिया।

ग्रंथ—पचदेव रामायण ग्रंथ।

विवरण—आप अध्यापक थे और पाठ्य-पुस्तकें भी आपने बनाई हैं।

नाम—($\frac{२४१४}{१}$) विहारी, दतियावासी।

ग्रंथ—गणितचंद्रिका। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—($\frac{२४१४}{२}$) बोधिदास बाबा।

ग्रंथ—भक्तिविवेक। [च० त्रै० रि०]

नाम—(२४१५) भोलानाथलाल ब्राह्मण गोस्वामी, मुक़ाम श्रीवृंदावन, झालवारी राज्य रीवाँ।

ग्रंथ—(१) प्रेमरत्नाकर, (२) राधावरविहार, (३) चंद्रधरचरितचिंतामणि, (४) गंगापचक, (५) गोपीपचीसी, (६) कृष्णाष्टक, (७) हरिहराष्टक, (८) प्रातःस्मरणीय (आदि कई अष्टक रचे हैं), (९) कृष्णपचासा।

जन्मकाल—१९१३।

विवरण—श्रीहितसाचार्य महाप्रभु की कन्या के वंशज।

नाम—($\frac{२४१५}{१}$) महरामणजी।

ग्रंथ—प्रवीणसागर।

विवरण—राजकोट-निवासी। यह ग्रंथ समाप्त होने के पूर्व ही आपकी मृत्यु हो गई। अत सं० १९४५ में कविवर गोविंदगिल्ला भाई ने इसे पूर्ण किया।

नाम—(२४१६) राघवदास साधु।

ग्रंथ—गुरुमहिमा।

नाम—($\frac{२४१६}{१}$) नित्यनाथ।

ग्रंथ—(१) मंत्रखंडरसरत्नाकर, (२) उड्डीश तंत्र। (खोज १९०३)

रचनाकाल—१९३९ के पूर्व।

विवरण—तंत्रविषयक।

समय संवत् १९३९

नाम—(२४१७) देवराज खत्री, जालंधर।

ग्रंथ—(१) अक्षरदीपिका, (२) शब्दावली, (३) बाल-विनय, (४) बालोद्यान संगीत, (५) सावित्रीनाटक, (६) कथाविधि, (७) पाठावली, (८) सुबोधकन्या, (९) पत्रकौमुदी, (१०) गणितभूषण, (११) गृह-प्रबंध।

नाम—(२४१८) परमेश्वरीदास कायस्थ, बाँदा।

ग्रंथ—दस्तूरसागर।

विवरण—यह लीलावती का छंदोबद्ध अनुवाद है।

नाम—(२४१९) विंध्येश्वरी तिवारी, सहगौरा, ज़िला गोरखपुर।

ग्रंथ—मिथिलेशकुमारी नाटक।

जन्मकाल—१९१४।

नाम—(२४२०) श्रीवीरबल, श्रीवृंदावनवासी।

ग्रंथ—(१) वृंदावनशतक, (२) राधाशतक।

जन्मकाल—१९१४।

नाम—(२४२१) वैजनाथप्रसाद, इखलासपुर।

जन्मकाल—१९२४।

नाम—(२४२२) मन्नूलाल कायस्थ, बुलंदशहर।

ग्रंथ—स्त्रीसुबोधिनी।

नाम—(२४२३) मेलाराम वैश्य, भिवानी, जिला हिसार।

ग्रंथ—गंदे सीठनों की अपील, गृहस्थविचारसुधारक काव्य।

नाम—(२४२४) रामगयाप्रसाद (दीन), अयोध्या।

ग्रंथ—(१) रामलीला नाटक, (२) प्रह्लादचरित्र नाटक, (३) प्रेमप्रवाह, (४) पावसप्रवाह।

जन्मकाल—१९१४।

विवरण—आप टाँड़ा, ज़िला फ़ैज़ाबाद के रहनेवाले अच्छे भक्त थे।

नाम—(२४२५) रामधारीसहाय कायस्थ, डीही, जिला सारन।

ग्रंथ—(१) गुरुभक्तिपचीसी, (२) गोरक्षाप्रहसन, (३) महिमाचालीसी, (४) शिवमाला, (५) कुमारसंभव अनुवाद।

जन्मकाल—१९१४।

विवरण—ये मधुबनी में वकालत करते थे।

नाम—(२४२६) साधोसिंह महाराज।

ग्रंथ—काव्यसंग्रह।

नाम—($\frac{२४२६}{१}$) काशीप्रसादसिंह।

ग्रंथ—देवीभजन मुक्तावली।

समय संवत् १९४० के पूर्व

नाम—(२४२७) छत्तर।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

नाम—(२४२८) जगतनारायण शर्मा, काशी।

ग्रंथ—(१) ईसाईमतपरीक्षा, (२) गोरक्षा, (३) दयानंदियों की अपार महिमा, (४) यवनों की दुर्दशा।

जन्मकाल—१६१५।

नाम—(२४२९) तुलाराम।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

नाम—(२४३०) देवन।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

नाम—(२४३१) धनेश।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

नाम—(२४३१/१) परमेश कवि भाट।

ग्रंथ—कृष्णविनोद। [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—होलपूर, ज़िला बारहबंकी-निवासी।

नाम—(२४३२) भीम।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है। भक्त-कवि थे।

नाम—(२४३३) मिथिलेश।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

नाम—(२४३४) रतिनाथ।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

नाम—(२४३५) समाधान।

विवरण—शृंगारसंग्रह में काव्य है।

समय संवत् १९४०

नाम—(२४३६) अवर भाट, चौजीतपूर, बुँदेलखंड।

नाम—(२४३७) अंबिकाप्रसाद, ज़िला शाहाबाद विहार।

नाम—(२४३८) कन्हैयालाल (कान्ह) कायस्थ, सोठियावाँ, जिला हरदोई।

ग्रंथ—चंद्रभालशतक।

जन्मकाल—१९१५।

नाम—(२४३९) कान्ह कायस्थ, राजनगर, बुँदेलखंड।

ग्रंथ—नखशिख।

जन्मकाल—१९१४।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४४०) कुंजलाल, मऊ रानीपूर, झाँसी।

जन्मकाल—१९१८।

विवरण—तोष-श्रेणी।

नाम—(२४४१) गिरधारी भाट, मऊ रानीपुर, झाँसी।

नाम—(२४४२) गुरदयाल कायस्थ, पदारथपूर, बाँदा।

नाम—($\frac{२४४२}{१}$) गोकुलनाथ भट्ट।

जन्मकाल—१९१४।

विवरण—मैहर में वकील हैं।

नाम—($\frac{२४४२}{२}$) गौरीशंकर चौबे।

ग्रंथ—(१) दामरीलीला, (२) बाँसुरीलीला, (३) मानलीला, (४) उद्धवलीला। [तृ० त्रै० रि०]

नाम—(२४४३) गंगादयाल दुबे, निसगर, जिला रायबरेली।

विवरण—संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। भाषा

नाम—(२४४४) गंगादास नैमिषारण्य, कायस्थ ।
ग्रंथ—विनयपत्रिका ।
विवरण—हीन श्रेणी के कवि थे ।

नाम—(२४४५) गंगाप्रसाद (गंग), सपौली, ज़िला सीतापुर ।
ग्रंथ—दूतीविलास ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(२४४६) चंद्र झा ।
ग्रंथ—रामायण ।
विवरण—महाराजा दरभंगा के यहाँ थे ।

नाम—(२४४७) जगन्नाथ अवस्थी, सुमेरपुर, ज़िला उन्नाव ।
विवरण—ये संस्कृत के बड़े विद्वान् थे और कई ग्रंथ भी बनाए हैं । भाषा में इनके स्फुट छंद मिलते हैं । ये राजा अयोध्या और अलवर के यहाँ रहे । इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है ।

नाम—($\frac{२४४७}{१}$) जगन्नाथ (उपनाम सुखसिंधु)
ग्रंथ—पीयूषरत्नाकर ।

नाम— (२४४८) जगन्नाथप्रसाद कायस्थ, छतरपूर ।
विवरण—ये महाशय दरबार छतरपूर में हेड अकौंटेंट थे, और भाषा के बड़े प्रेमी हैं । आपके यहाँ पुस्तकों का अच्छा संग्रह है । आप भाषा के उत्तम लेखक हैं । आजकल आप झाँसी में अपने लड़के के पास रहते हैं, जो वहाँ वकील है ।

नाम—(२४४९) जबरेस बंदीजन, बुँदेलखंड ।
विवरण—ये महाराज रीवाँ-नरेश के यहाँ थे ।

नाम—(२४५०) जवाहिर, श्रीनगर, बुँदेलखंड।

जन्मकाल—१९१९।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४५१) जान ईसाई, अँगरेज़।

ग्रंथ—मुक्तिमुक्तावली छंदाबद्ध।

विवरण—ईसाईभजन एवं ईसाचरित्र इसमें वर्णित है।

नाम—(२४५२) ठाकुरप्रसाद (पूरन) कायस्थ, बिजावर।
[प्र० त्रै० रि०]

ग्रंथ—दशमस्कंध भागवत का पद्यानुवाद। जानकीस्वयंवर भक्त कवितावली।

नाम—(२४५३) ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी, अलीगंज, खीरी।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४५४) दुःखभंजन।

ग्रंथ—चंद्रशेखर काव्य।

विवरण—राजा चंद्रशेखरजी त्रिपाठी ताल्लुक़्दार मिसेंडी की आज्ञानुसार बनाया। उसमें कुछ खंडित हो गया था, जिसकी पूर्ति रघुवीर कवि ने की।

नाम—(२४५५) देवसिंह, मु० बराज राज्य रीवाँ।

जन्मकाल—१९१७।

नाम—(२४५६) देवीदीन, बिलग्रामी।

ग्रंथ—(१) नखशिख, (२) रसदर्पण।

नाम—(२४५७) नारायणराय वंदीजन, बनारसी।

ग्रंथ—(१) टीका भाषाभूषण (छंदोबद्ध), (२) टीका कविप्रिया (वार्तिक)।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४५७/१) नीलकंठ, बड़ौदावासी।

नाम—(२४५८) पंचम, बुँदेलखंडी।

जन्मकाल—१९११।

विवरण—गुमानसिंह राजा अजयगढ़ के यहाँ थे। निम्न श्रेणी के कवि थे।

नाम—(२४५९) प्रभुदयाल कायस्थ, अजयगढ़, बुँदेलखंड।

ग्रंथ—ज्ञानप्रकाश।

जन्मकाल—१९१५।

नाम—(२४६०) बच्चूलाल, बछरावाँ।

नाम—(२४६१) बिश्वनाथ, टिकारी, रायबरेली।

नाम—(२४६२) विश्वेश्वरानंद महात्मा।

ग्रंथ—चतुरा की चतुराई।

विवरण—आपने कई और ग्रंथ भी रचे हैं।

नाम—(२४६२/१) बिहारीलाल।

ग्रंथ—उमठकुलभास्कर वा बहार बिहारी। [च० त्रै० रि०]

नाम—(२४६३) बृंदावन सेमरौता, जिला रायबरेली।

ग्रंथ—(१) देवीभागवत भाषा (१९५३)।

नाम—(२४६४) बंदन पाठक, काशीवासी।

ग्रंथ—मानसशंकावली।

जन्मकाल—१९१५।

विवरण—ये महाशय रामायण के अच्छे टीकाकार थे। आपने महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायणजी की आज्ञा से ग्रंथ बनाया। रामायण तुलसी-कृत पर इनका प्रमाण माना जाता है।

नाम—(२४६५) वदीदीन दीक्षित, मसवासी, ज़िला उन्नाव।

ग्रंथ—सुदामाचरित्र नाटक।

विवरण—मातादीन सुकुल के साथ यह नाटक बनाया है।

नाम—($\frac{२४६५}{१}$) व्रजभूपणलाल, अहमदावादवासी।

ग्रंथ—स्फुट पद।

नाम—(२४६६) मातादीन मिश्र, सराय मीराँ, फर्रुखाबाद।

ग्रंथ—(१) कविरत्नाकर (१९३३), (२) शाहनामा भाषा।

नाम—(२४६७) मातादीन शुक्ल, सरोसा, ज़िला उन्नाव।

ग्रंथ—सुदामाचरित्र नाटक (गद्य-पद्य)।

विवरण—वदीदीन दीक्षित के साथ मिलकर सुदामाचरित्र नाटक बनाया।

नाम—(२४६८) माधवसिंह। इनका नाम नं० ($\frac{२१०५}{१}$) में आ चुका है।

नाम—(२४६९) मार्कंडेय (चिरंजीवी) कोपागंज, आज़मगढ़।

ग्रंथ—(१) झूला, ठुमरी, कजली इत्यादि, (२) कपर्मीश्वर-विनोद।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४७०) मुन्नालाल कायस्थ, मैहर।

जन्मकाल—१९१५।

नाम—(२४७१) युगलप्रसाद कायस्थ, जतारा, टीकमगढ़।

नाम—($\frac{२४७१}{१}$) युगलवल्लभ गोस्वामी।

ग्रंथ—(१) हितमालिका, (२) हितचन्द्रिका, (३) राधासुधानिधि की तरंगिणी की टीका, (४) द्वादशयश की टीका, (५) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदायाचार्य।

नाम—(२४७२) रघुनाथ (शिवदीन) पंडित, रसूलाबादी।

ग्रंथ—भवमहिम्न।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४७३) रघुवीर।

ग्रंथ—चंद्रशेखर काव्य।

विवरण—राजा चंद्रशेखरजी त्रिपाठी ताल्लुक़दार सिसेंडी ज़िला लखनऊ की आज्ञानुसार दु:खभंजन कवि ने बनाया था। उसमें कुछ खंडित हो गया, जिसकी पूर्ति की है।

नाम—(२४७४) रणजीतसिंह जाँगरे राजा ईसानगर, खीरी।

ग्रंथ—हरिवंशपुराण भाषा।

नाम—(२४७५) राधाचरण गौड़ ब्राह्मण। इनका नाम नं० २१६१ में आ चुका है।

नाम—($\frac{२४७५}{१}$) राधालाल गोस्वामी।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदायाचार्य।

नाम—($\frac{२४७५}{२}$) रूपलालसिंह शर्मा (उपनाम रूपअलि)

ग्रंथ—(१) शृंगारहार, (२) हजारा, (३) महामारीपंचदशी, (४) तथा कई स्फुट एवं अपूर्ण ग्रंथ।

जन्मकाल—१९१३।

कविताकाल—१९४०।

मृत्युकाल—१९७५।

विवरण—आप खरगपूर पटना-निवासी भूमिहार ब्राह्मण बाबू जवाहिरसिंह के पुत्र थे।

उदाहरण—

नवल शिकारी नवल सर, नवल शरासन तून ;
नवला सावज रूपश्रलि, होत नवल निस खून ।
खजन उड़ि झप वूड़िगे, मृगमद तजिगे दूर,
श्रलिन नलिन कलिरूपश्रलि, लखि मियपिय चख नूर ।
' दयादृष्टि दृगकोरघन विभव दृष्टि भन वुद,
सूखत शालो पालिए मनहु सुदाम मुकुंद ।

नाम—(२४७६) राधेलाल कायस्थ, राजगढ़, बुँदेलखड ।

जन्मकाल—१६११ ।

नाम—(२४७७) रामनारायण कायस्थ, अयोध्या ।

ग्रंथ—(१) स्फुट छंद, (२) षट्ऋतुवर्णन । [द्वि० त्रै० रि०]

विवरण—महाराजा मानसिंह के मत्री । साधारण श्रेणी ।

नाम—(२४७८) रामलाल स्वामी, बिजावर ।

ग्रंथ—(१) श्रमरकटकचरित्र (१६४३), (२) भवानीजी की स्तुति, (३) महावीरजू कौ तीसा, (४) रामसागर (रामविलास) (१६४३), (५) श्रीमह्लसागर (१६४४), (६) श्रीकृष्णप्रकाश (१६४४) । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—राजा भानुप्रकाश बिजावर के गुरु थे ।

नाम—(२४७९) रामेश्वरदयाल कायस्थ, सरैयाँ, जिला गाजीपूर ।

ग्रंथ—चित्रगुप्तचरित्र ।

जन्मकाल—१६१४ ।

मृत्युकाल—१६५६ ।

नाम—(२४८०) लालसिंह (उपनाम रसिकेंद्र) मुकाम घूरडांग, राज्य रीवाँ ।

ग्रंथ—ग्रंथ रचा है, स्फुट कविता भी है।

जन्मकाल—१९१५।

नाम—(२४८१) शिवदत्त ब्राह्मण, बनारसी।

ग्रंथ—१९११।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४८२) शिवप्रसन्न ब्राह्मण, रामनगर, रायबरेली।

ग्रंथ—सतीचरित्र।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४८३) सतीदासजी पांडे, श्रीकांत के पुत्र, सुमेरपुर, ज़िला उन्नाव।

ग्रंथ—(१) मनोष्टक, (२) अयोध्याष्टक, (३) विश्वनाथाष्टक, (४) सारस्वत भाषा।

जन्मकाल—१९१५।

मृत्युकाल—१९५४।

विवरण—इनका कोई ग्रंथ हमने नहीं देखा।

नाम—(२४८४) सुखरामदास ब्राह्मण, स्थान चहोतर, उन्नाव।

ग्रंथ—नृपसंवाद।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४८५) सुमेरसिंह साहबज़ादे (सुमिरेसहरी), पटना।

ग्रंथ—बिहारीसतसई के दोहों पर बहुत-से कवित्त बनाए हैं। अच्छे कवि थे।

नाम—(२४८६) सूर्यनारायणलाल कायस्थ।

विवरण—ये कोद, मिर्ज़ापूर में सरकारी वकील हैं।

नाम—(२४८७) संतबकस वदीजन, होलपुर, बारहबंकी।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२४८८) हज़ारीलाल त्रिवेदी, अलीगंज, ज़िला खीरी।

विवरण—नीति-संबंधी काव्य है, निम्न श्रेणी।

नाम—(२४८८/१) करुणानिधि वैद्य, करुणानिधि-विहार, १९४१ के पूर्व।

समय संवत् १९४१

नाम—(२४८९) कौलेश्वरलाल कायस्थ, मदरा, ज़िला गाज़ीपुर।

ग्रंथ—(१) सत्यनारायणकथा (पृ० ३८), (२) राम-शब्दावली (पृ० १६), (३) सरितावर्णन (पृ० २४), (४) कविमाला (पृ० २२)। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२४९०) गणेशीलाल (देव) ब्राह्मण, मथुरा।

ग्रंथ—(१) श्रीयमुना (नदी) माहात्म्य, (२) श्रीशिवाष्टक आदि।

जन्मकाल—१६१५।

नाम—(२४९१) गुलाबदास हलवाई, पटना।

जन्मकाल—१६१६।

नाम—(२४९२) चतुर्भुज ब्राह्मण, वृंदावन।

जन्मकाल—१६१६।

नाम—(२४९३) पत्तनलाल (सुशील) बाबू मोहनलाल अगरवाल के पुत्र, दाऊदनगर, गया।

ग्रंथ—(१) रोलरामायण, (२) छुविलीमाठिका (पद्य), (३) भर्तृहरिनीतिशतक भाषा (पद्य), (४) माधु (पद्य), (५) उजाड़ गाँव (पद्य), (६) यात्री

(पद्य), (७) ग्रियर्सन साहब की विदाई (पद्य), (८) देशी खेल दो भागों में (गद्य)।

जन्मकाल—१९१६।

विवरण—कविता उत्तम है। आजकल आप कलकत्ते में काम करते थे।

नाम—($\frac{२४९३}{१}$) लक्ष्मीचद।

ग्रंथ—मोरध्वज नाटक। [प० त्रै० रि०]

समय संवत् १९४२

नाम—(२४९४) कन्हैयादास (कान्ह), वृंदावन।

ग्रंथ—छंदपयोनिधि (भाषा) (पिंगल)।

जन्मकाल—१९१७।

नाम—($\frac{२४९४}{१}$) पं० रामरत्न सनाढ्य 'रतनेश'।

ग्रंथ—(१) सनाढ्यवंशावली, (२) लक्षणा व्यंजना गद्य-पद्यात्मक।

जन्मकाल—१९१८।

विवरण—आप उरई-निवासी पं० गिरिधरलालजी के पुत्र हैं। आप संस्कृत-ज्योतिष के विद्वान् तथा व्रजभाषा के योग्य कवि हैं।

उदाहरण—

कोऊ कवि राहु के प्रहार को बतावै घाव,
कोऊ कहै विष को बसायो जानि मेली है;
कोऊ शश शावक बतावै कोऊ छोनी छाँह,
कोऊ छिद्र द्वारा तम नीलता ढकेली है।
रतनेश श्यामता निहार के निशेश बीच,
जाको जैसी रुचि तैसी सुषमा सकेली है,

परतीय गामिन में नामी निज नाह जान,
उर लिपटाय रही रजनी नवेली है।

नाम—(२४९५) गुप्तरानी बाई (दासी) कायस्थ ।
ग्रंथ—भजनावली ।
जन्मकाल—१६१७ ।

नाम—(२४९६) बेनीमाधो दुबे, हुसैनगज, फतेहपूर ।
ग्रंथ—सांकेतिकमाला । [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२४९७) रामदयाल कायस्थ, छिबरामऊ ।
ग्रंथ—(१) प्रेमप्रकाश, (२) राधिकाबारहमासी ।

नाम—(२४९८) संत कविराज, रीवाँ ।
ंथ—लक्ष्मीश्वरचन्द्रिका ।
रचनाकाल—१६४२ । [खोज १६००]

नाम—(२४९८/१ (कुजविहारी, वृंदावनवासी ।
ग्रंथ—भजनपत्रिका । [प्र० त्रै० रि०]
रचनाकाल—१६४३ के पूर्व ।

समय सं० १९४३

नाम—(२४९९) कन्हैयालाल गोस्वामी, बूँदी ।
विवरण—आपकी अवस्था इस समय लगभग ६० साल की होगी । आप कुछ काव्य भी करते हैं ।

नाम—(२५००) प्रकाशानंद सन्यासी, देहरादून ।
ग्रंथ—श्रीरामजी का दर्शन ।
जन्मकाल—१६१८ ।

नाम—(२५०१) वृंदावन कायस्थ, मैहर ।
ग्रंथ—सीयस्वयम्बर ।
जन्मकाल—१६१८ ।

नाम—(२५०२) भवानीप्रसाद कायस्थ, देउरी सागर। वर्तमान।

नाम—($\frac{२५०२}{१}$) रघुनाथप्रसाद मिश्र।

ग्रंथ—(१) आर्याचारादर्श, (२) उद्धवचंपू, (३) रसमजूषा, (४) सुभाषितभूषण।

जन्मकाल—१६२५।

मृत्युकाल—१६६२।

रचनाकाल—१६४३।

विवरण—आप राघवपुर पाजा-निवासी पं० वैद्यनाथप्रसाद मिश्र के पुत्र थे। आपका स० १६६२ में स्वर्गवास हुआ। आप सस्कृत एव हिंदी दोनों में कविता करते थे।

नाम—($\frac{२५०२}{२}$)रघुवरप्रसाद द्विवेदी राय साहब।

ग्रथ—(१) सफलतारहस्य, (२) दासव्यापार का इतिहास, (३) शाहज़ादा फ़क़ीर, (४) डमरा की बेटी, (५) बलिवेदिका, (६) सदाचारदर्पण, (७) भारत का इतिहास, (८) साधारण ज्ञान।

रचनाकाल—१६४३।

जन्मकाल १६२१।

ववरण—गढाजबलपूर-निवासी। आप कस्तूरचद्रहितकारिणी सभा के प्रिंसिपल थे। हाल में आपका देहात हो गया।

नाम—(२५०३) रघुवीरप्रसाद ठठेर, पैंतेपुर, ज़िला बारहबकी।

ग्रंथ—(१) आरोग्यदर्पण, (२) नैमिषारण्य-माहात्म्य।

जन्मकाल—१६१८।

मृत्युकाल—१६६५।

नाम—(२५०४) रत्नचंद्र, प्रयाग।

ग्रंथ—(१) नूतन ब्रह्मचारी, (२) नूतन चरित्र, (३) गंगा-गोविंदसिंह, (४) वीरनारायण, (५) इंदिरा।

विवरण—गद्य-लेखक।

नाम—(२५०५) रामप्रताप, जयपुर।

नाम—(२५०५/१) शीतलप्रसाद उपाध्याय।

ग्रंथ—(१) दूरदर्शी योगी, (२) शीतल समीर, (३) शीतल सुमिरनी, (४) राजा रामसिंह की यात्री, (५) राजा रामपालसिंह की योरपयात्रा, (६) शीतल संहार, (७) धर्म-प्रकाश।

जन्मकाल—१९१७।

रचनाकाल—१९४३।

विवरण—आप पं० दिक्पाल उपाध्याय के पुत्र हैं। आप हिंदी के अच्छे लेखक हैं, और हिंदोस्थान तथा सम्राट् का वर्षों संपादन किया है।

उदाहरण—

आए हो ऊधो सिखावन योग तो या व्रज की सगरी व्रजबाला;
लावैंगी भूति सर्वं तन में औ रचैंगी त्रिपुट सुचारि सुभाला।
धारैंगी भेसहू योगिन को कर लैके कमंडल औ मृगछाला;
जाएँगी शीतल माधव द्वार जपैंगी वहाँ हरि नाम की माला॥

कुंजवन सघन अकेली हाय भूली मग,
मिलो एक युवक अचानक डगर में;
मटुकि हमारी फोरि सारी को बिगारि डान्हीं,
कंचुकी को फारि दीन्हीं शीतल भगर में।
गति जो हमारी भई कहत बनत नाहिं,
ऐसी तो दिठाई देखी काहू न नगर में,

कीन्हीं बरजोरी मोरी बाहन मरोरी माय,
बेचन न जैहों दधि गोकुल नगर में ॥
कहाँ है कहाँ है कस बाजत सुरीली राग,
मुरली कलिंदी तट प्यारी ब्रजराज की ;
मधुप उड़े हैं कहँ शीतल पराग लेन ?
बौरे हैं रसाल जहँ बारी नंदराज की।
काहे को विहाल बन विहँग भ्रमे हैं आज ?
निकसी सवारी कहुँ मार महराज की,
काहेरी सखिन मन उमँग बढ़े हैं आज,
जानत न भोरी है अवाई रघुराज की ॥३॥

नाम—(२५०६) शंकर।

ग्रंथ—(१) भाषाज्योतिष, (२) ज्ञानचौंतीसी। [प्र० त्रै० रि०] सत्यनारायणकथा ।

कविताकाल—१९४४ के पूर्व।

नाम—($\frac{२५०६}{१}$) हीरालाल काव्योपाध्याय ।

ग्रंथ—(१) नवकाण्डदुर्गायन, (२) शालागीतचंद्रिका, (३) गीतरसिका, (४) छत्तीसगढ़ी व्याकरण।

जन्मकाल—१९१२ ।

मृत्युकाल—१९४६ ।

विवरण—आप बाबू बालारामचंद नाहू के पुत्र तथा उच्च कोटि के गणितज्ञ थे।

नाम—($\frac{२५०६}{२}$) रायबहादुर हीरालाल बी० ए० एम्० आर० ए० एस्०, रिटायर्ड डिप्टी कमिश्नर।

ग्रंथ—(१) मध्यप्रदेश भौगोलिक यमार्थ परिचय, (२) दमोह-दीपक, (३) जबलपुरज्योति, (४) सागरसरोज, (५) सागरभूगोल, (६) इमसाबाग।

जन्मकाल—१९२३ ।

विवरण—आप इतिहास और पुरातत्त्व के प्रसिद्ध विद्वान् हैं। आप कुछ पद्य-रचना भी करते हैं। आप राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' के सहपाठी एवं मित्र हैं। आप काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के सभापति रहे हैं।

उदाहरण—

एक घड़ी आधी घड़ी आधी ते पुनि आधि ;
कीन्हें संगति कविन की उपजत कविता व्याधि।

आदि गुप्त कलचूरि पढिहार ; चंदेला गोहिल विहार।
तुगलक लोदी गोंड मुगल ; बुंदेला मरहट्ठा दल।
डेढ़ सहस बरषे किय भोग ; तब गोरन को पायो योग।

समय संवत् १९४४

नाम—(२५०७) अमानसिंह कायस्थ, देवरा छतरपुर।

जन्मकाल—१९१९ । वर्तमान ।

नाम—(२५०८) कृष्णराम ब्राह्मण, जयपुर ।

ग्रंथ—सारशतक ।

विवरण—ये संस्कृत की भी कविता करते हैं ।

नाम—(२५०९) कृपाराम शर्मा, जगरावाँ, जिला लुधियाना ।

ग्रंथ—(१) कर्मव्यवस्था, (२) न्यायदर्शन भाषा, (३) सांख्यदर्शन भाषा, (४) वैशेषिकदर्शन भाषा ।

जन्मकाल—१९१४ ।

नाम—(२५१०) गजराजसिंह ठाकुर, खरिहानी, जिला बारहबंकी ।

ग्रंथ—(१) अलंकारादर्श, (२) व्यंग्यार्थविनोद, (३) षट्-ऋतुविनोद, (४) काव्यादर्शसंग्रह ।

जन्मकाल—१६१६ ।

नाम—(२५११) गणेशप्रसाद शर्मा, फरुख़ाबाद ।

ग्रंथ—(१) भागवतव्यवस्था, (२) ईश्वरभक्ति, (३) वृक्षों में जीवनिर्णय, (४) गुरुमंत्रव्याख्या ।

जन्मकाल—१६१६ ।

विवरण—आप 'भारत-सुदशाप्रवर्त्तक' के संपादक रहे हैं ।

नाम—(२५१२) छोटूराम तेवारी, बनारसी ।

ग्रंथ—रामकथा ।

जन्मकाल—१८६७ ।

नाम—(२५१३) जीवाराम शर्मा, मुरादाबाद ।

ग्रंथ—(१) अष्टाध्यायी, (२) माघ, (३) रघुवंश, (४) कुमारसंभव, (५) तर्कसंग्रह इत्यादि का भाषाभाष्य ।

विवरण—आप बलदेव आर्यपाठशाला में अध्यापक रहे हैं ।

नाम—(२५१४) दयालदासजी चारण ।

ग्रंथ—आर्य-आख्यान कल्पद्रुम ।

नाम—(२५१५) नित्यानंद ब्रह्मचारी ।

ग्रंथ—(१) पुरुषार्थप्रकाश, (२) सनातनधर्म, (३) वेदानु—क्रमणिका ।

जन्मकाल—१६१६ ।

नाम—(२५१६) पंकजदास (कमालदास) ।

ग्रंथ—सत्यनारायण की कथा । [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(२५१७) बदरीप्रसाद शर्मा दुबे, कानपूर ।

ग्रंथ—(१) ईश्वरनाममाला (२) गोविनय । [प० त्रै० रि०]

जन्मकाल—१६१६ ।

नाम—(२५१८) बलदेवसिंह चौहान, मकरंदपूर, मैनपुरी ।

जन्मकाल—१९१६।

नाम—(२५१९) बालकृष्णसहाय वकील कायस्थ, राँची।

ग्रंथ—समुद्रयात्रा।

जन्मकाल—१९१६।

नाम—(२५२०) वृंदावन (वन) कायस्थ, पन्ना।

ग्रंथ—(१) कायस्थकुलचंद्रिका, (२) देवी भागवत। [प्र० त्रै० रि०]

जन्मकाल—१९१६।

नाम—(२५२१) भानुप्रताप तेवारी, चुनार।

ग्रंथ—(१) विहारीसतसई सटीक, (२) भानुप्रताप का जीवन-चरित्र, (३) भक्तमालदीपिका, (४) जीवनी गुरु नानक शाह, (५) कबीर साहब का जीवन, (६) राय बहादुर शालग्राम की जीवनी, (७) भक्तमालदृष्टांतदर्पण, (८) तुलसीसतसई सटीक। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२५२२) मदारीलाल शर्मा, बुलंदशहर।

जन्मकाल—१९१६।

नाम—(२५२३) मातादीन शुक्ल, बिसवाँ।

ग्रंथ—जन्मशतक।

जन्मकाल—१९१६।

नाम—(२५२४) मंगलीप्रसाद दुबे बरधा, होशंगाबाद।

जन्मकाल—१९१६।

नाम—(२५२५) रघुनाथदास जड़िया, खत्री।

ग्रंथ—नवधा भक्तिरत्नावली।

जन्मकाल—१९१६।

नाम—(२५२६) रघुनंदनप्रसादसिंह (रघुबीर), हल्दी।

ग्रंथ—सभातरंग।

जन्मकाल—१९१६।

नाम—($\frac{२५२६}{१}$) चौधरी रघुनंदनप्रसादसिंह, धर्मभूषण।

ग्रंथ—(१) साधनसंग्रह दो भाग, (२) उपासनाप्रकाश, (३) श्रहिंसातत्त्व।

जन्मकाल—१९७४।

विवरण—आप मुहम्मदपूर सुस्ताग्रामवासी चौधरी रामअनुग्रह सिंहजी के पुत्र हैं। आप बडे धार्मिक पुरुप हैं तथा रचना भी आपने इसी विपय पर की है।

नाम—($\frac{२५२६}{२}$) रामनाथ।

ग्रंथ—भक्ति-विपयक लावनियाँ।

जन्मकाल—१९१४।

विवरण—आप सरदार किशोरीसिंह के पुत्र तथा कवर्धा-राज्य मध्यप्रदेश के दरबारी कवि थे।

नाम—($\frac{२५२६}{३}$) रामप्रताप मिश्र (उपनाम प्रताप)।

ग्रंथ— (१) वर्षाविहार, (२) रघुवरबालचरित्र।

रचनाकाल—१९४४।

जन्मकाल—१९२४।

विवरण—आप प० शीतलादीन मिश्र के पुत्र तथा डुमरियागंज, बस्ती में पोस्टमास्टर थे।

उदाहरण—

दास की ओर उठाय कै कोर कृपा करि जानकीनाथ तकीजै;
सोक के सिंधु में बूड़त हौं गहि बाँह उबारि प्रभो मोहिं लीजै।
होहिं मनोरथ सिद्ध सदा दशरत्थ के लाल यही बर दीजै;
सेवक आपनो जानि प्रताप को नाथ दया करि दुःख हरीजै।

नाम—(२५२७) शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ।

ग्रंथ—(१) त्रिदेवनिर्णय, (२) ओंकारनिर्णय, (३) वैदिक इतिहासार्थ, (४) वशिष्ठनंदिनीनिर्णय, (५) चतुर्दश-भुवन, (६) अलौकिकमाला, (७) बृहदारण्यक तथा छांदोग्य भाषा।

नाम—(२५२८) शीतलाप्रसाद तेवारी, बनारसी।

ग्रंथ—(१) जानकीमंगल, (२) रामचरितावली नाटक, (३) विनयपुष्पावली, (४) भारतोन्नतिस्वप्न।

नाम—(२५२९) चंद्र।

ग्रंथ—(१) चंद्रप्रकाश सटीक, (२) अनन्यशृंगार। [द्वि० त्रै० रि०]

कविताकाल—१९४५ के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

समय संवत् १९४५

नाम—(२५३०) अयोध्याप्रसाद (औध) कायस्थ, बिजावर।

नाम—(२५३१) उदितनारायणलाल, बनारस।

ग्रंथ—दीपनिर्वाण।

विवरण—पद्य-लेखक थे।

नाम—(२५३२) कालिकाप्रसादसिंह (कालिका), हल्दी।

जन्मकाल—१९२१।

नाम—($\frac{२५३२}{१}$) कमलापति।

जन्मकाल—१९२१।

विवरण—सुकवि हनुमान के शिष्य थे।

नाम—(२५३३) कृष्णदत्तसिंह।

जन्मकाल—१९१६।

विवरण—राजा भिनगा के यहाँ थे।
नाम—($\frac{२५३३}{१}$) चौरामल्ल।
ग्रथ—भारतदुर्दशा पर कुछ कवित्त।
विवरण—काठियावाड़-निवासी।
नाम—(२५३४) जगन्नाथ वैश्य, पैंतेपुर, ज़िला बारहबंकी
ग्रंथ—(१) कालिकाष्टक, (२) स्फुट काव्य।
जन्मकाल—१९२०।
मृत्युकाल—१९५८।
नाम—(२५३५) दूधनाथ, दया, बलिया।
ग्रथ—(१) हरेरामपच्चीसी, (२) हरिहरशतक, भरती के गीत
(३) गोविलाप छंदावली, (४) गोचिट्ठी प्रकाशिका
जन्मकाल—१९२३।
नाम—(२५३६) नारायणप्रसाद मिश्र, शाहजहाँपूर॥
ग्रंथ—(१) विश्रामसागर, (२) नूतन सुखसागर, (३
पद्यपंचाशिका टीका, (४) वंशावली, (५) वृ
द्वशावली, (६) रसराजमहोदधि, (७) जातकाभर
भाषा टीका।
नाम—(२५३७) बाबूरामजी शुक्ल, नुनिहाई कटर
फ़र्रुख़ाबाद।
ग्रथ—(१) हरिजन, (२) सावित्रीविनोद, (३) मानस
मणि, (४) शालीनसुधाकर आदि १० पुस्तकें रची हैं
जन्मकाल—१९२४।
विवरण—भूतपूर्व संपादक कान्यकुब्ज।
नाम—(२५३८) बिहारीलाल चौबे।
ग्रथ—बिहारी-तुलसी-भूषण-बोध।

विवरण—पटना-कॉलेज में संस्कृत के प्रोफ़ेसर थे।

नाम—($\frac{2538}{1}$) माधुरीशरण।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

जन्मकाल—1920।

नाम—(२५३९) मंगलदीन उपाध्याय सरयूपारी, राजा-
पूर, ज़िला बाँदा।

ग्रंथ—(1) सिंहावलोकनशतक, (२) बारहमासा ३, (३)
भक्ति-विलास, (४) हनुमानपचासा, (५) देवीचरित्र,
(६) फाग-रत्नाकर, (७) हनुमानछत्तीसी, (८)
समस्याशतक, (९) कृष्णपचासा, (१०) पट्ऋतुपचासा,
(११) रामायणमाहात्म्य।

नाम—(२५४०) रमाकांत, पंडितपुरा, ज़िला बलिया।

ग्रंथ—(१) साहित्यजुगलविलास, (२) प्रेमसुधारत्नाकर।

जन्मकाल—1920।

रचनाकाल—1942।

नाम—(२५४१) रघुवरदयाल पांडे, कानपूर।

ग्रंथ—(१) कृष्णकलिचरित्र, (२) कृष्णमार्ग नाटक।
[द्वि० त्रै० रि०]

नाम—($\frac{2541}{1}$) राधिकाशरण।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

जन्मकाल—1920।

नाम—(२५४२) रामकुमार खंडेलवाल बनिया, अलवर।

जन्मकाल—1920।

नाम—(२५४३) ललितराम ।

ग्रंथ—छुटकसाखी छंद ।

नाम—(२५४४) मुकुंदीलाल कायस्थ, मोहनसराय, जिला बनारस ।

ग्रंथ—(१) फागचरित्र, (२) मुकुंदविलास, (३) देवीपैज ।

जन्म—१९२० ।

नाम—(२५४५) सरयूप्रसाद कायस्थ, पिहानी, जिला हरदोई ।

ग्रंथ—(१) रामायण, (२) कृष्णायन, (३) सरयूलहरी, (४) अलिफ़नामा, (५) नसीहतनामा ।

जन्मकाल—१९१९ ।

नाम—(२५४६) हंसराम (हंस) क्षत्रिय, ग्राम करांदी, जिला उन्नाव ।

ग्रंथ—रामप्रातःस्मरणीय पंचक आदि ।

जन्मकाल—१९२० ।

कवि-नामावली

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९६८	१७		भाऊ
९७१	१७,१८	इनका ठीक नं० ($\frac{१५७}{३}$) है	निकाल दो
९७६	१२	($\frac{६१७}{१}$)	($\frac{६१७}{२}$)
९७६	१६	विलास	थिलास
९७८	१७		देखो नं० ($\frac{१५०१}{३}$)
९८०	२२	($\frac{६७}{२}$)	($\frac{५७}{२}$)
९८६	१५	लोपन	लोचन
९९२	८	[११	[११०३]
९९५	१४	फोढ	फोड़
९९६	७	(११०)	($\frac{११०}{१}$)
१०११	१४	(७२)	($\frac{७३}{१}$)
१०१५	१३	।	,
१०२४	१५	असधार	असिधार
१०२६	१६	पाप पंजनि	पाप-पुंजनि
१०३३	२	दुगुही	गुही
१०३४	३	भान	भाग
१०३७	६	भी	भी इन्हें
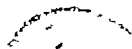
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०३६	१२	नरहरि	नरहरिवंशी किसी
१०३६	२६	और	निकाल दो
१०४०	१३	जिता	जितना
१०४२	१	कलफ	कलफन
१०४२	५	नहीं	नदी
१०४३	१	तरु	तरुे
१०४५	६	प्रयदास	प्रियादास
१०४६	२३	यिलास	विलास
१०४८	२५	काठियावाड़ के	काठियावाड़
१०४६	१३	छपाया	छपा
१०४६	२३	गारसग्रह	शृंगारसंग्रह
१०५६	२६	(द्विजराज कवि)	(द्विजराजकवि)
१०६५	२१	रयशृंगार	रसशृंगार
१०७०	१५	मध्य	माध्य
१०७१	४		देखो नं० (१७०६)
१०७३	२५	हैं	थे
१०७६	११	गिरिनारा	गिरिनारी
१०८३	१७		देखो नं० (६५२)
१०६२	२५	ुंदेलखंड	बुँदेलखंड
१०६४	५	मदांध	मदध
११००	१६	अजवेश द्विसीय भाट	अजयेश द्वितीय भाट देखो नं० (१८४१/१)
११३५	१३	अयाध्या	अयोध्या
११४६	१६	भा	भी
११४७	४		देखो नं० (२१६४/१)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११४१	४		मनोज लतिका, देवी-चरित्र तथा त्रिदीप भी इन्होंने बनाए हैं।
११६०	१६	बधूल	बंदूल
११६७	२१	फिस्पा	प्रत्या
११६८	२६	१६२६	१६६६
११७६	११	निकालते	निकलते
११७५	२५	ंद्रहवीं	पंद्रहवीं
११८४	२०	उत्तरा—	उत्तर
११८७	११	के	की
११६१	१	,	भी अच्छे निकलने लगे हैं।
१२०८	१०	सुन	सुत
१२१७	२४	नियध	निबंध
१२३१	१७	नं० ८८६।	नं० ८८६ तीर्थराज
१२३३	१४	रसरग, लखनऊ	रसरग लखनऊ देखो नं० (१७६६)
१२३७	१२		राम नाम माहात्म्य।
१२३७	२०	पंडा	पांड्या
१२५३	२२		देखो नं० ([illegible])
१२६७	१४	पदोरं	पदों
१२०६	६	से	प्राचीनलिपिमाला पर
११८६	१६	हालधारी	हाल धारी
१२४३	२६	साधा	साधारण श्रेणी
१३०१	२५	उभाड़गाँव	ऊजड़ गाँव

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११४१	४		मनोज लतिका, देवी-चरित्र तथा मित्रदीप भी इन्होंने बनाए हैं।
११६०	१६	बधूल	बंदूल
११६७	२१	किस्मा	कृत्या
११६८	२६	१६२६	१६६६
११७६	११	निकालते	निकलते
११७५	२५	'द्रहवीं	पंद्रहवीं
११८४	२०	उत्तरा—	उत्तर
११८७	११	के	की
११६१	१	,	भी अच्छे निकलने लगे हैं।
१२०८	१०	सुन	सुत
१२१७	२४	निबध	निबंध
१२३१	१७	नं० ८८६।	नं० ८८६ तीर्थराज
१२३२	१४	रसरग, लखनऊ	रसरंग लखनऊ देखो नं० (१७६६)
१२३७	१२		राम नाम माहात्म्य।
१२३७	२०	पंडा	पांड्या
१२५३	२२		देखो नं० (२५५२)
१२६७	१४	इंदोरं	इन्दौर
१२७६	६	से	प्राचीनलिपिमाला पर
११८१	१६	हालवारी	हाल धारी
१२११	२६	साधा	साधारण श्रेणी
१३०१	२५	उजाड़गाँव	उजड़ गाँव